सुसमाचार की निश्चयता और चेतावनीयां

सुसमाचार की सामर्थ्य और संदेश

सुसमाचार की बुलाहट और सच्चा परिवर्तन

सुसमाचार की निश्चयता और चेतावनीयां

सुसमाचार की निश्चयता और चेतावनीयां

पौल वॉशर

ALETHIA
Publications

सुसमाचार की निश्चयता और चेतावनीयां

Gospel Assurance and Warnings -*Hindi*
By Paul Washer

Copyright ©2014 by Paul Washer under the title *Gospel assurance and Warnings.* Originally published by Reformation Heritage Books. Translated and published by Alethia Publications with permission. All rights reserved.

First Hindi Edition 2017.

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced in any form or by any means, Electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any Information storage and retrieval system, without permission in writing from the publisher.

Published by
ALETHIA Publications.
Chandra Niwas Building, Bitco Point, Nashik Road 422101,
Maharashtra, India.
www.alethiabookshop.com

ALETHIA Publications is the publishing division of
Alethia Publication & Training Pvt. Ltd.
alethiapublications@gmail.com
www.alethiabooks.com

Printed and bound in India by GS Media
Secunderabad – 500 067, India.

Translated by Samir Salve

विषय-सूची

श्रृंखला आमुखः सुसमाचार की पुनःस्थापना 15

भाग 1: बाइबल-सम्मत निश्चयता

1. झूठी निश्चयता 15
2. आत्म–विश्लेषण 25
3. परमेश्वर के प्रकाशन में चलना 35
4. पाप का अंगीकार 43
5. परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना 55
6. मसीह का अनुकरण 67
7. प्रेम करने वाले मसीहीजन 75
8. संसार का तिरस्कार करना 89
9. कलीसिया में बने रहना 105
10. मसीह का अंगीकार 115
11. स्वयं को शुद्ध करना 123
12. धार्मिकता का अभ्यास 135
13. संसार पर जय पाना 147
14. यीशु पर विश्वास करना 159

भाग 2: सुसमाचार की चेतावनियां या व्यर्थ अंगीकारो को चेतावनिया

15. सुसमाचार को कमतर बनाना 177
16. संकरा द्वार 187
17. संकरा मार्ग 211
18. आंतरिक वास्तविकता का बाहरी प्रमाण 237
19. कोरे अंगीकार के खतरे 251

श्रृंखला आमुखः सुसमाचार की पुनःस्थापना

यीशु मसीह का सुसमाचार, कलीसिया और एक मसीही व्यक्तिविशेष को दिया गया सबसे बड़ा धन है। यह बहुत से सन्देशों में एक सन्देश नहीं है, बल्कि उन सभी से बढ़कर एकमात्र सन्देश है। यह उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ और मनुष्यों एवं स्वर्गदूतों को दिया गया परमेश्वर की बहुमुखी बुद्धि का सबसे बड़ा प्रकाशन है।[1] यही कारण है कि प्रेरित पौलुस ने अपने प्रचार में सुसमाचार को प्रथम स्थान दिया, अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसकी स्पष्ट घोषणा की, यहाँ तक कि सुसमाचार के सत्य में मिलावट करने वालों के लिये शाप की घोषणा की।[2]

मसीहियों की प्रत्येक पीढ़ी सुसमाचार के सन्देश की भण्डारी है, और पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा हमें परमेश्वर की बुलाहट है कि हम सौंपे गये इस धन (धरोहर) की रखवाली करे।[3] यदि हम सुसमाचार के विश्वासयोग्य भण्डारी बनना चाहते हैं, तो अवश्य है कि हम सुसमाचार के अध्ययन में लीन हो जाए, उसके सत्यों को समझने के लिये श्रमसाध्य कष्ट उठाए और उसकी विषय सामग्री की सुरक्षा के लिये स्वयं को प्रतिज्ञाबद्ध करे।[4] ऐसा करने के द्वारा हम न केवल स्वयं के लिये परन्तु हमें सुनने वालों के लिये भी उद्धार को सुनिश्चित करेंगे।[5]

यही भण्डारीपन मुझे इन पुस्तकों के लेखन के लिये विवश करता है। मुझे लेखन के कठिन कार्य में अधिक अभिरूचि नहीं है और वैसे भी मसीही पुस्तकों की यकीनन कोई कमी नहीं है, परन्तु मुझे इन उपदेशों का लिखित संकलन बनाना अवश्य था, क्योंकि मैं इसी कारणवश उनका प्रचार करता हूँ अर्थात् यह कि मैं उनके बोझ से विमुक्त हो सकूं। यिर्मयाह के समान यदि मैं इस संदेश का प्रचार न करूं, "तब वे मेरे हृदय के भीतर और मेरी हड्डियों में आग के समान जलते

1 1. रोमियों 1:16; इफिसियों 3:10,

2 1 कुरिन्थियों 15:3; कुलुस्स्यिों 4:4; गलातियों 1:8–9;

3 1 कुरिन्थियों 15:3; कुलुस्स्यिों 4:4; गलातियों 1:8–9;

4 1 तीमुथियुस 4:15,

5 1 तीमुथियुस 4:16,

हैं; और मैं उन्हें रोकते–रोकते थक जाता हूँ और रोक नहीं पाता।"[6] जैसा कि प्रेरित पौलुस ने घोषणा की है, "मुझ पर हाय, यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न करूं!"[7]

जैसा कि सभी जानते हैं, शब्द 'सुसमाचार' ग्रीक शब्द *इवान्जेलिअन* (euangélion) से निकला है जिसका उचित अनुवाद 'शुभ–समाचार' है। एक अर्थ में, पवित्र शास्त्र का प्रत्येक पन्ना सुसमाचार है, परन्तु एक दूसरे अर्थ में, सुसमाचार का सन्दर्भ एक अति विशेष संदेश से है – परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा पाप में पतित मानवजाति के लिये सम्पन्न उद्धार से है।

पिता की सुईच्छा के अनुसार, सनातन पुत्र ने, जो स्वयं पिता के समतुल्य है और जो उसके गुणतत्व का प्रतिबिंब है, स्वर्ग की महिमा को स्वेच्छा से त्याग कर, पवित्र आत्मा के द्वारा एक कुँवारी के गर्भ में आया और ईश्वर–मानव होकर नासरत के यीशु के रूप में जन्मा।[8] मनुष्य के रूप में वह पृथ्वी पर जीवन जीते हुए परमेश्वर की व्यवस्था की सिद्ध आज्ञाकारिता में बना रहा।[9] जब समय पूरा हुआ, मनुष्यों ने उसे तिरस्कृत किया और क्रूस पर चढ़ाया। क्रूस पर उसने मानवजाति के पापों को अपने ऊपर लिया और परमेश्वर के क्रोध को सहा और मनुष्यों के बदले में मृत्यु सही।[10] तीसरे दिन, परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया। यह पुनरूत्थान ईश्वरीय घोषणा है कि पिता ने पाप के लिए बलिदान के रूप में अपने पुत्र की मृत्यु को स्वीकार किया है। यीशु ने मनुष्यों की अनाज्ञाकारिता के दण्ड का दाम चुकाया, न्याय की मांग को पूरा किया और परमेश्वर के प्रकोप को शांत किया।[11] पुनरूत्थान के 40 दिन बाद परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग पर उठा लिया गया, पिता के दाहिनी ओर जा बैठा, और उसे सब बातों पर महिमा, सम्मान और अधिकार दिया गया।[12] वहाँ परमेश्वर की उपस्थिति में, वह अपने लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, और उनके लिए मध्यस्थता करता है।[13] परमेश्वर उन सबको जो अपनी पापमय असहाय दशा स्वीकार करते है और मसीह पर निर्भर हो जाते हैं, पूरी तरह क्षमा करता, धर्मी ठहराता और अपने साथ उनका मेल–मिलाप करता है।[14] यही परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह का सुसमाचार है।

सुसमाचार की उपेक्षा इस पीढ़ी के मसीहीयों का सबसे बड़ा अपराध है, और सुसमाचार की इस उपेक्षा ने अन्य कई बुराईयों को जन्म दिया है। खोया हुआ संसार सुसमाचार के प्रति

---

6 यिर्मयाह 20:9,

7 1 कुरिन्थियों 9:16

8 प्रेरितों के काम 2:23; इब्रानियों 1:3; फिलीप्पियों 2:6–7; लुका 1:35

9 इब्रानियों 4:15

10 1 पतरस 2:24; 3:18; यशायाह 53:10

11 लुका 24:6; रोमियों 1:4; रोमियों 4:25

12 इब्रानियों 1:3; मत्ती 28:18; दानिएल 7:13–14

13 लुका 24:51; फिलीप्पियों 2:9–11; इब्रानियों 1:3; इब्रानियों 7:25

14 मरकुस 1:15; रोमियों 10:9; फिलीप्पियों 3:3

इतना कठोर नहीं है जितना कि सुसमाचार से अज्ञात है, क्योंकि बहुतेरे जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं वे स्वयं इसके बहुत से मूल सत्यों से अवगत नहीं है। वे प्रमुख विचारधाराएं जो सुसमाचार के केन्द्र में है – अर्थात् परमेश्वर का न्याय, मनुष्य की मूल स्वाभाविक सर्वभ्रष्टता, रक्त द्वारा प्रायश्चित, वास्तविक हृदय–परिवर्तन की प्रकृति, और उद्धार की निश्चयता का बाइबल सम्मत आधार – बहुत से प्रचार–मंचों (पुलपिट) से लुप्त हो चुके है। कलीसियाएँ सुसमाचार के संदेश को विघटित करके कुछ विश्वास के कथनों में बदल देती है, और शिक्षा देती है कि हृदय–परिवर्तन केवल एक मानवीय निर्णय है और जो भी पापियों के द्वारा की जाने वाली प्रार्थना करता है, उसे उद्धार का निश्चय दिलाती है।

सुसमाचार में काँट–छाँट के परिणाम दूरगामी रहे है। सबसे पहले, यह हृदय–परिवर्तन से वंचित लोगों के हृदयों को और अधिक कठोर करती है। आधुनिक समय में "हृदय–परिवर्तन" करने वाले कुछ लोग कलीसिया के साथ सहभागिता भी रखते हैं, और अकसर ऐसा करने वाले लोग पाप में गिरते जाते हैं या फिर आदतन शरीर की बातों में लिप्त पाए जाते हैं। लाखों–लाखों लोग हमारी सड़कों पर चलते और हमारी सभाओं में यीशु मसीह के सच्चे सुसमाचार के द्वारा बिना हृदय–परिवर्तन बैठते है, परन्तु फिर भी उन्हें उनके उद्धार का निश्चय होता है, क्योंकि जीवन में कभी एक बार उन्होंने सुसमाचारकीय सभा में अपना हाथ उठाया था और एक प्रार्थना दोहराई थी। सुरक्षा की यह गलत समझ एक बड़ी रूकावट उत्पन्न करती है जो व्यक्तियों को वास्तविक सुसमाचार सुनने पर भी अकसर प्रभावित नहीं करती।

दूसरा, ऐसा सुसमाचार कलीसिया को पुनर्जीवित विश्वासियों के आत्मिक निकाय (देह) से बदलकर विकृत शारीरिक मनुष्यों का एक जमावड़ा बना देता है, जो परमेश्वर को जानने का दावा तो करते है पर अपने कर्मो (आचरण) से परमेश्वर का इन्कार करते है।[15] वास्तविक सुसमाचार का प्रचार करने पर मनुष्य कलीसियाओं में बिना मनोरंजन की आशा, विशेष गतिविधियों या सुसमाचार में वर्णित लाभों से बाहर किसी लाभ की प्रतिज्ञा के बिना भी आते हैं। जो आते है वे मसीह की अभिलाषा करते हुए, बाइबल के सत्य की भूख–प्यास लिये, हार्दिक–आराधना और सेवा के अवसरों को पाने आते है। जब कलीसिया एक कमतर या स्तरहीन सुसमाचार सुनाती है, तब शारीरिक लोग जमा होते हैं जिन्हें परमेश्वर की बातों में अधिक रूचि नहीं होती, और तब ऐसे मनुष्यों का प्रबन्धन कलीसिया को भारी पड़ता है।[16] तब कलीसिया सुसमाचार के तत्व की मांगों से नीचे आकर सुविधाजनक नैतिकता की बात करती है, और मसीह की सच्ची भक्ति–आराधना का स्थान वे गतिविधियाँ ले लेती है जो सदस्यों की आवश्यकताओं या इच्छाओं को ध्यान में रखकर तय की जाती है। कलीसिया तब मसीह में केन्द्रित न होकर गतिविधि–चालित तंत्र बन

15 तितूस 1:16

16 1 कुरिन्थियों 2:14

जाती है और यही बात सावधानी पूर्वक उन सत्यों को पृथक करती या पुनः संगठित करती है जिससे शारीरिकता–बहुल बहुमत को बुरा न लगे। कलीसिया, पवित्र शास्त्र के महान सत्यों और परम्परागत मसीहत को दरकिनार कर देती है और व्यवहारिक बुद्धि का प्रयोग करती है (ताकि चर्च चलता और बढ़ता रहे)।

तीसरा, ऐसा सुसमाचार सुसमाचार–प्रचार और मिशनों को केवल एक मानवीय अभियान बना देता है जिसे सांस्कृतिक आधार पर प्रचलित तौर–तरीकों के सावधानीपूर्वक किये गये अध्ययन पर आधारित बाजारूपन की चतुर रणनीति के अनुसार चलाया जाता है। बहुत वर्षों तक बाइबल से असम्मत सुसमाचार की अनुत्पादकता देखने के बाद बहुत से सुसमाचार–प्रचारक यह मान बैठे है कि सुसमाचार काम नहीं करेगा और यह कि मनुष्य इतना जटिल बन चुका है कि ऐसा सरल और विक्षुब्ध करने वाला संदेश उसका उद्धार करने और जीवन–परिवर्तन करने में सक्षम नहीं है। अब वे मनुष्य की पापमय दशा और संस्कृति एवं उसके विभिन्न पहलुओं को समझने पर अधिक जोर देते हैं बजाय इसके कि केवल उस एकमात्र संदेश को समझे और प्रचार करे जिसमें उद्धार करने की सामर्थ है। परिणाम यह होता है कि सुसमाचार को बार–बार पुनर्गठित और पुनर्रचित किया जाता है ताकि वह समकालीन संस्कृति के साथ अधिकाधिक प्रासंगिक लगे। हम यह भूल चुके हैं कि वास्तविक सुसमाचार सभी संस्कृतियों के लिये सदैव प्रासंगिक है क्योंकि यह प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर का अनंतकालीन वचन है।

चौथा परिणाम, ऐसे सुसमाचार से परमेश्वर की निन्दा होती है। कमतर सुसमाचार के प्रचार के द्वारा शारीरिक और हृदय से अपरिवर्तित लोग कलीसिया की सहभागिता में आते हैं और बाइबल से सम्मत कलीसियाई अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं की पूर्ण उपेक्षा या अनदेखी के कारण उन्हें बिना सुधार या फटकार कलीसिया में रहने की अनुमति मिल जाती है। यह कलीसिया की परिशुद्धता और प्रतिष्ठा को खराब करता है और विश्वास न करने वालों के बीच परमेश्वर के नाम की निन्दा होती है।[17] परिणाम स्वरूप, परमेश्वर को महिमा नहीं मिलती, चर्च की उन्नति नहीं होती, हृदय से अपरिवर्तित सदस्य उद्धार नहीं पातें और अविश्वासी संसार के समक्ष कलीसिया की साक्षी विकृत हो जाती है या फिर लोप हो जाती है। परिशुद्धता जब 'हमारे धन्य परमेश्वर का महिमामय सुसमाचार' एक कमतर महिमा वाले सुसमाचार से बदल दिया जाता है, तब परमेश्वर के सेवक या आम विश्वासी होने के नाते यह नहीं हो सकता है कि हम इतने पास खड़े हो और कुछ न करे।[18] इस धरोहर के भण्डारी होने के नाते, सच्चे सुसमाचार को पुनः प्राप्त करना और उसे निडरतापूर्वक सबके सामने साफ–साफ प्रचार करना हमारा कर्तव्य है। भला होगा, यदि हम चार्ल्स हैडन स्पर्जन के शब्दों पर ध्यान दे:

17 रोमियों 2:24

18 1 तीमुथियुस 1:11

> इन दिनों में मुझे सुसमाचार के मूल या प्राथमिक सत्यों पर बार–बार विचार करने और प्रचार करने की आवश्यकता महसूस होती है। शांति के समय में हम सत्य के रूचिकर प्रभागों में खुलकर उन क्षेत्रों में प्रवास कर सकते हैं, जो दूर है; परन्तु अब अवश्य है कि हम घर पर रहें और विश्वास के आरंभिक सिद्धान्तों की अभिरक्षा के द्वारा कलीसिया के हृदयों एवं घरों की सुरक्षा करे। इस युग में कलीसिया में ही ऐसे मनुष्य उठ खडे हुए हैं जो विकृत बातें कहते है। बहुत से है जिनकी दार्शनिकता और नया–नया भावार्थ हमें कष्ट पहुँचाता है – जबकि जो वे सिखाते हैं उन धर्मशिक्षाओं का इन्कार करते है और उस विश्वास को कमतर आंकते है जिसे बनाए रखने का उन्होंने संकल्प किया था। यह अच्छी बात है कि हम में से कुछ लोग, जो जानते हैं कि हम क्या विश्वास करते है, और जिनके शब्दों के गुप्त अर्थ नहीं होते, इन बातों के विरूद्ध मोर्चा ले और हमारे विश्वास और जीवन के वचन को थामें रहे और केवल यीशु मसीह के सुसमाचार के बुनियादी सत्यों की स्पष्टता से घोषणा करे।[19]

यद्यपि 'सुसमाचार की पुनःस्थापना' यह श्रृंखला सुसमाचार के व्यवस्थित एवं सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण का प्रतिनिधित्व नहीं करती, पर फिर भी यह अधिकतर आवश्यक तत्वों पर चर्चा करती है विशेषकर उनकी जो समकालीन मसीहत में सर्वाधिक उपेक्षित है। मुझे आशा है कि ये शब्द आपका मार्गदर्शन करेंगे ताकि आप सुसमाचर को उसके सम्पूर्ण सौन्दर्य, विक्षोभ और उद्धार की सामर्थ में पुनः क्रियान्वित करने में मदद पा सके। मेरी प्रार्थना है कि ऐसे विशुद्ध सुसमाचार की पुनः प्राप्ति आपके जीवन को परिवर्तित करे, आपके प्रचार को सामर्थ दे, और परमेश्वर के लिये बड़ी से बड़ी महिमा लाए।

आपका भाई
पौल डेविड वॉशर

19 Charles H. Spurgeon, *The Metropolitan Tabernacle Pulpit* (repr., Pasadena, Tex.: Pilgrim Publications), 32:385.

भाग - 1

बाइबल-सम्मत निश्चयता

अपने आप को परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं, अपने आप को जांचो, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो।

2 कुरिंथ 13:5

मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है, कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

1 युहन्ना 5:13

अध्याय – 1

झूठी निश्चयता

वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं, पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं, क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न मानने वाले हैं और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं

– तीतुस 1:16

उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगेय हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ।

– मत्ती 7:22–23

सुसमाचार की पुनः स्थापना श्रृंखला की इस तीसरी पुस्तक में सुससमाचार और उद्धार के हमारे अध्ययन में हम एक महत्वपूर्ण स्थान में पहुँच चुके है। मैं कैसे जान सकता हूँ कि मेरा नया जन्म हो चुका है, यह कि मैं सचमुच परमेश्वर की संतान हूँ? मैं कैसे जानू कि मैंने अनंतजीवन के लिये विश्वास कर लिया है? जब हम विचार करते है कि हम ऐसे युग में रह रहे हैं जिससें बहुत से लोग मसीह में किसी प्रकार की अनंत आशा रखते हैं, परन्तु जीवन से मसीह की शिक्षाओं का प्रदर्शन नहीं करते तब ये प्रश्न प्रासंगिक हो जाते हैं।

मसले की गम्भीरता और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि बीसवीं शताब्दी के प्रचारकों और सुसमाचार–प्रचारकों ने सुसमाचार के तत्वों में, उसकी बुलाहट में, और उन साधनों में फेरबदल कर दिया है जिनमें लोग उद्धार का निश्चयता पाते हैं। बहुत से प्रचारक इन दिनों सुसमाचार को ऐसे संक्षिप्त और सुविधाजनक शब्दों या कथनों की श्रृंखला में प्रस्तुत करते हैं कि जो वास्तविक

महत्व की सत्य बातें है, किन्तु अकसर बिना व्याख्या है, और उनके वास्तविक सुसमाचारीय अर्थ एवं सामर्थ को उनमें शामिल नहीं किया जाता। सुसमाचार की बुलाहट में पश्चाताप करने और विश्वास करने के बदले में मसीह को ग्रहण कर पापियों की प्रार्थना को दोहराने को स्थान दिया जाता है। यह प्रार्थना अकसर परचे के अंत में छपी होती है और निष्कर्ष में भावनात्मक एवं अकसर दबाव देकर आमंत्रित करने वाला सार्वजनिक निमंत्रण होता है। बहुत से लोग पवित्र शास्त्र के प्रकाश में सावधानीपूर्वक अपने ह्रदय–परिवर्तन और जीवनशैली पर विचार करने पर उद्धार का निश्चय नहीं पाते। यह निश्चयता उन्हें उनके शुभ–चिन्तक प्रभु के सेवक की ओर से मिलता है, जो मसीह को ग्रहण करने के बाद पापियों की प्रार्थना बोलने वाले किसी भी व्यक्ति के लिये इन सभी लाभों की उद्‌घोषणा करने आतुर रहता हैं, भले ही उसकी निष्ठा का स्तर कुछ भी हो।

सुसमाचार में इन उदंड और हानिकर परिवर्तनों के कारण विश्वास करने वाले व्यक्तियों की बड़ी भीड़ जीवन में उद्धार करने वाले अनुग्रह का प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती, परन्तु फिर भी वे उद्धार की सर्वाधिक निश्चयता के साथ चलते हैं, और यदि कोई उनके अंगीकार पर प्रश्न करे, वे अत्याधिक बुरा मानकर उसका प्रत्युत्तर देते है। वे विश्वास करते है कि उन्हें उद्धार मिल चुका है। अपने ह्रदयों में उद्धार की निश्चयता रखते है, और उन्हें उनके धार्मिक अधिकारी की पुष्टी प्राप्त होती है। उन्होंने विरले ही कभी विश्वास के मिथ्या अंगीकार के विरूद्ध सुसमाचार की चेतावनी सुनी है, या सुसमाचार के प्रकाश में स्वयं की जाँच करने की चेतावनी पाई है या फिर ह्रदय–परिवर्तन के वस्तुनिष्ठ प्रमाणों के लिए जाँच की है।[1] वे अपनी बुलाहट और चुने जाने को सिद्ध करने की त्वरित आवश्यकता का संज्ञान नहीं रखते और न ऐसा करने की आवश्यकता को महसूस करते हैं।[2]

सेवकों को एक चेतावनी

सुसमाचार के सेवकों के रूप में सेवा करने वाले बहुत से लोगों को लोगों में प्रचलित उद्धार को हल्के रूप में लेने की अभिवृत्ति और उसके निश्चयता या निश्चय को सतही तौर पर लेने की प्रवृत्ति का दोष अपने उपर लेना चाहिये। सुसमाचर और ह्रदय परिवर्तन के प्रति ये गलत अभिमत और लापरवाह अभिवृत्ति पवित्रशास्त्र का सावधानीपूर्वक अध्ययन या पूर्व शताब्दियों के प्रचार एवं बड़े अंगीकारों के गम्भीरतापूर्वक अध्ययन का परिणाम नहीं है। परन्तु ये त्रुटिपूर्ण और खतरनाक अभिमत उन सेवकों के कारण है जो लापरवाही से प्रचार करते है, सुसमाचार को हल्के रूप में लेते और लोगों की आत्माओं के साथ सतही तौर पर व्यवहार करते है।

1 मत्ती 7:13–27; 2 कुरंन्थियों 13:5; तीतुस 1:16.

2 2 पतरस 1:10.

बीसवीं शताब्दी के क्रमिक किन्तु निर्णयात्मक रूप में बाइबल के सत्य के गम्भीर एवं समर्पणयुक्त अध्ययन से पलायन का परिणाम है कि सुसमाचार का अवमूल्यन एवं उपयोग करने में लापरवाही की जा रही है, बाइबल के सत्य में वही एक सामर्थ है जो मनुष्यों को परमेश्वर की उच्च समझ, सुसमाचार का सही मूल्यांकन और परमेश्वर का एक स्वस्थ भय प्रदान कर सकती है ताकि सेवकों के काँधे पर जो उत्तरदायित्व है, उस का गम्भीरता पूर्वक वहन किया जाये। इस प्रकार देखे तो मनुष्यों ने अपने अभिषेक को प्रविधियों से, भविष्यवाणी को व्यवहारिक चातुर्य से, और पवित्रात्मा की सामर्थ को बाजार की बुद्धिमानी से रची गयी रणनीतियों से बदल लिया है। अब भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षायें भविष्य के सी.ई.ओ. और जूनियर निर्वाहक के लिये नेतृत्व प्रशिक्षण के सेमिनार जैसी लगती है। सुसमाचार के प्रचार के बदले जीवन संबंधी सिद्धांतों पर पास्टर के विचारों का प्रस्तुतीकरण प्राथमिकता रखता है और मण्डली की अतिशीघ्र उन्नति और क्रियाशीलता कलीसिया की पवित्रता से अधिक महत्वपूर्ण बन चुके है, और मण्डली के सदस्य के हृदय–परिवर्तन की कल्पना इस बात से की जाती है कि यदि वह पापियों की प्रार्थना दोहराता है और कलीसिया के मिशन कथन को आगे बढ़ाने में सहयोग करता है।

उन सेवकों के समान जिन्हें बहुत दिया गया और जिन्हें बहुत हिसाब देना होगा, हमें पवित्र आत्मा के द्वारा उस धरोहर की रक्षा करनी होगी, जो हमें सौंपी गयी है।[3] हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा चिन्हाकिंत प्राचीन मार्गों पर लौटना होगा।[4] हमें पवित्र शास्त्र में मगन हो जाना चाहिये ताकि धर्मपरायणता में हमारी उन्नति और सुसमाचार की सेवकाई में हमारी उपयोगिता सबको प्रगट दिखाई दे।[5] हमें यत्नपूर्वक स्वयं को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और काम करने वाला दिखाने का प्रयास करना चाहिये जिसे लज्जित न होना पड़े और जो सत्य के वचन को उचित रीति से व्यवहार में लाना जानता हो।[6] हमें अपने आप पर और अपनी शिक्षाओं पर अतिनिकटता से देखना चाहिये – विशेषकर जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं या उसे सिखाते हैं – क्योंकि ऐसा करके हम स्वयं अपना और अपने सुनने वालों, दोनों का उद्धार सुनिश्चित करेंगे।[7] सुसमाचार के सेवकों के रूप में हम सुसमाचार के प्रचार में, लोगों को पश्चाताप और विश्वास करने बुलाहट देने में, और खोजियों को परामर्श देने में अज्ञानी और लापरवाह नहीं बन सकते। हमारी यत्नशीलता और इन उच्च मसलों पर विश्वासयोग्यता पर लोगों की अनंत नियति और कलीसिया की प्रतिष्ठा निर्भर करती है।

---

3 लुक 12:47–48; 2 तीमुथियुस 1:14.

4 यिर्मयाह 6:16.

5 1 तीमुथियुस 4:15.

6 2 तीमुथियुस 2:15

7 1 तीमुथियुस 4:16.

हमें स्मरण रखना चाहिये कि यीशु मसीह के पास एक कलीसिया है जो उनसे बनी है जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा 'नया–जन्म' पाया है, जिन्होंने पश्चाताप किया है और उद्धार के लिये विश्वास किया है, और जो लगातार अनुग्रह में चलते और उन्नति करते जाते है। यह कलीसिया परमेश्वर की सृष्टि है और उसके सर्वाधिक देखनेयोग्य कामों में से एक है।[8] यह परमेश्वर का साधन है जिसे परमेश्वर ने अपनी महिमा के प्रदर्शन और उसकी बहुविधि बुद्धि को आकाश में रहने वाले प्रधानों और अधिकारियों पर प्रगट करने के लिये नियुक्त किया है।[9] कलीसिया एक महत्वपूर्ण अभियान है, और हम सबको जो याजक और अयाजक हैं जिन्हें उसकी उन्नति में योगदान करने की बुलाहट दी गई है, उसकी अत्याधिक देखभाल और परवाह करनी चाहिये। हमें हमारे साधनों के माध्यम से भरसक प्रयत्न करना चाहिये कि हमारी सेवाएँ उसकी उन्नति और सौंदर्य में उन्नति करे न कि उसे निर्बल करे या उसकी साक्षी को अपूरणीय क्षति पहुँचाए। इस वर्तमान खतरे के कारण ही प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को चेतावनी दी थी:

> क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखता है। तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा क्योंकि वह दिन उसे बताएगा इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा, और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो हानि उठाएगा पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते। (1 कुरि. 3:11–15)।

यीशु मसीह कलीसिया का कोने का महान पत्थर है,[10] इस कारण उसकी नींव अटल है। जैसा कि पौलुस ने युवा तीमुथियुस को लिखा था, "परमेश्वर की पक्की नींव अटल रहती है, जिस पर यह छाप लगी है: परमेश्वर अपने लोगों को पहिचानता है" (2 तीमु. 2:19)। दूसरी ओर, हमें बुलाहट है कि डरते और काँपते हुए उस नींव पर निर्माण करे, और यह भय दो सोतों से प्रवाहित होता है। प्रथम, हम जानते है कि कलीसिया के लिये हमारे योगदान में उसे बलवन्त करने या निर्बल करने, उसे सुन्दर बनाने या नष्ट करने की सामर्थ है। दूसरा, हम जानते है कि कलीसिया के प्रति हमारी सेवकाई की गुणवत्ता के लिये हमारा न्याय किया जायेगा। उस बड़े दिन, हमारे परिश्रम का मूल्य आग के द्वारा प्रगट किया जायेगा। यद्यपि हम परमेश्वर के अनुग्रह और मेम्ने के लहू के द्वारा उद्धार पाएँगे, हम साक्षी बनेंगे और अपने सब परिश्रम को आग में जलता हुआ देखेंगे। इन विचारों के द्वारा सुसमाचार के सेवक अपनी सेवकाई के हर पहलू, विशेषकर सुसमाचार के अपने प्रचार और आत्माओं की परवाह या देखभाल के क्षेत्र में सावधानी बरतें। यदि यह पहला पत्थर ही

8 इफिसियों 2:10.

9 इफिसियों 3:10.

10 भजन 118:22; यशायाह 28:16; मत्ती 21:42; मरकुस 12:10; लुक 20:17; प्रेरितों के काम 4:11; इफिसियों 2:20; 1 पतरस 2:6–7.

सही स्थान में न हो, तो पूरी दीवार निर्बल हो जाती है, और कलीसिया की प्रतिष्ठा जो सोने से अधिक बेशकीमती है, नष्ट हो जायेगी।

झूठी निश्चयता के खतरे

यद्यपि अब तक मैंने जो चर्चा की है वह 'कठिन बात' है और समझने में कठिन है,[11] परन्तु बहुत से प्रमाण सत्यापित करते हैं कि यही बहुत से आधुनिक सुसमाचार प्रचारकों की स्थिति का सटीक विवरण है। बहुत से लोगों ने लापरवाही से सुसमाचार को काम में लाया है; उसके आवश्यक सत्यों को सामान्य बनाया है, और बड़ी संख्या में उस की विषय–वस्तु को सबसे कमतर बनाया है ताकि सहभागिता में अधिक से अधिक अंगीकारों का समावेश कर सके। हमारे धन्य परमेश्वर का महिमामय सुसमाचार एक सतही विश्वास–वचन बन गया है[12] जिसमें कुछ आत्मिक नियम या सिद्धांत रह गये है। यदि कोई व्यक्ति सर्वाधिक सतही तौर पर इस विश्वास–वचन से सहमति दर्शाता है हम साधिकार उसे नया जन्म प्राप्त व्यक्ति घोषित करते है, परमेश्वर के परिवार में उसका स्वागत करते हैं, और कलीसिया की सदस्य सूची में उसका नाम लिखते हैं। यद्यपि यह सच है कि हृदय परिवर्तन करने वालो में से कुछ का हृदय परिवर्तन वास्तविक होता है, किन्तु बहुतेरे हैं जो सहभागिता में कभी लौटकर नहीं आते या कुछ महीनों के बाद ही मण्डली से ओझल हो जाते हैं। अन्य जो कलीसिया से संपर्क बनाकर रखते है अकसर मसीह के प्रति अत्याधिक अरूचि प्रदर्शित करते है, पवित्रता के प्रति अत्याधिक उदासीनता, और सेवकाई के प्रति असम्मान दर्शाते हैं। वे मसीह के साथ जीवन्त गठबन्धन के कारण कलीसिया से नहीं जुड़ते, पर इसलिये कि कलीसिया का सक्रिय नेतृत्व एवं कार्यक्रम उन्हें बहुत कुछ दे सकता है – एक स्वस्थ समाज, रोमांचक संबंध, बच्चों के बढ़ने के लिये एक स्थान, और उनकी आवश्यकताओं की कलीसिया द्वारा होने वाली लगातार आपूर्ति।

सुसमाचारकीय मंच की अज्ञानता, व्यवहारिक कार्यक्रमों और भय के कारण निर्बलता के चलते मसीह का अंगीकार करने वाली कलीसिया ऐसे व्यक्तियों से भर गई है जिन्होंने कभी भी यीशु मसीह के सुसमाचार का सामना नहीं किया, उन्होंने कभी सुसमाचार की कोई चेतावनी नहीं सुनी और उन्हें बाइबल के अनुसार उद्धार के वास्तविक निश्चयता की समझ नहीं है। साथ ही साथ सुसमाचार–प्रचारकीय लोग व्यक्तियों में पवित्रीकरण की कमी और सांसारिकता की व्याख्या करते हुये सबसे अधिक खतरनाक एक शब्द – शारीरिक मसीही का उपयोग करते है। यह धर्मशिक्षा सिखाती है कि यीशु मसीह का सच्चा विश्वासी–जन जो पुनः जन्म पा चुका है, और पवित्रात्मा उसमें निवास करता है, वास्तव में अपना सम्पूर्ण जीवन शरीर की अभिलाषाओं में लिप्त

---

11 यूहन्ना 6:60.

12 1 तीमुथियुस 1:11.

रहकर सांसारिकता में बिता सकता है, परमेश्वर की बातों से दूर रहने का प्रमाण दे सकता है। यह धर्मशिक्षा मसीह और प्रेरितों की धर्मशिक्षा का सीधा विरोधी करती है, साथ ही यह शारीरिक और पुनः जन्म से वंचित लोगों के लिये द्वार खोलती है कि वे अतीत में कभी मसीह को ग्रहण करने के अपने निर्णय की सच्चाई को आधार बनाकर उद्धार की निश्चयता प्राप्त करे, भले ही उनकी जीवन शैली उनके ऐसे अंगीकार के विपरीत हो।[13]

इस धर्मशिक्षा के विपरीत पवित्रशास्त्र मसीह में विश्वास का ऐसा अंगीकार करने और उद्धार की निश्चयता रखने वालों को चेतावनी देता है कि वे न केवल अपने हृदय–परिवर्तन के अनुभव का निकट परीक्षण करे, पर उस अनुभव के बाद के जीवन में अपनी जीवन शैली को भी परखें। क्या वे लगातार चलने वाले परमेश्वर के पवित्रीकरण के कार्य को प्रदर्शित करते है, जिस पवित्रता के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा?[14] क्या परमेश्वर जिसने एक भला काम आरम्भ किया है, उसे सिद्धकर रहा है?[15] क्या व्यक्ति में सच्चे पश्चाताप और विश्वास का फल है?[16] क्या विश्वास का यह अंगीकार धर्मपरायणता के वास्तविक कामों से साबित या प्रमाणित होता है?[17]

प्रभुत्व–उद्धार

सुसमाचार–प्रचारकीय समुदाय में इस विषय पर काफी बहस की जाती है जिसे 'प्रभुत्व –उद्धार' कहा जाता है। इस शिक्षा के प्रतिपादक विश्वास करते हैं कि उद्धार में एक व्यक्ति यीशु मसीह को न केवल उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करता है, परन्तु प्रभु के रूप में भी स्वीकार करता है। जबकि इसके विपक्ष में तर्क दिया जाता है कि उद्धार पाने के लिये यीशु मसीह को केवल उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है, प्रभु स्वीकार करना एक पूरी तरह अलग एक स्वतंत्र मुद्दा है। इस आधार पर वे तर्क देते हैं कि मसीह को प्रभु स्वीकार करने की माँग करना उद्धार की धर्मशिक्षा के विपरीत है जिसमें केवल अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा उद्धार पाने की अवधारणा है।[18] यदि कोई व्यक्ति उद्धार प्राप्त करने के लिये मसीह को प्रभु मानकर उसके आधीन होता है तो यह उद्धार अब अनुग्रह से नहीं परन्तु कर्मों के आधार पर हुआ।[19]

यद्यपि मैं उद्धार की आवश्यक धर्मशिक्षा केवल अनुग्रह से विश्वास के द्वारा उद्धार की सुरक्षा के प्रत्येक सच्चे प्रयास की सराहना करता हूँ, मैं इस अभिमत से सहमत नहीं हूँ। मेरा

---

13 तीतुस 1:16.

14 इब्रानियों 12:14.

15 फिलिप्पियों 1:6.

16 मत्ती 3:8.

17 याकूब 2:18.

18 इफिसियों 2:8

19 रोमियों 11:6.

तर्क है कि यीशु के प्रभुत्व को स्वीकार करना, पापियों के लिये सुसमाचार में अंर्तनिहित और अति्–आवश्यक पहलू है। साथ ही मेरा तर्क है मसीह में उन्नति का अंगीकार करना या प्रभु यीशु मसीह की आधीनता में क्रमिक प्रगति, सच्चे हृदय–परिवर्तन का एक प्रमाण है। मेरा दृढ़ विश्वास इन सत्यों पर आधारित है।

पहला, स्वयं मसीह ने शिक्षा दी है कि उद्धार के एक अतिआवश्यक पहलू के रूप में, मसीह के प्रभुत्व के समक्ष वास्तविक एवं व्यवहारिक आधीनता या समर्पण नितान्त आवश्यक है। न केवल उद्धार के लिये प्रभुत्व का अंगीकार आवश्यक है, यह उस अंगीकार का प्रमाण भी है। पहाड़ी उपदेश के निष्कर्ष में मसीह ने अपने सुनने वालों को जोरदार चेतावनी दी है कि उनके प्रभुत्व के प्रति समर्पण वास्तविक हृदय परिवर्तन की लिटमस–पत्र जाँच है। उनके शब्दों में, ''छोटा है वह फाटक और संकरा है, वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है, और थोड़े है जो उसे पाते है, यहाँ तक कि उसे जोर देकर प्रभु मानने वालों में से भी "प्रत्येक जो मुझ से हे प्रभु! हे प्रभु! कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा पर वह जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:13–14,21)।

मसीह कामों पर आधारित उद्धार की शिक्षा नहीं दे रहे थे, परन्तु वे एक सत्य बता रहे थे जो सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में देखने मिलता है अर्थात् परमेश्वर और उनके मसीह के प्रभुत्व के प्रति समर्पण (अर्थात् परमेश्वर की इच्छा का आज्ञापालन करना) उद्धार करने वाले विश्वास का प्रमाण है। जबकि विश्वास और कार्य मिलकर उद्धार करते है, इस अवधारणा पर विचार करना भी विधर्म है, फिर भी बाइबल–सम्मत, परम्परावादी और ऐतिहासिक मसीहत के अनुसार चलने वाले मसीही को विश्वास करना और उद्घोष करना है कि कार्य उद्धार का परिणाम है और उद्धार की वास्तविक सत्यता की जाँच भी है।

दूसरा, यीशु मसीह के प्रभुत्व के प्रति समर्पण प्रेरितों द्वारा की गई सुसमाचार की उद्घोषणा का एक अतिआवश्यक एवं महत्वपूर्ण पहलू था। इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि प्रेरितों ने बड़ी गम्भीरता से यहूदियों और यूनानियों दोनों को साक्षी दी कि परमेश्वर ने इसी यीशु को जिसे संसार ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु और मसीह दोनों बनाया।[20] साथ ही प्रेरितों द्वारा की गयी सुसमाचार की उद्घोषणा में उद्धार के लिये व्यक्ति का मसीह की विश्वव्यापी प्रभुसत्ता का अंगीकार आवश्यक था। प्रेरित पौलुस ने यह बात यहाँ जोर देकर कही – ''यदि तू अपने मुख से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तू उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:9)।

पवित्रशास्त्र में यह अंगीकार के सबसे महत्वपूर्ण कथनों में से एक है। साथ ही यह कथन सुसमाचार–प्रचार के लिये सुसमाचार वादियों द्वारा सबसे अधिक उपयोग में लाये जाने वाले

20 प्रेरितों के काम 2:36; 1 कुरिन्थियों 2:8.

कथनों में एक है। क्या इस मामलें में हम या प्रेरित, पापियों को मसीह के प्रभुत्व का अंगीकार करने के व्यर्थ अंगीकार की बुलाहट दे रहे है? क्या यीशु का प्रभु के रूप में अंगीकार उसकी इच्छा के प्रति समर्पण की भावना के बिना है? क्या एक व्यक्ति ऐसे बड़े सत्य पर, जैसा कि यह सत्य है, अपने हृदय में विश्वास और अपने मुँह से अंगीकार उसके जीवन के उद्देश्य, दिशा और जीवन शैली पर किसी व्यवहारिक प्रभाव का अनुभव किये बिना कर सकता है? ऐसी संभावना का विचार करना गलत है। साथ ही, हमने अभी यह विचार किया है कि मसीह के प्रभुत्व का कोई भी अंगीकार जो उसकी इच्छा पूरी करने में अभिव्यक्त या प्रगट नहीं होता, व्यर्थ है, और उसका परिणाम अनंत विनाश है।[21]

तीसरा, प्रभुत्व–उद्धार के विरूद्ध उठने वाली आपत्ति अकसर उद्धार की प्रकृति की गलत समझ का परिणाम है, विशेषकर पुनः जीवन पाने और उसमें बने रहने की गलत अवधारणा या समझ का परिणाम है। जब पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि यीशु के प्रभुत्व के प्रति व्यवहारिक और दिखाई देने योग्य समर्पण उद्धार का आवश्यक प्रमाण है, और निश्चयता पाने का साधन है, तब उसका अर्थ यह कदापि नहीं कि उद्धार या विश्वासी का बना रहना कामों का परिणाम है।[22] विश्वासी का मसीह के प्रभुत्व के प्रति समर्पण न तो उद्धार का कारण है और न उद्धार का संरक्षण करता है परन्तु यह विश्वासी में परमेश्वर के द्वारा उद्धार का बड़ा काम किया जाने का परिणाम है। यह दोहरा कार्य है, प्रथम, वह व्यक्ति जो पश्चाताप करता और उद्धार के लिये विश्वास करता है, पवित्रात्मा के द्वारा पुनः जन्म पा चुका है, जो परमेश्वर का एक अलौकिक और पुनः सृजन का कार्य है और जिसका परिणाम विश्वासी के स्वभाव में (भावनात्मक या प्रतीकात्मक परिवर्तन के सर्वथा विपरीत) एक वास्तविक परिवर्तन है। विश्वासी एक नयी सृष्टि बन चुका है[23] जिसका धार्मिकता के प्रति एक नया लगाव और भक्ति एवं सच्ची धर्मपरायणता के प्रति नया अनुराग होता है। दूसरा, पश्चाताप करने वाला और उद्धार के लिये विश्वास करने वाला व्यक्ति परमेश्वर की कारीगरी बन चुका है।[24] उद्धार के बाद, परमेश्वर के अनुग्रह का प्रत्येक वास्तविक विश्वासी में होने वाला लगातार कार्य आश्वस्त करता है कि पवित्रता में अंश–अंश करके प्रगति होगी। यह विश्वासी के स्वयं के निश्चय से उत्पन्न होने वाले कार्य या स्वयं की इच्छा का परिणाम नहीं है, पर विश्वासी में परमेश्वर के कार्य का परिणाम है। वह जिसने हृदय परिवर्तन के समय एक भला काम आरम्भ किया है, वह अंतिम दिन तक लगातार कार्य करता रहेगा। विश्वासी के जीवन भर

---

21 मत्ती 7:23.

22 यीशु की प्रभुता के प्रति सर्मपण फल के समानार्थक है (मत्ती 7:16, 20), यीशु की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता रखने (मत्ती 7:21), और कार्यो के समानार्थक है (याकूब 2:14–26)

23 2 कुरिन्थियों 5:17.

24 इफिसियों 2:20.

पवित्रता में प्रगति दिखाई देगी क्योंकि यह परमेश्वर है जो अपनी सुइच्छा के लिये ''इच्छा और कार्य दोनों'' को प्रोत्साहित करने के लिये सक्रिय है (फिलिप्पियों 2:13)।

पवित्रात्मा के पुनः जन्म देने और पवित्रीकरण के कार्य के कारण प्रत्येक सच्चा विश्वासी यीशु मसीह के प्रभुत्व की आधीनता में और उसकी समानता में बढ़ता जायेगा। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी विश्वासी एक समान गति से और समान अंशों में बढ़ते है और न यह आवश्यक है कि विश्वासी किसी विशेष समय पर प्रगति का प्रमाण दे। यहाँ तक कि बहुत अधिक ईमानदार विश्वासी भी कभी–कभी विचारों शब्दों और कामों में शारीरिकता के प्रभाव में गिर जाते है। इसका अर्थ यह है कि विश्वासी के जीवन के पूरे कार्यकाल में मसीह के प्रभुत्व की आधीनता, धार्मिकता के कार्य, और फलप्रद होने के दिखाई देने योग्य प्रमाण या उन्नति के लक्षण मिलेंगे। 1689 के लन्दन अंगीकार एवं वेस्ट मिन्स्टर अंगीकार के अध्याय 13, के अनुच्छेद 1–3 में कहा गया है:

> वे जो मसीह में संगठित है, प्रभावी रूप में बुलाये गये और पुनरूज्जीवन प्राप्त है, उनमें मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के कारण एक नया हृदय और एक नयी आत्मा सृजी गयी है, उन्हें उसी सद्‌गुण के द्वारा आगे वास्तविक और व्यक्तिगत रूप में पवित्र किया जाता है, उसके वचन एवं भीतर निवास करने वाले पवित्रात्मा के द्वारा पाप की सम्पूर्ण देह का अधिकार नष्ट कर दिया गया है और उसकी बहुत सी अभिलाषाएँ, अधिक से अधिक निर्बल एवं मृतप्राय कर दी गई है, और उन्हें समस्त उद्धारक अनुग्रहों में जीवित एवं बलवन्त किया गया है, ताकि सभी वास्तविक पवित्रता का अभ्यास करे, जिसके बिना कोई मनुष्य प्रभु को कदापि न देखेगा।
>
> यह पवित्रीकरण सम्पूर्ण मनुष्यत्व के लिये है किन्तु इसी जीवन में पूर्ण नहीं किया जाता, अधर्म का कुछ न कुछ भाग शेष रह जाता है जो सब भागों में होता है, जिसके कारण एक लगातार और संधि रहित युद्ध चलता रहता है, शरीर आत्मा के विरूद्ध और आत्मा शरीर के विरूद्ध युद्ध करता है।
>
> ऐसे युद्ध में कुछ समय के लिये शेष बचे अधर्म का प्रभाव बढ़ जाता है किन्तु मसीह के पवित्र करने वाले आत्मा से लगातार बल की आपूर्ति के कारण पुनरूज्जीवन प्राप्त भाग अवश्य विजय प्राप्त करता है। और इस प्रकार पवित्रजन (संत) अनुग्रह में बढ़ते है, परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करते, स्वर्गीय जीवन की ओर आगे बढ़ते जाते हैं, सुसमाचार प्रचारकीय आज्ञाकारिता में, उन सभी आज्ञाओं को पूरा करने जिन्हें मसीह ने सिर एवं राजा के रूप में अपने वचन में दिया है।

यदि वेस्टमिन्स्टर और लन्दन के अंगीकार यह दिखाने के लिए कि पवित्रीकरण और फलप्रदत्ता वास्तविक और उद्धार करने वाले विश्वास का प्रमाण देने पर्याप्त नहीं थे तो हम सम्माननीय बेल्जिक विश्वास के अंगीकार (1561) को भी देख सकते हैं, और उसके विशेष उल्लेखनीय कथन जो अनुच्छेद 22 और 24 में है। यहाँ एक बार फिर हम पाते है कि उद्धार की धर्मशिक्षा कि यह केवल विश्वास से हैं और पवित्र शास्त्र की स्पष्ट शिक्षा कि उद्धार करने वाला ऐसा विश्वास कामों से प्रगट होता है, उन में आपसी सहमति है:

> इस कारण यह कहना कि केवल मसीह पर्याप्त नहीं है पर कुछ और भी आवश्यक है, परमेश्वर के विरूद्ध सबसे अधिक त्रुटिपूर्ण ईशनिन्दा है – क्योंकि ऐसा कहने का अर्थ होगा कि यीशु मसीह केवल आधा उद्धारकर्ता है... और इस कारण हम पौलुस के साथ सच कहते है कि हम 'केवल विश्वास से' या 'व्यवस्था के कामों के बिना' धर्मी ठहराए गए है (रोमियों 3:28)।
>
> हम विश्वास करते हैं कि यह सच्चा विश्वास जो मनुष्य में परमेश्वर के वचन को सुनने और पवित्र आत्मा के काम से उत्पन्न होता है, उसे पुनः जीवित करता है और एक 'नयी सृष्टि' बनाता है (2 कुरि. 5:17) और उसे 'जीवन के नयेपन' में चलाता है (रोमियों 6:4) और उसे पाप के दासत्व से मुक्त करता है... इसलिये यह असंभव है कि यह पवित्र विश्वास मनुष्यों में फल उत्पन्न न करे। उन फलों को देखकर हम उन्हें 'व्यर्थ विश्वास' नहीं कहते पर वह जिसे पवित्र शास्त्र ''प्रेम के द्वारा विश्वास' कहता है (गलातियों 5:6) और यह मनुष्यों की अगुवाई करता है कि स्वेच्छा से उन कामों को करे जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने अपने वचन में दी है।

उद्धार केवल अनुग्रह ही से है, केवल विश्वास करने के द्वारा है, फिर भी उद्धार की प्रकृति गारन्टी देती है कि उद्धार करने वाले विश्वास के वास्तविक एवं व्यवहारिक प्रमाण मिलेंगे। इस कारण, जिन्होंने मसीह पर उद्धार के लिये सचमुच विश्वास किया है, वे पवित्रशास्त्र के प्रकाश में अपने हृदय–परिवर्तन के अनुभव की जाँच करके और अपने हृदय–परिवर्तन के बाद आगे, जीवन का अच्छी तरह परीक्षण करके उनके उद्धार की अधिक बढ़कर निश्चयता प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि सभी विश्वासी बहुत बार असफल होते है और छोटी से छोटी परीक्षाओं में गिर भी सकते हैं, विश्वास में आगे बढ़ने का उनका संकल्प और उनका लगातार, क्रमिक एवं बढ़ने वाला पवित्रीकरण उद्धार का बड़ा प्रमाण हैं और निश्चयता के लिये ठोस आधार बनाता है।

अध्याय – 2

आत्म-विश्लेषण

अपने आप को परखकर देखो की विश्वास में हो या नहीं. अपने आप को जांचो ! या क्या तुम अपने विषय में नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? अन्यथा तुम जांच में खोटे निकले।

– 2 कुरिन्थियों 13:5

मैंने तुमको जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ये बातें इसलिए लिखी है कि तुम जानो अनंत जीवन तुम्हारा है।

– 1 यूहन्ना 5:13

अब हम एक महत्वपूर्ण धर्मशिक्षा पर विचार करेंगे, जिसका संबंध परमेश्वर के साथ विश्वासी के संबंध अर्थात् उद्धार की निश्चयता से है। विश्वासी की निश्चयता का क्या आधार है कि उसके पाप क्षमा हो चुके है और उसका मेल–मिलाप परमेश्वर के साथ हो चुका है?

वे सब जो सच्चे मसीही है, जानते हैं कि उनका उद्धार मसीह के व्यक्ति और उसके काम पर विश्वास करने का परिणाम है, अर्थात् उसके ईश्वरत्व, अवतार लेने, निर्दोष जीवन, प्रायश्चित का बलिदान, मृतकों में से जी उठने, और स्वर्गारोहण के बाद पिता–परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठना। परन्तु फिर भी हम कैसे जाने कि हमने उद्धार पाने के लिये विश्वास कर लिया है[1] और हम किसी झूठे विश्वास से धोके में नहीं है? आखिरकार, पवित्रशास्त्र बहुत सी गम्भीर और कठोर चेतावनियों से भरा पड़ा है, जो मसीह पर विश्वास का दावा करने किन्तु कामों से उस

1 रोमियों 1:16; 10:10; 2 तीमुथियुस 3:15; 1 पतरस 1:5.

का इंकार करने वालों के विरूद्ध है, जो जोर देकर उसे अपना प्रभु मानते है पर न्याय के दिन इंकार करते है; वे स्वयं को भेड़ें मानते हैं पर उनकी गिनती बकरियों में है, और वे अनंतदण्ड के भागी है।[2] विवाह के भोज का भय उत्पन्न करने वाला दृष्टांत, जिसमें यीशु ने अपने श्रोताओं को स्मरण कराया कि ''बुलाए हुए तो बहुत है, पर चुने हुये कम है'' उसमें आमंत्रित एक व्यक्ति बिना तैयारी आया था और जब राजा के समक्ष बुलाया गया तब कुछ न बोल सका, उसके हाथ–पैर बाँधे गये और उसे बाहर अंधकार में डाल दिया गया जहाँ रोना और दांतों का पीसना था।[3] उद्धार केवल अनुग्रह से विश्वास के द्वारा है, पर हम कैसे जानें कि जिस उद्धार करने वाले विश्वास की आवश्यकता है, वह विश्वास हम में है? उद्धार विश्वास करने वालों को दिया जाता है, पर हम कैसे जाने कि हम सचमुच विश्वास करते हैं?

आत्म-विश्लेषण या आत्म-परीक्षण की आवश्यकता

कुरिन्थ की कलीसिया असामान्य रूप में आशीषित थी। स्वयं प्रेरित पौलुस ने माना कि वे मसीह में प्रत्येक बात अर्थात सम्पूर्ण वचन और समस्त ज्ञान में धनी किये थे यहाँ तक कि उनमें किसी आत्मिक वरदान का अभाव नहीं था।[4] किन्तु कलीसिया में बड़ी–बड़ी समस्याएँ भी थी, उनके सदस्यों के बीच फूट, ईर्ष्या, झगड़े, दूसरों से स्वयं को बेहतर समझना, घमण्ड, अनैतिकता, मुकदमे, सांसारिकता, स्वतंत्रता का दुरूपयोग, सभाओं में अव्यस्था और पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा का लगभग इन्कार था।[5] इन बातों के प्रकाश में प्रेरित के पास उन्हें डाँटने–फटकारने के सभी उचित कारण थे – ''हे भाइयों, मैं तुम से ऐसे बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से और उन से जो मसीह में बालक है। मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न नहीं खिलाया क्योंकि तुम इसे पचा नहीं सकते थे। वास्तव में तुम अभी तक पचा नहीं सकते, क्योंकि तुम अब तक शारीरिक हो जबकि तुम में द्वेष और झगड़े है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं?[6]''

हमें सावधानीपूर्वक पौलुस के शब्द चयन पर ध्यान देना चाहिए उसने कुरिन्थ वालों को पुचकारा नहीं परन्तु फटकारा और सबसे अधिक संभव कठोर भाषा का उपयोग किया। सबसे उत्तम रूप में उसने उन्हें 'शिशु मसीही' कहा जो अब तक ठोस आहार या परिपक्व शिक्षायें ग्रहण नहीं कर सकते थे, न पचा सकते थे। सबसे बुरे रूप में वह उन्हें शारीरिक या नये जन्म से वंचित कहता है जिनमें परमेश्वर का आत्मा नहीं और जो अन्यजातियों के समान चलते है।[7] कुरिन्थ

2 मत्ती 7:21–23; 25:41–46; तीतुस 1:16.

3 मत्ती 22:8–13.

4 1 कुरिन्थियों 1:4–7.

5 1 कुरिन्थियों 1:10; 3:3; 4:7–8; 5:1; 6:1–6, 9–20; 8:1–9:27; 11:1–14:40; 15:1–58.

6 1 कुरिन्थियों 3:1–3.

7 इफिसियों 4:17–19.

वालों का अभक्तिमय आचरण देखकर पौलुस ने दो संभावनाएँ जताई। पहली यह कि कुरिन्थ वाले अपरिपक्व मसीही थे, जो कुछ समय के लिये गलती पर थे, और उन्हें वास्तविक धर्मपरायणता और भक्ति (समर्पण) के मार्ग पर वापिस लाने के लिये फटकार और सुधार दोनों की आवश्यकता थी। दूसरी संभावना यह थी कि कम से कम कुछ सदस्य तब भी हृदय–परिवर्तन से वंचित थे। वे तब भी शारीरिक मनुष्यों के समान व्यवहार कर रहे थे, क्योंकि वे शरीर की अभिलाषाओं के पीछे चल रहे थे, शरीर की बातों में लिप्त थे, और परमेश्वर की आत्मा की बातों को स्वीकार करने में असमर्थ थे।[8] केवल समय और पौलुस की फटकार के प्रति उनका समुचित प्रत्युत्तर ही उनके विश्वास की वैधता को प्रदर्शित करेगा।

यहाँ हम एक विश्वासयोग्य और सुशिक्षित सेवक के कार्य करने की शैली देखते है, जब विश्वास का दावा करने वाले पर जीवन शैली से उसका विरोध करने वाले उसका सामना करते है। अब चूंकि वह सर्वज्ञानी नहीं था, उसे दो में से एक संभावना को परखने या जानने का प्रयास करना चाहिये। पहली संभावना है कि जो विश्वास का दावा करते हैं वे अपरिपक्व और भटके हुए विश्वासी है जिन्हें परमेश्वर की कृपा, पवित्रात्मा की सहायता और परमेश्वर के वचन के सही उपयोग, यथा शिक्षण, डाँटना, सुधारना, और प्रशिक्षण आदि के द्वारा पुर्नगठित किया जा सकता है और पुर्नगठित किया जायेगा।[9] दूसरी संभावना यह है कि जो विश्वास का दावा करते हैं वे अब भी नये–जन्में नहीं हैं। वे भक्ति का रूप धारण करते हैं पर उसकी शक्ति का इंकार करते है; मसीह पर विश्वास का दावा करते हैं पर अपने जीवनों से उसका इंकार करते हैं।[10] इस सेवक द्वारा डाँटे जाने पर ये लोग पश्चाताप करेंगे और उद्धार के लिये विश्वास करेंगे, या चेतावनी अनसुनी करके पाप में जीवन जारी रखेंगे, या कुछ समय के लिये अपना मार्ग सुधारेंगे और फिर अपनी मूर्खता में लौट जाएंगे, जैसे 'कुत्ता अपनी छांट को'' चाटता है और 'नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लौटने के लिये लौट जाती है' (नीतिवचन 26:11; 2 पतरस 2:22)। इस प्रकार, सच्चे और झूठे विश्वासी पहचाने जाते हैं।

इसके पहले कि हम आगे बढ़ें, हमें चाहिये कि हम एक बार फिर स्पष्ट रूप से कहें कि सच्चा मसीहीजन इस जीवन में पूर्ण रूप से पवित्र नहीं किया जाता। 'शरीर' पूरी तरह से अलग नहीं होगा जब तक स्वर्ग में अंतिम रूप से महिमा प्राप्त नहीं करता।[11] यहाँ तक कि सर्वाधिक समर्पित जीवन में भी, सदैव पाप एवं नैतिक असफलता के विरूद्ध एवं संघर्ष लगातार चलेगा और पश्चाताप, अंगीकार एवं पुर्नगठन की आवश्यकता बनी रहेगी।[12] परन्तु फिर भी सबसे

8 1 कुरिन्थियों 2:14; इफिसियों 2:3.

9 2 तीमुथियुस 3:16.

10 2 तीमुथियुस 3:5; तीतुस 1:16.

11 गलातियों 5:17.

12 1 यूहन्ना 1:8–10.

निर्बल विश्वासी जो ईमानदार है और पाप के विरूद्ध संघर्ष करता है, और पवित्रता में कम से कम उन्नति करता है, और एक झूठे विश्वासी में जो मसीह में विश्वास का दावा करता है, पर लगातार सांसारिकता में डूब कर जीता है, उसका विवेक उसे दोषी नहीं ठहराता, पाप के कारण मन में टूटापन नहीं है, या हृदय की गहिराई से अंगीकार नहीं करता, बड़ा अन्तर होता है। इन पहिचानयोग्य विभेदों के कारण जो सच्चे और झूठे विश्वासी में प्रगट है, प्रेरित पौलुस ने मार्ग से भटके कुरिन्थ वालों को अपनी दूसरी पत्री के अंत में अधिकार सहित दिशा निर्देश दिये है ''अपने आप को परखकर देखो कि तुम विश्वास में हो या नहीं। अपने आप को जाँचों! या क्या तुम अपने विषय में नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? अन्यथा तुम जाँच में खोटे निकले।'' (2 कुरिन्थियों 13:5)

कुरिन्थ की कलीसिया को लिखे गये पौलुस के पत्र से हम समझते हैं कि उनके बीच जो झूठे प्रेरित और भविष्यद्वक्ता थे, वे पौलुस के जीवन और सेवकाई को लगातार आलोचनात्मक परीक्षण में डाल रहे थे, प्रेरित के पद पर उसकी नियुक्ति पर संदेह कर रहे थे, यहाँ तक कि उसके विश्वास की सच्चाई पर भी प्रश्न कर रहे थे।[13] पौलुस ने बाजी पलट दी और उनसे जो उन्हें सुन रहे थे कहा कि वे उनके विश्वास के दावों की सत्यता के संदर्भ में स्वयं को *परखे* और स्वयं को *जाँचे*,[14] क्योंकि वे ऐसा जीवन जी रहे थे जो उनके द्वारा किये गये विश्वास के उद्घोष और मसीह के साथ दिखाई जाने वाली पहिचान से मेल नहीं था।

कुरिन्थ के विश्वास का दावा करने वाले मसीहियों को पौलुस की डाँट–फटकार, कि वे आत्मपरीक्षण करे और हृदय–परिवर्तन के प्रमाणों की खोज करे, साबित करता है कि विश्वासी में परमेश्वर का उद्धार का कार्य न केवल 'धर्मी ठहराए जाने' में है, परन्तु उसके वास्तविक व्यवहारिक और दिखाई देने योग्य पवित्रीकरण में भी हैं। परमेश्वर विश्वासी को न केवल पाप के दंड से मुक्त करता है, परन्तु पाप की सामर्थ से छुटकारा देने के लिये विश्वासी में लगातार कार्य करता है। यीशु मसीह में प्रत्येक सच्चा विश्वासी पवित्रात्मा के द्वारा नया जन्मा है, और परमेश्वर के लिये नये अनुरागों के साथ एक नया प्राणी और परमेश्वर की धार्मिकता बन चुका है। आगे, पवित्रात्मा जो विश्वासी को पुनः जन्म देता है, अब वह उसे पवित्र करने के लिये उसमें कार्य करता है। विश्वासी परमेश्वर की कारीगरी बन चुका है, और परमेश्वर जिसने एक भला काम आरम्भ किया है, उसे पूरा करेगा।[15]

आधुनिक सुसमाचार प्रचारवाद के इन दिनों में इस सत्य की पुनः खोज करना आवश्यक है। पश्चिम में एवं संसार में अन्य भागों में भी मसीहत का दावा करने वालों को एक बड़ा भाग

13 1 कुरिन्थियों 9:1–3; 2 कुरिन्थियों 10:1–12:21; 13:3.

14 यूनानी सुस्पष्ट है। पौलुस कर्मकर्त्ता सर्वनाम *औतो* का प्रयोग तीन बार करता है: *स्वयं को* जांचों, *स्वयं का* परीक्षण करो, *अपने बारे में* इसे पहचानो।

15 इफिसियों 2:10; फिलिप्पीयों 1:6.

लगातार सासांरिकता, शारीरिकता और फलों के बिना भी जी रहा है। फिर भी वे सिय्योन में चैन के साथ अपने उद्धार के प्रति बड़े आश्वस्त होकर रहते है, और उन्हें जरा भी भय नहीं लगता कि उनका विश्वास व्यर्थ है। बहुत से तो सक्रिय रूप में विश्वास भी नहीं कर रहे हैं और न मसीह की ओर देख रहे है, पर वे उस एक निर्णय पर भरोसा कर रहे हैं जो उन्होंने वर्षों पूर्व किया था और जिसका उनके जीवनों पर दृष्टिगोचर होने वाला कोई प्रभाव नहीं है। स्थिति को बद से बदतर बनाते हुए उनके शुभचिन्तक सेवक जिन्हें लगता है उद्धार की प्रकृति और सामर्थ का कमतर ज्ञान है, उनकी खतरनाक दशा को आशीषमय ठहरा देते हैं। ये सेवक यिर्मयाह के दिनों के भविष्यद्वक्ताओं के समान बन चुके हैं – ''उन्होंने यह कहकर 'शान्ति है शांति है', मेरी प्रजा के घावों को उपर से चंगा किया परन्तु शांति तो है ही नहीं'' (यिर्मयाह 6:14)।

क्या हम महसूस नहीं करते कि हमारे कितने नये विश्वासी बिन जल के बादल है, शरद के फलहीन वृक्ष है, मृतप्राय और जड़ से उखाड़े हुये वृक्ष है?[16] वे 'परमेश्वर के दिन की कामना करते है और सोचते हैं कि प्रकाश होगा, पर जिस प्रकार कोई व्यक्ति सिंह से बचकर भागता है और भालू के हाथ पड़ जाता है, या अपने घर की दीवार पर हाथ टेकता है और जहरीला सर्प उसे डस लेता है, उनके लिये वह दिन अंधकार होगा और वे न्याय से बच नहीं सकेंग।[17] उन्हें निश्चय है, वे हठ पूर्वक मानते है कि उन्हें हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनंत साम्राज्य में भरपूर स्वागत मिलेगा,[18] परन्तु उन्हें इन शब्दों के साथ लौटा दिया जायेगा, ''मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्मियों, मुझ से दूर हटो!'' (मत्ती 7:23)।

सिंह गरजा! क्या हम नहीं डरेंगे, भविष्यद्वाणी नहीं करेंगे?[19] क्या पहरेदार तुरही नहीं फूँकेगा, क्या वह दुष्ट को चेतावनी नहीं देगा?[20] क्या हम उन्हें सिय्योन में चैन से बैठे रहने देंगे जबकि पहरे की चौकी से परमेश्वर का निश्चित न्याय या दण्ड आता हुआ दिख रहा है? क्या हम ऊँचे स्वर से पुकारकर उनसे न कहेंगे:

> ''हे सोने वाले जाग,
> और मृतकों में से जी उठ,
> तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी'' (इफिसियों 5:14)
>
> अपने आप को परखकर देखो कि तुम विश्वास में हो या नही। अपने आप को जाँचो।
> (2 कुरिन्थियों 13:5)

16 यहूदा पद 12.
17 आमोस 5:18–20
18 2 पतरस 1:11.
19 आमोस 3:8.
20 यहेजकेल 3:17–22; 33:1–9.

> अपने बुलाए जाने और चुने जाने की निश्चयता का और भी अधिक प्रयत्न करते जाओ (2 पतरस 1:10)

स्मरण रखिये सेवकों या अयाजकों की यह बुलाहट दूसरों का न्यायधीश बनने की नहीं है, पर इसलिए है कि सतही एवं सामर्थहीन सुसमाचार की घोषणा पर विश्वास न करे जो लाखों–लाखों को निश्चयता देती, और उन्हें बाइबल–सम्मत सुसमाचार का प्रतिरोधी बनाती, और उनके अनंत दंड पर मोहर करती है। हमें निर्बल से निर्बल पवित्रजन को सांत्वना और निश्चय देना सीखना चाहिये, जो बहुत से पापों के कारण टूट चुका है, पर हमें झूठे विश्वासी को चेतावनी देना सीखना चाहिये जिनके जीवन बांझ और फलहीन वृक्ष के समान है, जिनकी स्थापित जीवन शैली सुसमाचार के विरोध में है।

पश्चिमी सुसमाचार प्रचारकीय कलीसिया में व्याप्त अधिकतर व्याधियों का उपचार है कि पवित्रशास्त्र में दिये उद्धार के विचार पर वापस लौटकर आये जो कि सामर्थशाली और अद्‌भुत भी है। हमें उन लोगों से दूर हटना होगा जो नयी–नयी रणनीति और तौर तरीकों के बल पर कलीसिया को बचाना चाहते है, पर हमें पवित्रशास्त्र से और भी दूर कर देते हैं। ''व्यवस्था और साक्षी पर ध्यान दो! यदि वे लोग इस वचन के अनुसार न बोले तो उनके लिये पौ नहीं फटेगी!'' (यशा 8:20)। भला हो कि हम उस चट्‌टान पर दृष्टि करे जिसमें से हम तराशे गये हैं और उस खान का विचार करे जिसमें से हम खोदे गये है।[21] भला हो कि हम मार्ग में खड़े हो और देखे, और पूछे कि प्राचीनकाल के पथ कौन से है, अच्छा मार्ग कौन सा है, और उस मार्ग पर चले। वहाँ हमें हमारे प्राणों के लिये और उन्हें जो हमें सौंपे गये है, उन्हें विश्राम मिलेगा।[22] तब हम प्राचीनकाल के खण्डहरों का पुर्ननिर्माण करेंगे और कई पीढ़ियों से उजड़े स्थानों को फिर से बसाएँगे।[23]

भला हो कि हम उन मनुष्यों का विचार करे जो हम से पहले थे और बड़ी अनंतकालीन सफलता और कलीसिया के लाभ का कारण बने – जैसे कि जॉर्ज व्हाइटफील्ड, जोनाथन एड्‌वर्डस, जोसेफ एलीएन, चार्ल्स स्पर्जन, मार्टिन लॉयड जोन्स, और ए.डब्ल्यू टोजर। उन्होंने सच्ची शिक्षा दी, उनके ओठों में अधार्मिकता नहीं पाई गई। वे परमेश्वर के साथ मेल और खराई के साथ चले, और उन्होंने बहुतों को अधर्म के मार्ग से वापस फेर लिया।[24] भला हो कि हम उनकी सुसमाचार प्रचारकीय तरीकों की सादगी को अपनाए। उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया, सुनने वालों को पश्चाताप और विश्वास की बुलाहट दी, परमेश्वर के प्रेम में सबसे अधिक निर्बल पवित्रजन को भी प्रोत्साहन दिया, और अपने स्वामी के समान, खोखले दावें या अंगीकार करने वालों को चेतावनी दी कि यीशु को प्रभु कहने वाला प्रत्येक जन स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा परन्तु वह जो

---

21 यशायाह 51:1.

22 यिर्मयाह 6:16.

23 यशायाह 61:4.

24 मलाकी 2:6.

स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता, उस पर चलता है, वही प्रवेश करेगा।[25] वे अनुग्रह के द्वारा, केवल विश्वास से उद्धार की धर्मशिक्षा के प्रति एकनिष्ठ थे, परन्तु वे यह समझते थे और उन्होंने प्रचार भी किया कि अनुग्रह जो उद्धार करता है, पवित्र भी करता है, और पवित्रशास्त्र के प्रकाश में आत्म–परीक्षण किये बिना उद्धार का सच्चा निश्चय प्राप्त नहीं किया जा सकता।

आत्म परीक्षण के मानदण्ड

पवित्रशास्त्र हमें स्वयं का आत्म परीक्षण करने की आज्ञा देता है कि हम परखें कि क्या हम विश्वास में है या नहीं, हम अपनी जाँच करे ताकि हम जान सके कि हम वास्तव में मसीही है या नहीं।[26] किन्तु फिर भी यह चेतावनी हमें एक अत्याधिक महत्वपूर्ण प्रश्न पर लाती है – वह आधिकारिक मानदण्ड कौनसा है जिसके द्वारा हमें अपने विश्वास की वैधता का मूल्यांकन करना चाहिये? वे कौन से निश्चित नियम है जिनके आधार पर हम आत्म–विश्लेषण करे? कौन हमारा न्याय करने और हमारी स्थिति हमें समझाने में समर्थ है?

प्रेरित यूहन्ना हमें चेतावनी देते हैं कि हम ऐसे मामलों में केवल अपने मन की बातों पर भरोसा न करे चाहे वह हमें गलत रीति से सही ठहराए या दोषी ठहराए।[27] प्रेरित पौलुस हमें निर्देश देते है कि स्वयं को स्वयं के मानदण्डों से मापना बुद्धिमानी नहीं है या अपने वृत्त और सहभागिता के अन्य लोगों से स्वयं की तुलना करना गलत है।[28] यदि हम शारीरिक मनुष्यों को जो मसीह का दावा करते हैं, अपना मानदण्ड बनाते हैं, तो हम एक झूठी निश्चयता में बह जाएंगे। किन्तु यदि हम स्वयं की तुलना हमारी सहभागिता के सबसे परिपक्व मसीहियों से करते हैं, तो हम स्वयं को गलत भर्त्सना का शिकार बना देंगे। साथ ही साथ, इन मसलों पर दूसरों का परामर्श लेना भी बुद्धिमत्ता है, हम अपने उद्धार की निश्चयता केवल उनके अभिमत के आधार पर नहीं पा सकते। कुछ लोग उद्धार के प्रति उनके कमतर अभिमत के कारण संभव है कि हमें गलत रूप में आश्वस्त कर दे।[29] और कुछ दूसरे ऐसे प्रमाण मांगे जो पवित्रशास्त्र के नियमों से बाहर है और हमें गलत रूप में दोषी ठहरा दे, हम पर ऐसा बोझ रख दे जो वे स्वयं उठाने के लिये न तैयार है और न योग्य है।[30] तब, हमारा मानदण्ड क्या होना चाहिये? किस नमूने या पद्धति के अनुसार हम अपने विश्वास की सच्चाई और हृदय परिवर्तन की वास्तविकता का मूल्यांकन करे?

25 मत्ती 7:21.
26 2 कुरिन्थियों 13:5.
27 1 यूहन्ना 3:19–20.
28 2 कुरिथियों 10:12.
29 यिर्मयाह 6:14–15.
30 मत्ती 23:4.

हम धन्यवाद कर सकते हैं कि ये मानदण्ड जिन्हें हम खोजते है पवित्र शास्त्र के ताने बाने में निराशाजनक रूप में गुप्त नहीं है, और न ही अबूझ रहस्य है जो केवल कुछ अति बुद्धि मानों के बस में है। इसके विपरीत पवित्रशास्त्र में विशेष रूप में और स्पष्ट रूप में लिखे गये है। वास्तव में, ये मानदण्ड या जाँच, जो वास्तविक हृदय–परिवर्तन के संबंध में है, वे हम सबके लिये प्रेरित यूहन्ना की पहली पत्री में सुस्पष्ट, संक्षिप्त और पूर्णरूप में दिये गये है।

यूहन्ना के सुसमाचार और प्रथम पत्री की सबसे अधिक आश्चर्यजनक और सहायक लक्षण यह है कि उसमें उन कारणों को भी स्पष्ट किया गया है कि वे क्यों लिखे गये है –

> यीशु ने बहुत से अन्य चिन्ह भी चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं, *परन्तु जो लिखे गये हैं वे इसलिए लिखे गये कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ''* (यूहन्ना 20:30–31)।
>
> 'मैंने तुमको जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ये बातें इसलिए लिखी है *कि तुम जानों कि अनंत जीवन तुम्हारा है।''* (1 यूहन्ना 5:13)

पवित्रशास्त्र की एकता और प्रेरणा दोनों को प्रदर्शित करते हुए यूहन्ना ने अपना सुसमाचार लिखा ताकि उसके पाठक यीशु मसीह पर विश्वास करे और अनंत जीवन पाए। साथ ही उसने अपनी प्रथम पत्री को लिखा ताकि जिन्होंने सचमुच विश्वास किया है वे निश्चयता या निश्चय प्राप्त कर सके कि अनंत जीवन उन्हें दिया गया जा चुका है।

अपनी प्रथम पत्री में, यूहन्ना ने जाँच की एक पूरी श्रृंखला दी है जिसके द्वारा सच्चे विश्वासीजन अपने जीवनों की जाँच कर सकते है ताकि अपने विश्वास के दावे की सत्यता साबित कर सके और परमेश्वर के त्रुटिरहित वचन के आधार पर उद्धार की निश्चयता प्राप्त कर सके। किन्तु उसकी पत्री का एक दूसरा उद्देश्य भी है, जिसमें वह अविश्वासियों के झूठी निश्चयता को उजागर करती है जो मसीह पर विश्वास का दावा करते हैं पर जिनमें सच्चे हृदय–परिवर्तन के लक्षण नहीं है। बहुत से विद्वान यूहन्ना की पत्री के लेखन में उसके इस उद्देश्य की समझ का समर्थन करते है – जॉन आर. डबल्यू स्टॉट लिखते है – ''सम्पूर्ण पत्री में यूहन्ना अपने पाठकों को स्वयं की और दूसरों की जाँच करने का मानदण्ड (धर्मशिक्षा, नैतिकता और सामाजिकता के आधार पर) प्रदान करते हैं, उसका उद्देश्य उनके निश्चयता को दृढ़ (स्थापित) करना है...। सुसमाचार और पत्री में यूहन्ना के उद्देश्यों को एक साथ रखने पर उसके चार चरण है जो पाठकों को सुनना चाहिये, सुनकर विश्वास करे, विश्वास कर जीवित रहे और जीवित रहते हुये जाने'', डी. एडमन्ड हाइबर्ट के अनुसार, ''लेखक का व्यवहारिक उद्देश्य प्रगट है, उसकी मूल अभिलाषा उन्हें उनके उद्धार की निश्चयता में गहिरे जड़े जमने देने की है...। वह उन्हें जाँच की श्रृंखला प्रदान करता है जिसके द्वारा वे स्वयं के विश्वास और आचरण की जाँच कर सकते है और अपने हृदयों में पुनः आश्वस्त हो सकते है...। यूहन्ना जिस निश्चयता की बात कर रहा है वह कामना करने वाली सोच

का परिणाम नही है परन्तु पत्री में स्थापित बहुत से प्रमाणों के उपर दृढ़ता से आधारित है। अंत में कॉलिन जी. क्रूसे जोर देते हैं –

> लेखक का पत्री के लिखने के पीछे मूलकारण विघटनकारियों की झूठी शिक्षाओं का प्रतिरोध करते हुये उनकी निश्चयता को दृढ़ करना था। लेखक ने यह करने के लिये उन्हें दर्शाया कि ये उसके पाठक है उन्होंने वास्तव में अनंत जीवन प्राप्त किया है, जो सचमुच परमेश्वर को जानते है, वे विघटनवादी नहीं। ये व्यक्ति जो उसके पत्र के पाठक है उनमें अनंत जीवन के आधिकारिक चिन्ह (लक्षण) है; वे वही थे जो चश्मदीद गवाहों द्वारा उद्घोषित शिक्षाओं में लगातार बने रहे; वे वह थे जो प्रभु की आज्ञाओं के पालन करने में लगातार जुटे रहे, और वे वह थे जो परमेश्वर की संतानों से प्रेम रखते थे और यह अंनत जीवन के धारकों में अति–आवश्यक चिन्ह है।[31]

यूहन्ना ने अपने पाठकों को बहुत से धर्मशिक्षा और नैतिकता के मानदण्ड या आधार बताये है जिसके द्वारा वे उद्धार पाने के अपने दावें की प्रामाणिकता की जाँच कर सकते है। वह चाहता था कि उसके पाठकों की निश्चयता, कामना करने वाले विचार, धार्मिक भावनाओं, या विश्वास के मात्र अंगीकार पर नहीं, पर उनके जीवनों में मसीहत को आधिकारिक चिन्हों या लक्षणों के प्रदर्शन या प्रगटीकरण पर आधारित हो। यूहन्ना की धर्मशिक्षा के अनुसार, मसीहत पर विश्वास का दावा करने वालों को उद्धार की बाइबल–सम्मत निश्चयता उसी सीमा तक हो सकती है, जिस सीमा तक उनके जीवन उन जाँच के बिन्दुओं पर खरे उतरते है जो उसने अपनी प्रथम पत्री में प्रस्तुत किए है।

संक्षेप में, हमारे लिये यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना अपनी पत्री में हृदय–परिवर्तन के साधनों को नहीं परन्तु परिणामों को स्थापित कर रहा है। हम उद्धार की बाइबल–सम्मत निश्चयता उसी सीमा तक पा सकते है जिस सीमा तक यूहन्ना की पत्री में प्रदत्त प्रमाण हमारे जीवनों की वास्तविकता है। यदि स्वयं की जाँच के बाद हम अपने जीवन में इन वास्तविकताओं को नहीं पाते, हमें बड़ी चिन्ता करने की आवश्यकता है। यदि हमारी जीवनशैली वास्तविक विश्वासियों के यूहन्ना द्वारा दिये विवरण के विपरीत है, तो हमें गम्भीरतापूर्वक इन दो में से एक संभावना पर विचार करना चाहिये। प्रथम संभावना यह है कि हम परमेश्वर की वास्तविक संतान है, जो परमेश्वर की इच्छा से पथभ्रष्ट हो गयी है और जिसे पश्चाताप करने की बड़ी आवश्यकता है। यदि हम वास्तव में पश्चाताप करे और जीवन के अमल में परमेश्वर की इच्छा पर लौट आये, तब हमारे लिए बड़ी आशा है कि हमने वास्तव में विश्वास किया है और हम में अनंतजीवन है। दूसरी संभावना यह है कि हमने वास्तव में प्रभु को कभी नहीं जाना और आरम्भ ही से हमारा विश्वास और अंगीकार

---

31 John R. W. Stott, *The Epistles of John: An Introduction and Commentary* (London: Tyndale,1964), 184–85; D. Edmond Hiebert, *The Epistles of John: An Expositional Commentary*(Greenville, S.C.: Bob Jones University Press, 1991), 19, 52; and Colin G. Kruse, *The Lettersof John* (Grand Rapids: Eerdmans, 2000), 188–89.

दोनों झूठे है। यदि ऐसा है, तो हमें प्रभु की खोज करनी चाहिए, उसे पुकारना चाहिये। यदि हम वास्तव में पश्चातापी है, तब हम उसे बड़े विश्वास और निश्चय के साथ खोजेंगे, यह जानकर कि टूटे और पिसे हुये मन को वह तुच्छ नहीं जानता, और जो कोई उसके पास आता है, उसे वह निश्चय दूर न करेगा, और जो भी उसका नाम लेगा, उसका उद्धार होगा, और जो भी उस पर विश्वास करता है, वह निराश न होगा।[32]

आने वाले अध्यायों में हम प्रत्येक जाँच को जो यूहन्ना के पत्र में है, उसी क्रम में समझेंगे और उनकी व्याख्या करेंगे। पाठकों से आशा की जाती है कि वे प्रत्येक अध्याय का सावधानी से और प्रार्थना सहित अध्ययन करें। पवित्रशास्त्र हम से यह जाँच करने की माँग करता है कि हम निश्चित करे कि क्या हम वास्तव में मसीही है।[33]आने वाले अध्यायों में हम इस आज्ञा का पालन करेंगे।

32 भजन 51:17; यूहन्ना 6:37; रोमियों 10:11,13.

33 2 कुरिन्थियों 13:5.

अध्याय – 3

परमेश्वर के प्रकाशन में चलना

वह सुसमाचार जो हमने उससे सूना है और तुमको सुनाते है, वह यह है, कि परमेश्वर ज्योति है और उसमे कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है फिर भी अन्धकार में चलें, तो हाँ झूठ बोलते है और सत्य पर आचरण नहीं करते परन्तु यदि हम ज्योति में चलें जैसा वह स्वयं ज्योति में है, तो हमारी सहभागिता एक दुसरे से है, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पाप से शुध्द करता है।

– 1 यूहन्ना 1:5–7

यूहन्ना ने अपनी प्रथम पत्री एक विशेष उद्देश्य से लिखी – कि यीशु मसीह पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति एक बड़ी निश्चयता प्राप्त करे कि उनमें अनंत जीवन है।[1] इस उद्देश्य को पूरा करने प्रेरित ने बहुत से प्रमाणों, आवश्यक लक्षणों को बताया है जिनके द्वारा वास्तविक हृदय–परिवर्तन को समझने हम अपने जीवनों का परीक्षण और अपने अंगीकारों की सत्यता की जाँच कर सकते है। इन लक्षणों में सब से प्रथम लक्षणों को हम इस कथन में सार रूप में अभिव्यक्त कर सकते है –

> मसीहीजन ज्योति में चलेगा। उसकी जीवनशैली परमेश्वर द्वारा हमें प्रदत्त उसकी प्रकृति और इच्छा के प्रकाशन के अनुरूप होगी।

1 1 युहन्ना 5:13.

परमेश्वर ज्योति है

1 यूहन्ना 1:5 का आरम्भ एक अति महत्वपूर्ण कथन से है – "परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं है।" यूहन्ना आमतौर पर 'ज्योति' और 'अंधकार' शब्दों का उपयोग अपने लेखन में करता है,[2] और इस पाठ में उनके अर्थ को समझना विशेष रूप में महत्वपूर्ण है। प्रथम दृष्टि में यूहन्ना का 'ज्योति और अंधकार' शब्द लगता है नैतिकता के शब्द है, भले और बुरे के बीच का भेद या फिर पवित्र और अशुद्ध के बीच का भारी अन्तर। यह भावार्थ निश्चय ही पवित्रशास्त्र में बताई गई परमेश्वर की पवित्रता से सहमति रखता है। किन्तु जब यूहन्ना लिखते है कि परमेश्वर ज्योति है, वह न केवल उसकी नैतिक शुद्धता की बात कर रहे है पर यह संकेत भी कर रहे है कि यह वह परमेश्वर है जिसने स्वयं को प्रगट किया है। पवित्रशास्त्र का परमेश्वर गुप्त या अंधकार में नहीं है, वह ज्योति है। उसने स्वयं को मानवजाति पर प्रगट किया है – सृष्टि, इतिहास, पवित्रशास्त्र, और विशेष रूप में अवतार लेने और उसके पुत्र यीशु मसीह द्वारा सम्पन्न छुटकारे के कार्य के द्वारा।

परमेश्वर के ज्योति होने की यह समझ और अधिक बढ़ जाती है जब हम यूहन्ना की प्रथम पत्री के ऐतिहासिक संदर्भ पर विचार करते है। कलीसिया, या कलीसियाएँ जिन्हें यूहन्ना लिख रहा था, वे झूठे शिक्षकों के प्रभाव में आ चुकी थी, और वह शिक्षा बाद में एक बहुत बड़े विधर्म के रूप में विकसित हुई और कलीसिया का सामना करने लगी – अर्थात् प्रज्ञानवाद या अतिगूढ़ रहस्यवाद, यह वाद यूनानी दार्शनकिता, यहूदी रहस्यवाद और मसीहत का मिश्रण है। यह एक विशेष प्रकाशन वालों का धर्म था जिसमें रहस्य की बातें, गुप्त ज्ञान, और अज्ञात देवी–देवता है जिन्हें उनके वास्तव में जानने वाले या आह्वानकर्त्ता और अति आत्मिकता के उच्चस्तर पर पहुँचे लोग ही समझ सकते हैं।

इस खतरनाक और विनाशकारी–विधर्मी शिक्षा से संघर्ष करने प्रेरित यूहन्ना ने कलीसिया को समझाया कि परमेश्वर ज्योति है, और उसने स्वयं को एवं अपनी इच्छा को प्रेरितों की साक्षी के द्वारा उन पर प्रगट किया है, जो कि मसीह के अवतार के चश्मदीद साक्षी रहे हैं, और यह पवित्रात्मा की शिक्षाओं के द्वारा प्रगट किया गया है जिसे उन सबने पाया था।[3] परमेश्वर गुप्त नहीं था जैसा कि झूठे शिक्षकों ने संभावना जताई और न ही उसका सत्य कुछ थोड़े से स्वयं को महा–प्रेरित होने का दावा करने वालों के पास था। परमेश्वर ने स्वयं को और अपनी इच्छा को मसीह पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर प्रगट किया है जो परमेश्वर से जन्मा है। यूहन्ना ने अपनी पत्री को समाप्त करते समय इस तथ्य को बड़े बल के साथ अपने अंतिम तर्कों में प्रस्तुत

---

2 देखे यूहन्ना 1:4–5; 3:19; 1 यूहन्ना 2:8–10. यूहन्ना के सुसमाचार और पत्रियों में इस सामान्य प्रसंग के कई उदाहरणों के लिये, यूहन्ना 1:4–5; 3:19; और 1 यूहन्ना 2:8–10 को पढ़िये।

3 यूहन्ना 1:1–4; 2:20; 2:27.

किया है – ''और हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से है और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है, हम जानते है कि परमेश्वर का पुत्र आ चुका है और उसने हमें समझ दी है कि हम उसे जो सत्य है, जान सके, और हम उसमें है जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में, यही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है। (1 यूहन्ना 5:20)

इस जानकारी के आधार पर कि पत्री का आंतरिक प्रमाण क्या है और वह किस ऐतिहासिक संदर्भ में लिखी गयी थी, हम दृढ़तापूर्वक इन बातों को निष्कर्ष के रूप में मान सकते है – यह घोषणा कि ''परमेश्वर ज्योति है'' न केवल उसके दोषरहित नैतिक चरित्र के संदर्भ को दर्शाती है पर यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी और उसके संबंधों को और उन पर प्रगट प्रकाशनों को भी दर्शाती है। परमेश्वर ने स्वयं को अपनी प्रजा से गुप्त नहीं रखा पर अनुग्रह और भरपूरी के साथ अपनी प्रकृति और इच्छा दोनों को उन पर प्रगट किया है। उसने स्वयं को हम पर प्रभु के रूप में प्रगट किया है जो पृथ्वी पर प्रेममय, करूणा, न्याय, धार्मिकता करने में प्रसन्न होता है।[4] उसने हमें बताया कि भला क्या है और वह हम से क्या चाहता है।[5] इस बात में यिर्मयाह की नयी वाचा की भविष्यद्वाणी पूरी हुई है – ''तब उन्हें अपने–अपने पड़ोसी और अपने भाई को फिर यह सिखाना न पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जान जाएंगे, क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनके पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34)।

सहभागिता का अर्थ

अब हम "सहभागिता" शब्द पर विचार करेंगे और उसका उचित अर्थ जानने का प्रयास करेंगे। सहभागिता शब्द यूनानी भाषा के Koinonia शब्द से उत्पन्न है जिसे आमतौर पर संगठन, सहभागिता, सहसंचार या संयुक्त सहभागिता का विचार दर्शाने के लिये उपयोग किया जाता है। इस पत्री के संदर्भ में, एक व्यक्ति जो परमेश्वर की सहभागिता में होने का दावा करता है, वह उस पर विश्वास का दावा करता है, और स्वयं को परमेश्वर की संतान घोषित करता है। वे जो परमेश्वर की सहभागिता से बाहर है, वे अभी भी हृदय परिवर्तन से वंचित है, और अपने पापों एवं अपराधों में मृत है, और परमेश्वर के क्रोध के आधीन है।[6]

हाल के वर्षों में सहभागिता का अर्थ इस संदर्भ में बहुत अधिक गलत रूप में प्रचलित है। कुछ लोग अब यह विश्वास करते और सिखाते हैं कि यूहन्ना उद्धार के लिये विश्वास करने वालों और अभी तक हृदय–परिवर्तन से वंचित लोगों के बीच अन्तर नहीं बता रहे थे, परन्तु आत्मिक मसीही जो परमेश्वर से संचार करते है और शारीरिक मसीहियों के बीच, जो परमेश्वर

4 यिर्मयाह 9:24.

5 मीका 6:8.

6 इफिसियों 2:1–3; 5:6.

की सहभागिता से बाहर है, उनमें विभेद कर रहे थे। यह भावार्थ पाठ की वास्तविक व्याख्या से न केवल दूर ले जाता है पर उस उद्देश्य को भी पूरा नहीं करता जिसके लिये यूहन्ना ने यह पूरी पत्री लिखी है। वह यह नहीं कहता, ''कि मैंने तुम्हें जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो, यह लिखा कि तुम जान सको कि तुम आत्मिक मसीही हो या शारीरिक मसीही हो।'' आगे, पद 7 में यह शिक्षा दी गई है कि केवल वे जो ज्योति में चलते हैं, परमेश्वर के पुत्र के लोहू से शुद्ध होने का अधिकार रखते है। यदि वे जो अंधकार में चलते है – शारीरिक मसीही है, तब वे मसीह के लोहू से शुद्ध होने के प्रभाव से बाहर (वंचित) है। यह किसी भी मसीही के लिये एक असंभव बात है।

इन सत्यों के प्रकाश में हम सही तौर पर निष्कर्ष निकालते है कि परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने का अर्थ है कि एक मसीही को मसीह के प्रायश्चित के काम की सभी आशीषें और लाभ प्राप्त होते है। दूसरी ओर, परमेश्वर की सहभागिता से बाहर होने का अर्थ है हृदय का परिवर्तन न होना, परमेश्वर से अलगाव और अनंत विनाश की खतरनाक दशा में होना।

प्रत्येक मसीही ज्योति में चलता है

अब हम एक सच्चे विश्वासी के प्रथम गुण पर विचार करेंगे: वह ज्योति में चलता है। शब्द 'चलना' मूल यूनानी क्रिया शब्द Peripatéo का अनुवाद है, जिसका शाब्दिक अर्थ चलना या चलना–फिरना है। बतौर रूपक इसका उपयोग किसी व्यक्ति की जीवन शैली या चाल–चलन को दर्शाने के लिये किया जाता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि चलना वर्तमान काल में है और यह क्रिया का लगातार होना भी दर्शाता है, और आगे चलकर यह बात निश्चित हो जाती है कि यूहन्ना इस शब्द को व्यक्ति की जीवन शैली, जीवन जीने के तौर तरीके, या स्थापित चाल–चलन के लिये उपयोग कर रहा था। इस प्रकार, परमेश्वर की सच्ची संतान का प्रथम गुण यह है कि वह ज्योति में चलता है। उसकी जीवन शैली इस बात को दर्शाती है कि परमेश्वर ने अपनी प्रकृति और इच्छा दोनों के बारे में उस पर क्या प्रगट किया है। दूसरी ओर, झूठा विश्वासी अंधकार में चलता है। उसकी जीवन शैली परमेश्वर के प्रति स्वतः धारण किये अज्ञान को दर्शाती है और उसका आचरण जैसा पवित्र शास्त्र में प्रगट किया गया है, उसके और परमेश्वर के स्वभाव एवं सुइच्छा के बीच विरोधाभास को दर्शाता है।

जब हम सच्चे विश्वासी की इस प्रथम जाँच अर्थात् सच्चे विश्वास का विचार करते हैं, हमें यह समझना चाहिये कि यूहन्ना यह नहीं सिखा रहे हैं कि एक मसीह पाप से रहित सिद्धता के किसी स्तर को प्राप्त कर लेगा या कर सकता है। यह एक गलत अवधारणा है कि एक मसीही व्यक्ति इसी जीवन में 'पवित्रीकरण' का एक ऐसा स्तर प्राप्त कर सकते हैं जिसमें वे आगे पाप नहीं करेंगे। वे यह भी नहीं कह रहे हैं कि मसीही जीवन सदैव परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा को सिद्ध रूप में प्रदर्शित करेगा। सरल रूप में वे केवल यह कह रहे हैं कि सच्चे विश्वासी की

जीवन शैली या समस्त आचरण समग्र रूप में उस प्रकाशन के अनुसार होगा, जो परमेश्वर ने स्वयं के बारे में उसे और अपनी सुइच्छा के बारे में दिया है। साथ ही, विश्वासी का जीवन भले ही बड़े संघर्षों से जूझ रहा हो और बहुत सी असफलताओं से दागदार हो, उसके और एक अविश्वासी के जीवन एवं आचरण में एक स्पष्ट अन्तर होगा। उद्धार का प्रमाण सिद्धता या परमेश्वर के प्रकाशन की ज्योति में सदैव चलने की क्षमता नहीं है, परन्तु उद्धार का प्रमाण यह है, हमारे जीवनों का सावधानीपूर्वक आत्म विश्लेषण करने पर हम परमेश्वर के स्वभाव और सुइच्छा के प्रति एक वास्तविक और बढ़ती हुई समानता देखते है। किन्तु यदि हम किसी अपरिवर्तित जीवन और लगातार चलने वाले ऐसे आचरण को देखे जो परमेश्वर द्वारा उसके चरित्र और सुइच्छा के बारे में परमेश्वर के वचन में प्रगटित बातों का विरोधाभासी है, तब हमें बड़ी चिन्ता करनी चाहिए।

यह ध्यान देना आवश्यक है कि जब हम आत्म–विश्लेषण की बात करते हैं, तब हम किसी एक खास पल या जीवन के कुछ समय की नहीं परन्तु हमारे जीवन की सब बातों के बारे में बात कर रहे हैं, जो हमारे हृदय परिवर्तन के समय से बाद की है। हम केवल एक दिन के जीवन में अपने आचरण का आत्मविश्लेषण करके परमेश्वर के उद्धार के कार्य की प्रमाणिकता का आँकलन या निर्धारण नहीं कर सकते। सबसे अधिक परिपक्व मसीहियों के जीवन में भी कुछ समय के लिये नैतिक पतन और काँट–छाँट के पल आते हैं, जब उनमें फल नहीं पाए जाते। हमारे किसी एक अच्छे काम के सावधानीपूर्वक परीक्षण के आधार पर हमारे विश्वास की वैधता साबित करना या मान लेना उचित नहीं है, और यह भी मूर्खता के समतुल्य है यदि हम स्वयं की पाप में एक बार गिरने के कारण भर्त्सना करे। हमारे विश्वास के अंगीकार को सही रूप में परीक्षण करने के लिये आवश्यक है कि हमने जिस पल अपना हृदय–परिवर्तन माना है, उस पल से आज तक पूरे जीवन पर समग्र रूप में विचार करे। हमें स्वयं से प्रश्न करना चाहिये कि क्या हमारे सम्पूर्ण मसीही जीवन में इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर और उसकी सुइच्छा के प्रति हम अधिकाधिक अनुरूप बनते जा रहे हैं। नीचे दिया गया उदाहरण आपकी सहायता करेगा।

यदि हम मसीहत का दावा करने वाले किसी व्यक्ति का कुछ समय के लिये अवलोकन करते हैं, और उसने जब भी कोई गलती की या वह नैतिक रूप में असफल रहा, उसकी एक फोटो खींच लेते है, तब हम उन फोटो के आधार पर यह साबित नहीं कर सकते कि उस व्यक्ति का हृदय परिवर्तन नहीं हुआ है। उसके हृदय–परिवर्तन के बाद के जीवन की कुछ बातें या उसकी जीवन शैली की कुछ बातें ही हमें पता चल सकती है। परन्तु यदि हम उस व्यक्ति पर लम्बे समय तक अर्थात् कुछ वर्षों तक दृष्टि रखें, एक डिजिटल कैमरा लेकर जो तत्क्षण फोटो ले, तो हम पर्याप्त प्रमाण जुटा सकते है जिनके आधार पर हम तर्क कर सकते हैं, जो उसके विश्वास के अंगीकार के पक्ष में या विपक्ष में रखें जा सकते है। यदि वह सच्चा मसीही था, हम तब भी एक सिद्ध जीवन शैली नहीं देखते जिसमें कोई पाप न हो, परन्तु हम ऐसा जीवन अवश्य देखते हैं,

जो बदल चुका है, और बदल रहा है, और धीरे–धीरे परमेश्वर के स्वभाव और सुइच्छा के अनुरूप ढ़लता जा रहा है। निर्बलताएँ दिखेगी, संघर्ष जीतने में कठिन होगा, और अकसर प्रगति भी तीन कदम आगे और दो कदम पीछे होगी। परन्तु इस मसीही जीवन में लम्बे समय के बाद परमेश्वर के स्वभाव और सुइच्छा के प्रति अधिक से अधिक अनुरूपता का दिखाई देने वाला प्रमाण मिलेगा।

क्या हम ज्योति में चलते हैं?

अब हम इस पाठ का अर्थ समझ गये हैं, हमें चाहिये कि इन सत्यों पर अमल करेः क्या हम ज्योति में चलते हैं? क्या हमारी जीवनशैली पवित्रशास्त्र में अभिव्यक्त परमेश्वर के स्वभाव और सुइच्छा के प्रदत्त प्रकाशन के प्रति हमारी उत्तरोत्तर बढ़ती एकरूपता को दर्शाती है? क्या हमारी जीवनशैली और एक अविश्वासी की जीवनशैली में दिखाई देने योग्य विभिन्नता है? यदि एक निष्पक्ष अवलोकनकर्त्ता हमारे जीवनों को कुछ महीनों तक अध्ययन करे, तो क्या वह पर्याप्त प्रमाण एकत्रित कर पाएगा कि हमारे विश्वास की प्रमाणिकता के पक्ष में न्यायालय में तर्क दे सके, या फिर उसका तर्क 'प्रमाणों की कमी के कारण न्यायालय में निरस्त कर दिया जायेगा?

"परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं" (1 यूहन्ना 1:5)। क्या हम उस ज्योति से कुछ समानता रखते है? क्या हम ज्योति की संतानों के रूप में आचरण करते हैं, ज्योति के फल हम में है, जिनमें भलाई, धार्मिकता और सत्य होता है? [7]या फिर हम भी अविश्वासियों के समान आचरण करते है, अपने मन की व्यर्थता में, समझ के अंधकार में, और परमेश्वर के जीवन के बाहर जीवन जीते है?[8] क्या यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु मानने का हमारा विश्वास परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण से युक्त होकर सही प्रमाणित होता है, या फिर आत्मिक उपेक्षा की जीवन शैली, परमेश्वर के स्वभाव की समानता का अभाव, और उसकी सुइच्छा के प्रकाशन के प्रति विद्रोह के कारण झूठा साबित होता है?[9]

यदि हम कहें कि हम वास्तव में मसीही है और फिर भी अंधकार में चलते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं। इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि हमारा झूठ बोलना जानबूझकर है या फिर हम अपने समय के सतही सुसमाचार से धोका खा गये है। हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि हमने चौड़े फाटक से प्रवेश किया है और उस चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं जो विनाश को पहुँचाता है।[10] हमें स्वीकार करना चाहिये कि हम नाम मात्र के लिये जीवित कहलाते है यद्यपि हम अपने पापों और अपराधों में मृत है।[11] हमे आने वाले क्रोध से बचने के लिये भागना चाहिये और पश्चाताप

7 इफिसियों 5:8–9.
8 इफिसियों 4:17–20.
9 मत्ती 7:21,23.
10 मत्ती 7:13.
11 इफिसियों 2:1; प्रकाशितवाक्य 3:1.

एवं विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप आना चाहिये।[12] हमें उसे खोजना चाहिये जब तक वह मिल न जाये।

यदि हम कहें कि हम परमेश्वर के साथ सहभागिता रखते है और हम ज्योति में चलते हैं, तो हमने उद्धार के पूर्ण निश्चयता के लिये यूहन्ना की प्रथम जाँच पास कर ली है। हमने आशा की दीवार का पहला पत्थर रख दिया है जो पवित्रशास्त्र की आधारशिला पर है और वह शत्रु के संदेह के अग्निबाणों से अभेद्य है। हमें उत्साह प्राप्त करना है पर धोके में नहीं रहना है। हमें यूहन्ना के द्वारा निर्धारित अन्य जाँच भी पास करनी चाहिये है, और उनके प्रकाश में अपने जीवन का लगातार आत्म–परीक्षण करते जाना चाहिये।

12 मत्ती 3:7; लूका 3:7; याकूब 4:8.

अध्याय – 4

पाप का अंगीकार

यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं, तो अपने आप को धोका देते है, और हम में सत्य नहीं है। यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारें पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि हम कहें कि हमने पाप नही किया तो उसे झूठा ठहराते है, और उसका वचन हम में नहीं।

– 1 यूहन्ना 1:8–10

सच्चे हृदय–परिवर्तन की दूसरी जाँच इस अर्थ में अति महत्वपूर्ण है कि यह प्रमाणित करती है कि विश्वासी के उद्धार की निश्चयता पाप की अनुपस्थिति पर नहीं परन्तु इस बात पर आधारित है कि पाप की पहिचान या ज्ञान हो जाने के बाद उसके प्रति विश्वासी उचित प्रतिक्रिया करता है। सच्चे विश्वासी की पहिचान निष्पाप सिद्धता नहीं है, परन्तु यह कि वह पाप में अधिक से अधिक अरूचि लेता है और उसकी अभिलाषाओं के अधिकाधिक विरोध में रहता है। पाप की वास्तविकता उसे पश्चाताप और अंगीकार की ओर ले जाती है। यह सत्य पवित्रशास्त्र के कुछ सबसे बड़े उद्घोषों पर आधारित है जो विश्वासी और पाप के प्रति उसके दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं

> टुटा मन तो परमेश्वर के योग्य बलिदान हैय हे परमेश्वर,
> तू टूटे और पिसे हुए हृदय को तुच्छ नहीं जानता। (भजन संहिता 51:17)

> यहोवा की यह वाणी है, " ये सब वस्तुएं मेरे हाथ कि बनाई हुई है, इस प्रकार से ये सब वस्तुएं अस्तिव में आई। परन्तु में ऐसे व्यक्ति पर दुष्टि करूंगा, जो दीन और टूटे मन का हो और जो मेरे वचनों के करन थरथराता हो।" (यशा. 66:2)

धन्य है वे जो शोक करते है, क्योंकि वे सांत्वना पाएंगे। (मत्ती 5:4)

धन्य हे वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे है, क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। (मत्ती 5:6)।

हम परमेश्वर की संतान बन चुके है, इसका प्रमाण है कि जब हम हमारे पाप के बारे में जान जाते है तब विनम्रता, टूटेपन, पिसे हृदय, दुख–विलाप और थरथराहट के साथ प्रत्युत्तर देते है कि हमने व्यवस्था का उलंधन किया है। परमेश्वर इस सत्य को हमारे आत्म–विश्लेषण के आरम्भ में प्रस्तुत करते हैं और यह उनकी बुद्धि का महान प्रदर्शन है। यदि इस पाठ का सत्य हमें बाद में पता चले, तो संभव है कि हम अपने आत्म–विश्लेषण में अति कठोर हो जाये और एक झूठी भर्त्सना का शिकार होकर आशा खो दे। बड़ी आसानी से हम पहली जाँच की गलत व्याख्या कर सकते हैं, और गलत अनुप्रयोग कर सकते है, और यह मानने की दिशा में आगे बढ़ सकते है। हम जो ज्योति से बार–बार कुछ दूर चले जाते हैं, वह हमारे हृदय परिवर्तन न होने का प्रमाण है। परन्तु हमारे आत्म–विश्लेषण के आरम्भ में ही परमेश्वर साबित करते है कि पाप के साथ हमारा बार–बार होने वाला संघर्ष हमारे विश्वास के अंगीकार को अप्रमाणित नहीं करता, परन्तु उसे सत्यापित करता है। हम जानते हैं कि हम उसे जानते हैं, इसलिए नहीं कि हम बिना पाप के है पर इसलिए कि पाप के प्रति हमारा दृष्टिकोण तत्वरूप में बदल गया हैः हमारे भीतर पाप के प्रति घृणा बढ़ती जा रही है, हम टूट चुके हैं, और उसका अंगीकार करते है।

विश्वासी जन का पाप के साथ नया संबंध

अभी कुछ समय पहले हृदय–परिवर्तन करने वाला अकसर यह समाचार देता है कि उसका परमेश्वर के साथ एक नया संबंध बन गया है। हालांकि वह नहीं समझता कि इसका विपरीत कथन भी सत्य हैः अब पाप के साथ भी उसका एक नया संबंध है। वास्तव में, परमेश्वर के साथ उसके नये संबंधों की वैधता का सत्यापन उसी परिमाण में हो सकता है जिस परिमाण में पाप के साथ उसके संबंध बदल चुके है।

नये जन्म और हृदय–परिवर्तन से पूर्व, पापी जन स्वयं से एवं सुख से प्रेम करने वाला और परमेश्वर एवं भले कामों से घृणा करने वाला व्यक्ति है।[1]अय्यूब ने यह पहिचाना कि हृदय से अपरिवर्तित व्यक्ति अधर्म की प्यास रखता है और उसे पानी के समान पीता है।[2]सुलैमान की बुद्धि स्वाभाविक मनुष्यों को उजागर करती है कि वे न केवल धार्मिकता का मार्ग त्याग देते हैं कि अंधकार के मार्गों पर चले, पर बुरा करने में आनन्दित और उसकी विकृति में प्रसन्न होते है।[3] बुराई के प्रति इस रूझान और सहभागिता का कारण सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप में वर्णित है

1 रोमियों 1:30; 2 तीमुथियुस 3:2–4.

2 अय्यूब 15:16.

3 नीतिवचन 2:13–14.

परन्तु भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के परामर्श में विशेष रूप में वर्णित है जो पाप में पतित मनुष्य के हृदय को "सबसे अधिक धोका देने वाला और अत्याधिक दुष्ट" कहता है। वास्तव में यिर्मयाह मानवीय हृदय की तत्वतः विकृति और पतन से इतना अधिक क्षुब्ध था कि वह साश्चर्य उद्घोष करता है – "उसे कौन समझ सकता है?" (यिर्मयाह 17:9)। यह पाप में पतित मानव हृदय स्वाभाविक मनुष्यों में पाप के लिये अत्याधिक अनुराग उत्पन्न करता है और परमेश्वर और धार्मिकता के लिए उतनी ही घृणा उत्पन्न करता है।

किन्तु हृदय–परिवर्तन के महान कार्य में परमेश्वर अपनी समानता की सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में, हृदय का पुनः सृजन करता है।[4] यह तत्व रूप में बदल चुका हृदय नये और बदले हुये अनुरागों को उत्पन्न करता है। स्वयं के प्रति प्रेम का स्थान परमेश्वर के लिये प्रेम, और अधर्म की भूख–प्यास का स्थान, धार्मिकता की भूख प्यास ले लेती है।[5]सरल शब्दों में कहे तो मसीहीजन अब परमेश्वर से प्रेम करता है जिससे वह पहले घृणा करता था, और अहं से घृणा करता है जिस से वह कभी प्रेम करता था। अब वह उस धार्मिकता की लालसा करता है जिसे कभी तुच्छ जानता था और उस अधार्मिकता को तुच्छ जानता है जिस पर वह कभी घमण्ड करता था।

कोई तर्क कर सकता है कि विश्वासीजन के तत्व रूप में बदल चुके हृदय की यह व्याख्या वास्तविक नहीं है। अंत के दिनों से संबंधित धर्मविज्ञान पर अत्याधिक निर्भर होने का परिणाम संभव है कि विश्वासी के वर्तमान उद्धार की आशीष के विषय में तर्क करे कि वह अंतिम रूप में महिमा प्राप्त करने पर ही मिलेगी। वे यह तर्क भी दे सकते हैं कि यह वर्णन बाइबल के अनुकूल नहीं है। वे प्रतिक्रिया में यह प्रश्न कर सकते है, "यदि यही सत्य है तो फिर मैं अब भी पाप से क्यों संघर्ष करता हूँ?" उत्तर पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप में दिया गया है। यद्यपि हमें पाप के साथ विश्वासी के बड़े और लगातार चलने वाले संघर्ष को कभी भी कमतर नहीं बताना चाहिये, साथ ही हमें नये–जन्म या पुनः जन्म की सामर्थ या व्याख्या को भी कमतर करके नहीं बताना चाहिये। विश्वासी का पाप के साथ संघर्ष इसलिए नहीं है कि पुनः जन्म या नया जन्म कम सामर्थी है, जैसा हमने वर्णन किया है परन्तु इसलिए कि विश्वासीजन का नया हृदय अब भी एक बड़े और दुर्दान्त शत्रु – शरीर के विरोध का सामना करता है। यद्यपि "शरीर" की अवधारणा को परिभाषित करना कठिन है, हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि पुराने मनुष्यत्व का कुछ भाग जो विश्वासी में बचा रह जाता है, तब तक बना रहेगा जब तक कि उसका महिमाकरण न हो।[6]विश्वासी के व्यक्तित्व के कुछ पहलू तब भी बिना छुटकारा पाये उसमें रहते हैं जो उसे परीक्षाओं के आधीन लाते हैं और उस नये मनुष्यत्व से युद्ध करते है जो उसमें पुनः सृजा गया है। पौलुस ने ऐसे युद्ध की वास्तविकता को गलातिया की कलीसियाओं को लिखे पत्र में इन शब्दों में वर्णित किया है –

4 इफिसियों 4:24.

5 मत्ती 5:6

6 ohn MacArthur, *The MacArthur Study Bible* (Nashville: Thomas Nelson, 1997), 1704.

''शरीर तो पवित्रात्मा के विरोध में और पवित्रात्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है'' ये तो एक दूसरे के विरोधी है, कि जो तुम करना चाहते हो वह न कर सको (गलातियों 5:17)।

भले ही विश्वासी पाप से संघर्ष करेगा और कभी–कभी पराजित भी होगा किन्तु उसका हृदय और अनुराग दोनों रूपान्तरित हो चुके है। अब पाप उसके लिये आनन्द और गर्व करने का कारण नहीं, परन्तु विलाप और अंगीकार करने का कारण है। वास्तव में, यह विलाप जो अंगीकार की ओर प्रवृत करती है, उसके हृदय–परिवर्तन के सबसे बड़े प्रमाणों में से एक है। अब वह आगे शैतान की संतान या अनाज्ञाकारिता का पुत्र नहीं रहा परन्तु परमेश्वर की एक संतान और मसीह यीशु में एक नयी सृष्टि है।[7] इस कारण अब वह उस पाप से तृप्त नहीं होगा, जिसे पाकर वह पहले मगन होता था, पर अब वह पाप उसमें विरक्ति उत्पन्न करता है और उसमें भाग लेकर वह क्षुब्ध हो जाता है। इस कारण, अवश्य है कि वह अंगीकार करे और उस से स्वयं को मुक्त करे।

वास्तविक अंगीकार

1 यूहन्ना 1:9 में यूहन्ना बताते हैं कि वास्तविक हृदय परिवर्तन के बड़े चिन्हों में एक व्यक्ति का पाप–अंगीकार है। इस कारण, अवश्य है कि हम जान ले कि वास्तव में अंगीकार क्या है। शब्द 'अंगीकार' का अनुवाद मूल ग्रीक शब्द homologeo से हुआ है जो दो शब्दों से बना है, homos अर्थात् एक समान और logos अर्थात् 'वचन'। इसका शाब्दिक अर्थ है – ''एक समान वचन या बातें कहना।'' इस प्रकार अंगीकार का शाब्दिक अर्थ है परमेश्वर के साथ सहमत होना और वही कहना जो परमेश्वर कहते है कि हमने पाप किया है और हमारा पाप जघन्य है। जब ऐसा अंगीकार सही होता है, उसमें दुख और मन का टूटापन भी शामिल होता है।

यद्यपि विश्वासी जन के जीवन में पवित्रता में बढ़ने और पाप पर अधिक सामर्थ प्राप्त करने के चिन्ह दिखाई देते हैं, वह कभी भी पाप के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं होता जब तक कि वह स्वर्ग में महिमाकरण न प्राप्त करे। यहाँ तक कि सबसे अधिक परिपक्व विश्वासी भी पाप करेंगे। किन्तु उस पाप के प्रति उसकी प्रतिक्रिया साबित करेगी कि वह अब हृदय–परिवर्तन से वंचित अनाज्ञाकारिता में जीने वाला परमेश्वर से दूर और उसकी पिता समान कृपा के बाहर एक संतान नहीं है परन्तु वह परमेश्वर की संतान और उसके घराने का सदस्य, उसके ईश्वरीय अनुदेशो और अनुशासन दोनों के आधीन है।[8] जब विश्वासी पाप करता है, परमेश्वर विश्वासयोग्यता से उस पाप को उजागर करता है और उसे पवित्रात्मा की सेवकाई[9]

7 यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 5:17; इफिसियों 2:2; 1 यूहन्ना 3:12.

8 इफिसियों 2:2; इब्रानियों 12:5–11.

9 *कायल करना* और *पाप का बोध* शब्दों को बहुत गलत समझा गया है। *पाप का बोध* शब्द यूनानी भाषा के शब्द *एलिऐग,* से अनुवादित होकर निकला है, जो सबसे उत्तम रूप में अभियोगपक्ष के वकील के कार्य द्वारा समझा जा सकता ह" जो अभियुक्त का दोष सिद्व करने के लिये मेहनतपूर्वक प्रमाण प्रस्तुत करता है। इसका अंतिम

के द्वारा उसके पाप का बोध कराता है।[10] यद्यपि परमेश्वर चाहे तो विश्वासी का पाप प्रगट करने के लिये बहुत से स्वाभाविक या प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर सकता है, जैसे कि पवित्रशास्त्र का अध्ययन, एक विश्वासयोग्य भाई की फटकार, यहाँ तक कि कलीसिया द्वारा परिनिन्दा, जो भी हो यह परमेश्वर की कृपा का अलौकिक कार्य है। विश्वासी के द्वारा प्रत्युत्तर में उसके पाप और उसकी गम्भीरता का अंगीकार किया जाता है, तब वह परमेश्वर की ओर टूटे और पिसे मन को फिराता है, अपने पाप का अंगीकार करता है, और क्षमा–याचना करता है।

एक बहुत ही उपयोगी उदाहरण भजन संहिता 51:1–4 में है, जो बाइबल सम्मत अंगीकार को दर्शाता है, जिसे दाऊद ने बतशेबा के साथ पाप में गिरने के बाद लिखा जब नातान नाम भविष्यद्वक्ता ने उसे उसके पाप के लिये फटकारा,

> ''हे परमेश्वर अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर,
> अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
> मेरे अधर्म से मुझे पूर्णतः धो दे, और मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर।
> क्योंकि मैं अपने अपराधों को मानता हूँ,
> और मेरा पाप निरन्तर मेरे सम्मुख रहता है।
> मैंने केवल तेरे ही विरूद्ध पाप किया है
> और जो तेरी दृष्टि में बुरा है वही किया है,
> इसलिए तू अपनी बात में खरा और न्याय करने में सच्चा ठहरता है।

ध्यान दे, पहली बात, दाऊद यद्यपि अपने पाप के कारण टूट चुका है, वह भय से निष्क्रिय अथवा आशारहित अवसाद में नहीं है। परमेश्वर की प्रेममय करूणा और बड़ा तरस उसे आवश्यक आत्मबल देता है कि वह क्षमा पाने की बड़ी आशा रखते हुये वह अपने पाप का अंगीकार करे। तब हमें जो मसीह में है, परमेश्वर के पास जाने और अपने पापों का अंगीकार करने के लिये कितना अधिक प्रोत्साहित होना चाहिये? क्या परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा नहीं की कि – ''वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)? क्या हम से नहीं कहा गया कि हमारा सबसे अधिक विश्वसनीय संबल, हमारा महायाजक है, जो हमारी निर्बलताओं में हम पर तरस खाता है और हमारी दशा जानता है, क्योंकि वह हमारी तरह सब बातों में परखा तो गया पर निष्पाप ठहरा? क्या परमेश्वर स्वयं हमें प्रोत्साहित नहीं करते कि हम हियाव के साथ उनके अनुग्रह के सिंहासन के पास आये ताकि, ''हम पर दया हो, और अनुग्रह पाए कि आवश्यकता के समय हमारी सहायता हो'' (इब्रानियों 4:15–16)? प्रिय मसीहियों, यदि हमारे पाप और पराजय के बीच यदि हम यह निर्देश पाए कि परमेश्वर *के पास* आने के बदले

परिणाम मात्र यही नहीं होता कि विश्वासी अपने पापों को महसूस करता है, परंतु उसे उनका बोध हो चुका होता है और इस तरह वह अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करता है अथवा मानता है।

10 यूहन्ना 16:8,13; रोमियों 8:14; 1 यूहन्ना 2:27.

परमेश्वर *से* दूर भागो, तो हमें यह समझ लेना चाहिये कि ऐसे निर्देश का उद्गम स्वर्ग की ऊँचाई से नहीं परन्तु नरक की गहिराई से है।

दूसरा, हमें ध्यान देना चाहिये कि अपने पाप के प्रति दाऊद में घृणा और उस पाप से शुद्ध होने की अभिलाषा है। नये जन्म या पुनः जन्म से वंचित व्यक्ति अपने पापों से शुद्ध होने की अभिलाषा नहीं करता, वह केवल उसके उजागर होने से बचना चाहता है और उसके बुरे परिणामों से बचना या मुक्त होना चाहता है। साथ ही यदि उसे शुद्ध किया भी जाए, वह उसे स्वीकार नहीं करेगा। उसकी भूख नहीं मिटेगी और हृदय संतृप्त न होगा, यदि वह एक बार फिर उसी गन्दगी से भरे पात्र में से न खाए और उसी दुर्गन्धमय कीच में न लौटे। इसके अतिशय विपरीत जब मसीहीजन उस पाप से घृणा करता है जो उसने कर लिया है। वह उन वस्त्रों से भी घृणा करता है जो उसने नैतिक पाप करते समय पहने थे, और उन्हें प्रदूषित, अशुद्ध, और संक्रमण युक्त मानता है।[11] उसका हृदय टूटा, पिसा और पछतावे और विलाप से भरा होता है। अंत में, उसकी प्रतिक्रिया प्रदर्शित करती है कि वह वास्तव में एक नयी सृष्टि है, पुरानी बातें बीत चुकी है, और नयी आ चुकी है![12] वह पाप जो कभी उसके लिये स्वादिष्ट व्यंजन था, अब गन्दगी बन चुका है, और पाप का जीवन जो कभी सुगंधमय बिस्तर था अब कीच और मल में लोटने जैसा है।

तीसरा, हमें दाऊद के 'धर्मी ठहरने' और परमेश्वर के सही ठहरने का विचार भी करना चाहिये। जब भविष्यद्वक्ता नातान ने दाऊद के गुप्त पाप के लिये उसे लताड़ा और दोषी ठहराया। दाऊद ने कोई बहाना नहीं बनाया परन्तु सबके सामने खुलकर उस पाप का अंगीकार किया, "मैंने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है!"[13] भजन संहिता 51:3–4 में वह और भी अधिक स्पष्ट रूप में कहता है:

> क्योंकि मैं अपने अपराधों को मानता हूं,
> और मेरा पाप निरंतर मेरे सम्मुख बना रहता है।
> मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है,
> और जो तेरी दृष्टी में बुरा है वही किया है
> इसलिये तू अपनी बात में खरा,
> और न्याय करने में सच्चा ठहरता है।

दाऊदा आरम्भ में कहता है कि वह उसका पाप जानता था।[14] वह उसे परमेश्वर की दृष्टि से देख सका और समझ सका कि उसके पाप की प्रकृति कितनी जघन्य और उसके परिणाम कितने

---

11 लैव्य. 13:52–57; 15:4; यहूदा पद 23.

12 2 कुरिन्थियों 5:17.

13 2 शमूएल12:13.

14 *जानना* शब्द इब्रानी भाषा के *यादा* शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है जानना, ग्रहण करना, मानना; किसी व्यक्ति को घनिष्टता से जानना या किसी चीज को अनुभव से जानना।

भयानक है। उसने यह भी माना कि यद्यपि उसने उरियाह को मरवाकर उसके विरूद्ध, व्याभिचार करके बतशेबा के विरूद्ध, और राजा एवं चरवाहे के रूप में अपनी शपथ का उलंघन करके इस्राएल के लोगों के विरूद्ध पाप किया था, अंतिम रूप में उसने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया था। और उसके पाप का यह पहलू ही उसके पाप को अधिक घृणास्पद बनाता है।

अंत में दाऊद ने स्वीकार किया कि उसके पाप का मूल्यांकन करने और उसे दण्ड देने में परमेश्वर सही था। जब परमेश्वर ने आदम के प्रथम पाप का सामना बागीचे में किया, आदम ने पाप का दोष स्त्री पर डाल दिया और अंत में परमेश्वर पर, आदम ने कहा – "जिस स्त्री को *तूने मेरे साथ रहने के लिये दिया,* उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया" (उत्पत्ति 3:12)। इसके विपरीत, दाऊद ने अपने पाप का दोष बाँटने का कोई प्रयत्न नहीं किया, परन्तु खुलकर मान लिया कि जो परमेश्वर ने उसके बारे में कहा वह सच था। वह अपने पाप के विषय में परमेश्वर के साथ सहमत था और उसने भी वही बात कही। यह सच्चे अंगीकार का चिन्ह है।

अंगीकार मसीही व्यक्ति की पहचान है

कुछ लोगों का निष्कर्ष है कि पवित्रता में बढ़ने पर विश्वासी के जीवन में पाप का अंगीकार करने की आवश्यकता कम होती जायेगी, किन्तु इसका उलट ही सत्य है। जब विश्वासी पवित्रीकरण में बढ़ता है, वह पाप के अधिकार से अधिक से अधिक मुक्ति का अनुभव करता है, और उस बड़ी विजय के साथ जीवन में चलता है। किन्तु उसी समय वह परमेश्वर की पवित्रता की अधिक सही समझ और अपने जीवन में पाप के प्रति अधिक संवेदनशीलता को विकसित करता है। परिणामस्वरूप, उसके जीवन में टूटेपन की अधिक गहिराई और गम्भीर अंगीकार के चिन्ह दिखते हैं। परिपक्व पवित्रजन नये–नये विश्वासियों की अपेक्षा अधिक पवित्रता में चलते है, फिर भी मसीह में शिशुओं की अपेक्षा पाप के प्रति उनके दुख और अंगीकार की गहिराईयाँ और आवृतियाँ अधिक होती है। इसका कारण है कि परमेश्वर की पवित्रता और स्वयं का पाप उसके लिये अधिक बड़ी वास्तविकताएँ बन जाते हैं।

यीशु ने हमें सिखाया कि वास्तविक मसीही जीवन में विलाप एक चिन्ह है।[15] किन्तु यह विलाप ऐसा नहीं है कि वह अन्य सभी ईश्वरीय भावनाओं को दबा दे और जिसका अंत अवसाद में है। वह शोक जिसकी बात यीशु करते हैं वह राहत और आनन्द की ओर ले चलता है। जैसे–जैसे एक मसीही परमेश्वर की पहिचान के ज्ञान में बढ़ता है, उसकी स्वयं के प्रति समझ और पाप का ज्ञान भी बढ़ता है। ऐसा प्रकाशन उचित रूप में समझने पर अधिक गम्भीर शोक उत्पन्न होता है परन्तु अवसाद नहीं। क्योंकि जैसे–जैसे मसीही परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ता जाता है, वह परमेश्वर

15 मत्ती 5:4.

के अनुग्रह को और भी अधिकाई से समझता है, जो मसीह के व्यक्तित्व और यीशु मसीह के कार्यों में है। ऐसा अनुग्रह मसीहीजन को अपने पाप का खुलकर अंगीकार करने और क्षमा प्राप्त करने में प्रवृत करता है – ऐसे आनन्द के साथ जो वर्णन से बाहर है और "महिमा से परिपूर्ण" है (1 पतरस 1:8)। किन्तु इस रूपान्तरण की सबसे अद्‌भुत बात यह है कि विश्वासी को अपने कामों में कम से कम, और मसीह के सिद्ध और अपरिवर्तनीय कार्य में अधिक से अधिक आनन्द मिलता है। इस प्रकार, धीरे–धीरे, विश्वासीजन मूर्तिपूजा से छूटता जाता है और परमेश्वर में आनन्द और उद्धार की निश्चयता पाता है क्योंकि इन दोनों के लिये मसीह उसका एकमात्र स्रोत बन जाता है।

शैतान हमें निश्चय दिलायेगा कि पाप के प्रति हमारी अति जागरूकता हमें दोषी ठहराने वाले आत्म विश्लेषण की ओर लेकर जाएगी और सबके सामने हमारे पाप का खुलकर अंगीकार हमें परमेश्वर के समक्ष क्रूर निन्दा के योग्य ठहरा देगा। किन्तु यह सब सत्य से बहुत दूर विचार है। पाप के प्रति हमारी अधिक जागरूकता और अयोग्यता हमारी आँखों को परमेश्वर के द्वारा मसीह में किए गए सिद्ध कार्य पर लगाएगी और सबके सामने खुलकर किया गया हमारा अंगीकार हमारे स्वर्गीय पिता की ओर से क्षमा और शुद्धि का परिणाम देगा। हमारे जीवनों में पाप की गम्भीरता को समझना मन को उचाट करने वाला पतनोन्मुख मार्ग नहीं है। यदि हम सुसमाचार को सही रूप में समझते हैं, तो यह मार्ग स्वतंत्रता, निश्चयता , और आनन्द का मार्ग है।

अंधी सिद्धता

पवित्रशास्त्र प्रमाणित करते हैं कि वास्तविक हृदय–परिवर्तन के सबसे बड़े प्रमाणों में से एक है, परमेश्वर के सामने पाप की पहिचान करने वाला, एक टूटा और पिसा हुआ मन, एक खुला और सच्चा अंगीकार करने वाला जीवन किन्तु उसी अंशों में झूठे हृदय–परिवर्तन के सबसे बड़े प्रमाणों में एक है – पाप के प्रति अंधापन, हृदय की कठोरता, और सच्चे अंगीकार के बिना जीवन।

1 यूहन्ना 1:8–10 में प्रेरित यूहन्ना हमें तीन भयंकर निष्कर्ष देते हैं जो उस व्यक्ति के जीवन से संबंधित है जो मसीह में विश्वास का दावा तो करता है परन्तु पश्चाताप और अंगीकार के लिये कारण नहीं मानता। प्रथम, ऐसा व्यक्ति स्वयं को धोका दे रहा है। वह व्यक्ति कितना अधिक भ्रम में है, जो विश्वास करता है कि उसने कितने दिन या घण्टे, परमेश्वर की व्यवस्था में सम्पूर्ण समानता और लगातार अनुकृति में बिताये है?[16] वह कितने बड़े धोके के शिखर पर है कि स्वयं को उस सिद्धता में देखता है, जैसा हमारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है?[17] कितने लम्बे समय तक उसके विवेक को जलते लोहे से दागा गया है कि वह यीशु मसीह के बाजू में खड़ा होकर चुनौती देता

16 गलातियों 3:10; याकूब 2:10.

17 मत्ती 5:48.

है – "तुम में से कौन है जो मुझे पापी ठहराता है?"[18] ऐसी सिद्ध दृष्टिहीनता असंभव–सी लगती है पर ऐसा भ्रम असामान्य नहीं है। मसीहत का दावा करने वाले भीड़ की भीड़ सुसमाचारकीय कलीसियाओं में प्रत्येक प्रभु के दिन अर्थात् रविवार को एकत्रित होते हैं, पर उनके पाप विरले ही उन पर उजागर होते है, या उनके विवेक को बलपूर्वक बाधित करते हैं कि उनके हृदय टूट जाये और मुँह खुले रह जाये, जब परमेश्वर के समक्ष वे छोटे से छोटा अंगीकार भी कर ले। हालांकि इन में से कुछ के लिये आधुनिक मंच की निर्बलता और उनके द्वारा पाप के विरूद्ध प्रचार से इंकार को दोषी ठहराया जा सकता है, किन्तु केवल ये ही कारण नहीं है। हालांकि यह सत्य है कि पवित्रात्मा प्रचार के द्वारा कार्य करता है, वह केवल इतने तक ही सीमित नहीं है। यदि लोगों की यह भीड़ सचमुच परमेश्वर की होती, वह उन्हें उनके पाप दिखाएगा और अंगीकार कराएगा, उसके लिये वह समकालीन प्रचारक का उपयोग कर सकता है और नहीं भी। फिर यह कैसे होता है कि बहुत सी सुसमाचारकीय कलीसियाएँ उनके पाप से अनजान और अंगीकार के बिना है? इसका कारण है कि अधिकांश रूप में उनका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है। वे सिय्योन में चैन से रहते है और यंत्रवत उसके गीतों को दोहराते रहते हैं पर उनमें कोई समझ नहीं है।[19] उनका एक नाम है कि वे जीवित हैं पर वे मृत हैं।[20] वे मानते हैं कि वे धनवान है और उन्हें कोई आवश्यकता नहीं है, पर वे नहीं जानते कि वे अभागे, दयनीय, कंगाल, अंधे, और नंगे है।[21]

पास्टरों के बीच यह बात अच्छी तरह ज्ञात है कि जब परमेश्वर मण्डली के पाप उजागर करता और मनों को तोड़ता है, तब सदैव वे जो सबसे अधिक भक्त और समर्पित है, वे आँसुओं को बहाते हैं और खुलकर पाप का अंगीकार करते है, जबकि सबसे अधिक शारीरिक एवं उदासीन सदस्य अपनी–अपनी जगहों पर पत्थर के समान ठण्डे बैठे रहते है। वे परमेश्वर की आत्मा से प्रभावित नहीं होते, यहाँ तक कि उनके चारों और बैठे खुलकर अंगीकार करने वाले और टूटे हृदय के बेहतर व्यक्तियों का भी उन पर कोई असर नहीं पड़ता। एक ही मण्डली में ऐसे विरोधाभास का क्या कारण है? उत्तर अति सरल है और निष्ठुर भी: "हम सब परमेश्वर के न्याय के बड़े दिन का पूर्वाभास कर रहे हैं, जब बकरियों की पहिचान की जाएगी और उन्हें भेड़ों से अलग किया जाएगा। भेडें वे हैं जो पवित्रात्मा के कायल करने के कार्य के प्रति संवेदनशील है और अंगीकार तक पहुँचते हैं। जबकि बकरियाँ वे है जो अपने उपर पाप का कोई दाग–धब्बा नहीं पाते, और अपने सुविधाजनक धर्म में सिद्ध चैन और संतुष्टि पाते है। पुनः कहता हूँ स्थिति को बदतर बनाते हुये, उनकी इस असफलता को मंच से विरले ही उजागर किया जाता है, इस कारण प्रचारक का चुप रहना उनके विनाश पर मुहर कर देता है।

---

18 यूहन्ना 8:46.

19 व्यवस्थाविवरण 32:28; यशायाह 29:13; आमोस 6:1.

20 प्रकाशितवाक्य 3:1.

21 प्रकाशितवाक्य 3:17.

दूसरा निष्कर्ष जिस पर यूहन्ना पहुँचा है, वह यह है कि जो यह दावा करते हैं कि उनमें पाप नहीं वे सत्य से रहित है। इनमें वे लोग भी है जो मसीह पर विश्वास करने का दावा करते है परन्तु उनके जीवनों में लगातार पाप के बने रहने के विषय में अंधे है या फिर वे परवाह नहीं करते। पाप के प्रति कायलपन, मन का टूटना और अंगीकार जैसी बातें उनकी दिनचर्या से नदारद रहती है। साथ ही पाप के कारण मन का टूट जाना उनके लिये एक अजीब भावना है जो उनमें पाई जाती है जिनका आत्मविश्लेषण अतिवादी है और जिनकी धार्मिक धुन नागरीयता और सम्मानीयता की सीमाओं से बाहर निकल चुकी है। वे अपने लिये कभी भी पाप रहित सिद्धता का दावा नहीं करेंगे पर मन में टूटेपन या अंगीकार के बिना वे यह दर्शाते है कि उनमें यह सिद्धता विद्यमान है।

ऐसे व्यर्थ और खतरनाक भ्रम का सामना करने के लिये यूहन्ना अपने पाठकों को तीन पदों के बीच में दो बार चेतावनी देते है।

> यदि हम कहे कि हम में पाप नहीं... हम में सत्य नहीं है (पद 8)
>
> यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया... उसका वचन हम में नहीं (पद 10)

यह महत्वपूर्ण बात है कि हम यूहन्ना की चेतावनी को सही अर्थों में समझें। वह केवल कुछ अपरिपक्व विश्वासियों को डॉंट–फटकार नहीं रहा था, जो पाप के बारे में सतही अवधारणा रखते है। पर वह उन से बातें कर रहा था जो अपने जीवनों में कोई पाप नहीं देखते और सुसमाचार और उससे जुड़े उद्धार से रहित है, जो अंगीकार करने का उचित कारण नहीं समझते। वे अंधों के अंधें मार्गदर्शक हैं जिनका एक पाँव पहले ही गड़ढ़े में पड़ चुका है।[22]

सुसमाचार के वचन ग्रहण करने का अर्थ है वह कुंजी ग्रहण करना जो वास्तविकता विशेषकर व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व की वास्तविकता को सही स्वरूप में समझने का द्वार खोलती है। केवल सुसमाचार में ही दार्शनिक की चेतावनी – ''स्वयं को जानो'' का वास्तविक अमल संभव है। वे जो सुसमाचार के उद्धार करने वाले ज्ञान को रखते हैं, उन्हें उनके हृदयों की विकृति और पाप में पतन की दशा दिखाई देती है, और वे उनके पाप की जघन्य प्रवृति को समझते है। उन्हें यह बात समझाई जाती है कि वे मसीह से दूर हो गये थे, और यही वह ज्ञान है जो उन्हें परमेश्वर के पास लेकर आया था। एक बार हृदय–परिवर्तन के बाद, पाप के प्रति उनकी संवेदनशीलता लगातार बढ़ती जाती है और पाप के प्रति अरूचि और पाप का अंगीकार भी बढ़ता जाता है।

इसके विपरीत वे जो केवल भक्ति का स्वरूप रखते हैं, परन्तु कभी धर्मी ठहराने वाले और पुनः जीवन देने वाले सुसमाचार की सामर्थ का अनुभव नहीं किया, वे कभी भी उनके जीवन में पाप की उपस्थिति और उसके प्रति अरूचि दोनों को कभी भी अनुभव नहीं कर पाते। वे देखते हैं पर समझते नहीं वे सुनते हैं पर समझते नहीं।[23] वे ''मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, और उनके

22 मत्ती 15:14.

23 यशायाह 6:9; यिर्मयाह 5:21; यहेजकेल 12:2; मत्ती 13:14; मरकुस 4:12; लुका 8:10; युहन्ना 12:40; रोमियों 11:8.

मनों की कठोरता के कारण उनकी बुद्धि अंधकारमय हो गई है, उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है, वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गये है'' (इफिसियों 4:17–18)। यद्यपि वे स्वयं को धर्म से विभूषित करते और उन्हें निश्चय है कि वे अंधे को मार्ग दिखाने वाले है, अंधकार में बैठे लोगों के लिये ज्योति, और निर्बुद्धि को सुधारने वाले, और अपरिपक्व लोगों के शिक्षक है,[24] वे इस विश्व की सबसे बड़ी वास्तविकताओं में से एक – उनके अपने पाप – से अनजान है।

तीसरा, प्रेरित यूहन्ना यह निष्कर्ष निकालते है कि वह व्यक्ति जो दावा करता है कि उसमें पाप नहीं, परमेश्वर को झूठा ठहराता है। पाप का विश्वव्यापी होना, एक सबसे प्रमुख और लगातार बना रहने वाला विचार है जो समग्र पवित्रशास्त्र में प्रदर्शित या प्रवाहित होता है:"सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है'' (रोमियों 3:23)। "निष्पाप तो कोई भी मनुष्य नहीं है" (1 राजा 8:46)। "हम सब कई बातों में चूक जाते है" (याकूब 3:2)। पुराने नियम के सबसे अधिक धर्मपरायण पवित्रजनों को ले या प्रेरितों को, तब भी क्या हमारे पास मसीह को छोड़कर सिद्धता का एक भी उदाहरण है या आदम की सन्तानों के संबंध में सिद्ध होने का कोई दावा लिखित में है जिसने कभी पाप रहित सिद्धता को स्पर्श भी किया हो? यहाँ तक कि महान् प्रेरित पौलुस, जो 1 कुरिन्थियों 11:1 में लिखते है, ''जैसा मैं मसीह का अनुकरण करता हूँ, वैसा ही तुम भी मेरा अनुकरण करो'' उसने कभी सिद्धता का दावा नहीं किया वरन् फिलिप्पियों 3:12–14 में यह साक्षी दी:

> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं, पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

पवित्रशास्त्र में एक भी ऐसा पाठ (वृतान्त या पद) नहीं है जो पथभ्रष्ट या पवित्रजनों में पापरहित सिद्धता की संभावना की ओर संकेत भी करता हो। यदि हम मानते हैं कि परमेश्वर पवित्रशास्त्र का लेखक और संरक्षक है, और प्रत्येक वचन उसके मुख से निकलता है,[25] तब हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिये कि जो व्यक्ति स्वयं को नैतिक रूप में सही ठहराने के पक्ष में तर्क देता है, वह परमेश्वर के विरूद्ध तर्क करता है। उसने स्वयं को परमेश्वर के अभिमत के विरूद्ध रखा है और स्वयं को बेहतर रूप में भटका हुआ, और बदतर रूप में झूठा घोषित करता है। यह परमेश्वर की संतान का अभिमत, अभिवृति या कार्य नहीं है।

---

24 रोमियों 2:19–20.

25 मत्ती 4:4; 2 तीमुथियुस 3:16.

क्या अंगीकार हमारे जीवनों में एक वास्तविकता है?

निष्कर्ष के रूप में हमें इन सत्यों को ग्रहण करना चाहिये जो हमने सीखे है। प्रथम है, उद्धार की प्रकृति[26] – सुनिश्चित करती है कि यदि हम मसीहीजन है हम परमेश्वर की ज्योति में चलेंगे, और धीरे–धीरे उसके स्वभाव और इच्छा की समानता में ढ़लते जाएंगे। दूसरा, हम सही रूप में समझेंगे कि वे जो दृढ़तापूर्वक मसीह पर विश्वास करने का दावा करते है पर ऐसी जीवनशैली में जीते हैं जो परमेश्वर के व्यक्तित्व और इच्छा के विपरीत है, वे गलत विचार रखने के दोषी है, संभवतः हृदय से अपरिवर्तित है, और अनंत विनाश के खतरे में है। तीसरा, वास्तविक हृदय–परिवर्तन का प्रमाण पापरहित सिद्धता में नहीं है पर ऐसा जीवन है जिसमें वास्तविक पश्चाताप और अंगीकार के लक्षण है। अंत में वह जो मसीह में विश्वास का दावा करता है, और फिर भी पाप में जीता है, जिसमें हृदय का टूटापन और ईश्वरीय ताड़ना नहीं है, उसे अत्याधिक चिन्ता करने की आवश्यकता है।

इन महत्वपूर्ण सत्यों को सीखने के बाद हमें अपने जीवनों को और मसीही अंगीकारों को इनके प्रकाश में जाँचना चाहिये। क्या हम परमेश्वर की पवित्रता के ज्ञान में बढ़ रहे हैं, और हमारे जीवनों में पाप के प्रति अधिक से अधिक संवेदनशील बनते जा रहे है? क्या हमारे पाप के प्रति हमारी प्रतिक्रिया में अधिक से अधिक अरूचि या घृणा का भाव और निन्दा है? क्या हम उसके विरूद्ध संघर्ष करते है? क्या हमारे पापों को बोझ, परमेश्वर की दया के भाव के साथ हमें पश्चाताप और अंगीकार की दिशा में ले जाता है?[27] यदि हमारा उत्तर हाँ है, तो यह कुछ प्रमाण है कि परमेश्वर ने हम में उद्धार का कार्य किया है।

---

26 सुसमाचारिय मसीहत में बहुत लंबे समय तक, परमेश्वर का उद्वार प्रदान करने वाला कार्य केवल निर्दोष ठहराये जाने के रूप में देखा जाता है। उद्वार के दूसरे पहलू जैसे पुर्नज्जीवन और पवित्रीकरण को उपेक्षित कर दिया गया है।

27 रोमियों 2:4.

अध्याय – 5

परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना

यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते है, तो इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गए है। जो कहता है, "मै उसे जान गया हूं" और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, तो वह झूठा है और उसमें सत्य नहीं, परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है। इसी से हम जानते है कि हम उस में है।

– 1 यूहन्ना 2:3–5

अब तक हम वास्तविक हृदय–परिवर्तन के दो बड़े प्रमाण देख चुके हैं। प्रथम सच्चे मसीही परमेश्वर के प्रकाशन की ज्योति में चलना सीखेंगे और परमेश्वर के स्वभाव एवं इच्छा के अनुरूप ढ़लते जायेंगे। दूसरा मसीही पाप के साथ एक नया संबंध प्रदर्शित करेंगे। वे पाप के प्रति घृणा के भाव में बढ़ेंगे, और जब उनसे पाप हो जाएगा, वे पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर के सामने खुलकर उसका अंगीकार करेंगे।

जैसा कि यूहन्ना ने अपनी पत्री के अध्याय 2 में लिखा है; हम वास्तविक हृदय–परिवर्तन का एक तीसरा प्रमाण भी पाते है – विश्वासी परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेगा। इस अध्याय में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि इसका क्या अर्थ है और हम हमारे जीवनों में कैसे इस पर अमल करे।

विश्वास की जाँच

हमें यूहन्ना की प्रथम पत्री को लिखने का उद्देश्य स्मरण रखना चाहिये, उसने उन सत्यों को लिखा ताकि यीशु मसीह में विश्वासियों को उनके विश्वास का एक बाइबल–सम्मत प्रमाण मिले, कि वे जाने कि उनमें अनंतजीवन है।[1] परिणामस्वरूप यूहन्ना तीसरी जाँच के विषय में लिखते हुए अपने उस उद्देश्य को फिर से लिखता है, ''यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गए है'' (2:3)।

हमें इस पूरी पत्री में पढ़ते समय स्वयं को स्मरण कराना होगा कि यूहन्ना परमेश्वर के लोगों के बीच दो प्रकार के लोग – आत्मिक और शारीरिक के बीच अन्तर नहीं दर्शा रहे थे। यूहन्ना भेड़ों और बकरियों को अलग–अलग कर रहे थे यद्यपि उसका मूल अभिप्राय सच्चे विश्वासियों को उनके उद्धार का बाइबल–सम्मत निश्चयता देना था, वह बाद में उनको उजागर करता है जो मसीह पर विश्वास का दावा करते हैं, परन्तु हृदय से अपरिवर्तित रहते हैं। आज बहुतों के लिये ये वचन कठोर है और स्वीकारने में कठिन है। परन्तु फिर भी यूहन्ना एक पद्धति और शिक्षा का अनुसरण कर रहा था जिसे प्रभु ने मत्ती 7:17–19 में निर्धारित किया था – भले वृक्ष का प्रमाण उसके भले फल हैं, क्योंकि वृक्ष उसके फलों से पहिचाना जाता है।

यद्यपि यह बाइबल सम्मत सत्य है जिसे कलीसिया के इतिहास में सभी प्रमुख सेवकों द्वारा मान्यता दी गई है और यह स्थापित अंगीकारों में है, समकालीन सुसमाचारवादियों का बहुमत ऐसी भाषा को दोष लगाने वाली, कर्कश और प्रेमरहित मानता है। इस असामान्य प्रतिक्रिया का कारण उद्धार और अन्य संबंधित बातों का सतही विचार या समझ है। समकालीन सुसमाचारवाद में उद्धार को घटाकर मनुष्यों द्वारा मसीह को स्वीकार करने का निर्णय बना दिया गया है और उसके बाद का जीवन विश्वासी के लगातार सही निर्णय करते रहने पर पूरी तरह निर्भर है। यह माना जाता है कि चूंकि परमेश्वर का प्रेम दबाव नहीं देता, और अपनी इच्छा पूरी नहीं कराता, एक विश्वासीजन यदि चाहे तो उन्नति न करने का विकल्प चुन सकता है। वह परमेश्वर के शांत और सभ्य अनुदेशों के विरूद्ध बलवा कर सकता है और कभी भी सच्ची शिष्यता के किसी भी प्रारूप में न जाने का निर्णय ले सकता है। वह शारीरिक बना रह सकता है, जब तक कि वह महिमा में न पहुँचाया जाये और रूपांतरित न किया जाये। यद्यपि इस बात में कुछ सत्य अवश्य है, पर पूरा का पूरा विचार अस्वीकार करने योग्य है क्योंकि यह गलत शिक्षा है। यह सत्य है कि परमेश्वर का प्रेम जोर–जबर्दस्ती नहीं करता, यह भी समान रूप से सत्य है कि हृदय–परिवर्तन और पवित्रीकरण दोनों में मनुष्य की इच्छा एक आवश्यक तत्व है।

किन्तु इस अभिमत में कम से कम तीन प्रमुख धर्मशिक्षाओं का इंकार है जो उद्धार से अपृथकनीय है। प्रथम धर्मशिक्षा पुनरूज्जीवन की है, वह व्यक्ति जिसने पाप से पश्चाताप किया

1 1- 1 यूहन्ना 5:13.

और यीशु मसीह पर विश्वास किया है, उसने नया जन्म पाया है। वह एक नयी सृष्टि बन गया है और उसका स्वभाव और अनुराग नये बन चुके है। यह भी सत्य है कि वह अब भी शरीर, संसार और शैतान के विरूद्ध संघर्ष करता है, और स्वर्ग में अंतिम महिमाकरण के दिन तक सिद्ध नहीं बनेगा, तब भी वह उस नये व्यक्तित्व के लक्षणों को प्रगट करेगा जिसे उसने प्राप्त कर लिया है। हमें यह नियम स्मरण रखना चाहिए कि एक विवेकशील व्यक्ति की इच्छा और अनुरागों का निर्धारण उसका (नया) स्वभाव करता है।

दूसरी और तीसरी धर्मशिक्षा पवित्रीकरण के अपृथकनीय सत्य है और ईश्वरीय कृपा है। यदि हम पवित्रशास्त्र के प्रेरणा द्वारा लिखे जाने और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर विश्वास करते है तब प्रेरित पौलुस के साथ हम यह कहने का साहस कर सकते हैं कि परमेश्वर जिसने एक भला काम प्रत्येक विश्वासी के जीवन में आरम्भ किया है, वह उसे अवश्य पूरा करेगा।[2] क्योंकि यह परमेश्वर है जो विश्वासी में कार्य करता है, वही इच्छा देता है और कार्य करने की शक्ति भी, ताकि अपनी सुइच्छा को पूरा करे।[3] सच्चा विश्वासी परमेश्वर द्वारा सिखाया जायेगा और पवित्रात्मा द्वारा अगुवाई पायेगा।[4] और जब विश्वासी पाप करता है या परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करता है, परमेश्वर का पिता समान हाथ उसकी ताड़ना करता है ताकि वह परमेश्वर की पवित्रता का भागी बनें और पवित्रीकरण प्राप्त करे, जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखगा।[5] उसे अनुशासन सिखाया जायेगा यहाँ तक कि पीड़ा और दुख के द्वारा भी ताकि वह धार्मिकता के शान्तिमय फल को प्रगट करे।[6] यदि कोई परमेश्वर के साथ मसीह पर विश्वास करने के द्वारा पुत्रत्व का दावा करता है, और फिर भी शारीरिकता में और परमेश्वर के हस्तक्षेप के बिना जीवन जीता है, पवित्रशास्त्र उसकी भर्त्सना करते हुए उसे झूठा विश्वासी या अवैध पुत्र कहता है": ''परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ व्यवहार करता है वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? परन्तु यदि वह ताड़ना जो सबकी होती है, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, परन्तु व्याभिचार की संतान ठहरे'' (इब्रानियों 12:7–8)।

उद्धार की प्रकृति, परमेश्वर की कृपा की सामर्थ और उसकी प्रतिज्ञाओं की लगातार बनी रहने वाली विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है कि विश्वासी बढ़ेगा, परिपक्व बनेगा और उसमें नये जीवन के चिन्ह परिलक्षित होंगे। इसी कारणवश, यीशु यह कह सकते है, ''तुम उनके फलों से उन्हें जान लोगे'' (मत्ती 7:16–20)। इन सत्यों के कारण ही पौलुस विश्वासियों को चेतावनी

---

2 फिलिप्पीयों 1:6.

3 फिलिप्पीयों 2:13.

4 यूहन्ना 6:45; रोमियों 8:14; फिलिप्पीयों 3:15; 1 यूहन्ना 2:27.

5 इब्रानियों 12:10,14.

6 यूहन्ना 15:8,16; इब्रानियों 12:11.

दे सके थे कि आत्म–विश्लेषण और जाँच करके देखें कि वे विश्वास में है या नहीं।[7] इसी आधारशिला पर यूहन्ना ने अपनी पत्री में एक बाइबल सम्मत मानदण्ड दिया है जिसके आधार पर वे ऐसा कर सकते है।

परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता

इस पाठ और नये नियम में इसके समान अन्य बहुत से पाठों के आधार पर परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता सच्चे हृदय–परिवर्तन और परमेश्वर के साथ सही संबंधों के बड़े संकेतकों में से एक है। वचन के प्रति आज्ञाकारिता उद्धार की एक बड़ी लिटमस पत्र की जाँच है। यह सत्य सबसे अधिक स्पष्ट रूप में याकूब 2:17–20 में प्रगट है:

> वैसे ही विश्वास भी, यदि उसके साथ कार्य न हो, तो अपने आप में मृतक है। परन्तु कोई कह सकता है, "तुम विश्वास करते हो और मै कार्य करता हूं। तुम मुझे अपना विश्वास बिना कार्य के दिखाओ, और मै अपना विश्वास तुम्हें अपने कार्यों के द्वारा दिखाऊंगा।" तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक ही है तो तुम ठीक ठीक करते हो, दुष्टात्माएं भी विश्वास करती है और थरथराती है। परन्तु हे मुर्ख, क्या तू इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं कि कार्य के बिना विश्वास व्यर्थ है?

वे जो पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता और स्वरूप में एक समानता के पक्षधर है, वे जानते हैं कि याकूब के लेखन और प्रेरित पौलुस द्वारा विश्वास करने ही से धर्मी ठहरने की धर्मशिक्षा जो अतिस्पष्ट रूप में सिखाई गई है,[8] उन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। इसे सभी ने स्वीकार किया है और सुधारवादियों ने आगे बढ़ाया है।[9] दोनों प्रेरणा प्राप्त लेखक उद्धार के विषय में अलग–अलग दृष्टिकोण से बोल रहे है जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू है। प्रेरित पौलुस ने उद्धार के कारणों पर चर्चा की है जबकि प्रेरित याकूब उसके परिणामों की चर्चा करते है। इस प्रकार, दोनों ही लेखकों से हमें उद्धार में परमेश्वर के कार्य की युक्तियुक्त सम्पूर्ण तस्वीर मिलती है।

उद्धार केवल विश्वास करने से है और जो इससे हटकर विश्वास करते या शिक्षा देते है, वे शापित है।[10] किन्तु विश्वास के द्वारा प्राप्त उद्धार का परिणाम कार्य या व्यवस्था का आज्ञापालन है। परन्तु फिर भी हम इन कामों का श्रेय काम करने वाले को नहीं परन्तु परमेश्वर को देते हैं, जो अनुग्रह देता है।[11] वह व्यक्ति जो केवल विश्वास के द्वारा उद्धार पाता है वह ऐसा जीवन जीना

7 2 कुरिन्थियों 13:5

8 रोमियों 3:19–22; 4:1–25; गलातियों 2:16.

9 यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि सोला फिडे (लेटिन भाषा में "केवल विश्वास द्वारा" के लिये प्रयुक्त) द्वारा निर्दोष ठहराये जाने का सिद्वांत वह सच्चाई थी जिसने धर्मसुधारवाद की आग को प्रज्जवलित किया था।

10 गलातियों 3:10.

11 1 कुरिन्थियों 15:10; इफिसियों 3:7

आरम्भ करता है जो लगातार परमेश्वर की आज्ञाओं के अधिकाधिक अनुरूप है, किसी नयी प्राप्त इच्छा शक्ति के द्वारा नहीं, पर इसलिए कि वह नया जन्म पा चुका है।[12] उसे एक नया स्वभाव दिया गया है, वह एक नयी सृष्टि बन चुका है, और परमेश्वर का आत्मा उसमें निवास करता है।[13] पौलुस के शब्दों में – वह पुराने मनुष्यत्व के लिये मर चुका है और मृतकों में से जिला उठाया गया है ताकि जीवन के नयेपन की चाल चलें।[14] ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं जिसने मसीह के द्वारा हमसे मेल किया और जब हम उचित रीति से उन्हें समझते हैं, तो हम आराधना में उन्हें परमेश्वर का गुण मानते हैं।[15]

यह सत्य भी पौलुस के लेखन में आया है और केवल विश्वास के द्वारा उद्धार पाने के पक्ष में अन्य सभी पदों से अधिक उल्लेखित पद है "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा तुम्हारा उद्धार हुआ है – और यह तुम्हारी ओर से नहीं परन्तु परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के कारण नहीं कि कोई घमण्ड करे। क्योकिं हम उसके हाथ कि कारागिरी है, जो मसीह यीशु में उन भले कार्यों के लिए सृजे गए है जिन्हें परमेश्वर ने प्रारंभ ही तैयार किया कि हम उन्हें करें" (इफिसियों 2:8–10)।

प्रथम दो पदों में पौलुस उद्धार की पर्याप्तता या भरपूरी के पक्ष में तर्क करता है कि *उद्धार अनुग्रह के द्वारा केवल विश्वास ही से है; स्वयं के द्वारा (कामों के द्वारा) नहीं, परन्तु परमेश्वर का वरदान है अर्थात् कामों का प्रतिफल नहीं है ताकि कोई घमण्ड न कर सके।* पढ़ने वाले की बुद्धि का अपमान किये बिना इससे और अधिक स्पष्ट या सरल वर्णन कठिन है। पौलुस को और कितना स्पष्ट कहना चाहिये और इस कालजयी सत्य की शिक्षा और अभिरक्षा करनी चाहिये और क्या पवित्रशास्त्र के प्रत्येक पन्ने पर इसके पक्ष में बोलना (लिखना) चाहिये? गलातियों 2:16 में वह इतने ही स्पष्ट रूप में लिखता है, ''हम व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहराए जाते है, क्योंकि कोई मनुष्य व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहराया जायेगा।''

इफिसियों 2:8–9 में जितना स्पष्ट रूप में लिखा जा सकता है, उतना अधिक स्पष्ट रूप में घोषणा करने के बाद कि विश्वास ही धर्मी ठहरने का एकमात्र साधन है, पौलुस अपना ध्यान उन दो धर्मशिक्षाओं पर लगाता है जो इसके साथ–साथ है – परमेश्वर की कृपा और विश्वासी के जीवन में पवित्रीकरण का उसका कार्य। वे जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गये हैं वे परमेश्वर की कारीगरी है और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गये है जिन्हें परमेश्वर ने जगत की नींव रखे जाने से भी पहले उनके लिये ठहराया है ताकि वे उन कामों को करे या उनके अनुसार चलें। परमेश्वर धर्मी ठहराने के बाद छोड़ नहीं देता। उसने अपनी सामर्थ दिखाकर पाप

12 यूहन्ना 3:3,7; 1 पतरस 1:3,23.

13 यहेजकेल 36:26–27; रोमियों 8:9–11; 2 कुरिन्थियों 5:17.

14 रोमियों 6:1–6.

15 2 कुरिन्थियों 5:18.

की भर्त्सना से उद्धार इसलिए नहीं किया कि 'पाप की सामर्थ' से बचा न पाने की अक्षमता को दिखाए। बहुत से आधुनिक प्रचार–मंच इस सत्य को क्यों देख नहीं पाते? परमेश्वर जो सबसे बड़े पापी को धर्मी ठहरा सकता है, वह इस योग्य है भी कि सबसे बड़े पापी को पवित्र करे।[16] अनगिनत व्यक्ति प्रत्येक रविवार दर्शकदीर्घा में बैठते है, शारीरिक और अपवित्र दशा में, इसलिए नहीं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ असफल हुई पर इसलिये कि अभी तक उनका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है। वे भक्ति का रूप धारण तो करते हैं पर उसकी सामर्थ का इंकार करते हैं।[17] वे अपनी पहिचान मसीह के साथ दिखाते है पर वे व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते, मानों परमेश्वर ने उन्हें आज्ञापालन करने कोई व्यवस्था कभी नहीं दी है। वे उसे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहकर पुकारते हैं, पर वह जो कहता है, नहीं करते (लूका 6:46) अंतिम दिन वे अपने लिये सबसे भयानक आदेश सुनेंगे – ''मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, मेरे पास से दूर हो जाओ'' (मत्ती 7:23)।

यही कारण है कि यूहन्ना की प्रथम पत्री में दी गयी जाँच इतनी अधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक है, विशेषकर यह जो हमारे सामने है। उद्धार का प्रमाण पापरहित सिद्धता नहीं है, या आज्ञाकारिता का सिद्ध 'स्कोरकार्ड' नहीं है, परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ एक नया संबंध है, उनके प्रति एक वास्तविक रूझान है, उनको पालन करने की वास्तविक अभिलाषा और व्यवहारिक जीवन में उनका अधिकाधिक अमल और मन का टूटापन, जब कभी उनकी उपेक्षा हो जाये। व्यक्ति के हृदय परिवर्तन से पहले उसके और परमेश्वर की आज्ञाओं के बीच ऐसे संबंध नहीं थे, पर जीवन ऐसा था मानों परमेश्वर ने आज्ञा मानने की कोई व्यवस्था ही नहीं दी थी या बुद्धि के निर्देश जिनकी सराहना और अनुपालन करना आवश्यक हो। वह परमेश्वर की व्यवस्था समझने का यत्न नहीं करता और न उन पर अमल करने में प्रयत्नशील होता है। उसकी लगातार अनाज्ञाकारिता उसके विवेक पर कोई असर नहीं करती और उसे पश्चाताप करने की दिशा में नहीं ले जाती है। किन्तु जब यही व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा के द्वारा सुसमाचार के प्रचार से जिलाया जाता है, तब वह न केवल परमेश्वर पर उसके वचन के साथ भी एक नये संबंधों में प्रवेश करता है, परन्तु वह स्वयं को परमेश्वर की आज्ञाओं में निहित बुद्धि और सौंदर्य के प्रति बढ़ता हुआ सम्मान का भाव प्राप्त करता है। वह एक वास्तविक अभिलाषा पाता है कि परमेश्वर ने क्या कहा उसे जानें और उसके अनुसार चलें। यद्यपि वह पहले परमेश्वर की आज्ञाओं की घोर उपेक्षा का जीवन जी रहा था, अब वह उनकी महत्ता का आदरमान कर रहा है। उसके हृदय–परिवर्तन से पूर्व जो उसे जानते थे, उन्हें आश्चर्य और विस्मय में डालते हुए वह सिय्योन के बड़े–बड़े संतों के साथ–साथ उद्घोषणा करता है:

16 1 तीमुथियुस 1:15.

17 2 तीमुथियुस 3:5.

यहोवा कि व्यवस्था सिद्ध है, जो प्राण को पुनः नया कर देती है
यहोवा के नियम विश्वासयोग्य है, जो भोलों को बुद्धिमान बना देते है।
यहोवा के उपदेश सही है, जो हृदयों को आनंदित कर देते है
यहोवा कि आज्ञा शुद्ध है, जो आखों को ज्योतिर्मय कर देती है।
यहोवा का भय निर्मल है, जो अनंतकाल तक बना रहता है
यहोवा कि विधियां सत्य है, और पूर्णतः धर्ममय है।
वे सोने से, हां, बहुत–से ताए हुए सोने से भी अधिक मनभावने है
वे तो मधु से, यहां तक कि टपकने वालें छत्ते से भी मधुर है।
इनके द्वारा तो तेरे दास को चेतावनी मिलती है
इनका पालन करने से बड़ा लाभ होता है। भजन 19:7–11

हम परमेश्वर के वचन के लिये प्राप्त इस नये–नये प्रेम को क्या कहेंगे? यदि यह मूर्तिपूजा जैसा प्रेम नहीं है, तो इसका उद्‌गम परमेश्वर के लिये प्राप्त नये प्रेम में होगा। इसी कारण यूहन्ना लिखते है – ''परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है'' (2:5) इसका संबंध परमेश्वर के विश्वासी के लिये प्रेम से नहीं है क्योंकि वह प्रेम तो आरम्भ से ही सिद्ध है। जिस प्रेम के बारे में यूहन्ना लिखते है वह एक मसीही के पुनरूज्जीवित हृदय से निकलता है, वह परमेश्वर से प्रेम करता है, और यह परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति अधिकाधिक दृढ़ता और अधिक रूझान रखने के द्वारा प्रमाणित, प्रदर्शित और सिद्ध होता जाता है। प्रिय प्यूरिटन विद्वान मैथ्यू हेनरी द्वारा प्रदत्त अंर्तदृष्टि कौशल पूर्ण और उन्नतिवर्धक दोनों है,

> ''अब ज्योति प्रेम का आरम्भ करती है, और अवश्य है कि प्रेम परमेश्वर के वचन का पालन करे, और उसे करना भी चाहिये। वह माँग करता है कि प्रिय को प्रसन्न करे और उसकी सेवा करे, और ऐसा करने के लिये उसकी घोषित इच्छा का पालन करना अवश्य है, और वह स्वयं को उसमें लगाता और व्यय करता है, वहाँ प्रेम प्रदर्शित होता है, वहाँ उसका सिद्ध या पूर्ण रूप में क्रियान्वयन, अभ्यास या कार्य, और आनन्द होता है। उसे करते हुए (परमेश्वर या मसीह की इच्छा के प्रति कत्तव्यनिष्ठा से अनुपालन करके) हम जानते है कि हम उसमें है। हम जानते हैं कि हम उसके हैं और हम पवित्रात्मा के द्वारा उसमें संगठित है जो इस आज्ञाकारिता के लिये हमें उभारता और हमारी सहायता करता है।[18]

इसका यह अर्थ नहीं कि जो वास्तव में हृदय–परिवर्तन पा चुका है वह कभी व्यवस्था की उपेक्षा नहीं करेगा, या अनाज्ञाकारिता नहीं करेगा। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो पाप नहीं करता, और हम में से कोई भी उस अरूचि या उदासीनता से मुक्त नहीं है जो कभी–कभी हमारी आत्माओं को वश में करती और हमारी तर्कशीलता को अंधा कर देती है। स्वर्ग के इस पार कोई विश्वासी ऐसा नहीं जो परमेश्वर से ऐसा प्रेम करता है, जैसा करना चाहिए, और जैसा उचित है, वैसा परमेश्वर की व्यवस्था की अभिलाषा करता है। या फिर उसके अमल के लिये वैसी धुन रखता है जैसी उसे

18 Matthew Henry, Commentary on the Whole Bible (New York: Fleming H. Revell, n.d.), 6:1066.

रखनी चाहिए। किन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि वे जो परमेश्वर की आत्मा के द्वारा नये–जन्में है, उनमें और उनके बीच जो हृदय से अपरिवर्तित और अब तक सांसारिक है, तुलनात्मक रूप में परमेश्वर के वचन के प्रति अभिमत और अनुप्रयोग में बहुत अधिक अन्तर होगा। यूहन्ना इसी सत्य को हमारे समक्ष स्थापित करना चाहता है।

निरर्थक या व्यर्थ अंगीकार

आगे, यूहन्ना उनको उजागर करने की ओर ध्यान देता है जो स्वयं की पहिचान मसीहत से करते हैं, पर उनके पास ऐसे निश्चय का कोई कारण नहीं है। एक बार फिर यूहन्ना की निडरता आधुनिक कानों को कर्कश लग सकती है जिन्हें चिकनी–चुपड़ी बातें सुनने की आदत हो गई है। परन्तु फिर भी उसके वचन प्रेरणा द्वारा रचित है और उसके प्रेम पर कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता। वह लिखता है, ''जो कहता है, मैं उसे जान गया हूँ, और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं'' (1 यूहन्ना 2:24)।

यदि हम मानते हैं कि यूहन्ना के शब्द अधिक तीखे और कठोर है, हमें कम से कम यह समझना चाहिए कि उसकी यह भाषा पुराने और नये नियमों में आम है। यीशु ने झूठे विश्वासियों को उजागर करते हुए इससे भी अधिक कठोर भाषा का उपयोग किया है, जब वह उन्हें – ''हे कुकर्मियों'' कहता है (मत्ती 7:23) प्रेरित पौलुस परमेश्वर को जानने का दावा करने वालों उन लोगों को जिनके काम मसीह का इंकार करते हैं, भर्त्सना करते हुए उन्हें यहाँ तक कहते हैं कि 'वे परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं। वह उन्हें फटकारते हुए भी कहता है, ''वे घृणित, और आज्ञा न मानने वाले है तथा किसी भी भले काम के योग्य नहीं'' (तीतुस 1:16)। याकूब जो हमारे प्रभु का भाई था, कहते हैं कि उनके चरित्र और काम दुष्टात्माओं से अधिक बुरे हैं, कम से कम दुष्टात्माएँ भय से कांपती तो है।[19] परन्तु ये जो यीशु का अंगीकार करते और उसकी उपेक्षा करते हैं और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते, वे तात्कालिक और अनंतकालीन परिणामों से भी भय नहीं खाते। वे बड़े निश्चय के साथ कहते है – "मैं उसे जानता हूँ" और फिर हठपूर्वक विपरीत प्रमाणों के अपने संबंधों की अभिरक्षा करते है। यदि उनसे कहा जाये कि वे प्रभु को नहीं जानते या प्रभु उन्हें नहीं जानते, तो वे इस विचार मात्र से ठोकर खाते है, हृदय में चूर–चूर हो जाते है, यहाँ तक कि क्रोध से भर जाते है। इसकारण, उन्हें सत्य बताने वालो का भला होगा यदि वे हमारे प्रभु की चेतावनी पर अमल करे, ''पवित्र वस्तु कुत्तों का न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत फेंको, कहीं ऐसा न हो कि वे उनको पैरों तले रौंदे और पलटकर तुम को फाड़ डाले'' (मत्ती 7:6)।

19 याकूब 2:19.

दो कारण है कि इतने प्रचुर प्रमाण के बावजूद वे हठ करते है। प्रथम कारण मनुष्य का स्वभाव है, नये जन्म से वंचित हृदय घमण्ड से और प्रत्येक बुरे विचार या प्रवृत्ति से भरा होता है।[20] किन्तु वह धर्म और धर्म–परायणता के झीने वस्त्रों को धारण करना पसंद करता है। तलवार की जरा सी धार या नोंक उस झूठे भक्तिभाव के झीने वस्त्र को भेद देती है और तब झूठे विश्वासी का असली चरित्र एक बड़ी बाढ़ के समान या भूखे भेड़िये के समान सामने आ जाता है। दूसरा कारण झूठे विश्वासी के चारों ओर भ्रम की एक अभेद्य दीवार बन जाती है उस प्रचार के कारण जो वे सुनते है। मण्डली को चेतावनी देने के बदले कि वे उनके परमेश्वर से मिलने की तैयारी करे, अपनी बुलाहट और चुने जाने को सिद्ध करे, और स्वयं की जाँच करके देखे कि वे विश्वास में है या नहीं, आधुनिक दिनों के प्रचाकर मानो उन्हें एक खतरनाक नींद में सुलाते हैं, यह कहकर कि ''शांति है, शांति है'' जबकि शांति तो है ही नहीं।[21] बहुत से प्रचाकर नये–जन्म से वंचित कलीसियाई सदस्यों की सूखी हड्डियों पर अपनी सेवकाई बना रहे है, और वे निर्बल दीवारों पर सृजनात्मक व्यापार, मनोरजंन, और टूटे हुये हौदों पर सफेदी कराके उन मरने वालों की तात्कालिक आवश्यकताएँ पूरी करते हैं जिन्हें वास्तव में सुसमाचार की आवश्यकता है।[22] जब भीषण वर्षा और हिंसक तूफान के रूप में परमेश्वर का न्याय उनके विरूद्ध आता है, उनकी दीवार गिर जायेगी और बचे हुए अस्तित्व को भी लोग भुला देंगे।[23] प्रचारक भले ही बच जाए, पर मानो जलते–जलते और उसका कार्य भी जलकर भस्म हो जायेगा।[24]

वे जो मसीह पर विश्वास का दावा करते है पर उसकी आज्ञाओं से कोई सरोकार नहीं रखते, उन्हें अपनी बड़ी चिन्ता करनी चाहिए। यद्यपि वे हठपूर्वक विरोध करते और कहते है कि वे सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं – पर उसे कार्यों में प्रगट नहीं करते – उन्हें बताया जाना चाहिये कि पवित्रशास्त्र ऐसे किसी प्रेम को मान्यता नहीं देता पर उसे अर्थ हीन बकबक मानकर निन्दा करता है।[25] साथ ही वे जो भविष्यद्वक्ता की चादर पहनने या ओढ़ने का दावा करते हैं, उन्हें जाग जाना चाहिये, ताकि वे मृतकों में से जी उठे, तब मसीह सचमुच उन पर चमकेंगे।[26]

20 उत्पत्ती 6:5; मरकुस 7:21–23.
21 यिर्मयाह 6:14; आमोस 4:12; 2 कुरिन्थियों 13:5; 2 पतरस 1:10.
22 यिर्मयाह 2:13; 14:3; यहेजकेल 13:10–11.
23 यिर्मयाह 9:11–14; यहेजकेल 13:10–16.
24 1 कुरिन्थियों 3:15.
25 1 यूहन्ना 2:5,15.
26 इफिसियों 5:14.

हमारी निश्चयता और परमेश्वर की आज्ञाएँ

यूहन्ना ने विश्वास की तीसरी जाँच हमारे सामने रखी है उसमें उसका स्वर अत्यन्त स्पष्ट है, ''यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते है तो इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गये है'' (1 यूहन्ना 2:3) क्या यह जाँच हमारे उद्धार के निश्चयता को बलवन्त करती है या निर्बल करती है? यदि परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ हमारे संबंध और अविश्वासियों के साथ उनके संबंधों की तुलना की जाये, तो क्या, हम उसमें कोई वास्तविक या दिखने वाला अन्तर पाएंगे? हम परमेश्वर की इच्छा के साथ जो उसके वचन में प्रगट की गई है, हमारे निज संबंधों की व्याख्या कैसे करेंगे? क्या हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते है ताकि स्वयं को परमेश्वर का ग्रहण किया हुआ दर्शा सके?[27] क्या हम वचन पर चलने वाले है, या केवल सुनने वाले जो स्वयं को भ्रम में रखते है।[28]

संक्षेप में, हम उस व्यक्ति के लिये, जिसका वास्तव में हृदय परिवर्तन हुआ है, नीचे दी गयी बातें कह सकते है। सर्वप्रथम, हमें उसकी निर्बलता की पहिचान करनी चाहिए। यहाँ तक कि सबसे अधिक परिपक्व पवित्रजन भी अकसर इस संसार के प्रलोभनों से भटकते हैं और परमेश्वर के वचन के प्रति अपने हृदय में उदासीन हो जाते हैं। प्रत्येक विश्वासीजन परमेश्वर के वचन से मन भटकाने और बार–बार उसकी आज्ञाओं के उलंधन के लिये विलाप करता है। किन्तु उसका विलाप करना और पश्चाताप करना, उसके हृदय–परिवर्तन का ठोस सुबूत देता है। नये–जन्म से वंचित व्यक्ति को ऐसी बातों की कोई परवाह या चिन्ता नहीं होती।

दूसरा, सच्चे विश्वासी की वास्तविक निर्बलताओं के बावजूद परमेश्वर के वचन में दी गई आज्ञाओं के साथ उसके संबंधों में और एक अविश्वासी के उनके साथ संबंधों में बहुत अधिक अन्तर होता है, जो दिखाई देता है। मसीहीजन परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन में आनन्द करेगा और उस आनन्द में बढ़ता जाएगा, और वह उन आज्ञाओं पर अमल करने और आज्ञापालन करने में बढ़ता जाएगा। भले ही बहुत बार उसकी प्रगति तीन कदम आगे और दो कदम पीछे हो, वह वास्तव में प्रगति करेगा। उसके जीवन में काँट–छाँट और ईश्वरीय ताड़ना के अवसर भी आएगे, उसे जय मिलेगी और वह फलप्रद होगा। विश्वासी के पूरे जीवनभर परमेश्वर के पवित्रीकरण के कार्य के चलते उसकी अभिवृत्ति और आचरण, परमेश्वर की आज्ञाओं में अभिव्यक्त उसकी इच्छा के प्रति अधिकाधिक समर्पण प्रदर्शित करेंगे।

तीसरा, अनाज्ञाकारिता करने पर विश्वासीजन का विलाप बढ़ेगा और आज्ञापालन के लिये उसकी अभिलाषा भी बढ़ेगी। जैसे–जैसे विश्वासी परमेश्वर की महानता और उत्तमता की समझ में और परमेश्वर के वचन की सराहना में उन्नति करता जायेगा, वह अपने जीवन में

---

27 2 तीमुथियुस 2:15.

28 याकूब 1:22.

अनाज्ञाकारिता के किसी भी स्वरूप के लिये अत्याधिक खेद और पछतावे का अनुभव करेगा। परन्तु उसका खेद अवसाद को जन्म नहीं देगा, क्योंकि उसके सांसारिक यात्रा ने उस पर परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को प्रगट किया है, और वह अनुभव से जानता है कि परमेश्वर टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता (भजन 51:17)।

यदि आप यूहन्ना के द्वारा स्थापित बातों के साथ अपनी पहिचान बना सकते है, जिनका संबंध मसीहीजन के परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ नये और अनूठे संबंध से है, तो आपके पास उद्धार के निश्चयता के अधिक कारण है। परन्तु यदि परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ आपके संबंध नहीं है या संबंध टूटे चुके है, और यह बात प्रगट हो चुकी है, तो आपके लिये बड़ी चिन्ता की बात है। आपको परमेश्वर को पुकारना और उसके वचन के प्रकाश में अपने जीवन का परीक्षण करना होगा। परमेश्वर एक टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता, उसके पास जो आते हैं, उनमें से वह किसी को भी नहीं निकालेगा।[29] और ''जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पायेगा'' (रोमियों 10:13)।

29 यूहन्ना 6:33.

अध्याय – 6

मसीह का अनुकरण

परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है। इसी से हम जानते है कि हम उस में है: जो कहता कि में उसमें बना रहता हूं तो वह स्वयं भी वैसी ही चाल चले जैसा कि वह चलता था।

– 1 यूहन्ना 2:5–6

हमने अभी सच्चे हृदय–परिवर्तन के संभवतः सबसे बड़े प्रमाण पर विचार किया है: लगातार परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना। इसके घनत्व के प्रकाश में संभव है कि हम बाद में होने वाली जाँच के महत्व को आसानी से अनदेखा कर दे। यह जाँच इतनी अधिक महत्वपूर्ण है कि हमें उस पर अपना अविभाजित ध्यान देना चाहिए। हम कैसे जानते है कि हम उसे जानते है और उसके साथ उद्धार के संबंधों में है? उत्तर संक्षिप्त किन्तु शक्तिशाली है। हम वैसे चलते है जैसे वह चलता था!

प्रथम दृष्टि में यह जाँच हमें संदेह से, यहाँ तक कि अवसाद से भर सकती है। आखिरकार, कौन यह सोचने का साहस करेगा, कहना तो दूर की बात है कि वह उसी प्रकार चलता है, लगभग उसी के समान, जब मसीह इस पृथ्वी पर था, और चलता था? किन्तु एक बार जब हम इस पाठ के संदर्भ में अपनी गलत समझ से बाहर निकल आते है, तब यह सबसे निर्बलतम पवित्रजन के लिये अद्भुत सांत्वना का एक कारण बनेगा।

वह जीवन जो यीशु ने जिया

हमारे अध्ययन के प्रारम्भ में संक्षेप में यह विचार करना सहायक होगा कि जब यीशु पृथ्वी पर यात्रा के दिनों में था, तब उसने कैसा अच्छा जीवन जिया। पवित्रशास्त्र आरम्भ में इस बात कि पुष्टि करता है कि परमेश्वर का पुत्र इस संसार में पापमय मानव के जैसे शरीर में आया। इसका अर्थ यह नहीं कि मसीह केवल देखने में पापमय शरीर धारण किये था,[1] उस में वास्तव में मानव स्वभाव था जो पाप और अशुद्धता के बिना था, पर वह पतित मानव जाति के सदृश्य सीमित, निर्बल, उनके जैसे दुःख और निराशाओं सहित था। विलियम हेन्ड्रिक्सन इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैंः "उसने मनुष्य का स्वभाव धारण किया, वह नही जो मूलरूप में सृष्टिकर्त्ता ने बनाया था, पर वह स्वभाव जो पाप के द्वारा निर्बल हो चुका था, यद्यपि वह स्वभाव किसी भी पाप से रहित था।"[2]

परमेश्वर के पुत्र के लिये यह अपमानजनक होता यदि वह मानव के उस स्वभाव को धारण करता जो पाप में गिरने से पूर्व सम्पूर्ण महिमा और बल के साथ था। किन्तु वह मनुष्यों की समानता में भेजा गया, और उसने मनुष्य का स्वभाव धारण किया जिसने उसे हमारे पाप में पतन के सभी भयंकर परिणामों के साथ था। वह हमारी निर्बलताए जानता था, उसने हमारे अपमान को सहा और वह हमारे समान सभी बातों में परखा भी गया, तौभी निष्पाप निकला।[3] वह 'पवित्र, निर्दोष, निर्मल, पापियों से अलग बना रहा (इब्रानियों 7:26)।

इस सत्य की गम्भीरता को समझने के लिये यह आवश्यक है कि हम पृथ्वी पर कभी रह चुके सबसे अधिक महान और धर्मपरायण पवित्रजनों और यीशु मसीह के अतिविशिष्ठ व्यक्तित्व के बीच के अन्तर को समझें। प्रेरित पौलुस के जीवन में कभी भी एक ऐसा पल नहीं हुआ जिसमें उसने परमेश्वर से उस प्रकार प्रेम किया जिस प्रेम का परमेश्वर हकदार है। उसने कभी परमेश्वर के लिये ऐसा कोई कार्य सम्पन्न नहीं किया, कि वह कह सके कि उसने केवल और केवल परमेश्वर की महिमा के लिये वह काम किया था और समग्र रूप में उसमे अन्य कोई प्रतिद्वंदी विचार या उद्देश्य नहीं था। परन्तु हम जानते है कि मसीह के जीवन में कभी एक पल भी ऐसा नहीं आया जब उसने अपने प्रभु परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय, मन और बल के साथ प्रेम न किया हो।[4] उसने जो भी काम सम्पन्न किये उसके सिद्ध उद्देश्य केवल परमेश्वर को महिमा देना थे। चाहे उसने खाया, पिया या छोटे से छोटा कोई कार्य किया, उसने वह सबकुछ परमेश्वर की महिमा के लिये किया।[5]

---

1 वस्तुतः, "देह में पाप की समानता में" (रोमियों 8:3)

2 William Hendriksen, *New Testament Commentary: Exposition of Paul"s Epistle to the Romans* (Grand Rapids: Baker, 1980), 247.

3 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15.

4 मरकुस 12:30.

5 1 कुरिन्थियों 10:31.

यीशु की पापरहित सिद्धता इतनी उत्कृष्ट और अविवादित थी कि जरा भी संकोच के बिना, उसने अपने विरोधियों और शत्रुओं के सामने भी अपनी निज सिद्धता की साक्षी दी। हम में से कौन है जो अपने सबसे प्रबल विरोधियों के सामने खड़ा होकर उन्हें यह चुनौती दे सकता है, ''तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?'' (यूहन्ना 8:46)। हम में से कौन इतना निडर है जो हमारे दिनों के धार्मिक अधिकारियों के सामने घोषणा कर सकता है, ''मैं सदा वे ही कार्य करता हूँ जिनसे वह प्रसन्न होता है?'' (यूहन्ना 8:29) फिर भी यह मसीह के विषय में स्वयं मसीह की साक्षी थी, किन्तु वह इस विचार में अकेला नहीं था। स्वयं परमेश्वर ने मसीह की सिद्ध आज्ञाकारिता की साक्षी दी – ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसमें मैं अति प्रसन्न हूँ'' (मत्ती 3:17; 17:5)।

नये नियम में हम कहीं भी देखें, यीशु मसीह का जीवन इस साक्षी के साथ है कि उसमें कोई दोष या अवगुण नहीं है। यहाँ तक कि मसीह के बैरियों ने भी इस सत्य को माना। यहुदा ने यीशु के साथ विश्वासघात करने के बाद, अधिक समय नहीं बीता, जब वह पश्चाताप और ग्लानि से भर गया और पुकार उठा, ''मैंने पाप किया है, मैंने निर्दोष के लहू का सौदा किया है'' (मत्ती 27:4)। इसके पहले कि पीलातुस अपना निर्णय सुनाता, उसकी पत्नी ने उसे इन शब्दों में चेतावनी दी, ''इस धर्मी मनुष्य के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि आज रात मैंने स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है'' (मत्ती 27:19)। यहाँ तक कि बिना नैतिकता आदेश का पालन करते हुए मसीह को क्रूस पर चढ़ाने वाले, उस दयारहित एवं स्वार्थी रोमी अधिकारी ने भी द्रवित होकर अंगीकार किया, ''मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता'' (लूका 23:4)। अंत में यीशु का क्रूस पर अंतिम समय में कठोर हृदयी रोमी सूबेदार को इस अंगीकार तक ले आया कि उसने ऊँचे स्वर से परमेश्वर की बड़ाई की और कहा ''निश्चय यह मनुष्य निर्दोष था।'' (लूका 23:47)।

नये नियम के वर्णनों में न केवल मसीह के पापरहित जीवन की बल्कि उसकी सकारात्मक धार्मिकता की भी साक्षी है। उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाया, बन्दियों को छुटकारे का संदेश दिया, अंधो को दृष्टि दी, और जो सताये गए थे उन्हें स्वतंत्र किया।[6] जब उसने शिक्षा देने अपना मुँह खोला, तब उसके अधिकार को देखकर लोग चकित रह गये।[7] जब वे भूखे थे, उसने कुछ रोटियों और मछलियों को आश्चर्यकर्म करके बढ़ाया और हजारों को भोजन कराया।[8] उसने वचन कहकर दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को मुक्त किया, कोढ़ी को शुद्ध किया, बीमारों को चंगा किया और मरे हुओं को फिर से जीवन दिया।[9] यह बिना कारण नहीं था कि लोग उसके कामों को देखकर अतिविस्मित थे और उन्होंने यह कहकर साक्षी दी, ''इसने जो कुछ किया है, अच्छा किया है'' (मरकुस 7:37)।

6 लुका 4:18.
7 मत्ती 7:28–29.
8 मत्ती 14:16–21.
9 मत्ती 8:2–3, 16; यूहन्ना 11:43–44.

हम कैसे तुलना करे?

यीशु मसीह के दोष रहित जीवन और महिमा के कामों के प्रकाश में जो उसने सम्पन्न किये कि वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा और मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।[10] हम यूहन्ना की माँग की विवेकशीलता और औचित्य पर प्रश्न कर सकते है, ''जो कहता है कि मैं उस में बना रहता हूँ तो वह स्वयं भी वैसा ही चले, जैसा कि वह चलता था'' (1 यूहन्ना 2:6)। क्यों यह प्रिय प्रेरित हम पर ऐसा बोझ रख रहे हैं जिसे न वे स्वयं और न अन्य प्रेरित उठाने में समर्थ थे?[11] कैसे सबसे अधिक धर्म परायण पवित्रजनों में सबसे श्रेष्ठ उद्धार की दृढ़ निश्चयता रख सकते है जबकि ऐसा ऊँचा मानदण्ड उनके सामने रखा गया है? फरीसियों की थका देने वाली माँग को पूरा करना अधिक सरल होगा, और यहाँ तक कि व्यवस्था की तनाव उत्पन्न करने वाली माँगों को पूरा करना भी अधिक आसान होगा, बजाये इसके कि हमारे प्रभु के सिद्ध जीवन का अनुकरण किया जाये।

किन्तु, इसके पहले कि हम स्वयं को अवसाद से भरे या स्वयं को अनंत विनाश का भागीदार बनाए, हमें एक बार फिर उस संदर्भ को स्मरण करना चाहिये जिसमें यूहन्ना यह लिख रहे थे। वे हमसे किसी असंभव स्तर पर पूर्णता प्राप्त करने की माँग नहीं कर रहे थे, पर वे हमें हमारे जीवनों के रूझानों का आत्म–विश्लेषण करने के लिये प्रोत्साहित कर रहे थे। क्या हम अब भी ''इस संसार की रीतियों के अनुसार'' चल रहे है? (इफिसियों 2:1–3) या फिर पवित्रात्मा के पवित्रीकरण के कार्य के द्वारा मसीह जैसा चलते थे, उस प्रकार चलना सीख रहे है? क्या इस बात के देखने योग्य, व्यवहारिक प्रमाण है कि हम मसीह का अनुकरण करने की खोज कर रहे हैं? क्या मसीह का शिष्य होने का हमारा दावा, हमारी अभिरूचियों, कार्यो और वचनों के द्वारा प्रमाणित होता है या झूठा ठहरता है? क्या हमारे जीवनों का दैनिक आचरण संसार को कम और मसीह को अधिक प्रगट करता है? जब हम हमारे और मसीह के चरित्र के बीच विभिन्नता या असमानता दिखाने वाली बातों को देखते हैं, क्या हमें गहिराई से पीड़ा होती है? क्या हम मसीह के समान बनने की अभिलाषा रखते हैं?

कल्पना करे कि एक छोटा लड़का अपने बड़े भाई से बहुत प्रेम करता है, उसे पसंद करता है, और सब बातों में उसकी नकल करने का प्रयास करता है। यद्यपि वह अभी बच्चा ही है, उसके चेहरे और हावभाव से उसके बड़े भाई के साथ उसकी समानता प्रगट होती है और प्रमाणित होता है कि वे भाई–भाई है। बर्फीली ठंडियों की एक सुबह उसका बड़ा भाई रोज के समान फार्म पर काम करने घर से निकलता है और उसका छोटा भाई उसके पीछे–पीछे जाता है। बड़ा भाई लम्बा है और उसके डग भी लम्बे है। बर्फ पर उसके पाँवों के निशान दर्शाते है कि वह मजबूत और पूर्णव्यस्क है और उसकी योग्यता उसके छोटे भाई से कही बढ़कर है, किन्तु चुनौती को

10 फिलिप्पीयों 2:8.

11 मत्ती 23:4.

न सह पाने या सामना न कर पाने के विचार से अप्रभावित, धुन में पक्का कि वह अपने भाई जैसा बनेगा, छोटा लड़का बर्फ पर भाई के पद चिन्हों पर पैर रखते हुये, अपने कदम बढ़ाता और पीछे–पीछे चलता जाता है। लेकिन कुछ दूर, कुछ कदम चलकर यह बात छोटे लड़के पर और किसी भी अन्य देखने वाले पर प्रगट हो जाती है कि बड़े भाई के पदचिन्हों पर चलना छोटे भाई के बस की बात नहीं है। यद्यपि उसने अपनी दृष्टि उस मार्ग पर गड़ाकर रखी है जिस पर उसका भाई चला और वह बड़े संकल्प के साथ उस मार्ग पर चलने तैयार था, और उसने अपने पूरे दमखम के साथ पीछे चलने का प्रयास किया, परिणाम एकदम अजीब लगभग हँसने योग्य अनुकरण था। किन्तु अपने भाई के पद चिन्हों पर चलने की असमर्थता के बावजूद उस छोटे भाई का लगातार जुटकर किया प्रयत्न उसकी गम्भीरता और भाई के प्रति समर्पण में ईमानदारी को प्रमाणित करता है। उसकी बार–बार असफलता के बावजूद किसी भी निष्पक्ष दर्शक के लिये यह समझना स्वाभाविक है कि छोटे भाई के हृदय का रूझान और इच्छा उसके बड़े भाई जैसा बनने की है और जैसा बड़ा भाई चला वैसा चलने की है।

पवित्रशास्त्र के अनुसार, मसीह न केवल हमारा भविष्यद्वक्ता और राजा है परन्तु हमारा बड़ा भाई भी है,[12] और वह जिस मार्ग पर गया है वह हमारे जीवनों के लिये दिशा और पद्धति दोनों प्रस्तुत करता है। प्रेरित पौलुस लिखते है कि उसने हमें ''पहले से ठहराया'' कि मसीह के स्वरूप में हो जाये जिससे कि वह ''बहुत से भाइयों में पहिलौठा ठहरे'' (रोमियों 8:29)। वह आगे हमें प्रोत्साहित करता है कि हम उसका अनुकरण करने वाले बनें जैसा वह स्वयं मसीह का अनुकरण करता था।[13] प्रेरित पतरस विश्वासियों को उनकी तकलीफों के बीच प्रोत्साहित करते है कि मसीह ने एक उदाहरण छोड़ा है कि *हम उसके पद्चिन्हों पर चलें।*[14] अंत में, इब्रानियों का लेखक हमें चेतावनी देकर लिखता है, ''आओ, प्रत्येक बाधा और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़े, और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रहे'' (इब्रानियों 12:1–2)।

इन तथ्यो के प्रकाश में, यह असामान्य नहीं लगना चाहिए कि यूहन्ना ने ''मसीह के समान चाल–चलन'' को वास्तविक हृदय–परिवर्तन की एक जाँच ठहरा दिया है। आखिरकार, चेला कौन है, वह जो सब बातों में अपने गुरू के समान बनना चाहता है?[15] उसने स्वयं को अपने गुरू की शिक्षाओं को न केवल सीखने के लिए समर्पित किया है पर वह उसकी जीवन शैली को भी अपने जीवन में उतारता है। वह एक ऐसा छात्र है जो अपने गुरू के समान चलना सीख रहा है।

---

12 इब्रानियों 2:11–12.

13 1 कुरिन्थियों 11:1

14 1 पतरस 2:21.

15 मत्ती 10:24–25.

अधिकतर इसका चरमोत्कर्ष तब दिखाई देता है जब चेले और गुरू के संबंध प्रगट होते है, चेला अपने गुरू से सीखकर उसके समान बनता है और अपने गुरू के साथ बराबरी में खड़ा होता है। किन्तु मसीहत में गुरू और शिष्य के संबंधों का यह चरमोत्कर्ष कभी दिखाई नहीं देता। हम कभी अपने गुरू के स्तर तक नहीं पहुँचते। हम सदा छात्र बने रहते हैं। यही कारण है कि यीशु ने अपने चेलों को सावधान किया, ''परन्तु तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरू है, और तुम सब भाई हो'' (मत्ती 23:8)।

मसीह से सबसे अधिक समान विश्वासी सदैव एक छात्र रहेगा जो अब तक यीशु मसीह की सिद्धता के स्तर को पूरी तरह नहीं पा सका है। सबसे अधिक परिपक्व भी मसीह के समान चाल–चलन रखना सीख रहा है। सबसे अधिक पवित्र किया गया संत भी सदैव स्वयं को उस छोटे भाई के समान मानता है जो अपने बड़े भाई की नकल का प्रयास कर रहा है, पर कभी कर नहीं पाता कि भाई के पद्चिन्हों पर चले यहाँ तक कि सबसे अधिक नियमित मसीही जीवन भी ऐसा है जिसमें सामान्य से अधिक बड़े चरण उठाने पढ़ते हैं; इस प्रकार वह अपूर्णताओं और गलतियों से भरा है। यहाँ तक कि उन पलों में भी जब हम सबसे अधिक मसीह के समान होते है, हमारे बड़े भाई से हमारी समानता बहुत थोड़ी और अविकसित होती है। प्रभु की अनुकृति करने और उस जैसा बनने की दौड़ में हम कितनी भी उन्नति करे हमारे और उसके बीच एक बड़ा अन्तर रह ही जाता है। इस कारण परिपक्व विश्वासी जानते हैं कि ईनाम पाने से पहले दौड़ का एक बड़ा हिस्सा सदैव बाकी रहेगा। प्रेरित पौलुस ने यह सत्य फिलिप्पियों को लिखे अपने पत्र में अद्‌भुत स्पष्टता के साथ लिखा है –

> यह नहीं कि मैं प्राप्त कर चुका हूं या सिद्ध हो चूका हूं, पर उस उद्देश्य कि पूर्ति के लिए अग्रसर होता जाता हूं, जिसके लिए मुझे मसीह यीशु ने पकड़ा था। हे भाइयों, मेरी धारणा यह नहीं कि मैं प्राप्त कर चूका हूं, परन्तु यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई है, उन्हें भूल कर आगे कि बातों कि ओर बढ़ता हुआ, लक्ष्य कि ओर दौड़ा जाता हूं कि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। फिलि. 3:12–14

महान् प्रेरित पौलुस ने कभी सिद्धता का दावा नहीं किया। उसने कभी मसीह के समान चलने का दिखावा नहीं किया, किन्तु उसने अपने जीवन में मसीह के समान बनने की वास्तविक एवं दिखने योग्य धुन को अवश्य प्रदर्शित किया। वह निशाने की ओर आगे दौड़ता गया और बढ़ता गया, और इस मुकाम तक पहुँचा कि अपने संगी विश्वासियों से कह सका – ''जैसा मैं मसीह का अनुकरण करता हूँ वैसा ही तुम भी मेरा अनुकरण करो'' (1 कुरिन्थियों 11:1)।

पवित्रीकरण के लिए पौलुस की इस समझ में संतुलन बनाकर हमें तीसरी जाँच तक पहुँचना है जो बाइबल के अनुसार इतनी ही संतुलित है। यूहन्ना यह नहीं सिखा रहे कि उद्धार की निश्चयता प्राप्त करने से पहले हमें सिद्धता प्राप्त कर लेनी चाहिए। वह 'सम्पूर्ण रीति पर पवित्र किये हुओं को छोड़कर' अन्य सभी से उद्धार की निश्चयता दूर नहीं कर रहे हैं। किन्तु यूहन्ना उन्हें

यह निश्चयता नहीं दे रहा है जो मसीह के चाल–चलन की अनुकृति में उनकी कमी को स्वीकार करते हैं, और मसीह के साथ अधिक से अधिक समानता प्राप्त करने की वास्तविक अभिलाषा का व्यवहारिक और दिखने योग्य प्रमाण नहीं देते, और जैसा मसीह चलता था वैसा चलने के लक्ष्य की ओर उनकी पहिचान बताने वाली प्रगति नहीं दर्शाते है।

अपने चाल-चलन की समीक्षा करना

इस चौथी जाँच को भली भाँति समझ लेने के बाद हमें अब स्वयं को इसके प्रकाश में जाँचना चाहिये। क्या हम वैसे चलते है, जैसे मसीह चलता था? हमारे जीवनों के लक्ष्य और रूझान क्या हैं? क्या हमारी जीवन शैली मसीह के समान बनने की वास्तविक धुन को प्रदर्शित करती है? हम जिस अंश में 'हाँ' कह सकते हैं, हम उसी अंश में हृदय–परिवर्तन के वास्तविक कार्य की निश्चयता रख सकते हैं कि हमारे जीवनों वह काम किया गया है और जिसने वह काम आरम्भ किया है, वह उसे पूरा कर रहा है। हमें केवल अपने अंगीकार को अपने आचरण से साबित करते जाना है और मसीह जो नमूना हमारे लिये छोड़ गये हैं उसकी समानता में बढ़ते जाना है। प्रत्येक दिन जो बीत रहा है वह हमें हमारे मन में निश्चयता को और अधिक बलवन्त करने का कार्य करेगा।

परन्तु जितना अधिक हमारे रूझान और अपेक्षाएँ, अविश्वासी जगत के लोगों के जीवन से मेल खाएगी, हमें उतना अधिक चिन्ता करनी चाहिये। यदि हम संसार के लोगों के जैसे लक्ष्य रखते है, यदि हमारे विचार, समय, और संसाधन इस युग की लालसाओं के पीछे व्यय हो रहे हैं, तब हमें भयभीत होने की आवश्यकता है। यदि हम उन बातों को पसंद करते है, जिन्हें संसार पसंद करता है और हम उसके तौर तरीको की नकल करते हैं, तब हमें हमारे अंगीकार की सच्चाई को कठघरे में खड़ा करना चाहिए। यदि स्वयं की जाँच करने के बाद हम कमी पाते हैं, हमें उदासीन नहीं होना चाहिये और न निष्क्रिय करने वाले अवसाद में घिरना चाहिए, परन्तु तत्काल किसी आवश्यक हल की खोज करनी चाहिए। किन्तु हमें समझ लेना चाहिए कि पवित्रशास्त्र हमारी कुंठित निश्चयता की भावना सुधारने के लिये कोई सूत्र या चरणबद्ध कार्यक्रम प्रस्तावित नहीं करता। परन्तु वह हमें चेतावनी देता है कि हम परमेश्वर के वचन में और प्रार्थना में प्रभु की खोज करे, जब तक कि वह हमें शांति प्रदान न करे। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिये कि प्रभु उस शांति को वैध ठहराएगा और हमें धार्मिकता का मार्ग देकर उसे सही ठहराएगा और हमें उस पर चलना सिखाएगा, जैसा वह स्वयं चलता था। हमारे विश्वास के सब अंगीकार और निश्चयता से जुड़ी सभी विषय परक भावनाएँ उस अंश तक वैध है जिस अंश तक वे एक बदल चुके या बदल रहे जीवन के व्यवहारिक और दिखने योग्य प्रमाणों में स्वयं को साबित करती है।

अध्याय – 7

प्रेम करने वाले मसीहीजन

प्रियो, मै तुम्हे नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूं, परन्तु वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से ही तुम्हे मिली हैं। यह पुरानी आज्ञा वही वचन है जो तुम सुन चुके हो। फिर भी मै तुम्हे एक नई आज्ञा लिख रहा हूं जो उस में और तुम में सत्य है क्योंकि अन्धकार मिटता जा रहा है और सत्य ज्योति चमक रही है। जो कोई यह कहता है कि मै ज्योति में हूं फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमे कोई ठोकर का कारण नहीं। परन्तु जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है, और नहीं जानता कि कहां जा रहा है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आखें अन्धी कर दी है।

– 1 यूहन्ना 2:7–11

परमेश्वर के लोगों के लिये प्रेम पुराने और नये दोनों नियमों में बार–बार आने वाला प्रमुख विचार है। इस कारण आश्चर्य नहीं कि यूहन्ना इसे सच्चे हृदय–परिवर्तन की जाँच के रूप में प्रस्तुत करता है। सरल रूप में कहे तो, वह जो मसीह में अपने भाई के लिये और सम्पूर्ण कलीसिया के लिये भी वास्तविक एंव बने रहने वाले प्रेम का प्रदर्शन करता है, वह अपने हृदय–परिवर्तन का शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत करता है। किन्तु मसीह का दावा करने वाला यदि अपने भाई से प्रेम नहीं करता, उसे ऐसा दावा करने के लिये समुचित आधार नहीं है।

एक प्राचीन आज्ञा

यूहन्ना उद्धार करने वाले विश्वास की पाँचवी जाँच प्रस्तुत करते हुये एक आधारभूत सत्य पर जोर देता है: परमेश्वर की हमारे लिये आज्ञा है कि हम अपने भाई से प्रेम करे, और यह उसकी प्रगट इच्छा की केन्द्रीय विचारधारा है, जो ईश्वरीय प्रकाशन के आरम्भ से प्रगट है। क्योंकि 'परमेश्वर प्रेम है' (1 यूहन्ना 4:8) और उसने उसके लोगों को आदि से प्रेम किया है, इसलिये आश्चर्य नहीं कि उसने आरम्भ ही से[1] उन्हें आज्ञा दी कि वे एक दूसरे से प्रेम रखें। अपने भाई से प्रेम रखने की यह आज्ञा नये नियम के लेखन के समय या यीशु की शिक्षाओं के समय उत्पन्न नहीं हुई, परन्तु समस्त पुराने नियम के वृतान्तों में छुपी हुयी थी[2] या परोक्ष रूप में थी और मूसा की व्यवस्था में स्पष्ट रूप में प्रगट थी, जहाँ लैव्यव्यवस्था 19:18 में यह आज्ञा दर्शाई गई है "तू अपना बदला न लेना और न अपने जाति भाइयों से वैमनस्य रखना परन्तु अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। मैं यहोवा हूँ।"

इस एक आज्ञा में हमारे प्रेम करने के प्राचीन कर्त्तव्य के तीन महत्वपूर्ण सत्य मिलते हैं। प्रथम हम सीखते है कि प्रेम करने का नियम एक अभिव्यक्ति है कि परमेश्वर कौन है। दूसरे शब्दों में ईश्वरीय आज्ञा का मूल और अंकुरण ईश्वरीय चरित्र (या स्वभाव) से है। लैव्यव्यवस्था 19 के आरम्भ में पद 2 में, परमेश्वर इस्राएल के लोगों को आज्ञा देते हैं कि वे पवित्र बनें क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। यहाँ वे उन्हें प्रेम करने की आज्ञा देते है क्योंकि परमेश्वर, उनके प्रभु, प्रेम है। जॉन गिल लिखते है:

> प्रेम सत्य के अनंत नियम का एक भाग था, परमेश्वर के न बदलने वाले स्वभाव और अनंत सुइच्छा पर आधारित, परमेश्वर जो स्वयं प्रेम है, वह उसके सृजे सभी प्राणियों से प्रेम करने की माँग करता है। आदम के हृदय की निर्दोष दशा में प्रेम लिखा था, और उसके ईश्वरीय स्वरूप की एक शाखा उसमें से निकली, और प्रेम मूसा की व्यवस्था में भी दिया गया क्योंकि परमेश्वर के प्रति प्रेम और मनुष्यों के प्रति प्रेम उस व्यवस्था का सार और तत्व था।[3]

दूसरा, हम पाते हैं कि इस्राएलियों को जो प्रेम अपने भाई से करना था वह केवल भावनात्मक और बातों का नहीं था, पर वास्तविक और व्यवहारिक था। व्यवस्था के अनुसार इस्राएलियों को एक दूसरे से प्रेम करने के लिए, एक दूसरे से बदला नहीं लेना था, मन में कुढ़ना नहीं था, हत्या, चोरी, व्याभिचार, झूठी साक्षी या ऐसे कोई काम नहीं करने थे जो उनके भाई की भलाई में बाधक

1 यिर्मयाह 31:3.

2 हाबिल के प्रति कैन की प्रेमविहीनता (उत्पत्ति 4:1–15) और लेमेक की हृदयविहीनता को लेकर, धर्मशास्त्र के नकारात्मक दृष्टिकोण पर विचार कीजिये (उत्पत्ति 4:23) । हम, युसुफ का उसके भाइयों के प्रति प्रेम को लेकर, धर्मशास्त्र का सकारात्मक दृष्टिकोण देखते हैं (उत्पत्ति 45:1–15) ।

3 John Gill, *Exposition of the Old and New Testaments* (Paris, Ark.: Baptist Standard Bearer, 1989), 9:625.

बनते।[4] यद्यपि भाई से प्रेम रखने के लिए हमारे मन की भावनाएँ आवश्यक है, सबसे पहले यह इच्छा की बात है, जो स्वयं को सही एंव निःस्वार्थ कार्य में प्रगट करती है।

तीसरा, हम सीखते हैं कि हमारे पड़ोसी के साथ प्रेम करने की आज्ञा पुरानी है, एक प्राचीन पथ जो पुराने नियम की सम्पूर्णता से होकर आगे बढ़ता है।[5] परमेश्वर सदैव प्रेम रहे हैं, और प्रेम सदैव उनकी प्रमुख या प्रथम आज्ञा रहा है। वास्तविक धर्मपरायणता का प्रदर्शन सदैव प्रेम में होता है जो परमेश्वर के प्रति और उसकी चुनी गई प्रजा के लिये है। एक का विचार, दूसरे के बिना करना असंभव है, यह ऐसा विरोधाभास है जो प्राप्त ही नहीं किया जा सकता और सबसे अधिक बदतर है।

एक नयी आज्ञा

यदि हमारे भाई से प्रेम करना पुरानी आज्ञा, है तो यूहन्ना क्यों कहते हैं कि यह नयी आज्ञा भी है? हमने पहले ही साबित किया है कि प्रेम कभी न बदलने वाले परमेश्वर का अनंतकालीन गुण है और प्रबल आज्ञा है जो पुराने नियम के समग्र काल में प्रवाहित थी। तब यह कैसे प्राचीन और नवीन दोनों ही हो सकती है?

हमें यह समझना चाहिये कि यूहन्ना एक ही पद में अंर्तविरोधी कथन नहीं कह रहा है परन्तु उसने अपने अंर्तविरोधी लगने वाले कथन के द्वारा नयी वाचा में परमेश्वर की महिमा के अधिक बड़े प्रकाशन को बड़ी सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया है। परमेश्वर ने आरम्भ से सदैव मनुष्य जाति के प्रति उसके प्रेम को प्रगट किया है। किन्तु मसीह के व्यक्ति और कामों के द्वारा उसके प्रेम का प्रकाशन अन्य सभी पूर्व प्रकाशनों से कहीं बढ़कर है और वह सम्पूर्ण रूप में एक नया प्रकाशन लगता है। पुरानी वाचा में परमेश्वर के प्रेम के परिमाण को अनावृत किये बिना हम उचित रीति से यह कह सकते हैं कि वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में देहधारण में[6] प्रस्तुत प्रेम के प्रकाशन की तुलना में कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि यीशु की शिक्षाओं और त्यागमय जीवन में आज्ञा दिया गया, समझाया गया और प्रदर्शित किया गया प्रेम पुराने नियम की माँगों से इतना अधिक परे है कि समग्र रूप में नया लगता है। नयी वाचा में प्रेम के मानदण्ड का स्तर केवल आग्रहों और अनुदेशों से ही नहीं पर यीशु मसीह के उदाहरण से परिभाषित है। उसके लोगों के प्रति उसका प्रेम विश्वास करने वालों के लिये आदर्श है। उसका प्रेम परिभाषित करता है कि उसके लोग एक दूसरे के साथ किस गहिराई, ऊँचाई, लम्बाई और चौड़ाई के साथ प्रेम करे। एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा का सार तत्व और पूर्ण प्रकाशन अब सिद्ध रूप में मसीह

4 निर्गमन 20:13–16; लैव्य. 19:18.

5 यिर्मयाह 6:16, 18:5.

6 मैं पुरानी वाचा में परमेश्वर के प्रकाशन को कम नहीं आंकना चाहता परंतु इसके बजाय मसीह के व्यक्तित्व को महान करना चाहता हूं, जिसकी तुलना में सब वस्तुएं प्रतिच्छाया है। (कुलुस्सियों 2:17) .

के व्यक्तित्व में स्पष्ट किया गया है। इसीलिये यीशु ने उसके चेलों को सिखाया, ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो'' (यूहन्ना 13:34)।

पुरानी वाचा के अंर्तगत इस्राएलियों ने प्रेम का प्रदर्शन व्यवस्था का पालन करके किया, जो साथी इस्राएलियों की रक्षा करती थी और उसमें वे लोक–कल्याण और दया के बहुत से कामों को किया करते थे।[7] किन्तु नयी वाचा में परमेश्वर के लोगों को वैसा प्रेम करने की बुलाहट दी गई है, जैसा प्रेम मसीह ने किया था कि वे अपने साथियों के भले के लिये अपने प्राण भी दे। यूहन्ना ने अपनी पत्री में बाद में यह सत्य पूरी तरह स्पष्ट किया है,

> ''हम प्रेम को इसी से जानते हैं, कि उसने हमारे लिये अपना प्राण दे दिया, अतः हमें भी भाइयों के लिये अपना प्राण देना चाहिए। परन्तु जिस किसी के पास इस संसार की सम्पत्ति है और वह अपने भाई को आवश्यकता में देख कर अपना हृदय कठोर कर लेता है तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? बच्चों, हम कथन अथवा जीभ से नहीं, वरन् कार्य एंव सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के है और हम उसके सम्मुख उन बातों में अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे'' (1 यूहन्ना 3:16–19)।

इन पदों से स्पष्ट है कि वास्तविक प्रेम भावनाओं या शब्दों के संसार में नहीं परन्तु व्यवहारिक दिखने योग्य कार्यों में स्वयं को प्रगट करता है। सच्चे हृदय परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न प्रेम, जो हृदय–परिवर्तन का प्रमाण है, वह उद्दीप्त भावनाओं, चातुर्यपूर्ण एवं सम्मोहक भाषा या सर्वश्रेष्ठ शुभ कामनाओं में सीमित नहीं है। आवश्य है कि वह शब्दों और जिव्हा से बाहर स्वयं को कार्यों एवं सत्य में अभिव्यक्त करे। मसीह जिस प्रेम की माँग करते है और यूहन्ना जिसके बारे में लिखता है अवश्य है कि वह कार्य करे। इस कारण उसे सर्वाधिक वास्तविक अभिव्यक्ति तब मिलती है जब हम लगातार दूसरों के लाभ हेतु मसीह की देह में रहते हैं, प्रतिदिन स्वयं (अहं) के लिये मरते है और हमारे दान–वरदानों और परमेश्वर की कृपा से मिले अवसरों के अनुरूप सेवा के व्यवहारिक कामों को करते है। निश्चय इस प्रकार का प्रेम मांग करता है कि हम परमेश्वर के लोगों के साथ वास्तविक संबंधों में प्रवेश करे ताकि हम उनकी आवश्यकताओं को जानें, और सक्रियता से उन अवसरों को खोजे जिनमें हम उनकी सेवा करे। परिणाम स्वरूप, यदि असंभव नहीं तो यह कठिन अवश्य है कि इस प्रकार का प्रेम एक ऐसे समाज में प्रगट हो जो सप्ताह में केवल एक बार, रविवार की सुबह एक साथ मिलती है। इस प्रकार का प्रेम व्यक्तिगत संबंधों में, स्थानीय निकाय के रूप में आरम्भ होना चाहिए और तब वे बाहर निकलकर समस्त संसार में विश्वास करने वालों और विश्वासी समुदायों में फैलता जाये।

---

7 इजरायली फसल के समय एक हिस्सा छोड़ने के द्वारा (लैव्यव्यवस्था 19:9–10); बिना ब्याज के रूपया उधार देना (निर्गमन 22:25); गरीबों की सहायता करना (व्यवस्था. 15:7); अनाथ की रक्षा करना और विधवा का न्याय करना (यशा. 1:17) इत्यादि कार्यो के द्वारा दान का नमूना प्रगट करते थे।

हृदय–परिवर्तन का प्रमाण

इस पत्री में यूहन्ना स्पष्ट रूप में कहता है कि जिसका हृदय–परिवर्तन हुआ है उसके सबसे बड़े प्रमाणों में से एक (यदि सबसे बड़ा प्रमाण न माने) उसका संगी मसीहियों के प्रति प्रेम है, और कलीसिया के लिये प्रेम है। साथ ही, यूहन्ना ने हमें यह भी दर्शाया है कि सच्चा मसीही प्रेम वह है जैसा यीशु ने प्रेम किया, अर्थात् मसीह में अपने भाइयों और बहिनों के लिये अपना प्राण देना। यूहन्ना के शब्दों का सौन्दर्य बड़े से बड़े कवि के शब्दों के माधुर्य से बढ़कर है, किन्तु उसकी अभिलाषा कवि बनने की नहीं है। वह अपने पाठकों को अपनी पद्यरचना से सम्मोहित करने का विचार नहीं रखता पर आशा करता है कि यदि वे परमेश्वर की संतान के समान किसी सद्‌गुण या प्रमाण को धारण करते हैं, उन्हें उनके उद्धार के निश्चयता का निर्धारण करने में सहायता कर सके। उपरौठी कोठरी में हुए वार्तालाप में यीशु ने अपने चेलों से कहा कि सब लोग जान लेंगे कि वे मसीही है, यदि वे एक दूसरे से प्रेम करेंगे।[8] 1 यूहन्ना 2 में प्रेरित उन से कह रहे हैं जो मसीही होने का दावा करते है, वे उद्धार के व्यक्तिगत निश्चयता को पा सकते है केवल उस सीमा तक जिस सीमा तक वे 'एक दूसरे के साथ प्रेम' के मानदण्ड को जीवन में उतारते है।

हम अनुग्रह के द्वारा केवल विश्वास करने से उद्धार पाते हैं और हजारों जीवनकालों का प्रेम में संयुक्त परिश्रम जो धर्मपरायणता में एकत्रित हो सकता है, वह हम में से किसी एक को भी परमेश्वर के न्याय–सिंहासन के सामने धर्मी नहीं ठहरा सकता। किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा नए जन्म का कार्य जो हम में पश्चाताप और उद्धार करने वाला विश्वास दोनों उत्पन्न करता है, वही हम में एक नया प्राप्त प्रेम और परमेश्वर के लोगों के लिये निरन्तर बढ़ने वाला प्रेम भी उत्पन्न करेगा। यूहन्ना अपनी पत्री में बहुत बार इस सत्य के पक्ष में तर्क देता है –

> जो कोई यह कहता है कि मै ज्योति में हूं फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमे कोई ठोकर का कारण नहीं। (2:9–10)
>
> इसी से परमेश्वर के संतान और शैतान के संतान जाने जाते है कि जो कोई धार्मिकता पर आचरण नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और वह भी नहीं जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता। (3:10)
>
> हम जानते है कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में आ पहुंचे है, क्योंकि हम भाइयों सर प्रेम रखते है। वह जो प्रेम नहीं रखता मृत्यु में बना रहता है। (3:14)
>
> प्रियो, हम आपस में प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। प्रत्येक जो प्रेम करता है, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और परमेश्वर को जानता है। वह जो प्रेम नहीं करता परमेश्वर को नही जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (4:7–8)

8 यूहन्ना 13:35.

परमेश्वर प्रेम है जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें। (4:16ब)

यदि कोई कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूं," और अपने भाई से घृणा करे तो वह झूठा है क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं करता तो वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं कर सकता। (4:20)

जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो पिता से प्रेम करता है, वह उससे भी प्रेम करता है जो उससे उत्पन्न हुआ है। (5:1)

प्रेरित यूहन्ना की प्रेरणा प्राप्त शिक्षा यह है कि वह जो अपने भाईयों से प्रेम नहीं करता, शैतान की संतान है, वह परमेश्वर को नहीं जानता, परमेश्वर से प्रेम नहीं करता, और वह मृत्यु में बना रहता है।[9] उसके शब्द निडर और दृढ़ है। वह इस विषय पर बहस नहीं करता और न ही संभावित अपवादों पर चर्चा करने तैयार है। वह जो अपने भाईयों से प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता।

यह समझना हमारे लिये महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना की भाषा की कठोरता पूर्णतः उचित है। आखिरकार वह अनंत जीवन और मृत्यु के मसले पर बोल रहा है, और मनुष्यों की आत्माएँ दाँव पर लगी है। साथ ही जो सत्य है वह बता रहा है, उसने वे स्वयं उत्पन्न नहीं किए है और न ही वे अभी हाल में आत्मा से प्राप्त किसी प्रकाशन का परिणाम है। यूहन्ना सरल रूप में उन सत्यों को सिखा रहा है जो उसे सबसे पहली बार प्रभु यीशु मसीह से उनकी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान मिले थे। यह यीशु ही थे जिन्होंने भाई–भाई के बीच प्रेम को हृदय–परिवर्तन के एक बड़े प्रमाण के रूप में स्थापित किया था। यह सत्य बड़ी सामर्थ के साथ मत्ती 25:31–46 में जातियों के न्याय के मसीह के द्वारा दिये गये वर्णन में अभिव्यक्त किया गया है:

"पर जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आयेगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आयेंगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सन्मुख एकत्रित कि जायेंगी और वह उन्हें एक दुसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। वह भेड़ों को अपनी दाहीनी ओर, तथा बकरियों को अपनी बाईं ओर करेगा। तब राजा अपने दाहिने हांथ वालों से कहेगा , 'हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी बनो जो जगत कि उत्पत्ति से तुम्हारे लिए तैयार किया गाया है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं परदेशी था, और तुमने मुझे अपने घरों में ठहराया। मैं नंगा था, तुमने मुझे कपडे पहनाएं बीमार था, तुमने मेरी सुधि ली बंदीगृह में था, तुम मुझ से मिल आये।'

" तब धर्मी उसे उत्तर देंगे, 'प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा देखा और कब भोजन कराया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया? और हम ने तुझे कब परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा और कपडे पहिनाएं? हम ने तुझे कब बीमार या बंदीगृह में देखा और तुझे से मिलने

9 1 यूहन्ना 3:10,14; 4:7–8,20.

आए?' इसपर राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मै तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी भी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया।'

"तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगों, मुझ से दूर होकर उस अनन्त अग्नि में जा पडो जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार कि गई है! मै भूखा था, तुमने मुझे कुछ खाने को नहीं दिया प्यासा था, तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया, नंगा था, तुमने मुझे कपडे नहीं पहनाएं, बीमार और बंदीगृह में था, तुम मेरी सुधि नहीं लेने आए।

"इस पर वे उस से पूछेंगे, "प्रभु, हमने कब तुहे भूखा या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बंदीगृह में देखा, और तेरी सेवा न की?' तब वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूं कि जो तुम ने इन छोटों से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।' ये लोग अनंत दण्ड भोगेंगे, परतु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

बहुत से सेवकों और सेवकाईयों ने मत्ती के इस वृतान्त का उपयोग संसार में व्यवहारिक कार्यों के साथ, लोक–कल्याण और तरस के कामों के द्वारा संपर्क करने की अपनी बुलाहट को उचित या वैध ठहराने के लिये किया है। बन्दीगृह में सेवकाई, भूखों को पोषण और राहत के संगठनों, मेडिकल टीम, वस्त्र–वितरण, बैंक और अनेकों ऐसी मसीही सेवकाईयों ने इसे 'कोने के सिरे का पत्थर' बना दिया है जो खोए हुए संसार में व्यवहारिक आवश्यताओं की सेवकाई के माध्यम से सुसमाचार का प्रचार करने का प्रयास करते हैं। किन्तु हमें इस पाठ का इस प्रकार उपयोग करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है। इस प्रकार किसी पाठ या पद को ढ़ाल बनाकर उपयोग करना गलत है,[10] भले ही यह सही कारणों के लिये किया जाये।

यद्यपि यह अच्छी बात है और बाइबल–सम्मत भी कि दूसरों को मसीह में लाने के लिये भौतिक आवश्यकताओं में उनकी सहायता की जाये परन्तु मसीह ने जो चर्चा की थी उसका अभिप्राय यह नहीं था। वह यह नहीं कह रहा था कि खोये हुओं की सेवा करने में सहमत होना, और चोट खाये संसार की सेवा करना, हमारे विश्वास के अंगीकार को वैध ठहराता है या प्रमाणित करता है। बल्कि वह सिखा रहे हैं कि हम हमारे अंगीकार की वास्तविकता, दूसरे मसीहियों के साथ उनकी आवश्यकताओं में मदद करके और उनके साथ अपनी पहिचान बनाकर प्रदर्शित कर सकते है जो बन्दीगृह में है, निराश्रित है या प्रभु के लिये सताव सह रहे हैं। प्रमुख पद में जो भूखे प्यासे, बेघर, नंगे, बीमार और बन्दीगृह में हैं, वे खोए हुए लोग नहीं है जो पाप के कारण ऐसी बुरी दशा में पड़े हैं, परन्तु वे विश्वासी है जो परमेश्वर के समक्ष सही विवेक और मसीह के प्रति निष्ठा रखने के कारण दुख भोग रहे है।[11] वे परमेश्वर की संतानें हैं – मसीह के भाई हैं,[12] और

10 जब हम किसी विश्वास अथवा कार्य के क्रम को जो स्वयं पाठ में नहीं सिखाया गया है, को उचित ठहराना चाहते हैं तो बहाने के तौर पर हम धर्मशास्त्र का पाठ प्रयुक्त करते हैं।

11 1 पतरस 2:19–20.

12 इब्रानियों 2:11.

वे विश्वास में मसीह के साथ इस निकटता से जुड़े है कि उनकी सहायता करने या उपेक्षा करने का अर्थ मसीह की सहायता या उपेक्षा करने जैसा है।

जब हम यीशु की शिक्षा के सही संदर्भ को समझ लेते हैं, हम पाते हैं कि यीशु और यूहन्ना उसी सत्य की बात कर रहे है – व्यक्तिगत रूप में विश्वासियों के साथ और सामूहिक रूप में कलीसिया के साथ निःस्वार्थ प्रेम रखना, यह नये जन्म के सबसे बड़े प्रमाणों में से एक है। अंतिम न्याय पर अपनी चर्चा में यीशु ने कहा कि उसकी भेडें वे हैं जो भाइयों से प्रेम रखते हैं, चाहे उसकी भारी कीमत चुकानी पड़े। वह उन्हें उस राज्य का वारिस होने आमंत्रित करता है जो उनके लिये जगत की नींव रखे जाने से भी पहले तैयार किया गया है।[13] इसके विपरीत वह उनको दोषी ठहराता है जो प्रभु के भाइयों के प्रति अपने हृदय और हाथ को बन्द रखते हैं, जब उनके लिये बड़ी आवश्यकता का समय आता है, वे उनके प्रति प्रेम का प्रदर्शन नहीं करते, वह उन्हें बकरियों में गिनता है और अनंत विनाश के लिये भेज देता है।[14]

इस वार्त्तालाप में बताए गए सत्य को पूर्ण रूप में समझने के लिए नीचे दिया गया उदाहरण उपयोगी हो सकता है। कल्पना करे कि दूसरी शताब्दी के मसीहियों का एक छोटा समूह गुप्त रूप से तहखानों में नगर से दूर इलाके में मिला करता है। जब उनकी सभा समाप्त होती है वे अपने घरों में लौट जाते है, सब अलग–अलग मार्ग से लौटते है ताकि किसी को उन पर संदेह न हो। सब कुछ अगले दिन तक सामान्य रहता है जब खबर मिलती है कि उस छोटी मण्डली के दो भाई घर पहुँचने से पहले पकड़े गये थे। तुरन्त एक सभा बुलाई गई और उन दोनों भाइयों की सही स्थिति का पता लगाया गया। उन्हें बुरी तरह मारा–पीटा गया है और जेल में डाल दिया गया है, जहाँ उनके लिये भोजन पानी या आवश्यक मेडिकल चिकित्सा उपलब्ध नहीं है। उनकी स्थिति बुरी थी।

जब उन्होंने सुना कि क्या–क्या हुआ, यह छोटी मण्डली नैतिक उहापोह में फंस गई, उनके सामने सच्ची शिष्यता की जाँच आ गयी। यदि वे कुछ नहीं करते, तब मसीह में उनके भाइयों का नाश हो जायेगा (दूसरी शताब्दी की जेलें आज की जेलों के समान सुविधा देने वाली नहीं थी) किन्तु यदि वे अपने भाइयों की खोजखबर करते है तब उनको पहिचान लिये जाने और उन के समान दुख उठाने का खतरा है। साथ ही भोजन, जल, दवाएँ और नये वस्त्र जिनकी उन्हें आवश्यकता है वे महंगी है, और उनकी मण्डली में अधिकतर लोग गरीब श्रमिक और दास हैं।

जब उनके बीच विचार–विमर्श हुआ कि क्या करना चाहिये तब दो समूहों में लोग बँट गये। अधिकतर का मानना था कि उन्हें कुछ न कुछ करना चाहिये, चाहे उसकी जो भी कीमत चुकानी पड़े। उन्होंने कहा कि मसीह ने उनके लिये प्राण दिये और उन्हें भी उनके भाइयों के

13 मत्ती 25:34.

14 मत्ती 25:41.

लिये प्राण देना चाहिए।[15] उन्होंने आगे यह तर्क भी रखा कि वे यह नहीं कह सकते कि परमेश्वर का प्रेम उनमें हैं यदि वे अपने भाइयों के लिये कुछ नहीं करते जो मसीह के नाम के लिए दुख उठा रहे हैं।[16] किन्तु बहुतों के एकमत होने के बावजूद कुछ थोड़े लोग उनसे असहमत थे। उनके अभिमत में जेल में जाकर मिलना आत्महत्या करने जैसा है, और उससे कुछ नहीं होगा। उन्होंने तर्क किया कि बहुमत का विचार एक अनावश्यक प्रतिक्रिया है और एक अवास्तविक जोश का परिणाम है, यह अतिशय धर्म की धुन का खतरनाक स्वरूप है जो कुछ समय से कलीसिया में बढ़ रहा है। विवेकशीलता इस बात में है कि वे प्रतीक्षा करे जब तक कि मामला ठण्डा न हो जाये वैसे भी देखा जाये तो स्थिति इतनी बुरी भी नहीं है।

कुछ देर और बहस करने के बाद बहुमत ने निर्णय ले लिया, उन्होंने आवश्यक सामग्री एकत्रित की और प्रार्थनापूर्वक कलीसियाई संदेश वाहकों के हाथ से सामान भेज दिया। उन्होंने जेल में जाकर भाइयों से मुलाकात की उनके घावों की मरहम–पट्टी की, उन्हें वस्त्र पहिनाए, और खाने–पीने की सामग्री दी। अल्पमत के लोग जिन्होंने ऐसे मूर्खतापूर्ण और अनावश्यक कार्य में भाग लेने से मना कर दिया था वे वापस संसार में लौट गये या उन्होंने किसी और अधिक विवेकशील सहभागिता की खोज में चर्च छोड़ दिया।

इस उदाहरण में और यीशु की चर्चा में हम देखते हैं कि भेड़ों को बकरियों को अलग–अलग करने का पूर्वाभ्यास है, अर्थात वे जिनका हृदय–परिवर्तन हुआ है, और जिनका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ, और दोनों ही प्रकार के लोग एक ही मण्डली में है। बहुमत जिन्होंने अपने जेल में बन्द भाइयों के साथ खड़े होने का निश्चय किया, उन्होंने दर्शाया कि वे सचमुच नये जन्में है और परमेश्वर का प्रेम उनमें है।[17] स्वार्थमय और स्वयं को सुरक्षित रखने वाली अल्पमत की टोली ने दर्शाया कि वे विश्वास का अंगीकार तो करते है पर भाइयों से उनका प्रेम केवल 'शब्दों या जीभ' से था, 'कार्य एवं सत्य' के द्वारा नहीं था (1 यूहन्ना 3:18)।

किसी भी भले काम के समान भाइयों के प्रति हमारा प्रेम, हमारे उद्धार की ओर नहीं ले जाता पर, उस उद्धार का परिणाम है। पवित्रात्मा का 'नया–जन्म' देने का वही कार्य जो विश्वास करने के द्वारा हमें धर्मी ठहराता है, वही भाइयों के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न करता है ताकि सेवा की ओर अग्रसर करे।

प्रेम के लिये यह असंभव है

सच्चे हृदय–परिवर्तन की सबसे बड़ी जाँचों में एक जाँच वह वास्तविक एवं प्रभावी प्रेम है जो उनके लिए है जो मसीह के है और उसके नाम से जाने जाते हैं। यह प्रेम कविता या रंगमंच का

15 1 यूहन्ना 3:16.

16 1 यूहन्ना 3:17

17 1 यूहन्ना 3:17.

प्रेम नहीं है, पर वास्तविक और व्यवहारिक है। यह प्रेम स्वयं के लिये मृत है, और यदि आवश्यक हुआ तो उस नाम के लिए और उनके लिये जो उस नाम से जाने जाते है सब कुछ दाँव पर लगा देता है। ऐसा प्रेम नया जन्म और सच्चे हृदय–परिवर्तन में दिखाई देता है क्योंकि उनसे अलग यह प्रेम असंभव बात है।

पवित्रशास्त्र की शिक्षा है कि हृदय–परिवर्तन से पहले व्यक्ति परमेश्वर के पास नहीं आ सकता क्योंकि वह बुराई से प्रेम रखता है, धार्मिकता की निन्दा करता है और डरता है कि उसके बुरे काम कहीं उजागर न हो जाये।[18] इसी प्रकार, पाप में पतित मनुष्य मसीह के सच्चे चेले के साथ सहभागिता रखना नहीं चाहेगा क्योंकि वह उसके जीवन की धार्मिकता से चिढ़ रखता है और विश्वास कथनों से भय खाता है कि सत्य अनावृत न हो जाये। इस विचार बिन्दु की सत्यता प्रमाणित करने यूहन्ना ने पवित्रशास्त्र के सबसे कुख्यात अपराध – कैन द्वारा उसके भाई हाबिल की हत्या किये जाने का उदाहरण दिया है। वे अपने तर्क को रखते हुए प्रश्न करते हैं और एक सरल उत्तर भी देते है, ''उसने किस कारण से उसकी हत्या की? उसके कर्म तो दुष्ट और उसके भाई के कर्म धार्मिकता के थे'' (1 यूहन्ना 3:12)।

पाप में पतित मनुष्य एक धर्मी परमेश्वर से घृणा करता है और यदि वह कर सके तो उसकी हत्या कर देगा।[19] परिणाम स्वरूप वे परमेश्वर के धर्मी जनों से भी घृणा करते हैं और उनके प्रति आक्रामक है। यह शत्रुता एक बिरली घटना नहीं है, यह पाप में पतित इस संसार के ताने–बाने में बुनी हुई है। सबसे पहले अनाज्ञाकारिता के कार्य और उसके परिणाम स्वरूप मिले शाप के बाद सर्प के वंश (अनाज्ञाकारिता के संतानों) और स्त्री के वंश (परमेश्वर की संतानों)[20] के बीच एक बड़ी और लगतार बनी रहने वाली शत्रुता उत्पन्न हो चुकी थी। यद्यपि यह युद्ध कलवरी पर मसीहा की जय में अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा, किन्तु यह युद्ध परमेश्वर की प्रजा और संसार के बीच अंतिम दिन तक चलता रहेगा। गलातियों को लिखे अपने पत्र में प्रेरित पौलुस ने इस अनवरत युद्ध को इतिहास का सहारा लेकर समझाया है, और उन दो भाइयों के बीच संबंधों पर विशेष प्रकाश डाला है जिनके बीच विरोध की भावना उतनी ही कुख्यात है जितनी कैन और हाबिल के बीच थी: यह लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र थे, एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से। परन्तु जो पुत्र दासी से उत्पन्न हुआ वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो पुत्र स्वतंत्र स्त्री से हुआ वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। ....परन्तु जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ तो आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसे अब भी होता है। (गलातियों 4:22–23,29)।

पाप में पतित इस संसार और परमेश्वर की संतानों के बीच आक्रामकता एक इन्कार न करने योग्य सत्य है जो पवित्रशास्त्र और इतिहास दोनों में मिलता है। इसी कारणवश यूहन्ना अपने

18 यूहन्ना 3:19–20.

19 भजन. 2:1–3; रोमियों 1:30.

20 उत्पत्ती 3:15.

पाठकों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे उनके प्रति संसार की घृणा देखकर चकित न हो।[21] हमें एक मूल वास्तविकता को समझना चाहिए कि "वे सब जो मसीह यीशु में भक्ति पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमु. 3:12)। यीशु ने उपरौठी कोठरी के वार्त्तालाप के दौरान, क्रूस पर जाने से एक रात पहले, अपने चेलों को यही चेतावनी दी थी, ''यदि संसार तुम से घृणा करता है तो तुम जानते हो कि उसने तुमसे पहले मुझ से घृणा की है। यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से प्रेम करता परन्तु इसलिए कि तुम संसार के नहीं हो, क्योंकि मैंने तुम्हें संसार में से चुनकर निकाल लिया है – इसलिए संसार तुम से घृणा करता है'' (यूहन्ना 15:18–19)।

जब हम पवित्रशास्त्र में पाप में पतित मनुष्यों की परमेश्वर की संतानों के विरूद्ध आक्रामकता देखते हैं, अब हम समझ सकते है अधिक स्पष्ट रूप में कि भाइयों के बीच प्रेम क्यों हृदय– परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण जाँच है। स्वाभाविक मनुष्य परमेश्वर या उसके लोगों से प्रेम नहीं कर सकता। इस कारण मनुष्य जब इन दोनों से प्रेम करता है, भाइयों से अधिक से अधिक प्रेम करने की अभिलाषा करता है, और उन्हें मिलने वाले प्रेम में कमी के लिये विलाप करता है तब, ये बातें उसे उद्धार की अधिक बड़ी निश्चयता में पहुँचाती है। जब एक व्यक्ति जो एकसमय परमेश्वर के लोगों को तुच्छ जानता था, अचानक उनकी जैसी अभिलाषा में भागीदारी करता है और उनकी सहभागिता की लालसा करता है, यह एक बड़ा संकेत है कि कुछ न कुछ अद्‌भुत बात हुई है। यह परिवर्तन परमेश्वर की आत्मा के द्वारा नए जन्म के कार्य के बाहर समझा पाना संभव नहीं है।

जैसा कि यूहन्ना ने अपनी सम्पूर्ण पत्री में कहा है, मसीही व्यक्ति परमेश्वर के लोगों से प्रेम करेगा, किन्तु हमें यह भी समझना चाहिये कि भाइयों के लिये इस प्रेम में अन्य मसीही सद्‌गुणों के समान सदैव वृद्धि या बढ़ती की आवश्यकता है। कलीसिया के लिए हमारा आरम्भिक प्रेम, जिसे हमने हृदय–परिवर्तन के समय अनुभव किया वह पवित्रात्मा के नया जन्म देने के कार्य का परिणाम था। किन्तु उसके साथ ही साथ, हमारे प्रेम की लगातार बढ़ती पवित्रात्मा के हम में लगातार चलने वाले पवित्रीकरण के काम का परिणाम है। हम जानते है कि हम परमेश्वर की संतान है – इसलिए नहीं कि हमारा प्रेम सिद्ध है परन्तु इसलिए कि हम में परमेश्वर के बने रहने वाले कार्य के द्वारा वह प्रेम सिद्ध बनाया जा रहा है। 1 यूहन्ना 2:8 में प्रेरित पुष्टि करते हैं कि 'प्रेम करने की नयी आज्ञा' उन मनुष्यों में सच्ची थी, जिन्हें वह पत्री लिख रहा था, परन्तु उसी समय वह यह संकेत भी दे रहा था कि वह प्रेम उनमें पूर्णरूप में सिद्ध नहीं किया गया है, उनका प्रेम अभी उस कद तक नहीं पहुँचा था जो मसीह की परिपूर्णता में है,[22] परन्तु वह क्रमिक रूप में, धीरे–धीरे उनमें अधिक से अधिक वास्तविक बनता जा रहा था। पुराने जीवन का अंधकार उनमें से जा

21 1 यूहन्ना 3:13.

22 इफिसियों 4:13.

रहा था, और वे रूपान्तरित हो रहे थे और मसीह में परमेश्वर के निरन्तर बढ़ने वाले प्रकाशन के द्वारा बदलते जा रहे थे।

प्रेम की जाँच

अब हमें इन सत्यों के प्रकाश में हमारे जीवनों की जाँच करनी चाहिए। क्या हम परमेश्वर के लोगों से प्रेम करते हैं और उसके द्वारा अपने विश्वास की वास्तविकता को प्रगट करते है? क्या हमारा प्रेम गुप्त अभिवृत्तियों और भावनाओं ये युक्त है जिन्हें साबित नहीं किया जा सकता, या फिर वह वास्तविक, व्यवहारिक और शब्दों, अभिवृत्तियों, एवं कार्यो के दिखने योग्य प्रमाणों से प्रदर्शित किया जाता है? आप की सहायता के लिये, कि आप इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण मसले पर कहाँ खड़े है, नीचे दिये प्रश्न सहायक सिद्ध होंगे।

प्रथम, आप किसकी संगति में सबसे अधिक आनन्दित रहते है? क्या आप अन्य विश्वासियों की सहभागिता खोजते है और मसीह की बातों में आनन्दित होते है? या फिर आप संसार की सहभागिता पसंद करते है और शायद ही कभी परमेश्वर की बातें करते या कहते है? आप पिछली बार कब किसी दूसरे विश्वासीजनों से मिले थे, केवल इस इच्छा के साथ कि उनके साथ समय व्यतीत करेंगे और अधिक से अधिक मसीह की बातें करेंगे? हमें सावधानी पूर्वक इन प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए और यह समझना चाहिये कि जिसे मसीही सहभागिता कहते हैं उसके अधिकांश भाग का संबंध मसीह के साथ नहीं है।

दूसरा, क्या आप सार्वजनिक रूप में स्वयं की पहिचान मसीह से और उसके लोगों के साथ दर्शाते है? या फिर आप उस लज्जा से डरते हैं जो यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार करने वालों और उसके वचन की आधीनता में जीवन जीने वालों को मिलती है? क्या आपके अविश्वासी साथी आपकी पहिचान 'उन मसीहियों' में से एक के रूप में करते है? या फिर आप संसार से इतने घुले–मिले है और उनके साँचे में ऐसे ढ़ले है कि ऐसा आरोप शायद विरले ही कभी आपके विरूद्ध लगे? क्या आप परमेश्वर के लोगों के साथ खड़े होते है, उस संसार के सामने जो स्वयं को इतना परिष्कृत मानता है कि हमारे जैसों के धार्मिक भ्रम या उन्माद में शामिल होने से परहेज करता है?[23] या फिर आप चर्च से उस प्रकार की दूरी बनाकर चलते है जैसे कोई अपने किसी ऐसे रिश्तेदार से दूरी बनाकर रखता है जिससे वह शर्मिन्दा है? क्या आप स्वयं की पहिचान मूसा से कर सकते है जिसने "बड़े हो जाने पर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाना अस्वीकार कर दिया, उसने पाप के क्षणिक सुख भोगने की अपेक्षा परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा (इब्रानियों 11:24–25)?

23 1 कुरिन्थियों 4:9–13.

तीसरा, यद्यपि आप कलीसिया की बहुत सी निर्बलताओं और नैतिक असफलताओं से परिचित है, क्या आप उसकी उन्नति के लिये प्रतिबद्ध है? या फिर आप स्वयं को शैतान और संसार के साथ कलीसिया पर दोष लगाने लामबद्ध पाते हैं? हमें सदैव स्मरण रखना चाहिये कि शैतान भाइयों पर दोष लगाने वाला है और वे जो कलीसिया के बाहर खड़े होकर उसी के समान आरोप लगाते हैं,[24] वे अपने पिता शैतान का काम कर रहे हैं।[25] इसके विपरीत, सच्चे विश्वासीजन अपने भाई की असफलताओं पर प्रेमपूर्वक प्रतिक्रिया करते है और प्रेम बहुत से पापों को ढ़ांप देता हैं, और वे उसके पुर्नगठन और सुधार के लिये कार्य करते है।[26] वह कलीसिया और पाप में गिरे संत का त्याग नहीं कर सकता भले ही वे कितनी भी बार मार्ग से भटके। वह परमेश्वर के प्रेम से विवश होता है कि उनकी खोज करे, जैसे होशे ने गोमेर की खोज की, और उनके लाभ एवं भविष्य की महिमा के लिये परिश्रम करे।[27]

चौथा, क्या आप विश्वासियों की स्थानीय और दिखने वाली कलीसिया में एक समर्पित और योगदान करने वाले सदस्य है? हमें स्मरण रखना चाहिये कि यूहन्ना जिस प्रकार के प्रेम की बात लिख रहे थे वह केवल देह में अन्य विश्वासियों के साथ संबंधों में ही प्रगट होता है। क्या आप आपने अंह के लिये मर रहे हैं, और अन्य मसीहियों की सेवा के लिये अपना जीवन दे रहे है? क्या आप अपने विभिन्न आत्मिक वरदानों के माध्यम से कलीसिया की उन्नति के लिये परिश्रम कर रहे है? सरल शब्दों में कहें तो आप परमेश्वर के लोगों को बनाने के लिए और उन में मसीह के कार्य को बढ़ाने के लिये वास्तव में क्या कर रहे है?

ये प्रश्न केवल याजक वर्ग के लिये नहीं है परन्तु मसीह की देह के प्रत्येक सदस्य के लिये है। वास्तव में मसीह की देह में एक सदस्य होने का एक प्रमाण यह है कि हम वास्तव में उनके लिये उपयोगी है। साथ ही साथ, हृदय–परिवर्तन न होने का एक प्रमाण यह भी है कि हम परमेश्वर के लिये किसी भले काम में उपयोगी नहीं है।[28] विश्वास के जैसे प्रेम भी बिना कामों के मृत है।[29] हम यह स्मरण रखें तो बेहतर होगा कि भेड़ों और बकरियों को इस आधारपर अलग–अलग किया गया था कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों के लिये क्या किया और क्या नहीं किया।

निष्कर्ष में, प्रेम केवल बहुत सी अच्छी बातों में से एक बात नहीं है पर यह सबसे अधिक उत्तम बात है, यहाँ तक कि विश्वास और आशा से भी बढ़कर है।[30] इस कारण यह असामान्य बात

---

24 यूनानी भाषा के *डाबोलोस* से अनुवादित होकर ''शैतान'' नाम निकला है, जिसका अनुवाद ''दोष लगाने वाला'' भी किया जा सकता है। यह उसकी ओर संकेत करता है जो झूठी बात करने और दोषारोपण करने में सिद्व हो।

25 यूहन्ना 8:44; प्रकाशितवाक्य 12:10.

26 1 पतरस 4:8.

27 होशे 3:1–3.

28 रोमियों 3:12.

29 याकूब 2:17.

30 1 कुरिन्थियों 12:31, 13:13.

नहीं है कि यूहन्ना प्रेम को हृदय–परिवर्तन की जाँचों में इतना ऊँचा स्थान देता है। हमें अपनी धर्म–शिक्षा संबंधी धारणाओं को पवित्रशास्त्र के मानदण्ड पर तौलना चाहिए और अपनी व्यक्तिगत धर्मपरायणता और समर्पण के जीवन को उसके प्रकाश में जाँचना चाहिए। किन्तु अन्य सब बातों से अधिक हमें प्रेम के लिये अपनी जाँच करनी चाहिए। अवश्य है कि यह सद्‌गुण हम में हो और इसके पहले कि हम अपने हृदयों में यह धारणा बना ले कि हम उसे जान गये है, जैसा यूहन्ना ने हमें 1 यूहन्ना 3:14 और 1 यूहन्ना 4:20 में, और बहुत बार स्मरण दिलाया है, प्रेम हमारे कामों में प्रगट होना चाहिए:

> 1 यूहन्ना 3 14 हम जानते है कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में आ पहुंचे हैं, क्योकिं हम भाइयों से प्रेम रखते हैं. वह जो प्रेम नहीं रखता मृत्यु में बना रहता है।
>
> 1 यूहन्ना 4:20, यदि कोई कहे, "मै परमेश्वर से प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करे तो वह झूठा है क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं करता तो वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं कर सकता।

अध्याय – 8

संसार का तिरस्कार करना

संसार से प्रेम न करो, और न उन वस्तुओं से जो संसार में है। यदि कोई संसार से प्रेम करता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि वह जो संसार में है, अर्थात शारीर कि अभिलाषा, आखों कि लालसा और जीवन का अहंकार, पिता कि ओर से नहीं परन्तु संसार कि ओर से है।

– 1 यूहन्ना 2:15–17

हमने मसीही जीवन के बहुत से प्रमुख प्रमाणों पर विचार किया है: परमेश्वर के प्रकाशन के अनुरूप जीवन में चलना, पाप का अंगीकार करना, आज्ञाओं को मानना, मसीह का अनुकरण करना, और अपने भाइयों से प्रेम करना। इस अध्याय में, हम एक और चिन्ह इस सूची में जोड़ेंगे–विश्वासी द्वारा संसार का लगातार और निरन्तर बढ़ने वाला इंकार।

पृथ्वी पर यह 'संसार' क्या है?

'संसार' क्या है? यह किस से बना है? शब्द 'संसार' ग्रीक शब्द Kosmos का अनुवाद है। नये नियम में इसे भौतिक जगत या उसमें रहने वाले मनुष्यों के संदर्भ में उपयोग किया गया है। इसका उपयोग 'यूहदियों' और 'अन्य जातीय लोगों के बीच अन्तर दर्शाने के लिये भी किया जा सकता है।[1] परन्तु इस संदर्भ में और अन्य दूसरे संदर्भों में शब्द 'संसार' को विशेष नकारात्मक अर्थ में उपयोग किया जाता है। यह हमारे मानवीय अस्तित्व की हर उस बात के संदर्भ में आता

1 रोमियों 11:12.

है जो परमेश्वर के ज्ञान के विपरीत है, उसकी इच्छा के विरूद्ध है, और परमेश्वर के व्यक्तित्व के प्रति आक्रामक है। इसमें पतित मानवता के सभी विचार, कामनाएँ, दर्शन, अभिवृतियाँ और आचरण का विशाल भाग शामिल है। यद्यपि 'संसार' ज्ञान, परिष्कार, और यहाँ तक कि धर्मपरायणता के सर्वश्रेष्ठ वस्त्रों को धारण करता है, अंत में संसार में तीन क्षुद्र या बुरे तत्वों का गठजोड़ है – शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और डींगमार जीविका का घमण्ड।

शरीर की अभिलाषा

शब्द 'अभिलाषा' ग्रीक शब्द epithumia का अनुवाद है जिसका अभिप्राय इच्छा, लालसा, धुन या चाह से है। यह शब्द नकारात्मक नहीं है, परन्तु सदंर्भ के अनुसार नकारात्मक अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है। सकारात्मक रूप में देखे, यीशु ने अपने चेलों के साथ फसह पर्व को मनाने की सच्ची अभिलाषा की।[2] प्रेरित पौलुस की बड़ी अभिलाषा थी कि थिस्सलुनीकियों से मिले।[3] फिलिप्पी की कलीसिया से उसने अपनी अभिलाषा का अंगीकार किया कि वह कूच करने और मसीह से मिलना चाहता है।[4]

यद्यपि ये सभी सकारात्मक उदाहरण शब्द epithumi से अनुवाद किये गये हैं, नये नियम में यह शब्द अधिकतर एक लालसा और तीव्र अभिलाषा को अभिव्यक्त करने में उपयोग हुआ है जो परमेश्वर की इच्छा की परिधि से बाहर है या उस दिशा और तीव्रता में है जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं है।[5] मरकुस के सुसमाचार में यह शब्द संसार की वस्तुओं की अनुचित अभिलाषा दर्शाने के लिये उपयोग किया गया है जिसमें सुसमाचार की प्रगति को रोकने की क्षमता है और व्यक्ति के जीवन को फल रहित बनाती है।[6] प्रेरित पौलुस ने इस शब्द का उपयोग लालच के पाप या किसी वस्तु की चाह को दर्शाने में किया है जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत है।[7] पतरस ने इस शब्द का उपयोग शारीरिक मनुष्य की भ्रष्ट लालसाओं को दर्शाने के लिये किया है जो परमेश्वर के अधिकार को तुच्छ जानते है और परमेश्वर के विरोध में जीते है।[8]

शब्द 'शरीर' इब्रानी भाषा के शब्द basar और ग्रीक भाषा के शब्द Sarx का अनुवाद है, इसके विभिन्न अर्थ है जो सदंर्भ पर निर्भर है। प्रथम, यह मनुष्य की भौतिक देह को दर्शाता

2 लुका 22:15.

3 1 थिस. 2:17.

4 फिलिप्पीयों 1:23.

5 वह इच्छा परमेश्वर की इच्छा के विरूद्व हो सकती है जो प्रतिबंधित वस्तु की ओर आगे बढ़े। वह तब भी परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हो सकती है, जब अनुमति दी गयी वस्तु की ओर व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता बराबर हो या परमेश्वर से बढ़कर हो।

6 मरकुस 4:19.

7 रोमियों 7:7–8.

8 2 पतरस 2:10.

है – उसका शरीर, माँस, लोहू और हड्डियाँ इत्यादि।[9] दूसरा, यह मनुष्य को एक निर्बल और तात्कालिक प्राणी के रूप में दर्शाता है, विशेषकर परमेश्वर की तुलना में, जो अंनतकालीन और सर्वशक्तिमान आत्मा है।[10] तीसरा, यह मनुष्य के पाप में पतन और उसके स्वभाव की नैतिक विकृति को दर्शाता है जो बिना नया जन्म पाये मनुष्य की दशा है। यह तीसरा विकल्प ही वह अर्थ है जिसमें यूहन्ना ने में यह शब्द इस पाठ में उपयोग किया है।

तीन बातें जो संसार के पाप में पतन को अधिकांश रूप में दर्शाती है उनमें प्रथम है, शरीर की अभिलाषा। सामान्य तौर पर पतित मनुष्य और उसकी सामूहिक संस्कृति उसके तत्वरूप में भ्रष्ट और नैतिक रूप में विकृत हृदय की पापमय अभिलाषाओं को संतुष्ट करने के लिये उनकी इच्छा द्वारा चालित, प्रेरित या प्रभावित की जाती है। यह सब अपराधों का अपराध है – सबसे बुरे स्वरूप में मूर्तिपूजा है। एक विवेकयुक्त प्राणी जो भी करता है, उसका एक उद्देश्य रखता है। प्राणी जितना उच्चतर और परिष्कृत होता है, उसके कामों के लिये उसके उद्देश्य भी उतने ही उच्चतर और परिष्कृत होते है। मनुष्य, परमेश्वर की सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ, परमेश्वर के स्वरूप की समानता में और परमेश्वर की महिमा करने के लिये बनाया गया था। चाहे खाए या पीए, या किसी भी कार्य को करे, बड़े से बड़ा या छोटे से छोटा कार्य, उसे वह सब कार्य परमेश्वर की महिमा और परमेश्वर की सुइच्छा पूरा करने के लिये करना चाहिए।[11] सार यह है कि मनुष्य पूरी तरह परमेश्वर के प्रेम में खोया रहे और उसकी धुन से परिचालित रहे। उसकी हर एक सांस और हृदय की धड़कन परमेश्वर की महिमा के लिए हो, हर गतिविधि और उपलब्धि का अंत परमेश्वर की सुइच्छा में हो।

यद्यपि मनुष्य को सबसे उच्चतम लक्ष्य के लिये सृजा गया था, पवित्रशास्त्र साक्षी देता है कि मनुष्य ने पाप किया और उस महिमा से रहित हो गया।[12] उसने स्वयं को गलत स्थान और गलत स्वरूप में लाकर रख दिया। अब वह परमेश्वर के प्रति अलौकिक प्रेम या अनुराग से चालित नहीं है, पर गिर चुका है और उसके नैतिक रूप में भ्रष्ट हृदय की अभिलाषाएँ पशुओं के समान है। पवित्रशास्त्र की दृष्टि में स्वाभाविक मनुष्य शरीर की अभिलाषा में जीता है और उनमें संलिप्त रहता है, वह स्वभाव ही से क्रोध की संतान है।[13]

संसार के इस प्रथम लक्षण में, हम नये जन्में हुओं और पाप की दशा में बने रहने वाले मनुष्यों के बीच का अंतर देखते, समझते हैं। और तब हम ''परमेश्वर की संतानों' और उनमें जो 'परमेश्वर को नहीं जानते' के बीच एक विभाजक रेखा खींचते है। वह व्यक्ति जो उसके शरीर की पापमय अभिलाषाओं के द्वारा दास बनाया गया है और उनके द्वारा चालित है, उसने परमेश्वर

9 2 कुरिन्थियों 10:3; गलातियों 2:20; फिलिप्पीयों 1:22.

10 यशायाह 31:3.

11 1 कुरिन्थियों 10:31.

12 रोमियों 3:23.

13 इफिसियों 2:3.

को नहीं जाना है, भले ही वह विश्वास का अंगीकार करे और मसीह के साथ अपनी पहिचान का दावा करे। परन्तु वह जिसने शरीर को उसकी इच्छाओं और लालसाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया, और जो पवित्रआत्मा की स्वतंत्रता में चल रहा है, उसे आशा रखने का बड़ा कारण है कि वह परमेश्वर की संतान बन चुका है।[14]

यह बात महत्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य है, हम यह नहीं कह रहे हैं कि सच्चे मसीही शरीर या शरीर की अभिलाषाओं से छूट चुके हैं या शरीर उस पर कभी जयवन्त नहीं होगा। प्रेरित पौलुस ने यह बात स्पष्ट रूप में कही है कि विश्वासी का शरीर से युद्ध वास्तविक और उग्र भी है। गलातियों को लिखे अपने पत्र में वे इस युद्ध को निरन्तर चलने वाला बताते है, "शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है। ये तो एक दूसरे के विरोधी है कि जो तुम करना चाहते हो, उसे न कर सको" (गलातियों 5:17)।

हृदय–परिवर्तन का प्रमाण शरीर के साथ युद्ध न होना नहीं परन्तु इसके विपरीत है। व्यक्ति सचमुच नया जन्मा है उसके बड़े प्रमाणों में एक यह है कि वह शरीर से मित्रता छोड़ चुका है और बिना संधि की भावना मन में रखे उसके विरूद्ध युद्ध छेड़ चुका है। हमें यह समझना चाहिये कि उस व्यक्ति में उद्धार का प्रमाण नहीं है जो पाप, शरीर एवं संसार के साथ शांति में बना रहता है। बाइबल में दिये उद्धार की निश्चयता उस व्यक्ति के लिए नहीं है जो पूरी रीति से अपने पतित शरीर की आधीनता में है और उसकी भ्रष्ट लालसाओं के अनुसार चलता है। वह व्यक्ति जो सदोम में शांति पूर्वक रहता है, उसमें पवित्रात्मा के निवास का प्रमाण नहीं है, और उसमें जो संसार के साथ मैत्री कर चुका है या अपने शरीर का मित्र बन चुका है। किन्तु उस व्यक्ति में उद्धार का बड़ा प्रमाण मिलता है जो पाप के प्रति घृणा में बढ़ रहा है, जो शरीर के प्रति युद्ध में बढ़ता है, और प्रतिदिन संसार के प्रति अरूचि में बढ़ता जाता है। प्रेरित पौलुस ऐसे व्यक्ति का सटीक उदाहरण है। वह लिखता है:

> और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने अपने शारीर को दुर्वासनाओं तथा लालसाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। (गलातियों 5:24)
>
> संसार मेरी दृष्टी में क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है, और मै संसार की दृष्टी में। (गलातियों 6:14)

आँखों की अभिलाषा

यूहन्ना अब पाप में पतित संसार के दूसरे लक्षण की चर्चा करते है – आँखों की अभिलाषा। बहुत से टीकाकार, प्राचीन और समकालीन, इस बात में सहमत है कि यह संक्षिप्त किन्तु कठिन वाक्यांश उन पापमय अभिलाषाओं के संदर्भ में है जो हमारे देखने के कारण क्रियाशील और उत्तेजित होती

14 गलातियों 5:16, 24–25.

है। यह आँख है जिसके देखने पर हम उन बातों की लालसा या लालच करते है जिनके लिये परमेश्वर का प्रेम और धार्मिकता मना करती है।

आरम्भ से ही आँखें परीक्षा में डालने का मार्ग बनी है। अदन की वाटिका में हव्वा ने वर्जित फल को देखा जो ''आँखों के लिये लुभावना'' था और वह परीक्षा करने वाले धोके का शिकार बनी (उत्पत्ति 3:6) अकान ने 'शिनार की सुपर ओढ़नी', दो सौ शेकेल चाँदी, सोने की ईंट, 'देखी' और 'लालच' किया, जबकि लूट में वे सब वर्जित थे उसने उन्हें रख लिया और अपने एवं अपने परिवार के लहू से उसकी कीमत चुकाई (यहोशू 7:20–21; 24–26)। राजा दाऊद ने बतशेबा की सुन्दरता को 'देखा' और व्यवस्था से फिर गया, और उसने उसे अपना बना लिया (2 शमूएल 11:2–5)। परिणाम एक सैनिक की हत्या, नवजात शिशु की मृत्यु, राजा के रूप में अनादर और राज्य का विभाजन। मत्ती ने हमें बताया कि शैतान यीशु मसीह को एक ऊँचे पर्वत पर ले गया और वहाँ से उसे संसार के साम्राज्यों का वैभव और उनकी महिमा दिखाई (मत्ती 4:8–10)। यद्यपि समय के साथ अचूक प्रमाणित यह युक्ति मसीह के सामने निष्फल हो गई, परखने वाले द्वारा इसका उपयोग प्रमाणित करता है कि युद्ध के हथियारों में इसका बार–बार उपयोग किया जाता है।

जब हम इन विवरणों पर विचार करते हैं, तब सोचते हैं कि इन मनुष्यों ने तब पाप किया जब उन्होंने वे काम किए, परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्होंने उन कामों को करने से बहुत पहले ही पाप कर लिया था। यीशु ने शिक्षा दी है कि वास्तव में व्याभिचार का कार्य न करने पर भी यदि व्यक्ति ने मन में सोच लिया है तो व्यवस्था का उलंघन अर्थात् व्याभिचार हो चुका। उन्होंने हमें चेतावनी देकर कहा है, ''जो कोई किसी स्त्री को कामुकता से देखे, वह अपने मन में उससे व्याभिचार कर चुका।'' (मत्ती 5:27–28)। हमारे हृदयों में पाप की गम्भीरता को दर्शाने के लिये, यीशु ने शिक्षा के बतौर एक अतिश्योक्तिपूर्ण कथन कहा जिसमें वे कहते है कि अनंत विनाश की स्थिति से बेहतर है हम अंगभंग को प्राथमिकता दे, और ऐसी बिगड़ी आँख को निकाल फेंके।[15] यही कारण है कि अय्यूब ने कहा कि उसने अपनी आँखों से वाचा बाँधी थी कि किसी कुमारी स्त्री को नहीं देखेगा।[16] और संभवतः भजनकार अपने मन में सर्वप्रथम मूरतों के विरूद्ध है, जब वह कहता है कि अपनी आँखों के सामने किसी बुराई को रहने न देगा तब उसका सिद्धांत यही है।[17] ये सभी पवित्रशास्त्र के पद प्रमाणित करते है वह बात जो स्पर्जन ने अति स्पष्ट शब्दों में कही थी – ''आँखों को जो सम्मोहित करता है, वह हृदय में प्रवेश करता है, जैसे वाटिका में 'वर्जित फल' ने पहले हव्वा की आँखों को लुभाया और तब उसके मन और हाथ पर नियंत्रण कर लिया।''[18]

15 मत्ती 5:29–30.

16 अय्यूब 31:1.

17 भजन. 101:3.

18 C. H. Spurgeon, *The Treasury of David* (Grand Rapids: Zondervan, 1950), 1:240.

पाप में पतित मानव के स्वभाव के तत्वरूप में भ्रष्ट होने के कारण, नया जन्म न पाया हुआ हृदय, उन सभी वस्तुओं की लालसा से भरा है जो पवित्र परमेश्वर की धार्मिकतामय व्यवस्था के विपरीत है। किन्तु लालसाओं की अग्नि को ज्वाला मिलती है जब कोई दुष्ट वस्तु उसके सामने होती है जिसे वह साफतौर पर देख सके और वह उसकी पहुँच के भीतर हो। तब स्थिति को बद से बदतर करते हुए लालसा की आग बढ़ते–बढ़ते उन ऊँचाईयों और बल को प्राप्त करती है, जब नये–जन्म से रहित हृदय को बताया जाता है कि अमुक–अुमक कार्य प्रतिबंधित या वर्जित है। यह बाइबल का सुस्थापित नियम है परमेश्वर जिस बात के लिये जितना मना करते है, पाप में पतित हृदय उसकी उतनी अधिक अभिलाषा करते हैं।[19]

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने यहूदी साहित्य से चुनकर आँख को 'शरीर का दीया' कहा था (मत्ती 6:22–23)। वहाँ विचार यह है कि किसी व्यक्ति की आँखों के केन्द्र में बसी वस्तु उसके हृदय के विचार और दशा को प्रगट करती है। वह व्यक्ति जिसने अपनी आँखों को बुराई से हटाने और स्वर्ग के राज्य पर केन्द्रित करने का निश्चय कर लिया है, वह दर्शाता है कि उसका हृदय सुसमाचार के द्वारा और पवित्र आत्मा के नये जन्म के कार्य के द्वारा सही बनाया जा चुका है। किन्तु वह व्यक्ति जो परमेश्वर के राज्य में कोई सौंदर्य या लाभ नहीं देखता (पाता) परन्तु इस संसार की वस्तुओं पर दृष्टि रखता है, वह प्रदर्शित करता है कि उसका हृदय नया जन्मा नहीं है और सुसमाचार ने उसमें प्रभावी कार्य नहीं किया है।

हमारी समकालीन स्थितियों में इस शिक्षा को उचित रीति से लागू करने के लिए अवश्य है कि हम पहले यह जान ले कि हम जिस संस्कृति में रहते हैं वह उन बुरी बातों से प्रभावित है जो हमारी दृष्टि के सामने झूलती रहती है। यह अकारण नहीं है कि हमारे युग के व्यापारी आँख पर इतना अधिक भरोसा करते है। वे जानते है कि एक दृश्य–प्रभाव के द्वारा वे हमारे हृदयों को उन बातों की लालसा के लिये प्रदीप्त कर सकते है जो पहले सुप्त थी, और उसे लालसा करने विवश कर सकते हैं जिसे केवल एक घड़ी पहले वे जानते भी नहीं थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने संसार के सबसे बड़े परखने वाले शैतान की रणनीतियों में से अपने लिये रणनीतियाँ चुनी है। वह आरम्भ ही से जानता था कि हृदय के लिये आँख सबसे बड़ा और चौड़ा मार्ग है।

यदि हमें हृदय–परिवर्तन और उसके प्रमाणों के लिये बाइबल–सम्मत होना है, तो हमें हमारे सामने प्रस्तुत इस शिक्षा को स्वीकार करना चाहिये कि हृदय–परिवर्तन के सबसे बड़े प्रमाणों में एक है व्यक्ति के जीवन का केन्द्र किस बात में है। वे जो परमेश्वर के राज्य में स्थान पाने का दावा करते हैं, पर जिनके विचारों में राज्य की बातें शायद ही कभी होती है, उन्हें अपने अंगीकार की जाँच करनी चाहिये। यदि हम इस संसार की बातों की लालसा करते है, और शारीरिक प्रतिफल के कारण दूर भागते हैं, हम स्वर्ग का राज्य पाने के हकदार नहीं है, और यदि हम दूसरों

19 रोमियों 7:7–13.

के सांसारिक लाभों या उपलब्धियों का लोभ करते है, तो हम परमेश्वर के राज्य से बहुत दूर है। हमें अपने कानों पर जोर देकर सुनना और समझना होगा कि नीचे दिये गये सुधार के वचनों का अभिप्राय क्या है।

> जो रोटी नहीं है उसके लिए रुपया और जिस से पेट नहीं भरता उसके लिए अपनी शक्ति क्यों गवातें हो? ध्यान से मेरी सुनो, और जो उत्तम है उसे खाओ, तथा बहुतायत से पाकर आनंदित हो जाओ। (यशायाह 55:2)
>
> यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण को खोए तो उसे क्या लाभ? अथवा मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? मत्ती 16:26

उद्धार का प्रमाण उसके फल में है। यदि आपका हृदय वास्तव में नया जन्म पा चुका है, तब आप एक नयी सृष्टि है और आपके नये अनुराग आपकी आँखों को संसार के आकर्षणों से हटाकार उन बातों पर लगाएगे जो स्वर्ग की है। यदि आपका हृदय वास्तव में नया जन्मा है, तब स्वर्ग का राज्य आपके लिये 'खेत में छुपे खजाने' के समान होगा। जिसे एक मनुष्य पाता है और छुपा देता है, और आनन्दपूर्वक जाकर अपना सबकुछ बेच देता है और उस खेत को खरीद लेता है।[20] और आप एक मोतियों के व्यापारी सदृश्य ठहरते हैं जो एक सच्चा मोती पा लेता है जिसकी बड़ी कीमत है, और आप अपना सबकुछ बेचकर उस मोती को खरीद लेते हैं।[21] यदि आपका सचमुच में हृदय परिवर्तन हुआ है तो धीरे–धीरे, पवित्रात्मा के लगातार बढ़ने वाले पवित्रीकरण के कार्य के द्वारा, आप आइजक वॉट्स के इन भावनाप्रवण शब्दों को दृढ़ता पूर्वक कह सकते है – ''जब मैं अद्भुत क्रूस पर दृष्टि करता हूँ'':

> तब उन सभी व्यर्थ बातों को, जो मुझे आकर्षित करती है,
> मैं उसके लहू के सामने बलिदान कर देता हूँ...
>
> तब सारा संसार मेरे लिये और
> मैं संसार के लिये मर जाता हूँ।

गर्वीला जीविका का घमण्ड

'गर्वीला जीविका का घमण्ड' शब्द ग्रीक के alazoneia tou biou का अनुवाद है। शब्द alazoneia का सही अनुवाद है 'गर्वीला घमण्ड', यह निरर्थक, अतिरेक युक्त, अनुचित और दूसरों को नीचा दिखाने वाला घमण्ड है जो डींगे मारता है या बड़ी–बड़ी बातें करता है। नये नियम में केवल एक ही स्थल पर इस शब्द का उपयोग हुआ है, जब याकूब कड़े शब्दों में बड़ी–बड़ी योजनाएँ और

20 मत्ती 13:44.

21 मत्ती 13:45–46.

बड़े अभियानों की बातें करने वाले धनवानों को चेतावनी देते हैं, जब वे परमेश्वर से अलग होकर उसकी कृपा अथवा स्वयं की निर्बल मरणशीलता पर विचार नहीं करतेः

> सुनो, तुम जो यह कहते हो, 'आओ, हम आज या काल अमुक नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे और व्यापार करके लाभ उठाएंगे,' फिर भी यह नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या होगा। तुम तो भाप के सामान हो, जो थोड़ी देर दिखायी देती है फिर अदृश्य हो जाती है। पर इसके विपरीत तुम्हे यह कहना चाहिए, 'यदि प्रभु की इच्छा हो तो हम जीवित रहेंगे और यह अथवा वह काम करेंगे।' पर अब तुम अपनी दुष्टता पर डिंग मरते हो, और ऐसी डींगे मारना बुरा है (4:13–16)।

नये नियम में ग्रीक भाषा के 2 शब्दों का अधिकतर अनुवाद 'जीवन' किया गया है – सबसे आम शब्द zoe है, जिसका अभिप्राय मूल या जीवन का सार है। दूसरा शब्द bios है जिससे शब्द 'बायोग्राफी' निकला है। यह शब्द व्यक्ति के जीवन के कालखण्ड या काल की ओर संकेत करता है, या फिर उन पर जिनसे यह जीवन संभाला जाता है – संसाधन, धन, सम्पत्ति या जीविका। बाद के एक अध्याय में जहाँ यूहन्ना ने कंगालों के प्रतिविश्वासियों की जिम्मेवारी पर चर्चा की है, यह शब्द 'संसार की सम्पत्ति' अनुवाद किया गया हैः "परन्तु जिस किसी के पास इस संसार की सम्पत्ति है, और वह अपने भाई को आवश्यकता में देखकर भी उसके प्रति अपना हृदय कठोर कर लेता है, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है" (1 यूहन्ना 3:17)।

इन दो शब्दों को मिलाकर हम जो जानते है और नये नियम में उनके उपयोग से हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि 'गर्वीला जीविका का घमण्ड' लोगों के उस घमण्ड या हठ को दर्शाता है जो न केवल अपनी उपलब्धियों और सम्पत्ति पर गर्व करता है पर उन्हें प्राप्त करने का श्रेय स्वयं की बुद्धि और शक्ति को देता है। यह सांसारिक मनुष्य की बड़ी पहिचान है जो स्वयं को परमेश्वर से पृथक रखते और उसकी कृपा से स्वतंत्र मानते है – अपनी दृष्टि में, वे नायक है जिन्होंने स्वयं अपना अस्तित्व रचा है, अपनी नियति बनाई है, और अपनी इच्छा के बल, अपनी बुद्धि, और शारीरिक शक्ति से सम्पत्ति जुटाई है। वह अपनी उपलब्धियों और सराहना को भी व्यक्तिगत और निजी विजय मानता है, जिसमें ईश्वरीय अनुग्रह या सहायता का कोई हाथ नहीं है, और भजनकार ने उसके विषय में वर्णन किया है कि वह अपनी योजनाओं को बनाने में परमेश्वर का विचार नहीं करता और जब उसकी योजनाएँ सुफल हो जाती है तब परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करताः

> दुष्ट अपने अभिमान के कारण परमेश्वर की खोज नहीं करता, उसका तो पूरा विचार है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं। ...... वह अपने मन में कहता है कि मै कभी टलने का नहीं, पीढ़ी से पीढ़ी तक मै विपत्ति में नहीं पडूंगा (भजन संहिता 10:4, 6)।

गर्वीले जीविका के घमण्ड को इस प्रकार अभिव्यक्त करते हुए हमें सावधानी पूर्वक समझना चाहिये कि इसमें अनीश्वरवाद की उद्घोषणा या परमेश्वर के विरूद्ध खुलकर विद्रोह करने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार की अभिवृति उनमें भी फूल–फल सकती है जो परमेश्वर पर

भरोसा करने का अंगीकार करते हैं, यहाँ तक कि उसे धन्यवाद भी देते है। कलीसियाओं में एक व्यवहारिक अनीश्वरवाद का अस्तित्व है जो खुलकर बोलने वाले और विरोध करने वाले उसके भाई से अधिक खतरनाक और निडर है। वह मसीहत के वस्त्र पहनता है और यीशु को प्रभु मानकर स्वीकार करने का अंगीकार भी कर सकता है, परन्तु शायद ही कभी व्यवहारिक स्तर पर परमेश्वर की इच्छा का विचार करता है। वह परमेश्वर से उसके संकल्प में शामिल होने का निवेदन कर सकता है जो उसने पहले से तय कर रखा है या उसकी पूर्व संचरित योजना को आशीष देने के लिये कह सकता है। वह अपने अभियान में परमेश्वर की सहायता मिलने की बात मान सकता है, परन्तु वह अकसर बची खुची कृतज्ञता व्यक्त करता है, जब वह स्वयं को महिमा देकर संतुष्ट हो जाता है, तब 'मेज का चूरचार' परमेश्वर को देता है। वे जो परमेश्वर का उपयोग इस प्रकार करते हैं वे नीतिवचन के बुद्धिमान मनुष्य के विपरीत है जो अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रभु पर भरोसा करता है और अपनी स्वयं की समझ का सहारा नहीं लेता, वरन् अपने समस्त मार्गों में परमेश्वर को मान्यता देता है।[22]

गर्वीला जीविका का घमण्ड स्वयं की आराधना का सर्वोच्च शिखर है, और जो इसमें लिप्त होते है, वे प्राचीन कसदियों के समान दयनीय है जो जाल से मछलियाँ पकड़ते और तब उसके सामने बलिदान चढ़ाते है।[23] वे बिना जीवन के उस जाल की उपासना करते हैं और उस परमेश्वर का विचार नहीं करते जो 'अपना सूर्य भले और बुरे दोनों पर उदय करता है और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है' (मत्ती 5:45)। पवित्रशास्त्र के अनुसार जो स्वयं की उपासना करते और व्यक्तिगत उपलब्धियों पर घमण्ड करते है, वे उस भाप की आराधना करते है जो थोड़ी देर दिखाई देती है और फिर अदृश्य हो जाती है, वे सांस मात्र है, और गुजरती छाया के सदृश्य है, वे नासिका में भरी श्वांस के तुल्य है।[24] ऐसा मनुष्य बड़ी–बड़ी बातों की बड़ी–बड़ी डींगे मारता है, किन्तु अपने सिर के एक बाल को सफेद या काला नहीं कर सकता और न अपने जीवन में एक घड़ी जोड़ सकता है।[25] अपनी सारी शान शौकत के साथ वह पशुओं के समान है जो नाश हो जाते हैं, वे उस ओस की बून्द के समान है जो भोर होने के बाद पहले घण्टे में उड़ जाती है या फिर भूसी के समान है जो खलिहान में वायु से उड़ाई जाती है।[26]

ऐसा व्यक्ति यह नहीं देख पाता कि परमेश्वर ही सब मनुष्यों को जीवन, श्वांस, और सभी वस्तुएं देते हैं ताकि वे उसे खोजे और पाए।[27] वे नहीं जानते कि यदि वह अपना मुख उनसे छिपा

22 नीतिवचन 3:5–6.

23 हबक्कूक 1:15–16.

24 भजन. 39:5, 144:4; यशायाह 2:22; याकूब 4:14.

25 मत्ती 5:36; 6:27.

26 भजन. 49:20; होशे 13:3.

27 प्रेरितों के काम 17:25–27.

ले, वे घबरा जाएंगे, और यदि वह अपना आत्मा वापस ले ले वे मृत हो जाएंगे और धूलि में लौट जाएंगे।[28] ऐसे व्यक्तियों ने कभी यह नहीं सोचा कि ''मनुष्य क्या है कि तू उस की सुधि ले?'' (भजन संहिता 8:4)। वे इस सत्य से अनजान है कि उसके सामने देश–देश के लोग बाल्टी में एक बून्द पानी और उनका कुल योग पलड़ों पर की धूल के एक कण के समान ठहरता है।[29]

गर्वीले जीविका के घमण्ड के मामले में हम परमेश्वर की संतानों और उनमें जो उसे नहीं जानते, एक बहुत बड़ा अन्तर पाते है। वे जो आत्मा के द्वारा नये जन्मे है और उसके पवित्रीकरण के कार्य को पाते है, वे उनके जीवन में मसीह के ज्ञान में निरन्तर बढ़ते जाते है, और मसीह से अलग होकर वे ''अभागे, दयनीय, कंगाल, अंधे और नंगे'' है।[30] वे सीख रहे हैं कि उससे अलग होकर वे कुछ नहीं कर सकते,[31] और अपनी निर्बलता के सदा बढ़ने वाले ज्ञान के प्रभाव में वे परमेश्वर की इच्छा को जानने और उसे अपने भीतर सुरक्षित रखने की दिशा में बढ़ते है। साथ ही, जब वे परमेश्वर की इच्छा पूरी कर लेते हैं, वे मानते है कि वे अयोग्य दास है जिन्होंने केवल वही किया है जो उन्हें करना चाहिए था।[32] और जब उनके निर्बल प्रयासों से कुछ सम्पन्न हो जाता है, तो वे मार्ग साफ करके ऐसा कोई चिन्ह नहीं छोड़ते जिसके कारण उस कार्य का श्रेय उन्हें मिले। वे भजनकार के साथ ऊँचे स्वर से पुकारते है,

> ''हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं,
> वरन अपने ही नाम की महिमा,
> अपनी करूणा और सच्चाई
> के निमित कर'' (भजन संहिता 115:1)।

परमेश्वर की संतान सदैव स्वर्ग के इस सिद्धांतसूत्र को सीखने में लगी रहती है – ''यदि कोई गर्व करे तो वह प्रभु में करे'' (1 कुरिन्थियों 1:31; यिर्मयाह 9:23–24)। और जब विश्वासी अपने सबक को भूल जाता है और उस महिमा को चाहता है जो केवल मसीह के लिए है, परमेश्वर का आत्मा विश्वासयोग्य है जो उसे डाँटता है और लज्जा में वापस उसके स्थान में उसे लौटाकर लाता है।[33] प्रभु अपनी महिमा किसी और को नहीं देता।[34]

इसके विपरीत, नया जन्म न पाये व्यक्ति के हृदय या मन में ऐसी विनम्रता या कृतज्ञता नहीं पाई जाती। वह स्वयं की अतिअयोग्यता और परमेश्वर के अनुग्रह एवं सामर्थ पर अपनी पूर्ण निर्भरता को नहीं देख सकता। वह इस हठपूर्ण आग्रह के साथ जीता है कि कोई ईश्वर नहीं है,

28 भजन. 104:27–29.

29 यशायाह 40:15–17.

30 कुलुस्सियों 3:4; प्रकाशितवाक्य 3:17.

31 यूहन्ना 15:5.

32 लुका 147:10.

33 लुका 14:7–11.

34 यशायाह 42:8, 48:11.

और यदि है, तो वह ईश्वर मनुष्यों के मामलों में नहीं पड़ता। ऐसी धारणा के कारण अविश्वासी दावा करते है कि उनकी हर उपलब्धि उनकी अपनी है और उनकी प्रत्येक जय उन्हें स्वयं पर गर्व करने का एक और कारण प्रदान करती है। दयनीय प्राणी, जो मनुष्य कहलाता है, जो अपने सिर के एक बाल को काला या सफेद नहीं कर सकता, और अपनी आयु में एक घड़ी नहीं जोड़ सकता, वह अपनी उपलब्धियों को ढ़ेर पर खड़ा होकर घोषणा करता है कि वह स्व–निर्मित है।

संसार के साथ हमारे संबंध

हमने जो सीखा है उसके प्रकाश में हम मसीहियों को स्वयं से पूछना चाहिए कि हम संसार के साथ संबंधों में कहाँ है? हमें यह सोचकर धोका नहीं खाना चाहिए कि यह एक छोटी बात है। यह महत्वपूर्ण है! हमारे उद्धार के संदर्भ में हमारे संसार के साथ संबंध लिटमस जाँच है। यूहन्ना हमें चेतावनी देता है कि संसार से प्रेम और परमेश्वर के लिये प्रेम परस्पर विपरीत दिशाओं में है। वे हमें सरल शब्दों में बताते है कि ''यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो पिता का प्रेम उसमें नहीं है।''[35] याकूब और भी निडरता पूर्वक कहते है – ''क्या तुम नहीं जानती कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से शत्रुता करनी है, अतः यदि कोई संसार से मित्रता करना चाहता है तो वह अपने आप को परमेश्वर का शत्रु बनाता है'' (याकूब 4:4)।

पवित्रशास्त्र के अनुसार एक ही समय में संसार और परमेश्वर से प्रेम, रखना तार्किक रूप में असंभव है, क्योंकि दोनों ही परस्पर विपरीत और सामंजस्य विहीन है। संसार में जो कुछ है, शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और गर्वीला जीविका का घमण्ड – वह पिता की ओर से नहीं है। वह परमेश्वर से उत्पन्न नहीं हुआ और न ही उसकी इच्छा के अनुसार है, परन्तु परमेश्वर के विरूद्ध और निन्दनीय है। एक व्यक्ति परमेश्वर और संसार दोनों से प्रेम नहीं कर सकता जिस प्रकार वह अपने केक को खा और रख नहीं सकता। दोनों में से एक ही बात संभव है।

इसका अर्थ यह नहीं कि मसीहियों को संसार से कष्ट नहीं होगा और वे उसके द्वारा लुभाये नहीं जाएंगे। मसीहीजन का संसार और उसके विभिन्न प्रगटीकरणों के साथ बड़ा संघर्ष रहेगा, पर वह उससे घृणा करेगा, उससे लड़ेगा और यदि पराजित हो जाये तो पछताएगा। उनमें विभेद न केवल खतरनाक है पर वास्तविक और व्यवहारिक भी है। वह व्यक्ति जो मसीह में विश्वास का दावा करता है परन्तु परमेश्वर की इच्छा से विपरीत बातों में सौन्दर्य और आनन्द की अनूभूति प्राप्त करता है, उसे अपने अंगीकार की वैधता के विषय में चिन्ता करनी चाहिए। हालांकि जो मसीह में प्रेम का दावा करते हैं और स्वयं को संसार से विरक्ति में बढ़ता हुआ पाते है, उसके

35 1 यूहन्ना 2:15। ''पिता का प्रेम'' वाक्यांश के शायद दो अर्थ हैं। यूहन्ना बता रहा है कि कोई भी जो संसार से प्रेम रखता है परमेश्वर से प्रेम नहीं रखता है और वह परमेश्वर के अपने लोगों के प्रति विशेष प्रेम का पात्र भी नहीं होता है। यह, निसंदेह, पापी मनुष्य की गलती है, जो जानबूझकर और इच्छा रखते हुए परमेश्वर के इस विशेष प्रेम का इंकार करता है।

विपरीत जीवन जीते है, और उस पर जय पाने में बढ़ते जाते हैं उन्हें उद्धार के निश्चयता के लिये समुचित कारण है, भले ही वे बहुत बार पाप में गिर जाए। अब भी यह प्रश्न उठता है, ''हम संसार के साथ अपने संबंधों में कहाँ है? जॉन बनयन की प्रसिद्ध प्रतीकात्मक पुस्तक 'द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' में मुख्य चरित्र का अनुकरण करते हुए, क्या हम विनाश की नगरी से भाग रहे हैं? क्या हम उसके सभी जालफंदो से मुक्त होने के लिये दृढ़ संकल्पित है? या फिर हमने 'मूर्खता' के नगर में घर बना लिया है और 'वैनिटी फेयर' में बड़ा आनन्द उठाते है?

चरवाहों के लिये एक शब्द

यूहन्ना के दिनों में रोमन साम्राज्य ने संसार को लोभ, कामुकता, और सत्ता की अभिलाषा का पर्याय बना दिया था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वह बेबीलोन महान के रूप में देखा जाता है, *''वेश्याओं और पृथ्वी की घृणित वस्तुओं की जननी''* जिसने अपने कुकर्म की वासनामय मदिरा सब जातियों को पिलाई थी (प्रकाशितवाक्य 14:8; 17:5)। वर्तमान समय में संसार और भी अधिक सामर्थशाली और सदा से अधिक दुस्साहसी लगता है। हॉलीवुड, मैडिसन अवेन्यू, वॉल स्ट्रीट, वॉशिंगटन, और हमारे समय के बड़े–बड़े शैक्षणिक संस्थानों के प्रमुख नगर उसके प्रतिनिधि है। पुराने समय के बाबुल के समान आज संसार के हाथों में सबको पिलाने के लिए सोने का एक कटोरा है, जो ''उसके व्याभिचार और अशुद्ध और घृणित वस्तुओं से भरा है'' (प्रकाशितवाक्य 17:4)। साथ ही, बेबीलोन के समान, आज संसार भी झूठे भविष्यवक्ताओं से लैस है, जिन्हें मानवता को पथभ्रष्ट करने संसार के चारों कोने में भेजा गया है। वे चाहे आधुनिकतम वस्त्र पहिने हो या भविष्यद्वक्ता की धार्मिक पोशाक में हो, उनके संदेश एक समान है। वे अनंतकालीन बातों का उल्लेख नहीं करते, पर अपने सुनने वालों को कायल करते हैं कि तात्कालिक बातों को पकड़ ले, इसके पहले कि वे जाती रहे। वे उन नैतिक आदर्शों की परवाह नहीं करते जो स्वयं को अभिव्यक्त करने के प्रयासों में व्यक्ति की स्वतंत्रता के मार्ग को बाधित कर सकते है। वे लोभ को सही ठहराते है और सुनने वालों के सामने प्रदर्शित करते है और उसे आत्मावलोकन, आत्म–परिपूर्णता इत्यादि का नाम देते है। वे सदैव अपने श्रोताओं के पक्ष में होते हैं, उनके पक्ष के अनुसार बोलते हैं, उनकी रूचियों और रूझानों का ध्यान रखते हैं, उन्हें बताते है कि उन्हें क्या आवश्यकता है और उन बातों को एक कीमत लेकर उपलब्ध भी कराते है। यह पता करना कठिन नहीं है कि उनके इतने अनुयायी क्यों है। वे शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीविका के घमण्ड के लिये अपील करते है। वे पाप में पतित लोगों के कान की खुजली के अनुसार वह सब कहते हैं जो वे सुनना चाहते है।[36] वे संसार से है और वे संसार की भाषा बोलते हैं और संसार

36 2 तीमुथियुस 4:3.

उनको सुनता है।[37] यद्यपि उनके संदेश अनंत प्रकार के लगते हैं, अलग–अलग रूपों में कहे जाते हैं पर उनका संदेश सदैव एक ही होता है। वास्तव में, इन भविष्यद्वक्ताओं के शब्द इतने अधिक मिलते–जुलते है कि वे इस विश्वास को दृढ़ करते है कि उन सबका उद्‌गम एक ही है, वे इस युग की आत्मा, आकाश की शक्तियों के सरदार की ओर से है, जो आज्ञा न मानने वालों में अब भी कार्य करता है।[38]

अब तक हमने जिन बातों की चर्चा की है, उनकी आशा की जानी चाहिए। संसार की सांसारिकता के लिए अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है, परन्तु जो बात समझ के परे है वह है कलीसिया में संसार की निडर उपस्थिति।[39] जब संसार धूर्तता पूर्वक, दबे पाँव कलीसिया में प्रवेश करता है, तब की बात दूसरी है, तब वह पहिचान में नहीं आता है। परन्तु जब वह कलीसिया के केन्द्र में निधड़क खड़ा होता है और सब कुछ अपनी दुष्ट छवि की समानता में लाकर विकृत करता है तब की बात दूसरी है। और यही बात पश्चिम की तथाकथित मसीहत में बहुत अधिक दिखाई देती है। क्या संसार भौतिकवाद के लिये दोषी है? यदि हाँ, तो कलीसिया भी है! क्या संसार उपभोक्ताओं के अनुसार चलता है? यदि हाँ, तो कलीसिया भी! क्या संसार व्यवहारिक तथ्यों के अनुसार कार्य करता है, जिन्हें बाइबल से सरोकार नहीं है? तो कलीसिया भी यही करती है! क्या संसार मनोरंजन से अभिभूत है, अमोद्र–प्रमोद से विकर्षित है, और मूर्खता में आनन्दित है? तो कलीसिया भी है! क्या संसार स्वं–मूल्यांकन और आत्म–प्रगति के पक्ष में है? तो कलीसिया भी है! यदि संसार शारीरिकता, कामुकता, विलासिता और खर्चीलेपन से भरपूर है? तो कलीसिया भी है! वास्तव में, कलीसिया न केवल अपने सदस्यों के बीच शारीरिकता को सहती है, वह उनकी शारीरिकता की सुरक्षा भी करती है, और कुरिन्थ की कलीसिया के समान वे उसका गर्व भी करती है, परमेश्वर के अनुग्रह को पाप की अनुमति बनाने के द्वारा वे हमारे एकमात्र स्वामी एवं परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह का इंकार करती है।[40] बनयन के दिनों में 'वैनिटी फेयर' लोगों के प्रमोद के लिये शैतान का साधन था ताकि उन्हें संसार में बनाकर रखें। बनयन यह जानकर अवाक रह जाते कि हमारे दिनों में बहुत सी कलीसियाएँ 'वैनिटी फेयर' के माध्यम से खोजियों को खुश करती है और उन्हें रविवार की आराधना सभा में लेकर आती है।

37 1 यूहन्ना 4:5.

38 इफिसियों 2:2.

39 हमारे द्वारा *चर्च* शब्द के उपयोग में एक महत्वपूर्ण अंतर करना आवश्यक है। इस संदर्भ में, हम मसीहत को मानने के अर्थ में या पश्चिम में सुसमाचारिय मसीहत को मानने के अर्थ में *चर्च* शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। यीशु मसीह का वास्तविक चर्च केवल पुर्नज्जीवित लोगों से ही बना होता है, जो परिवर्तन के फल लाते हैं, और जिन्हें मसीहत को मानने वाले (अभी तक अपरिवर्तित) मसीही बहुसंख्यकों से अलग देखा जा सकता है।

40 1 कुरिन्थियों 5:6; यहूदा पद 4.

बहुत सी कलीसियाओं में यह 'क्यों' और 'कैसे' हुआ? मूलरूप में, यह उन मनुष्यों के कारण है जिन्हें कलीसिया पर चरवाहे के रूप में नियुक्त किया गया है।

प्रथम, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि उनके अस्थिर सदस्य नये–जन्म से वंचित है और मसीह से विमुख है। धर्मशिक्षा और नैतिक मूल्यों का अत्याधिक एवं बिना सोचे विचारे उलघंन करना अधिक विकृत हो चुका है कि उनका हृदय परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

दूसरा, हमें यह मानना होगा कि कुछ जो वास्तव में हृदय–परिवर्तन कर चुके है, वे बुलाए नहीं गए है। सुसमाचार की सेवकाई के वास्तविक तत्वों को लेकर बहुत अधिक गलतफहमी है। वह इतना अधिक व्यापार और मंनोरंजन का कार्य बन चुका है कि बहुतेरे मनुष्य जो अब मंचों के पीछे खड़े होते हैं, यदि वे संस्थानों के प्रमुख बनकर वॉल स्ट्रीट या हॉलीवुड के विदूषक बनते तो अधिक बेहतर होता।

तीसरा, हमें यह भी मानना चाहिए कि कुछ लोग जो सचमुच मसीही है और सुसमाचार की सेवकाई में वास्तव में बुलाए गए है परन्तु वे वर्तमान युग के 'धर्म' के फंदे में है, वे परमेश्वर के दूसरे जनों के साथ वास्तविक सहभागिता में 'लोहे को लोहे द्वारा चमकाने' का प्रभाव नहीं रखते, और वे नहीं जानते कि वापस सही मार्ग पर कैसे आए।[41] धर्मी लूत के समान, वे कलीसिया की सांसारिकता के कारण क्षुब्ध है, पर उन्होंने उसके विरूद्ध आवाज उठाने की नैतिक योग्यता और सामर्थ खो दी है।[42] यह नीतिवचन उनके जीवन में पूरा होता है, ''जैसे सोते में गन्दगी और कुएँ में अशुद्धता, वैसे ही धर्मी का दुष्ट के आगे झुकना होता है'' (नीतिवचन 25:26) उन्हें इस सत्य से उत्साहित होना चाहिए कि प्रभु यीशु जानते हैं कि बहेलिए के जाल और परीक्षा करने वाले के फंदे से कैसे बचाना है।[43]

चौथा, बहुत से चरवाहे संस्कृति की सोच और व्यवहारिक बातों के प्रभावी होने के आधार पर कलीसिया चलाने के फेर में पड़ चुके है। इस कारण बहुतों के हावभाव मनोरंजन करने वालों के जैसे बन चुके है – जैसे कि लाइफ कोच, मनोविश्लेषक या मैडियन अवेन्यू के बाजार–विशेषज्ञ इत्यादि। लगता है कि हम यह भूल चुके है कि चरवाहे मूलरूप में पवित्रशास्त्र के छात्र और शिक्षक,[44] झुण्ड के रखवाले[45] और परमेश्वर के समक्ष समर्पित मध्यस्थ है।[46] वे ऐसे पहरेदार है जिन्हें उन्हें सौंपी गई धरोहर की रक्षा करनी है,[47] यह जानकर कि वे प्रभु के महान् दिन जवाबदार

41 नीतिवचन 27:17.

42 2 पतरस 2:7–8.

43 भजन. 91:3; 2 पतरस 2:9;

44 एज्रा 7:10; प्रेरितों के काम 6:2,4; 2 तीमुथियुस 2:15.

45 प्रेरितों के काम 20:28; 1 पतरस 5:1–4.

46 प्रेरितों के काम 6:4; रोमियों 1:9; इफिसियों 1:15; फिलिप्पीयों 1:3–4; कुलुस्सियों 1:9.

47 1 तीमुथियुस 1:11, 6:20; 2 तीमुथियुस 2:14; तीतुस 1:3.

होंगे।[48] उन्हें परमेश्वर के वचन के अनुवादक, धर्मविज्ञानी और व्याख्या करने वाले बनना चाहिए। उन्हें चरित्र, नैतिक शिक्षा और कर्त्तव्य के संदर्भ में पवित्रशास्त्र के मानदण्डों का कठोरता पूर्वक अनुसरण करना चाहिए।[49] उन्हें परमेश्वर के साथ शहरपनाह पर अकेला पहरा देने वाला बनना चाहिए।[50] मसीह के पदचिन्हों पर चलते हुए, उन्हें लोगों के लिये परमेश्वर के सामने आना चाहिए और परमेश्वर के पक्ष में लोगों के सामने जाना चाहिए।

अंत में, हमें हमारे बीच की कायरता को स्वीकार करना चाहिए कि हम आत्म सुरक्षा की मूरत से प्रवाहित दूसरों की अस्वीकृति से डरते है। यही कारण है कि हमने प्रेम का एक विकृत और सुविधापरक स्वरूप विकसित कर लिया है जो कभी किसी को विचलित नहीं करता। यह प्रेम बिना सत्य, कायलपन, और साहस के है जो शिक्षा, उलाहना, सुधार, और प्रशिक्षण देने का कार्य नहीं करता।[51] यह प्रेम लोगों को बिना चेतावनी दिये नरक में जाने देता है, बजाय इसके कि उनके पाप का सामना करें, उनके निर्बल आत्म मूल्यांकन पर चोट करे या उन्हें सत्य बताकर अपना शत्रु बना ले।[52] वास्तव में यह प्रेम नहीं है, परन्तु प्रेम का विरोधी स्वरूप है। यदि हम भेड़ों को फटकारते नहीं कि वे हमें नापसंद करने का अन्याय करे। तो यह इसलिए नहीं है कि हम उनसे प्रेम करते हैं, परन्तु इसलिए कि हम चाहते है वे हमें पसंद करे। परमेश्वर के जन के लिये पसंद किये जाने और सराहे जाने की अभिलाषा प्राणधातक विष के समान है, परन्तु लगता है बहुतेरे उसके द्वारा डँसे जा चुके है। हम हमारे प्रभु की चेतावनी को भूल चुके है, जिसने कहा था, ''हाय, तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करे, क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया था।'' (लूका 6:26)

---

48 1 कुरिन्थियों 3:12–15; 2 तीमुथियुस 4:8.

49 1 तीमुथियुस 3:1–7; तीतुस 1:7–9.

50 यशायाह 62:6–7.

51 2 तिमोथी 3:16 में प्रेरित पौलुस युवा तिमोथी के उपर परमेश्वर के सेवक द्वारा परमेश्वर के वचन की चारस्तरीय सेवकाई किये जाने का भार रखता है।

52 गलातियों 4:16 में पौलुस ने गलातियों वासी की गलती का सामना किया और पूछता है, ''तो क्या तुमसे सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी हो गया हूं?''

अध्याय – 9

कलीसिया में बने रहना

बच्चों, यह अंतिम घडी है जैसा तुमने सुनना था कि मसीह–विरोधी आने वाला है, वैसे ही अब अनेक मसीह–विरोधी उठ खड़े हुए है, इसी से हम जानते है कि यह अंतिम घड़ी है। वे निकलें तो हम ही में से, परन्तु वास्तव में हम में से नहीं थे क्योंकि यदि वे हम में से होते तो हमारे साथ रहते परन्तु वे निकल इसलिए गए कि यह प्रकट हो जाए कि वे सब हम में से नहीं है।

- 1 यूहन्ना 2:18–19

1 यूहन्ना 2:18–19 में प्रेरित यूहन्ना कुछ लोगों के समूह की चर्चा करते है जो धर्मपरित्याग कर चुके थे। उन्होंने मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के संबंध में प्रेरितों की धर्मशिक्षा को अस्वीकार कर दिया था, कलीसिया को छोड़ दिया था और वे झूठे भविष्यद्वक्ता बन गए थे। यहाँ तक कि यूहन्ना ने उन्हें मसीह–विरोधी तक कह दिया था।

कुख्यात नाम 'मसीह–विरोधी' दो ग्रीक शब्दों का मेल है, Christós अर्थात् मसीह और anti उपसर्ग जिसका अर्थ 'के बदले में' या विरूद्ध है। एक वचन में मसीह–विरोधी शब्द मसीहा के प्रबल विरोधी की ओर संकेत करता है जो एक दिन मसीह के स्थान को हथियाने और मसीह से युद्ध करने का प्रयास करेगा।[1] इसका बहुवचन में उपयोग कलीसिया के इतिहास में हुए उन सभी व्यक्तियों के लिये किया जाता है जिन्होंने मसीह के व्यक्ति और कार्य के संबंध में प्रेरितों की मूलभूत धर्मशिक्षा का इंकार कर किया है। और स्वयं को कलीसिया और ऐतिहासिक मसीहत

1 2 थिस्सलुनीकियों 2:3–4.

से अलग कर लिया है। वे दूसरों को भी इन बातों में पथभ्रष्ट करने की दिशा में काम करते हैं।[2] अपनी पत्री में, यूहन्ना उनका वर्णन करते हुए उन्हें झूठा और धोकेबाज कहते है जो पुत्र के अवतार लेने और यीशु के ईश्वरीय मसीह होने के सत्य का इंकार करके परमेश्वर–पिता और पुत्र दोनों का इंकार करते हैं।[3] जैसा यूहन्ना के दिनों में था वैसा हमारा आधुनिक जगत भी उन मसीह–विरोधियों से भरा पड़ा है, जो या तो सीधे–सीधे मसीह का इंकार करते हैं या ऐसे धर्म की वकालत करते है, जो उसके व्यक्तित्व की सर्वोच्चता को धूमिल करता और उसके कार्य की आवश्यक प्रकृति का विरोध करता है। ऐसी कोई भी शिक्षा जो मसीह के परमविशिष्ट स्वरूप को नहीं मानती, उसे उसके स्थान से हटाती, या उसके क्रूस को छोटा बनाती है, वह अपनी प्रकृति में मसीह–विरोधी है। जैसा कि पवित्रशास्त्र में प्रगट किया गया है जो मसीह के पक्ष में नहीं है वे उसके विरोध में है।[4]

यद्यपि यूहन्ना के लिखने का निकट संबंध झूठे शिक्षकों से है, वह बाइबल सम्मत उद्धार के निश्चयता के लिये एक और जाँच प्रस्तुत करते है, कि सच्चे मसीहीजन मसीही विश्वास की ऐतिहासिक धर्मशिक्षा की परिसीमा के भीतर रहते हैं और परमेश्वर के लोगों की सहभागिता में रहते है। वे जो ऐसी धर्मशिक्षा का इंकार करते और कलीसिया के साथ सहभागिता तोड़ते है वे दर्शाते हैं कि वे वास्तव में हृदय–परिवर्तन से वंचित है और कभी भी उनका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है। यूहन्ना लिखते है, ''वे निकले तो हम ही में से, परन्तु वास्तव में हम में से नहीं थे, क्योंकि यदि वे हम में से होते तो हमारे साथ रहते, परन्तु वे निकल इसलिए गए कि यह प्रकट हो जाए कि वे सब हम में से नहीं है'' (2:19)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि अनंत उद्धार कलीसिया में मिलता है या उसकी रक्षा कलीसिया में होती है। व्यक्ति केवल मसीह में उद्धार पाता है, केवल अनुग्रह से और केवल विश्वास करने के द्वारा।[5] इसका अर्थ यह है कि वह जिसका वास्तव में हृदय–परिवर्तन हुआ है वह उन शिक्षाओं में बना रहता है जिन्होंने उसके हृदय–परिवर्तन में अगुवाई की थी और वह मसीही–कलीसिया की सहभागिता में बना रहता है। यूहन्ना इसी से मिलती–जुलती उद्घोषणा अपनी दूसरी पत्री में करते हैं – ''जो कोई बहुत दूर भटक जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं, जो उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है उसके पास पिता और पुत्र दोनों ही है'' (2 यूहन्ना 1:9)।

2 यूहन्ना का वाक्यांश ''अंतिम समय'' ''अंत के दिनों'' के समानार्थक है (प्रेरितों के कार्य 2:17; 2 तिमोथी 3:1; याकूब 5:3)। यह मसीह के पुर्नरूत्थान और मसीह की महिमा और उसके द्वितीय आगमन के बीच के युग की ओर संकेत करता है।

3 1 यूहन्ना 2:22–23, 4:2; 2 यूहन्ना 1:17.

4 लुका 11:23.

5 इफिसियों 2:8–9.

निश्चयता और धर्म-परित्याग

कलीसिया के सम्पूर्ण इतिहास में जो विश्वासी के उद्धार की अनंत सुरक्षा या उस में बनें रहने को मानते है, और जो धर्मपरित्याग की संभावना को मानते हैं, उनके बीच एक युद्ध सा चलता रहता है। धर्म परित्याग की संभावना का विचार रखने वाले मानते हैं कि सच्चे विश्वासी भी गिरकर अंनत विनाश को प्राप्त कर सकते है। यह मसला इतना महत्वपूर्ण है कि मुझे इस पर चर्चा करनी ही होगी। भले ही संक्षेप में करूं। मैं नहीं समझता कि इस मसले का समाधान सभी को संतुष्ट कर सकेगा। परन्तु मैं कुछ महत्वपूर्ण सत्य सामने लाने की आशा करता हूँ जिनका संबंध हृदय–परिवर्तन की प्रकृति और अनुप्रयोग से है कि वे विश्वासी के जीवन में कैसे लागू होते है।

आरम्भ में यह समझना महत्वपूर्ण है कि मैं सुधारवादियों, प्यूरिटन, आरम्भिक प्रेसबीटीरियन, और विशेषकर बैप्टिस्ट[6] लोगों द्वारा संतों के बने रहने की ऐतिहासिक धर्मशिक्षा को मानता हूँ। यह धर्मशिक्षा मानती है कि जो पवित्रात्मा के द्वारा वास्तव में नया जन्म पा चुके है, मसीह में नयी सृष्टि बन चुके है, वे परमेश्वर की सामर्थ से संभाले और सुरक्षित रखे जाते है और वे कभी पूर्ण धर्म–परित्याग और अनंत विनाश में नहीं पड़ेंगे। इस निश्चय का कारण विश्वासी की इच्छाशक्ति पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और सामर्थ पर आधारित है। परमेश्वर जो अपने लोगों का उद्धार करता है वह अपनी सामर्थ के द्वारा उनकी रक्षा भी करता है। परमेश्वर जो विश्वासी को धर्मी ठहराता है, निश्चय उसे पवित्र करेगा और अन्त में अपनी महिमा में पहुँचाएगा। प्रेरित पौलुस के समान हम भी इस बात में दृढ़ है कि जिसने एक अच्छा (भला) काम आरम्भ किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूर्ण करेगा।

विश्वासियों के बने रहने के संबंध में किसी भी विचार–विमर्श में चार बातों पर विचार करना अवश्य है। प्रथम, हमें उद्धार की प्रकृति पर कुछ समय विचार करना चाहिए। समकालीन प्रचार का अधिकांश भाग अपनी सतही प्रकृति के कारण बहुत से विश्वासियों को आभास कराता है कि उद्धार मूल रूप में मनुष्य की इच्छा के द्वारा निर्णय करने का कार्य है। परमेश्वर मनुष्यों पर सुसमाचार प्रगट करता है और फिर उनके प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करता है। व्यक्ति मसीह के लिए निर्णय करके उद्धार पाता है और उसी इच्छा के कार्य द्वारा उस उद्धार में बना रहता है या लगातार चलता है। इस प्रकार, मनुष्य जो उद्धार पाता है, परमेश्वर के प्रति उचित प्रत्युत्तर के द्वारा, वह उस उद्धार को आसानी से खो भी सकता है, यदि वह स्वेच्छा के विपरीत कार्यो के द्वारा अपने मूल निर्णय का परित्याग कर दे।

इस विचारधारा की त्रुटि यह है कि इसमें केवल मनुष्य की इच्छा पर विचार किया गया है और मनुष्य के स्वभाव (प्रकृति) पर परमेश्वर के कार्य पर विचार नहीं किया गया है। पवित्रशास्त्र

6 वेस्टमिंस्टर और 1689 लंदन कंफेशंस, दोनों के 17 वें अध्याय की ओर पाठक को निर्देशित किया जाता है, जहां संतो के धीरज के सिद्वांत को विस्तार से लिखा गया है।

शिक्षा देता है कि जो उद्धार के लिये विश्वास करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है।[7] साथ ही इस बात पर भी जोर दिया गया है कि नया–जन्म – ''न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, और न मनुष्य की इच्छा से परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न है'' (यूहन्ना 1:13)। उद्धार में केवल मनुष्य की इच्छा नहीं है पर विकृत मानव स्वभाव का तत्व रूप में एक नयी सृष्टि में रूपान्तरण भी है।[8] यह परमेश्वर का एक अलौकिक कार्य है जिसमें पापी मनुष्य का आक्रामक और प्रत्युत्तर न देने वाला पत्थर का हृदय, एक जीवित एवं प्रत्युत्तर देने वाले माँस के हृदय से बदल दिया जाता है।[9] उद्धार एक दुष्ट–हृदय के निर्णय का परिणाम नहीं है जो परमेश्वर की ओर वापस लौटने का निर्णय लेता है, क्योंकि प्रचारक उसे मनाता है, या पवित्रात्मा सीमित रूप में उससे बातें करता है। परन्तु वह तत्व रूप में नये जन्म का परिणाम है। परमेश्वर की आत्मा के बड़े उथल–पुथल करने वाले कार्य के द्वारा पापी व्यक्ति एक नयी सृष्टि बनता है और उसके हृदय के नये अनुराग उसे पाप से दूर करते और परमेश्वर के निकट लाते है। यदि उद्धार और उसमें लगातार बनें रहना मनुष्य की इच्छा में परिवर्तन और परमेश्वर के प्रति उचित प्रत्युत्तर से बढ़कर कुछ नहीं है, तब वह विपरीत परिवर्तन के द्वारा आसानी से समाप्त किया जा सकता है। परन्तु यदि उद्धार में मनुष्य के स्वभाव का पुनः सृजन और उसे नयी सृष्टि बनाने का कार्य शामिल है, तब उद्धार का समाप्त होना या उसे खो देना असंभव बात है।

दूसरा, हमें वास्तविक हृदय–परिवर्तन के जीवन में ईश्वरीय कृपा के लगातार होने वाले कार्य को समझना चाहिए। परमेश्वर किसी व्यक्ति को केवल विश्वास करने की प्रेरणा नहीं देते कि विश्वास करने के बाद उसे उसके मार्ग पर अकेला छोड़ दे। पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि परमेश्वर जो 'धर्मी ठहराता है' वही 'शुद्ध भी करता है''। यह सत्य बड़े उत्कृष्ट रूप में इफिसुस की कलीसिया को लिखी पौलुस की पत्री में प्रदर्शित किया गया है। अध्याय 2 में धर्मी ठहराये जाने की महान धर्मशिक्षा – अर्थात् केवल अनुग्रह से विश्वास द्वारा उद्धार के तुरन्त बाद पौलुस अपने पाठकों का ध्यान परमेश्वर के पवित्रीकरण के कार्य की ओर खींचते है – जिसमें उद्धार करने वाला विश्वास सदैव शामिल रहता है और वह अनुग्रह का परिणाम भी है ''क्योंकि हम उसके हाथ की कारीगरी है जो मसीह यीशु में उन भले कार्यों के लिये सृजे गये है जिन्हें परमेश्वर ने प्रारम्भ ही से तैयार किया कि हम उन्हें करे'' (इफि. 2:10)।

---

7 ''परमेश्वर से जन्मा'' यह वाक्यांश, यूनानी भाषा की क्रिया *जेजेनेताई* से अनुवादित है, जो पूर्ण काल और कर्मवाच्य में पाया जाता है। यह *इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्शन* में सही रूप से अनुवादित है: ''जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है.......'' इसलिये पुर्नज्जीवन के कार्य में तार्किक रूप से पहले विश्वास आता है, और विश्वास ही उसका कारण और नींव है।

8 2 कुरिन्थियों 5:17.

9 यहेजकेल 36:26.

व्यक्ति जो अनुग्रह के द्वारा विश्वास करने से 'धर्मी' ठहराया जा चुका है, परमेश्वर की कारीगरी बन चुका है। वह मसीह यीशु में पुनः सृजा गया है कि उन भले कामों को करे जो परमेश्वर की अनंत सुइच्छा में उसके द्वारा किये जाने के लिये, संसार की नेव रखे जाने से पहले नियुक्त किये जा चुके है। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा था, परमेश्वर ने केवल उनका उद्धार ही नहीं किया है परन्तु उनमें (लगातार) कार्य करता है, "स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिये तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिये तुम में सक्रिय है" (2:13) यह शक्तिशाली उद्घोषणा प्रमाणित करती है कि परमेश्वर ने विश्वासी को न केवल नयी सृष्टि बनाया है, परन्तु नये अनुरागों के द्वारा उसकी इच्छा को भी प्रभावित करता है, साथ ही वह विश्वासी की इच्छा पर भी कार्य करता है ताकि वह परमेश्वर के भले अभिप्राय (सुइच्छा) के अनुसार जीवन जीयें ओर कार्य करे। आश्चर्यचकित करने वाला यह ईश्वरीय कार्य, फिलिप्पी के विश्वासियों के अंतिम रूप में उद्धार और भविष्य की महिमाकरण के लिये पौलुस के अटल निश्चय का आधार था: "मुझे इस बात का निश्चय है कि जिसने तुम में भला कार्य आरम्भ किया है, वही उसे मसीह यीशु के दिन तक पूर्ण भी करेगा" (1:6)।

तीसरा, विश्वासियों या संतों की सुरक्षा या बने रहने की किसी भी चर्चा में हमें उद्धार के उद्देश्य पर भी विचार करना चाहिए। यद्यपि परमेश्वर का उद्धार का कार्य मनुष्यों के लिए है, मनुष्य का हित उसका सर्वोच्च लक्ष्य या परम उद्देश्य नहीं है। यद्यपि आधुनिक मनुष्यों के लिये यह कठोर वचन है और समकालीन सुसमाचार वादियों के लिये भी परन्तु सब बातों का परम लक्ष्य परमेश्वर के चरित्र और सामर्थ के प्रकाशन द्वारा परमेश्वर को महिमा देना है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर जो भी कार्य करते है।, उन सबको वे इसलिये करते हैं कि उनकी महानता और महिमा उनकी सृष्टि पर प्रगट हो सके। यह परमेश्वर के सभी कामों का उद्देश्य है, परन्तु उनके महानतम कार्य में यह विशेष उद्देश्य है अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों का उद्धार। क्या परमेश्वर अपने चरित्र (प्रकृति) और सामर्थ के सबसे महानतम् प्रदर्शन को व्यर्थ (असफल) होने देगा? क्या वह जिसने उद्धार का कार्य आरम्भ किया है, उसे पूरा नहीं करेगा? क्या वह अपने शत्रु के उपहास का कारण बनेगा, जो यह कहेगा, "इसलिए कि यहोवा इन लोगों को उस देश में नहीं पहुँचा सका जिसकी प्रतिज्ञा उसने शपथ खाकर की थी, उसने जंगल में उनको सत्यानाश कर दिया" (गिनती 14:16)?

अपनी महिमा के लिए, परमेश्वर सबसे निर्बल विश्वास करने वाले में भी उद्धार के कार्य को असफल नहीं होने देगा। बल्कि "प्रभु अपनी सामर्थ को महान बनाए रखेगा, जैसा उसने कहा है" (गिनती 14:17)। वह अपने लोगों को संसार में से निकालेगा और स्वयं तक पहुँचाएगा। वह उन्हें उनकी सब अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करेगा और उन्हें एक नया हृदय देगा और अपनी

व्यवस्था उन पर लिखेगा। वह अपना आत्मा उन्हें देगा और उन्हें अपनी विधियों पर चलाएगा।[10] वह उनके साथ अनंतकाल की वाचा बाँधेगा और उनसे कभी विमुख न होगा, और वह अपना भय उनके हृदयों में समवाएंगा ताकि वे उससे विमुख न हो। वे उसके लोग होंगे और वह उनका परमेश्वर होगा। वह उन पर आनन्द करेगा कि उनका भला करे और अपने पूरे हृदय और मन से उनमें अपने कार्य को पूरा करेगा।''[11] अब हम इन बातों के विषय में क्या कहे? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में हैं तो कौन हमारे विरूद्ध है?'' (रोमियों 8:31)। उद्धार कभी असफल न होगा, क्योंकि उसकी संरचना हमारी नहीं परन्तु परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और सामर्थ को प्रगट करने या साबित करने के लिये की गई है!

चौथा, हमें यह समझना चाहिए कि विश्वासियों का विश्वास में बने रहने की धर्मशिक्षा को बहुतों ने जो उसको मानने का दावा करते हैं, अत्याधिक गलत रूप में समझा और गलत रूप में समझाया है। बहुत से लोग जो सच्चे विश्वासी के उद्धार से भटक जाने या खो जाने की संभावना को मानते हैं, उनके विरूद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप ऐसा मानते हैं जो इस धर्मशिक्षा को मानने का दावा तो करते है पर उसके नाम पर सभी प्रकार की गलत बातें सिखाते है। पवित्र जनों के विश्वास में बने रहने की ऐतिहासिक धर्मशिक्षा परमेश्वर की संतान की अनंत सुरक्षा के पक्ष मे अवश्य कहती है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि पाप करने की छूट है, और न शारीरिक और अभक्तिमय लोग उद्धार पाएंगे। यह अटल या अविचलित रूप में बाइबल के सत्यों को मानती है कि वे जो अंत तक बने रहेंगे, उद्धार पाएंगे। और पवित्रता में पहुँचाने वाले पवित्रीकरण के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेंगा।[12]

समकालीन सुसमाचारवाद 'एक बार उद्धार पाने का अर्थ सदैव उद्धार है' से अत्याधिक प्रभावित है, किन्तु यह शिक्षा पवित्रीकरण के बिना भी उद्धार की संभावना का पक्ष लेती है। Solo gratia (केवल अनुग्रह) और Sola fide (केवल विश्वास) की धर्मशिक्षाओं के बचाव के नाम पर बहुतेरे सुसमाचार प्रचारकीय व्यक्ति विशेष के उद्धार के पक्ष में जोशीला तर्क करते है, जबकि वह एक बार मसीह को ग्रहण कर चुका पर अब उसका इंकार करता है, या वे जो मसीह पर लगातार विश्वास करते है, परन्तु शारीरिक, सांसारिक, और परमेश्वर के प्रति उदासीन बने रहते है। वे दावा करते है कि रूपान्तरण का कोई चिन्ह माँगना या पवित्रीकरण का कुछ परिमाण, विश्वास में कार्यों को जोड़ना और मसीही सुसमाचार का आवश्यक रूप में इंकार करना है।

इस तर्क के साथ समस्या यह है कि यह विश्वास की प्रकृति के अज्ञान, नए जन्म की सामर्थ, और लगातार कृपा करने की ईश्वरीय प्रतिज्ञा से विश्वासघात करता है। सर्वप्रथम हमें यह समझना चाहिये कि सच्चे विश्वास का प्रमाण कार्यों से दिया जाता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार,

---

10 यिर्मयाह 31:33; यहेजकेल 36:22–27.

11 यिर्मयाह 32:38–41.

12 मत्ती 24:16; मरकुस 13:13; इब्रानियों 12:14.

ऐसा उद्धार करने वाला विश्वास असंभव है जिसका व्यक्ति के जीवन के आचरण पर दिखाई देने वाला कोई प्रभाव न हो। याकूब 2:17–20 में जोर दिया गया है, "वैसे ही विश्वास भी यदि उसके साथ कार्य न हो, तो अपने आप में मृतक है परन्तु कोई कह सकता है, "तुम विश्वास करते हो और मैं कार्य करता हूँ। तुम मुझे अपना विश्वास बिना कार्य के दिखाओ, और मैं अपना विश्वास तुम्हें अपने कार्यों द्वारा दिखाऊंगा।' तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक ही है, तो तुम ठीक करते हो, दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती और थरथराती है! परन्तु हे मूर्ख, क्या तू इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं कि कार्य के बिना विश्वास व्यर्थ है?"

उसी प्रकार, एक व्यक्ति जो यीशु पर उद्धार के लिये विश्वास का अंगीकार करता है कि वह प्रभु है, अपने जीवन में फल द्वारा उसे साबित करता है।[13] पवित्रशास्त्र हमें यह प्रतिज्ञा देता है कि यदि हम अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और हृदय से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया, हम उद्धार पाएंगे।[14] परन्तु स्वयं मसीह ने हमें चेताबनी दी है कि उसको प्रभु मानने का कोई भी अंगीकार यदि परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करता, तो उद्धार के लिये सर्वथा अयोग्य और सामर्थविहीन है।[15] ये निष्कर्ष केवल तर्क के आधार पर नहीं परन्तु पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है।

दूसरा, हमें यह समझना चाहिए कि सम्पूर्ण उद्धार एक दान है और पवित्रात्मा के नए जन्म के कार्य का परिणाम है।[16] हृदय–परिवर्तन के पल में जो पवित्रात्मा उद्धार करने वाला विश्वास विश्वासी को प्रदान करता है वही उसके हृदय को पुर्नजीवित भी करता है, और उसे नयी सृष्टि बनाता है जो परमेश्वर के लिए जीवित है, और परमेश्वर एवं भक्ति के लिए हृदय में नये अनुरागों को रखता है।[17] अवश्य है कि यह अलौकिक कार्य हृदय का परिवर्तन करे, और मसीही व्यक्ति के विचार और आचरण में परिवर्तन की दिशा में अगुवाई करे।

तीसरा, हमें एक बार फिर ध्यान देना होगा कि उद्धार के साथ परमेश्वर की अनवरत कृपा की प्रतिज्ञा भी आती है, जिसके परिणाम स्वरूप प्रत्येक विश्वासी में लगातार बढ़ने वाला पवित्रीकरण का कार्य किया जाता है।[18] परमेश्वर उद्धार करने के बाद छोड़ नहीं देता, वह ग्रहण करने के बाद उपेक्षा नहीं करता।[19] वह बिगड़ा हुआ पिता नहीं है।[20] वह निकम्मा कार्य करने

13 मत्ती 7:20; लुका 6:46.
14 रोमियों 10:9.
15 मत्ती 7:21.
16 यूहन्ना 3:3, 5; इफिसियों 2:8–9.
17 2 कुरिन्थियों 5:17; इफिसियों 2:5.
18 रोमियों 8:23; फिलिप्पीयों 1:6.
19 रोमियों 8:14; गलातियों 4:4–6.
20 इब्रानियों 12:5–8.

वाला नहीं है कि जो काम उसने आरम्भ किया उसे पूरा न कर सके।[21] हमें सदैव स्मरण रखना चाहिये कि उद्धार के तीन काल है, और परमेश्वर प्रत्येक के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले है।[22] उसने हमें धर्मी ठहराए जाने के द्वारा पाप के दंड से मुक्त किया, वर्तमान में वह हमें बढ़ने वाले पवित्रीकरण के कार्य द्वारा पाप की सामर्थ से मुक्त करता है और वह भविष्य में हमारे महिमाकरण के द्वारा हमें पाप के प्रभाव और उसकी उपस्थिति से मुक्त करेगा। विश्वासी के जीवन में यह केवल आशा पूर्ण संभावना नहीं है, परन्तु एक परम वास्तविकता है। और इस कारण प्रेरित पौलूस ने रोमियों 8:28–31 में लिखा है:

> और हम जानते है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते है उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात उन्ही के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए है। क्योंकि जिनके विषय में उसे पूर्वज्ञान था, उसने उन्हें पहले से ठहराया भी कि वे उसके पुत्र के स्वरुप में हो जाएं, जिस से कि वह बहुत–से भाइयों में पहलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है। अब हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है, तो कौन हमारे विरुद्ध है?

पवित्रजनों को उद्धार में बनाए रखने की धर्म शिक्षा पाप करते रहने की अनुमति या शारीरिक और अभक्तिपूर्ण व्यक्तियों को उद्धार का झूठी निश्चयता देने का साधन नहीं है। हाँ, यह धर्मशिक्षा आश्वस्त करती है कि परमेश्वर जिनका उद्धार करता है, उन्हें बचाकर रखता है, और यह भी कि जिनको बचाता है उनका रूपान्तरण भी करता है। एक वास्तविक विश्वासी को उद्धार की निश्चयता पहले कभी किये विश्वास के अंगीकार के कारण नहीं है परन्तु उसके जीवन में लगातार चलने वाले परमेश्वर के कार्य के कारण है जो उसे लगातार मसीह के स्वरूप की समानता में बदलता चला जाता है। वह जो मसीह में विश्वास का अंगीकार करता है परन्तु जिसमें विश्वास के प्रमाण, नए जन्म का ईश्वरीय कार्य या ईश्वरीय कृपा के लगातार चलने वाले कार्य नहीं दिखते, वह अनंत जीवन की निश्चयता नहीं पा सकता। यह इसलिए नहीं कि उसने एक समय प्राप्त किया हुआ उद्धार खो दिया है परन्तु वह दर्शाता है कि उसने वह उद्धार कभी पाया ही नहीं था जिसका वह दावा करता है।

1 यूहन्ना 2:19 में प्रेरित हमें कुछ व्यक्तियों के बारे में बताते है जिन्होंने कभी मसीह में विश्वास करने का अंगीकार किया था, परन्तु अब मसीही विश्वास और कलीसिया की संगति की धर्मशिक्षा से विमुख होकर अपनी खोई हुई दशा प्रगट कर रहे हैं। परन्तु वे हमें स्पष्ट बताते हैं कि ऐसों ने उद्धार खोया नहीं है, बल्कि उनका अलग हो जाना साबित करता है कि उनका वास्तव में कभी उद्धार नहीं हुआ था। उनकी भाषा सुगठित है, "वे निकले तो हम ही में से, परन्तु वास्तव

21 इफिसियों 2:10; फिलिप्पीयों 1:6.

22 इब्रानियों 12:2.

में, हम में से नहीं थे, क्योंकि यदि वे हम में से होते तो हमारे साथ रहते, परन्तु वे निकल इसलिए गए कि यह प्रकट हो जाए कि वे हम में से नहीं है।"

यह पाठ हमें उचित एंव बाइबल–सम्मत संतुलन प्रदान करता है कि विश्वासियों की निश्चयता और धर्मपरित्याग की संभावना का क्या अर्थ है। ये व्यक्ति क्यों निकल गये? यूहन्ना स्पष्ट कहते है कि यद्यपि उनकी पहिचान मसीह और उसकी कलीसिया से थी, वे वास्तव में मसीह के या उसके लोगों में नहीं थे। जिस प्रकार, कलीसिया के इतिहास में बहुत से ऐसे हुये जिन्होंने मसीहत का परिधान धारण किया, और मसीहत की बोली बोलना सीखा, पर कभी मसीहत की सामर्थ का अनुभव नहीं किया।[23] वे वापस लौटकर नहीं जा रहे थे, जैसे वे पहले थे, परन्तु वे दर्शा रहे थे कि वे सदा से वैसे ही थे। जैसे कुत्ता वमन करके पुनः उसे चाटता है, वह दर्शाता है कि वह कुछ और नहीं सदा कुत्ता ही था, भले ही वह स्वयं को कुछ और बताये। जैसे सूअर कीच में लोटने के लिए लोटता है, और दर्शाता है कि उसे जितनी बार भी धोया गया वह बाहरी तौर पर था। भले ही बाहर से वह स्वच्छ था उसमें सूअर के स्वभाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।[24] वह जो मसीह का अंगीकार करता और उसके लोगों के साथ सहभागिता रखता है, और स्थायी तौर पर दोनों से विमुख हो जाता है, वह अपने पुराने मनुष्यत्व की बातों में वापस नहीं लौटता है पर ओढ़ी हुई भेंड़ की खाल उतारकर अपना वास्तविक स्वभाव प्रगट करता है, जो कभी भी रूपान्तरित नहीं हुआ था।

व्यक्तिगत परीक्षण

वास्तविक विश्वासी विमुख नहीं होते है। हालाँकि बहुत से जो मसीह का अंगीकार करते और स्वयं की पहिचान कलीसिया के साथ दर्शाते है वे वास्तव में विश्वासी नहीं है। वे अन्ततः बाइबल सम्मत कलीसिया में से निकल जाएँगे और अपनी वास्तविक दशा प्रगट करेंगे। हालांकि इस विषय पर सुसमाचाकीय कलीसियाओं ने अपने सदस्यों को सबसे अधिक असफल किया है। जब परमेश्वर के वचन की व्याख्या इस प्रकार नहीं होती कि वह विवेक को प्रभावित करे और जब कलीसिया का संगठन संसार की शारीरिक अभिलाषाओं को संतुष्ट करने के लिए किया गया है, तब जिनके हृदय–परिवर्तन नहीं हुए है, उन्हें विवश नहीं किया जाता कि कलीसिया से निकले, पर वे नरक के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ते हुए, कलीसिया में सुविधाजनक रूप में बने रहते है। तथाकथित सुसमाचारकीय कलीसियाओं की ऐसी शोचनीय दशा है। सही के नाम पर बहुत सी बातें गलत रूप में व्याख्या पाती है और अमल में लाई जाती है जैसे कि प्रेम, स्वीकृति और अनाक्रामकता और मण्डली के मध्य हृदय–परिवर्तन न करने की बातों की बढ़ती। और इन सबके

23 2 तीमुथियुस 3:5.

24 2 पतरस 2:22.

बावजूद मार्ग से भटके हुए भविष्यद्वक्ता हमसे कहते है – ''शांति है, शांति है,'' जबकि शांति है ही नहीं'' (यिर्मयाह 6:14; 8:11)।

यदि कभी परिवर्तन होना चाहिए तो अवश्य है कि उसका आरम्भ परमेश्वर के लोगों के चरवाहों में आत्मिक जागृति से हो। उन्हें अपने श्रोताओं के विवेक के प्रति परमेश्वर के वचन का पूर्ण परामर्श प्रचार करना चाहिए। उन्हें सुसमाचार को उसकी समस्त क्षुब्धकारी महिमा, परमेश्वर की पवित्रता की व्याख्या, मानव की विकृति को उजागर करने और कलवरी के क्रूस पर ध्यान केन्द्रित करने, और सब स्थानों में मनुष्यों से पश्चाताप करने और सुसमाचार पर विश्वास करने का आग्रह करने वाला सुसमाचार सुनाना चाहिए। उन्हें परमेश्वर के लोगों से अनंत जीवन का विचार सामने रखकर पवित्रता का जीवन जीने, संसार से विरक्ति, स्वयं से अरूचि, और बलिदानी सेवा, करने का निवेदन करना चाहिए। केवल तब हम में जो हृदय–परिवर्तन के बिना है वे उनकी नींद से जागेंगे। जी हाँ, कुछ प्रचारक और उसके संदेश से घृणा के साथ जागेंगे परन्तु कुछ अन्य पाप के कारण टूटा हृदय लेकर, अनंत जीवन के लिये विश्वास करने के लिए जागेंगे।

चरवाहों की चर्चा के बाद अब हमें हमारा ध्यान उनकी ओर लगाना चाहिए जो प्रभु के दिन, प्रत्येक रविवार उनके सामने बैठते हैं। हम कैसा प्रत्युत्तर देंगे, यदि पास्टर उनके कर्त्तव्यों में अविश्वासयोग्य रहने के कारण पश्चाताप करे और पवित्रशास्त्र को पवित्रात्मा की सामर्थ में होकर विश्वासयोग्यता से प्रचार करने लगे? क्या हम आनन्द करेंगे, या उससे लड़ेंगे जब तक कि हम जीत न जाए और उसे पद से निकाल न दे? या फिर अभक्तिमय लोगों का बहुमत अपने साथ न पाकर हम उन मनुष्यों के समान प्रतिक्रिया करेंगे जिनके बारे में यूहन्ना लिख रहे है? क्या हम सुधारवादी पास्टर और कलीसिया से निकल जाएंगें और साबित करेंगे कि हम वास्तव में कभी उस कलीसिया का भाग नहीं थे और वास्तव में कभी मसीह के नहीं थे?

ये कठोर वचन है, जैसा बहुत से लोग सोचते हैं पर कुछ ही उन्हें कहेंगे। हम क्या करेंगे, यदि कलीसिया हमारी और हमारी प्रगट आवश्यकताओं की परवाह न करके परमेश्वर की महिमा और उसके मसीह की पर्वाह करे? हम हमारे विवेक पर चोट करने वाले बाइबल–सम्मत प्रचार के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया करेंगे? हमारी प्रतिक्रिया क्या होगी यदि मनोरंजन दूर करके उसके स्थान पर सीधी–सरल हृदय से की जाने वाली आराधना की जाये? हमारा मत किसे जायेगा यदि कार्यक्रमों के बदले प्रार्थना सभाओं और पारिवारिक आराधना सभाओं को स्थान दिया जाये? हम क्या करेंगे यदि सब यह तय करे कि प्रासंगिक होना और परिस्थितियों के अनुरूप होना इतना आवश्यक नहीं है, परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला बनना चाहिये? यदि हमारी कलीसिया में बाइबल–सम्मत और सक्रिय मसीहत का पुनः जन्म हो जाये तब हम कहाँ जायेंगे? हम क्या करेंगे? प्रेरित यूहन्ना हमें इस पाठ में बताते हे कि हमारा प्रत्युत्तर हमारे अंगीकार की सत्यता को दर्शाने वाला बहुत बड़ा संकेतक होगा।

अध्याय – 10

मसीह का अंगीकार

झूठा कौन है केवल वह जो यीशु 'मसीह' होने का इनकार करता है? यही मसीह विरोधी है, अर्थात जो पिता और पुत्र का इनकार करता है। जो पुत्र का इनकार करता है, उसके पास पिता नहीं जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। जहां तक तुम्हारा सम्बद्ध है, तुमने जो आरम्भ से सूना है, उसे अपने में बना रहने दो। जो कुछ तुम ने आरम्भ से सूना है, यदि वह तुम में बना रहे तो तुम भी पुत्र में और पिता में बने रहोगे।

- 1 यूहन्ना 2:22–24;

प्रियो, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से है या नहीं, क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े है। परमेश्वर के आत्मा को तुम इस से जान सकते हो: प्रत्येक आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह देह धारण कर के आया है, वह परमेश्वर की ओर से है और प्रत्येक आत्मा जो यीशु को नहीं मानती वह परमेश्वर की ओर से नहीं है यही तो मसीह–विरोधी की आत्मा है, जिसके विषय में तुम सुन चुके हो कि वह आनेवाला है और अब भी संसार में है।

- 1 यूहन्ना 4:1–3;

इसी से हम जानते है कि हम उसमें बने रहते है और वह हम में, क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है। हमने उसे देखा है, और साक्षी देते है कि पिता ने पुत्र को संसार का उद्धारकर्ता कर के भेजा है। जो कोई यह मान लेता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है तो परमेश्वर उसमे और वह परमेश्वर में बना रहता है।

- 1 यूहन्ना 4:13–15

यूहन्ना की पहली पत्री लिखे जाने का उद्देश्य विश्वासियों को मसीह और उनकी अनंत दशा के द्वारा परमेश्वर के साथ उनके संबंध के लिये बाइबल–सम्मत निश्चयता प्रदान करने में सहायता करना है। किन्तु जब हम पत्री पढ़ते हैं हम यह भी पाते हैं कि झूठे शिक्षक मण्डली में प्रवेश कर चुके थे और मसीहत के कुछ सबसे प्रमुख आधारभूत सत्यों के संबंध में संदेह उत्पन्न कर रहे थे। इस अध्याय के आरम्भ में दिये पाठ में हम उन गलतियों में से कुछ को समझ सकते हैं जिन्हें झूठे शिक्षक वहाँ फैला रहे थे।

वे यीशु के मसीह होने का इंकार करते थे।
वे इस बात से भी इंकार करते थे कि यीशु मसीह मानव देह में आया।
वे इंकार करते थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।

इन तीन इनकारों और इस पत्र में दिये अन्य प्रमाणों से प्रतीत होता है कि ये झूठे शिक्षक ज्ञानवादी या रहस्यवादी थे। कम से कम उनकी शिक्षाएँ इस धर्म के आरम्भिक चरणों का प्रतिनिधित्व करती है जो आगे चलकर ज्ञानवाद या रहस्यवाद के नाम से जाना गया। ये पदनाम ग्रीक भाषा के शब्द gnosis से है जिसका अर्थ 'ज्ञान' है। यद्यपि ज्ञान मसीहत का एक आवश्यक पहलू है, इन ज्ञानवादियों का ज्ञान एक विशेष ज्ञान से संबंधित है जिसका आरम्भ पवित्रशास्त्र से बाहर है और पवित्रशास्त्र के विपरीत है। उनकी मूल शिक्षा के अनुसार आत्मा अच्छी है और पदार्थ बुरे हैं। बाइबल से असम्मत इस दोहरी विचारधारा के परिणामस्वरूप बहुत सी घातक त्रुटियाँ उत्पन्न हुई जिन्होंने ज्ञानवाद को आरंभिक चर्च का सामना करने वाली सबसे अधिक खतरनाक गलत धर्म शिक्षाओं में से एक बना दिया।[1] प्रथम, ज्ञानवाद की इस अवधारणा के अनुसार देह क्योंकि भौतिक है, इसलिए बुरी है। इसके विपरीत परमेश्वर क्योंकि विशुद्ध आत्मा था इसलिए अच्छा था। दूसरा, उद्धार प्राप्त करने के लिये देह से छुटकारा पाना आवश्य है, मसीह पर विश्वास के द्वारा नहीं परन्तु एक विशेष प्रकाशन के द्वारा जो केवल ज्ञानवादियों के पास था। तीसरा, चूंकि देह बुरी थी, कुछ ज्ञानवादियों का मानना था कि तपस्या की जीवनशैली अपनाकर शरीर को कष्ट में रखना चाहिये। किन्तु कुछ अन्य लोगों का मानना था कि शरीर के कुछ परिणाम नहीं होते, इस कारण व्यक्ति बे–रोकटोक किसी भी प्रकार की (यौन) अनैतिकता में लिप्त हो सकता है।

यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में इस प्रकार की बहुत सी गलत शिक्षाओं का प्रतिवाद किया है, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री में किया है। इन सब पर विस्तार से विचार करना संभव नहीं है, किन्तु दो गलत शिक्षाओं पर हम इस अध्ययन में अवश्य विचार करेंगे। प्रत्येक

---

1 किसी चीज के दो विपरीत अथवा विरोधाभासी पहलुओं की धारणा में भेद को या इस तरह विभाजित होने की दशा को द्ववैतवाद कहा गया है। दर्शनशास्त्र में, द्ववैतवाद किसी वैचारिक व्यवस्था की ओर संकेत देता है जो सच्चाई को दो स्वतंत्र सिद्धांतों के रूप में मानती है – भौतिक और अभौतिक अथवा पदार्थ और आत्मा।

का संबंध यीशु मसीह के व्यक्तित्व की सही प्रकृति से है, और यह कि उद्धार पाने के लिये हमें उसके बारे में क्या विश्वास करना चाहिये।

ज्ञानवाद की प्रथम गलत धर्मशिक्षा है – प्रतीयमानवाद (Docetism) यह ग्रीक क्रिया शब्द dokeo से निकला है जिसका अर्थ है 'आभासी लगना' या 'प्रतीत होना'। ज्ञानवादियों का मानना था कि भौतिक देह पैदायशी रूप में बुरी होती है, इस कारण मसीह के 'मानव देह' में आने अर्थात् अवतार लेने का इंकार करना आवश्यक था वे शिक्षा देते थे कि ईश्वरीय मसीह आभासी थे या प्रतीत होता था कि उनकी देह है। दूसरी गलत शिक्षा भी इससे मिलती–जुलती है, जिसे सेरिन्थियानिज्म कहा जाता है, यह नाम इस वाद के सबसे प्रमुख प्रवक्ता सेरिन्थस के नाम के कारण है। उसकी शिक्षा थी कि ईश्वरीय मसीह का आत्मा, नासरत के यीशु पर बपतिस्में के समय उतरा था और उसके कलवरी के क्रूस पर मरने से पूर्व उसे छोड़कर चला गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया था। संक्षेप में ज्ञानवादी शिक्षा में परमेश्वर के अनंतकालीन पुत्र के अवतार लेने का इंकार किया जाता है और वे यीशु मसीह को और ईश्वरीय मसीह को दो अलग–अलग व्यक्ति मानते थे। इस प्रकार वे यीशु को मसीह और परमेश्वर का पुत्र मानने से इंकार करते थे।

हमने जो कुछ सीखा है, उस सबका समकालीन अनुप्रयोग सरल शब्दों में यह है – एक व्यक्ति मसीही नहीं है यदि वह यीशु नासरी को परमेश्वर का अनंतकालीन पुत्र मानकर विश्वास और अंगीकार नहीं करता; कि वह अपनी स्वर्गीय महिमा को त्यागकर पवित्रात्मा के द्वारा कुँवारी के गर्भ में आया और अवतार के रूप में बैतलेहम में जन्मा; कि वह सम्पूर्ण रूप में परमेश्वर और सम्पूर्ण रूप में मनुष्य था, और वह व्यवस्था एवं भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से बताया गया मसीहा अर्थात् संसार का उद्धारकर्त्ता था। यीशु मसीह के व्यक्तित्व के बारे में इन अति–आवश्यक सत्यों से विचलन किसी भी तथाकथित मसीही अंगीकार का निर्मूलन करता है भले ही वह भले–कामों के प्रति ईमानदारी और लगन से युक्त हो।

आप मसीह के बारे में क्या सोचते हैं?

जॉन न्यूटन ने यह भजन लिखा, 'व्हाट थिंक यू ऑफ क्राइस्ट?' जब वे ऑलनी, इंग्लैण्ड में पास्टर थे, और इसमें 1 यूहन्ना 4 के इन वृतान्तों का अनुप्रयोग है,

"आप मसीह के बारे में क्या सोचते है, एक जाँच है,
आपकी दशा और आपकी सोच की जाँच,
यदि आप प्रभु के बारे में सही नहीं सोचते,
आप शेष बातों में सही नहीं हो सकते।
यीशु आपके विचारों में जैसे हैं,
वे आपके लिये अतिप्रिय है या नहीं,

उसी प्रकार परमेश्वर आपके लिए है –
और दया या क्रोध आपका भाग है,

कुछ लोग उसे प्राणी समझते हैं,
एक मनुष्य या अधिक से अधिक एक स्वर्गदूत।
परन्तु इन में मेरे जैसी भावनाएँ नहीं,
और न वे स्वयं को अभागा और खोया हुआ मानते हैं,
मैं इतना दोषपूर्ण और इतना असहाय हूँ,
मैं उसके लहू पर भरोसा नहीं कर सकता
और न उसकी सुरक्षा पर अवलंबित रह सकता हूँ,
यदि मुझे निश्चय नहीं कि वह परमेश्वर है।"[2]

हम एक उद्‌घोषणा के साथ आरम्भ करेंगे जिसे सुसमाचार प्रचारकीय समाज में से बहुत से लोग परिवर्तनकारी या एक नयी बात या विचार मानेंगे। *मसीहत का संबंध यीशु मसीह के व्यक्ति और कार्य से है।* यदि सुसमाचार प्रचारकीय कलीसिया बेहतर स्वास्थ्य में होती या कम से कम पवित्रशास्त्र पर अधिक केन्द्रित, तो इस कथन की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु, यह आवश्यक है और अवश्य है कि यह प्रत्येक चर्चमैन की लगातार अवधारणा बनें जो सुधार और आत्मिक–जागृति की अभिलाषा करता है। अवश्य है कि यह हमारे लिये सबसे अधिक प्रिय और सबसे अधिक दोहराये जाने वाला सिद्धांतवाक्य (सूत्र) बनेः मसीहत अपने सबसे अधिक सच्चे और सबसे अधिक प्राथमिक रूप में वह धर्म है जो मसीह पर आधारित और केन्द्रित हैः क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है – और वह यीशु मसीह है – कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता" (1 कुरिन्थियों 3:11)।

आज कलीसिया को जॉन न्यूटन के गीतों पर अमल करने की आवश्यकता है। वे हमारी वर्तमान व्याधि के लिये आवश्यक है। न्यूटन मसीह की सर्वोच्चता के विषय में हर प्रकार से सही था। वह परमेश्वर के प्रकाशनों में सर्वोच्च है और परमेश्वर के महानतम कार्य का चैम्पियन है। इस कारण मसीह के विषय में हमारा अभिमत एक जाँच है जिसके द्वारा हमारे मसीही अंगीकार की वैधता प्रमाणित होती है। हमारे सभी अंगीकारों, पहिचान, या कामों का कोई अर्थ या उपयोग नहीं है यदि पहले हम मसीह के बारे में सही अभिमत न रखे। वास्तव में, हमारे प्रति परमेश्वर की सम्पूर्ण अवधारणा इस बात से तय होती है कि उसके पुत्र के प्रति हमारी अवधारणा क्या है।

पवित्रशास्त्र में मसीह के व्यक्तित्व के दो पहलू इतने अधिक स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किये गये हैं कि उनको इंकार करने का अर्थ है पवित्रशास्त्र का इंकार करना और ख्रीष्ट विरोधी बनना। ये दोनों लक्षण दिन और रात से अधिक भिन्न–भिन्न है, वे एक दूसरे से इतने दूर है जैसे ध्रुव है और मसीह के व्यक्तित्व के अतिरिक्त उनमें कोई संबंध नहीं है। केवल उसी में, ईश्वरत्व और

---

2 टोड मरे, "व्हॉट थिंक यू ऑफ क्राईस्ट?" ऑन *बियोंड अमेजिंगः दि फॉरगॉटन हिम्स ऑफ जॉन न्यूटन,* कांपेक्ट डिस्क। टोड मरे ने *ओलने हिमनल* में से चुने हुए गीत दुबारा तैयार किये हैं, जिन्हें जॉन न्यूटन ने 1779 में प्रकाशित किया था।

मनुष्यत्व एक साथ विद्यमान है और इन दोनों स्वभावों में भ्रम उत्पन्न किये बिना या एक दूसरे को कम किये बिना एक साथ उपस्थित है।

छुटकारा देने वाले का मनुष्य होना अवश्य है, क्योंकि यह मनुष्य है जो व्यवस्था भंग करता है और जिसकी मृत्यु होनी चाहिए। यदि पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले प्रत्येक शुद्ध पशु को उसकी शुद्ध दशा में बलिदान किया जाता, उन सबका लोहू मिलकर हमारे पाप के दागों पर विजय नहीं पा सकता था, 'क्योंकि यह असंभव है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। यदि स्वर्ग के सभी स्वर्गदूतों को आदेश दिया जाता कि वे हमारे छुटकारे के लिये स्वेच्छापूर्वक पूरी रीति पर अपने जीवन को दे, तब भी हमें कुछ सहायता नहीं मिलती क्योंकि छुटकारा देने वाला हम में से ही होना चाहिये – हमारे माँस का माँस और हड्डी की हड्डी। यदि मसीह को हमारा छुड़ाने वाला संबंधी बनना है तो उसे हमारा संबंधी (रिश्तेदार) होना चाहिए।[3]

इस कारण, हमारा छुड़ानेवाला पूर्णतः मनुष्य था, पर केवल मनुष्य नहीं। यह आवश्यक था कि वह हर दृष्टि से परमेश्वर भी हो, प्रत्येक कोण या विचार के पहलू से और बिना अपवाद, हर श्रेणी में परमेश्वर हो। हम इस आवश्यकता के लिए प्रत्येक कारण गिना नहीं सकते, पर कम से कम उनमें से तीन पर विचार अवश्य कर सकते है। प्रथम, केवल परमेश्वर उद्धारकर्त्ता है, और यह पदनाम वह किसी और के साथ बाँट नहीं सकता। जब उसने भविष्यद्वक्ता यशायाह के द्वारा घोषणा की तब उसने छुटकारा देने वाले या उद्धारकर्त्ता के पद या अधिकार के लिये ईश्वरत्व का दावा किया, ''मैं, हाँ मैं ही यहोवा हूँ, और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं'' (यशायाह 43:11)। इस कारण यदि मसीह हमारा उद्धारकर्त्ता है, उसे परमेश्वर होना चाहिए। यदि वह परमेश्वर नहीं है, वह हमारा छुड़ाने वाला या उद्धारकर्त्ता नहीं है, और हम अब भी पाप में खोए है और सब मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय है।[4]

दूसरा, छुटकारे के कार्य का परिमाण ईश्वरत्व की माँग करता है। 'कुछ नहीं' में से सृजन[5] के लिए हमारी निर्बाध कल्पना की 'सीमाओं के बाहर बुद्धि और सामर्थ की आवश्यकता थी। परन्तु फिर भी हमारे उद्धार की तुलना में यह एक छोटी बात थी। सृष्टि में परमेश्वर को किसी प्रकार की चिन्ता या बलिदान करने की आवश्यकता नहीं थी कि कुछ नहीं में से संसार को सृजन करे। उसने किसी उर्जा को खर्च नहीं किया जिसे पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता हो, और उसे कार्य समाप्त होने पर किसी निर्बलता का अनुभव नहीं हुआ। जब उसने सृजन किया, तब बिना तकलीफ किया। उसने सातवें दिन विश्राम किया, किसी खोए बल को प्राप्त करने के लिए नहीं परन्तु प्राप्त वस्तुओं में आनन्द करने के लिए, एक अच्छा और सुन्दर नया संसार जो मात्र शब्द (वचन) कहकर

3 लैव्य. 25:25; रुथ 2:1,20.

4 1 कुरिन्थियों 15:19.

5 धर्मशास्त्र सिखाते हैं कि परमेश्वर ने शून्य से संसार को रचा (इब्रानियों 11:3)। उसने संसार को रचने के लिये किसी संसाधन से पदार्थ उधार नहीं लिया। बल्कि, उसके शब्द से पदार्थ अस्तित्व में आया।

'कुछ नहीं' में से अस्तित्व में लाया गया था। किन्तु क्रूस पर ईश्वर ने सबसे बड़ा बलिदान दिया, और जिस काठ पर सृष्टिकर्त्ता देह में होकर लटकाया गया, उसमें वह खर्च और उपयोग भी हुआ। ईश्वरत्व को तनाव सहना पड़ा और स्वर्ग ने इस कार्य की बड़ी भारी कीमत चुकाई। परमेश्वर को छोड़ कौन यह कार्य सम्पन्न कर सकता था? परमेश्वर को छोड़ कौन छुटकारे का यह दाम चुका सकता था? व्यवस्था भंग करने की कीमत अनगिनत संसार और जो कुछ उनमें है, मिलकर भी चुका नहीं सकते थे। यहाँ तक कि ईश्वरीय न्याय के अनुदेश के सामने सारापों की एक पलटन की मृत्यु भी हमारी स्थिति को बेहतर नहीं बना सकती थी। व्यवस्था के शाप और दण्ड से हमारे छुटकारे के लिये अनंत मूल्य रखने वाले किसी व्यक्ति के बलिदान की आवश्यकता थी। यदि मसीही पूरी तरह ईश्वरीय नहीं था तो वह ऐसी कीमत नहीं चुका सकता था।

तीसरा, हमारी नैतिक विकृति की माँग थी कि हमारा छुड़ाने वाला ईश्वर हो। यह बात साबित होती है कि हमें मानवीय समाधन और नैतिक–मार्गदर्शन से बढ़कर आवश्यकता थी। हम परमेश्वर चाहते है! यदि कोई सोचता है कि उसका उद्धार परमेश्वर में कमतर किसी व्यक्ति के द्वारा संभव है, तो उसे उसके नैतिक–पतन और व्यवस्था भंग करने की गहिराई की समझ नहीं है। वह अपने पाप की काली सच्चाई के प्रति अंधा है और जो कुछ उसके विवेक में बच गया है उसके प्रति बहिरा है। उसे उस व्याधि के प्रति सजग हो जाना चाहिए, जिसका उपचार परमेश्वर के अतिरिक्त कहीं और नहीं है, परमेश्वर ही उसे चंगा कर सकता है जिसके निकट कुछ भी असंभव नहीं है।[6]

यदि हम ईमानदारीपूर्वक स्वयं का मूल्यांकन करे – हमारे आंतरिक विचार, गुप्त कार्य, और गुप्त में कहे गये शब्द – तब संभव है हम उचित रीति पर विनम्र और लज्जित हो। यदि हम यह बात समझ लें कि हमारे पाप ऐसे हैं जो किसी दयावान मानव न्यायधीश या निकट मित्रों की न्याय–परिषद के द्वारा भी क्षमा नहीं किए जाएंगे तब हम सुसमाचार के भय को जान लेंगे। यदि हम अपने पुरखाओं के द्वारा अनदेखी करने और पापों को दोहराने के इतिहास पर लम्बे समय तक विचार करें तो हम पाएंगे कि हम उनके पापों को अधिक उन्नत और जटिल स्वरूपों में आगे बढ़ा रहे हैं – यदि हम अपनी नागवार आत्म–प्रशंसा और एक दूसरे की कभी समझ में न आने वाली शक्ति का लगातार समारोह मनाने से रूक सके तो हम पाएंगे कि हमारा आशावाद एक ऐसी आधारशिला पर है जो मकड़ी के जाले के समान निर्बल है। यदि हम यह मान ले कि मृत्यु और कब्र हमारे लिये बढ़ती आ रही है तब हम समझेंगे कि उद्धार पाने के लिए और हमारे संसार को सही दशा में लाने के लिये हमें मानव बुद्धि से प्राप्त नैतिक शिक्षा से कहीं बढ़कर आवश्यकता है। हमें परमेश्वर की आवश्यकता है जिसके विरूद्ध हमने पाप किया है, कि वही हमारे छुटकारे की कीमत चुकाए। जिस परमेश्वर ने हमें सृजा था, अवश्य है कि पुनः हमारी सृष्टि करे।

6 यिर्मयाह 32:27; लुक 1:37.

ओह, भला होता कि समस्त संसार अपने आप को पवित्रशास्त्र के चश्में से देखता है और न्यूटन एवं प्रेरित पौलुस का मानव विज्ञान स्वीकार करता, जिन्होंने स्वयं को परमेश्वर के उद्धार करने वाले और रूपान्तर करने वाले अनुग्रह से अलग हटकर नैतिक रूप में अभागा जाना![7] तब लोग समझ पाएंगे कि यदि मसीह सम्पूर्ण रूप में परमेश्वर नहीं है तो उसमें उनका उद्धार करने का पर्याप्त गुण या सामर्थ नहीं है।

आप क्या कहते है, वह कौन है?

यीशु की सेवकाई के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर उसने चेलों से पूछा, ''मनुष्य का पुत्र कौन है? लोग क्या कहते हैं?'' प्रत्युत्तर में प्रेरित पतरस ने कहा, ''तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (मत्ती 16:13–17) इस बात से हम समझते हैं कि यद्यपि यह आवश्यक है कि हम सही रूप में समझें और विश्वास करे कि यीशु ने क्या काम किये, हमें सही रूप में समझना और विश्वास करना भी चाहिये कि वह कौन था और कौन है। यह सत्य और 1 यूहन्ना 4 से प्राप्त सत्य मिलकर हमें सिखाते हैं कि यदि हम यीशु को मसीह और अवतार रूप में परमेश्वर से कम मानते हैं तो हम मसीही नहीं है।

वास्तविक कलीसिया में सभी प्रकार के लोग है – परिपक्व और अपरिपक्व, विद्वान और व्यापारी, शिक्षक और छात्र। मानना होगा कि कुछ मसीह के व्यक्तित्व के महान सत्यों में दूसरों की अपेक्षा अधिक शिक्षित है और उन्हें बेहतर रूप में समझा सकते है। परन्तु परमेश्वर के लोगों में सबसे अधिक अप्रशिक्षित व्यक्ति भी मानेगा कि यीशु इतिहास के एक विशिष्ठ व्यक्ति है, परमेश्वर के अनंतकालीन पुत्र जो शरीर में आये और हमारे बीच निवास किये,[8] क्योंकि नयी वाचा की एक प्रतिज्ञा के अनुसार और नये जन्म के परिणाम स्वरूप, परमेश्वर की सभी संतानें, छोटे से बड़े तक परमेश्वर के द्वारा सिखाए जाएंगे और वे परमेश्वर को जान लेंगे।[9]

मसीहत के बाहर जितने भी धर्म और पंथ है जो मसीहत के साथ अपनी पहिचान दर्शाते है उनका विशेष चिन्ह यह है कि वे मसीह के व्यक्तित्व की किसी बात से इंकार करते है। परन्तु परमेश्वर यह सुनिश्चित करते हैं कि ऐसी गलत शिक्षा उनके लोगों में व्याप्त न हो। यहाँ तक कि वे विश्वासी भी जो संसार में बहुत दूर–दराज के इलाकों में रहते है, उन्हें भी यह आदिम किन्तु निश्चित समझ है कि मसीह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है। भले ही वे समझा न सके कि ये दो स्वभाव कैसे एक व्यक्ति में रहते है, और एक दूसरे से भ्रमित नहीं होते न एक दूसरे को कम

---

7 न्यूटन ने स्वयं का मत इन प्रसिद्व शब्दों में दिया, ''अदभुत अनुग्रह! कितना मधुर स्वर था जिसने मुझ जैसे निकम्मे मनुष्य को बचाया!'' प्रेरित पौलुस ने अपनी स्वयं की छवि का चित्रण रोमियों 7:24 में किया: ''मैं कितना निकम्मा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?'' (रोमियों 7:24)

8 यूहन्ना 1:14; इब्रानियों 2:14.

9 यूहन्ना 6:45; यिर्मयाह 31:34.

करते है। वे जानते है कि सम्पूर्ण अर्थों में यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों है, और वे किसी अन्य प्रकार की शिक्षा देने वालों के साथ सहभागिता नहीं करते।

इस अध्ययन के समापन में हमें अपना ध्यान अपनी ओर केन्द्रित करना चाहिये और एक उचित अनुप्रयोग करना चाहियेः आप मसीह के बारे में क्या सोचते हैं, और आप उसके बारे में क्या कहते है? आपके पास उस सीमा तक उद्धार की निश्चयता होगी जिस सीमा तक आप उसके ईश्वरत्व और मनुष्यत्व को मानेंगे और उसे सर्वोच्च सम्मान देंगे।

मसीह के विषय में हमें जितना सम्मानपूर्वक सोचना चाहिए या उसकी जितनी प्रशंसा करनी चाहिए, उससे अधिक हम नहीं कर सकते। किन्तु आज बहुत से लोग जो मसीह का अंगीकार करते और मसीहियों के साथ अपनी पहिचान बनाते हैं – वे उसके बारे में कमतर सोचकर धोके में है। यद्यपि वे उचित रीति पर उसके ईश्वरत्व और मनुष्यत्व दोनों का अंगीकार करें, वे उसके प्रति अपने दृष्टिकोण में अधिक आश्वस्त और उसके प्रति बातचीत में अधिक गम्भीर या स्थिर नहीं होते। हमें सावधान रहना चाहिए कि कहीं मसीह हमारे लिये साधारण या आम बनकर न रह जाये। यदि मसीह हम में आदरभाव या विस्मय की भावना उत्पन्न नहीं करते, तो हमें अपनी आत्माओं की चिन्ता करनी चाहिए।

इस बात के प्रमाण नहीं मिलते कि एक व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा सिखाया है, यदि मसीह के बारे में वह इस प्रकार से सोचे जो पवित्रशास्त्र के विपरीत है। इस बात का प्रमाण नहीं मिलता कि एक व्यक्ति पवित्रात्मा के द्वारा नया जन्म पा चुका है, यदि मसीह के बारे में महान सत्य उसे अधिक बढ़कर प्रेम, आदरभाव और व्यवहारिक समर्पण की प्रेरणा नहीं देते। यह विश्वासनीय कथन है, और पूरी तरह स्वीकार्य है कि नया जन्म सदैव मसीह के प्रति सही सोच और साथ ही साथ उसके लिये अनुरागों की दिशा में ले जायेगा।

अध्याय – 11

स्वयं को शुद्ध करना

देखो, पिता ने हमें कैसा महान प्रेम प्रदान किया है कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएं और वही हम है। इस कारण संसार हमें नहीं जनता, क्योंकि संसार ने उसे भी नहीं जाना। प्रियो, हम परमेश्वर की संतान है, और अब तक प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे। पर यह जानते है कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके सदृश होंगे, क्योंकि हम उसको ठीक वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। प्रत्येक जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आप को वैसे ही पवित्र करता है जैसा कि वह पवित्र है।

– 1 यूहन्ना 3:1–3

1 यूहन्ना 3:1–3 में यूहन्ना, अपना ध्यान मसीही जीवन में नैतिक परिशुद्धता के बड़े महत्व पर लगाता है। उसके सावधानी पूर्वक चुनकर लिखे गये शब्द दर्शाते है कि शुद्धता एक मसीही के लिये एक विकल्प नहीं है परन्तु उसके हृदय–परिवर्तन के बड़े प्रमाणों में से एक है। हम जानते है कि हमने उद्धार के लिये अपनी आशा वास्तव में मसीह पर केन्द्रित की है यदि हमारे जीवन व्यक्तिगत पवित्रता की दिशा में प्रयत्नशील है – यदि हम स्वयं को वैसा पवित्र बनाना चाहते है जैसा वह स्वयं पवित्र है।

जब हम इस पाठ पर विचार करते हैं, हमें स्मरण रखना चाहिए कि कलीसिया में मिले शामिल शिक्षक विश्वास करते थे कि भौतिक देहबुरी है और धर्म के संदर्भ में उसके कुछ लाभ नहीं है। इस कारण उन्होंने स्वयं को शरीर की अभिलाषाओं के लिए दे दिया और दूसरों को भी बे–रोकटोक यही सब करने की शिक्षा दी। उनके जीवनों में संसार के लिये प्रेम परिलक्षित होता था। ''शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड'' (1 यूहन्ना 2:15–16)।

उन्होंने अपनी संभावित स्वतंत्रता को शरीर के लिये अवसर बना दिया और बाइबल–सम्मत पवित्रीकरण[1] का पीछा करने वालों का अनादर करने लगे, और उन्हें अनभिज्ञ, अशिक्षित और कर्मकाण्ड में बंधा हुआ समझनें लगे।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि हम पवित्रता के लिये अनादर का सादृश्य समकालीन सुसमाचारवाद में भी पाते हैं। यद्यपि हम ज्ञानवादियों के पूर्ण प्रभाव में नहीं है, जिनके विरूद्ध यूहन्ना ने यह पत्री लिखी थी, पर हम सांसारिकता के प्रभाव में है, और लगता है बहुतों ने नैतिक शुद्धता की पक्षधर और शारीरिकता पर प्रतिबंध लगाने वाली किसी भी शिक्षा के प्रति अरूचि विकसित कर ली है। अनुग्रह के नाम पर कुछ लोग पवित्रता के लिये बाइबल में दिये आदेश की अनदेखी करते है, उसकी पुर्नव्याख्या करते है या फिर सीधे–सीधे उसका इन्कार कर देते हैं। वे जो अधिक पवित्रता के खोजी है या व्यक्तिगत परिशुद्धता के अधिक उत्कृष्ट स्वरूप को पाना चाहते है उन पर अकसर मतांध, विधिवादी, अति–आत्मिक, या ईश्वर से बढ़कर पवित्र बनने वाली जैसी मुहर लगा दी जाती है।

इस गलत शिक्षा का सामना करने, प्रेरित यूहन्ना पवित्रता की ओर संकेत करते हैं कि यह यीशु मसीह और सच्चे मसीहियों का एक विशेष लक्षण है। यूहन्ना के अनुसार प्रत्येक जिसने मसीह पर अपनी आशा स्थिर की है, ''वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा कि वह (प्रभु) पवित्र है'' (1 यूहन्ना 3:3)। हालांकि व्यक्ति की व्यक्तिगत परिशुद्धता महिमा के इस पार कभी पूरी नहीं होगी और यह परमेश्वर के सामने सही रूप में खड़े होने का साधन भी नहीं है, फिर भी यह एक बड़ा प्रमाण है कि उस व्यक्ति ने पवित्रात्मा के नया जन्म देने वाले कार्य और मसीह में व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा प्रभु (परमेश्वर) को जान लिया है। वे जो अनुग्रह से विश्वास के द्वारा उद्धार पा चुके है वे परमेश्वर की कारीगरी बन चुके है। यह कारीगरी विश्वासी की परमेश्वर के चरित्र की समानता में प्रगट होती है, जिसका सबसे अधिक विशेष लक्षण, पवित्रता है। जैसा कि ''लिखा है, तुम पवित्र बनों, जैसा मैं पवित्र हूँ'' (1 पतरस 1:6)।

यद्यपि हमें कलीसिया में विधिवाद की उपेक्षा करनी चाहिए हमें नैतिक शुद्धता का बाइबल में दिया विचार (या सोच) पुनः प्राप्त करना चाहिए। बहुत से लोग जो सुसमाचार का संदेश स्वीकार करने का दावा करते है पर जिनकी गवाही ठीक नहीं है, उनके कारण बहुत से अविश्वासी सुसमाचार के संदेश का इंकार करते है या उस पर कभी ध्यान नहीं देते। साथ ही कलीसिया उन बहुत सी व्याधियों को सहती है, जो पवित्रता की कमी के कारण उभर आती है – जैसे कि परमेश्वर से अलगाव, उसकी प्रगट उपस्थिति का न होना, आत्मिक जीवन और सामर्थ का अभाव। अंत में, सबसे अधिक दुखद बात यह है कि, बहुत से लोग जिन्हें उनके अनंत जीवन का निश्चय है, भले ही ऐसे निश्चयता के लिये उनके पास कोई बाइबल–सम्मत आधार न हो, हमारी दर्शकदीर्घा को

1 गलातियों 5:13; इब्रानियों 12:14.

भरते हैं। पवित्रता का पीछा करने और भक्ति के लिये स्वयं को अनुशासित करने का विचार उनके लिये अनजाना है।[2] उन्हें कभी चेतावनी या शिक्षा नहीं दी गयी कि हृदय–परिवर्तन के सबसे बड़े चिन्हों में एक व्यक्तिगत शुद्धता (या, पवित्रता) की लालसा है जो वास्तविक एवं बार–बार दोहराए जाने वाले प्रयासों की ओर ले चलती है। वे अप्रशिक्षित है और इस कारण इस तथ्य से अनभिज्ञ है कि बिना पवित्रता कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।[3]

शुद्धता का मसीही दृष्टिकोण

इस पाठ में शब्द 'शुद्ध' और 'शुद्ध करना' एक ही ग्रीक शब्द से है। विशेषण "शुद्ध" का उद्गम ग्रीक शब्द hagnos से है, जो दर्शाता है कि व्यक्ति या वस्तु पवित्र, शुद्ध, नैतिक या निर्दोष है। क्रिया शब्द Purify (शुद्ध करना) ग्रीक शब्द hagnizo से है जिसका अर्थ है – शुद्ध करना, साफ करना, या पवित्र करना। यद्यपि नये नियम में इस शब्द का उपयोग धार्मिक आनुष्ठानिक कार्यों में शुद्धता[4] या पवित्रता से है, यह व्यक्ति में आंतरिक शुद्धता या शुचिता को भी दर्शाता है। आरम्भिक कलीसिया के तितर–बितर विश्वासियों को लिखे याकूब के पत्र में वह पापियों को निर्देशित करता है कि वे अपने हाथ साफ करे और हृदयों को शुद्ध करे ताकि वे परमेश्वर के निकट आ सके।[5] अपनी प्रथम पत्री में प्रेरित पतरस मसीहियों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ये वे है जिन्होंने सत्य के आज्ञापालन के लिये उनकी आत्माओं को पवित्र किया है।[6] हम जिस पाठ पर विचार कर रहे हैं, उसमें प्रेरित यूहन्ना एक सच्चे विश्वासी का वर्णन करते हुए कहते है कि 'वह स्वयं को पवित्र करता है, जैसा कि मसीह पवित्र है।

ध्यान दीजिये कि ग्रीक शब्द 'शुद्ध या पवित्र करना' वर्तमान काल में है जो लगातार चल रही क्रिया का संकेत करता है। इस प्रकार, पूरा वाक्यांश इस प्रकार अनुवाद किया जा सकता है – ''प्रत्येक जिसकी यह आशा प्रभु पर केन्द्रित है, वह अपने आप को पवित्र कर रहा है जैसा वह पवित्र है।'' इस से हम यह सीखते है कि व्यक्तिगत पवित्रता में विश्वासी का बढ़ना आवश्यक नहीं या प्रमुख रूप से किसी क्षणिक अनुभव का परिणाम हो। परन्तु हृदय–परिवर्तन के समय से आरम्भ एक प्रक्रिया है जो स्वर्ग में महिमाकरण होने तक लगातार जारी रहती है। यही कारण है, कि धर्म विज्ञानी और व्याख्याकार विश्वासी की पवित्रता में उन्नति को अकसर *'बढ़ने वाला पवित्रीकरण'* (Progressive Sanetification) कहते हैं। यह सत्य है कि परमेश्वर हमारे जीवन की घटनाओं, प्रार्थना में व्यक्तिगत अनुभवों, या आत्मिक–जागृति के असामान्य कामों का उपयोग

---

2 1 तीमुथियुस 4:7, 6:11; 2 तीमुथियुस 2:22.

3 इब्रानियों 12:14.

4 यूहन्ना 11:55; प्रेरितों के काम 21:24,26.

5 याकुब 4:8.

6 1 पतरस 1:22.

कर सकते हैं कि हमें आगे बढ़ाये और कुछ समय के लिये अधिक तेज गति प्रदान करे। किन्तु विश्वासी की पवित्रता में उन्नति परमेश्वर की कृपा के बढ़ने वाले कार्य और परमेश्वर के वचन, प्रार्थना, और अलग किये जाने के द्वारा अधिक पवित्रता प्राप्त करने के विश्वासीजन के दैनिक प्रयत्नों का परिणाम है।

यह भी ध्यान दें कि क्रियाशब्द 'शुद्ध या पवित्र' करने का संबंध, संबंध सूचक सर्वनाम 'अपने आप' से है, जो दर्शाता है कि कर्त्ता किसी दूसरे के द्वारा नहीं परन्तु स्वयं अपने आप पर यह क्रिया कर रहा है। दूसरे शब्दों में, जो पवित्र बन रहा है, वही पवित्रीकरण की क्रिया कर रहा है। इसका अर्थ हमारे पवित्रीकरण में परमेश्वर के कार्य का निषेध नहीं है, परन्तु यह प्रमाण है कि पवित्रीकरण एक सहकर्म है, जिसका अर्थ है कि दो या अधिक व्यक्ति मिलकर अंतः क्रिया या सहयोग कर रहे है ताकि संयुक्त प्रभाव उत्पन्न करे। यद्यपि हमारा नया–जन्म विशुद्ध रूप में परमेश्वर का कार्य है, केवल परमेश्वर कार्य, परन्तु हमारा पवित्रीकरण सहकर्म है अर्थात् परमेश्वर का कार्य जिसमें विश्वासियों का सहयोग शामिल है। यह सत्य फिलिप्पी की कलीसिया को लिखे पौलुस के प्रोत्साहन और उत्साहवर्धन में सुन्दरतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है, "इसलिए मेरे प्रियों, जिस प्रकार तुम सदैव आज्ञापालन करते आये हो, न केवल मेरी उपस्थिति में, परन्तु अब उससे भी अधिक मेरी अनुपस्थिति में, "डरते और कांपते हुए अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ। क्योंकि स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिए तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिये तुम में सक्रिय है (फिलि. 2:13)।

परिशुद्धीकरण या पवित्रीकरण एक सहकर्म है जिसमें परमेश्वर एवं विश्वासी दोनों अभीष्ठ लक्ष्य को प्राप्त करने कार्य करते है। ताकि विश्वासी मसीह के स्वरूप की समानता में बदलता जाए। परमेश्वर ने यह बात पहले से तय की है कि इस दिशा में अपनी आत्मा के द्वारा जो हममें निवास करता है, कृपा के विभिन्न स्वरूपों के द्वारा कार्य करता है। उसकी ईश्वरीय पहल और प्रतिभाग विश्वासीजन का पवित्रता में बढ़ना सुनिश्चित करते है और यह पौलुस के निडर विश्वास का आधार है कि वह जिसने विश्वासी में एक अच्छा काम आरंभ किया है वही उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा इसके साथ–साथ पवित्रशास्त्र यह भी मानता है कि विश्वासियों का पवित्रीकरण उनके अपने व्यक्तिगत प्रयासों पर भी निर्भर है। जबकि परमेश्वर विश्वासीजन को उसकी समस्त गंदगी और मूर्तिपूजा से शुद्ध करने का कार्य कर रहा है, विश्वासी की बुलाहट है कि वह भी स्वयं को शरीर और आत्मा की सभी मलिनता से इस प्रकार पवित्र करे जैसा कि वह पवित्र है, और परमेश्वर के भय में काँपते हुए पवित्रता को सिद्ध करे।[7]

हमारे पवित्रीकरण में मानवीय तत्व के बारे में जानकर समकालीन पाठक पूछ सकते है, "क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि कुछ वास्तविक विश्वासीगण बिना पवित्रीकरण के रह

7 यहेजकेल 36:25; 2 कुरिन्थियों 7:1.

सकते है या कुछ शारीरिक रह जाये और पवित्रता में उन्नति न करे? यह प्रश्न उद्धार के विषय में, उसकी प्रकृति से अज्ञानता का सूचक है। प्रथम, पवित्रता के लिए विश्वासी की अभिलाषा नये जन्म का परिणाम है वह परमेश्वर की संतान बन चुका है, एक नयी सृष्टि, जिसके नये अनुराग धार्मिकता पर बने हैं। यद्यपि उसमें शरीर, संसार, और शैतान के साथ एक बड़ा संघर्ष या द्वन्द चलता रहेगा, परमेश्वर के प्रति ये नये अनुराग प्रत्येक विश्वासी को संसार के प्रति वीतराग और पवित्रता के प्रति अधिक आकर्षण (अनुराग) में अगुवाई करेंगे। दूसरा, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी में ''अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है'' (फिलि. 2:12–13)। वह विश्वासी की इच्छा को अपनी इच्छा के अनुरूप बनाने और उस इच्छा को कार्यरूप में करने का बल देने का कार्य करता है। वह अभिरूचि और बल दोनों देता है, वह अगुवाई करता और जीवन्त रखता है। अंत में हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने अपनी संतानों की सतत निगरानी करने की प्रतिज्ञा की है। वह उन्हें अभक्ति में नहीं छोड़ेगा या प्रेम करने में कोताही नहीं बरतेगा, वह उद्देश्य पूर्वक अनुशासित करेगा। इसलिए इब्रानियों का लेखक लिखता है:

> "क्योंकि प्रभु जिस से प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसे कोड़े भी लगता है।"
>
> तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हे पुत्र जानकर तुम्हारे साथ व्यवहार करता है। वह कौन–सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? पर यदि वह ताड़ना जो सब की होती है, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, परन्तु व्यभिचार की संतान ठहरे। फिर यह कि जब शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना करते थे तो हम ने उनका आदर किया, तब क्यों न आत्माओं के पिता के और भी अधिक अधीन रहें, जिस से कि हम जीवित रहें? क्योंकि उन्हों ने थोड़े समय के लिए जैसा भी उन्हें उत्तम जान पडा हमारी ताड़ना कि, कि हम उसकी पवित्रता में सहभागी हो जाएं। (इब्रानियों 12:6–10)।

बढ़ने वाला पवित्रीकरण उन सभी के जीवन में एक लक्षण है जिनका सचमुच हृदय–परिवर्तन हुआ है। हम इस अध्याय के निष्कर्ष में इस बारे में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। परन्तु पाठकों को अब भी चाहिए कि स्मरण रखें कि वास्तविक मसीही जन में न केवल परमेश्वर के पवित्र करने के कार्य के प्रति समर्पण का चिन्ह होगा परन्तु वह पवित्रशास्त्र में इस कार्य के लिये उपलब्ध साधनों के द्वारा इसमें सक्रियता से भाग लेगा।

परिशुद्धता या पवित्रता के मसीही साधन

विश्वासी के पवित्रीकरण में परमेश्वर की अगुवाई और कार्य करने का अर्थ हमारे लिये लापरवाही या आलस्य करना नहीं है, परन्तु यह कर्त्तव्य करने की बुलाहट और प्रोत्साहन है। चूंकि परमेश्वर हम में कार्य कर रहा है, हमें आश्वस्त होना चाहिए कि हमारे प्रयास व्यर्थ नहीं जाएंगे। हम

अकर्मण्यता के लिये कोई बहाना नहीं दे सकते परन्तु परिशुद्धता या पवित्रता का लगन सहित पीछा करने के लिये हमारे पास कारण है। पवित्रता के लिये प्रयास करते समय हमें धुन से भरे, गम्भीर, और लक्ष्य के प्रति केन्द्रित होना चाहिए। जिस प्रकार प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया, हमें भी भक्ति के उद्देश्य से अनुशासन और यत्नपूर्वक स्वयं को लगाये रखना चाहिए।[8]

पवित्रशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर ने विश्वासी को बहुत से साधन दिये हैं जिनके द्वारा वह स्वयं को शुद्ध या पवित्र रख सकता है। यद्यपि उन साधनों पर विस्तार से विचार करना इस अध्ययन की परिधि में नहीं है, उनमें से चार प्रमुख साधनों का उल्लेख करना अति–आवश्यक है। प्रथम, हम उचित रीति पर कह सकते हैं कि शुद्धता या पवित्रता का आरम्भ पाप से अलग होने पर है। शुद्धता असंभव है यदि हम स्वयं को भ्रष्ट करने वाली बातों से बिल्कुल अलग नहीं कर लेते। स्वयं को साबुन लगाने से क्या लाभ होगा यदि हम गन्दगी की बारिश से स्वयं को अलग नहीं कर लेते। साफ सुथरे वस्त्र पहिनने से क्या लाभ यदि हम गटर में खड़े है या कीचड़ में लोट रहे हैं। यही कारण है कि प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को प्रोत्साहित किया,

> ''उन में से निकलो और अलग हो जाओ,
> और जो कुछ अशुद्ध है, उसे न छुओ,
> तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा (2 कुरि. 6:17)।

दूसरा, परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को भक्तिमय जीवन के लिए एक आधारभूत अनुशासन के रूप में दिया है। भजनकार के अनुसार एक जवान परमेश्वर के वचन के अनुसार चलने से अपना मार्ग शुद्ध रख सकता है, उसे परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में संचित करके रखना चाहिए ताकि वह उसके विरूद्ध पाप न करे।[9] प्रेरित पौलुस ने शिक्षा दी है कि विश्वासी को अपने मन (सोच) को नया करना होगा यदि वह संसार की भक्तिहीन बातों के प्रभाव से बचना चाहता है और परमेश्वर की भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध इच्छा के अनुरूप बदलना चाहता है।[10]प्रेरित पतरस ने पवित्रता के लिये प्रोत्साहन देते हुए विश्वासियों से कहा कि वे वचन के शुद्ध दूध की लालसा करे ताकि उसके द्वारा वे उनके उद्धार में बढ़ते जाये।[11]

तीसरा, पवित्रता का एक शक्तिशाली किन्तु अत्याधिक उपेक्षित साधन है – प्रार्थना का अनुशासन। प्रभु ने हमें प्रार्थना करने की आज्ञा दी ताकि हम परीक्षा में न पड़े, परन्तु बुराई से बचे रहे।[12] गतसमनी के बाग में पकड़वाये जाने से पूर्व रात यीशु ने अपने निकट शिष्यों को यह आज्ञा दी थी, ''प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो'' (लूका 22:40)। इफिसुस की कलीसिया को लिखे

---

8 1 तीमुथियुस 4:7.

9 भजन. 119:9,11.

10 रोमियों 12:2.

11 1 पतरस 2:2.

12 मत्ती 6:13.

अपने पत्र में प्रेरित पौलुस आत्मिक युद्ध के बारे में लिखने के बाद विश्वासियों का उत्साहवर्धन करते हैं कि वे हर समय हर प्रकार की प्रार्थना करे और पूरी सजगता के साथ सभी संतों के लिये प्रार्थना में जुटे रहे।[13]

चौथा, पवित्रशास्त्र सिखाता है कि विश्वासी शुद्धता और पवित्रता में उस सीमा तक बढ़ सकता है जिस सीमा तक वह मसीह और उसके सुसमाचार को अधिक से अधिक स्वीकार करता है। यद्यपि यह चौथा साधन पवित्रशास्त्र के अध्ययन और प्रार्थना से अपृथकनीय है, फिर भी इसे अलग साधन मानना चाहिए ताकि हम समझ सके कि हम केवल सत्य के शाब्दिक अनुप्रयोग या बाइबल के सिद्धान्तों की नकल करके परिवर्तन नहीं पा सकते, परन्तु वचन से प्राप्त मसीह के निरन्तर बढ़ते प्रकाशनों के द्वारा हम परिवर्तित हो सकते हैं। अन्य कोई बात हमें इतना अधिक परिशुद्धता नहीं दे सकती, जितना एक वास्तविक, भक्तिमय या मसीह के समान व्यक्ति की संगति। हम जितना अधिक समय ऐसे व्यक्ति के साथ गुजारेंगे और जितनी अधिक घनिष्ठ सहभागिता रखेंगे, उतना अधिक प्रभाव हमारे जीवनों पर होगा। यदि अन्य व्यक्तियों की संगति के प्रभाव का यह सूत्र सत्य है तब इसका प्रभाव कितना अधिक होगा जब हम मसीह के साथ समय बिताते है? उसकी शिक्षाएँ जीवन और आत्मा हैं।[14] उसका उदाहरण दोषरहित है, और उसके व्यक्तित्व की महिमा परिवर्तनकारी है। इसी कारण प्रेरित पौलुस लिखते हैः ''और हम सब खुले चेहरे से, प्रभु का तेज मानों दर्पण में देखते हुए, प्रभु अर्थात आत्मा के द्वारा उसी तेजस्वी रूप में अंश–अंश करके बदलते जाते है'' (2 कुरि. 3:18)।

यद्यपि पृथ्वी पर हमारी यात्रा के दौरान हम अधिक से अधिक मसीह को धुंधले रूप में देख सकते हैं, किन्तु छोटी से छोटी झलक भी बड़े से बड़े परिवर्तन को लाने में समर्थ है, यहाँ तक कि सबसे छोटे से छोटे पवित्र जन में भी।[15] हम पवित्रशास्त्र और प्रार्थना में जितना अधिक मसीह को देखते, और अनुभव करते है और उसके साथ संचार करते है, उतना अधिक हम उसकी महिमा में बदलते जाते हैं और उसके स्वरूप की समानता प्राप्त करते है – वह समानता जो नैतिक प्रदूषण या भ्रष्टाचार के सबसे छोटे से छोटे कण के प्रभाव से मुक्त है। जैसा कि इब्रानियों का लेखक हमें आश्वस्त करता है, वह पवित्र, निर्दोष, अशुद्धताविहीन, पापियों से अलग किया हुआ और स्वर्गों से अधिक ऊँचा उठाया गया है।[16]

यद्यपि इन आत्मिक अनुशासनों को पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से हृदय–परिवर्तन के प्रमाण के रूप में नहीं दर्शाया गया है, वे मसीह में विश्वास का अंगीकार करने वाले व्यक्ति की आत्मिकता की जाँच के लिये लिटमस पत्र के समान उपयोग किये जा सकते है। दुख की बात है कि सर्वाधिक

---

13 इफिसियों 6:18.

14 यूहन्ना 6:63.

15 इफिसियों 3:8.

16 इब्रानियों 7:26.

परिपक्व और समर्पित विश्वासी जन भी कभी–कभी उन आत्मिक–अनुशासनों की उपेक्षा करते हैं जो नैतिक पवित्रता और मसीह के स्वरूप की समानता को उन्नत करते है। किन्तु हमारे लिये किसी व्यक्ति के हृदय–परिवर्तन को साबित करना कठिन होगा जिसके जीवन में इन अनुग्रह के साधनों का उपयोग नहीं है – जो पवित्रता में आगे बढ़ने के प्रति परवाह नहीं करते, यहाँ तक कि हृदय से उदासीन और कार्यों में निष्क्रिय बने रहते है।

शुद्धताः हृदय-परिवर्तन का प्रमाण

इस पाठ का अंत शक्तिशाली और सत्य से परिपूर्ण है। हमें इसके लघुस्वरूप से धोका नहीं खाना चाहिये क्योकि इसमें एकसूत्र है जो उन बहुतों सी व्याधियों का उपचार कर सकता है जिनका सामना समकालीन सुसमाचारवाद करता हैः "प्रत्येक जो उस पर ऐसी आशा करता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा कि वह पवित्र है" (1 यूहन्ना 3:3)।

सबसे पहले हमें यूहन्ना के 'प्रत्येक' इस शब्द के उपयोग पर ध्यान देना चाहिए उसमें वे सभी शामिल है जो उद्धार के लिये प्रभु यीशु मसीह पर सचमुच विश्वास करते है। यूहन्ना का अभिप्राय स्पष्ट हैः प्रत्येक जो वास्तव में मसीही है उसमें पवित्रता के लिये व्यक्तिगत और व्यवहारिक प्रयासों के चिन्ह दिखाई देंगे। शुद्धता या पवित्रता का पीछा करना ऐसी बात नहीं है जिसे कुछ मुट्ठीभर पवित्र लोग ही करे, पर यह लक्षण उन सबमें होगा जो अपनी आशा सचमुच मसीह में स्थिर करके रखते हैं। सुसमाचारकीय समुदाय में व्यक्तियों को तीन श्रेणियों में लम्बे समय में बाँटा गया है, जो गलत है – अविश्वासी, शारीरिक मसीही, और आत्मिक मसीही। इस प्रकार के विभाजन के कारण कलीसिया ऐसे पुरूषों, स्त्रियों और युवाओं से भर गई है जो भक्ति का रूप तो धरते है पर उसकी शक्ति से इंकार करते है, वे परमेश्वर को मानते है, पर अपने कामों से उसका इंकार करते है, वे जोर देकर मसीह के प्रभुत्व का अंगीकार करते हैं परन्तु पिता की इच्छा पर नहीं चलते।[17] जबकि यह सत्य है कि मसीहीजन अब भी पाप से संघर्ष करते हैं, यहाँ तक कि पवित्रजनों में सबसे अधिक बलवन्तों को भी सदा विद्यमान उदासीनता के खतरे से जूझना पड़ता है, उनके लिये कोई आधार नहीं है जिन्हें शारीरिक मसीहियों के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है। ऐसा कोई मसीही नहीं होगा जो लगातार या जीवनभर शारीरिक दशा में जीवन जीता रहे। ऐसा कोई मसीही नहीं है जिसमें परमेश्वर प्रभावपूर्ण रीति से कार्य नहीं कर रहा है।

पवित्रशास्त्र प्रमाणित करता है कि परमेश्वर बिना अपवाद प्रत्येक विश्वासी के जीवन में कार्य करता है कि अपनी भले अभिप्राय के अनुरूप इच्छा और कार्य करने का बल उत्पन्न करे।[18]

---

17 मत्ती 7:21; 2 तीमुथियुस 3:5; तीतुस 1:16.

18 फिलिप्पीयों 2:13.

हम उसकी कारीगरी है, मसीह यीशु में भले कामों के लिये सृजे गये है।[19] वह ऐसा परमेश्वर है जो अपनी सुइच्छा की सम्मति के अनुसार सबकुछ करता है, और स्वर्गों, पृथ्वी, समुद्रों, और अतल गहराईयों में जो चाहता है, वह करता है।[20]क्या यह संभव है कि वह परमेश्वर जो सृष्टि पर राज्य करता है, अपनी संतानों में अपने उद्देश्य या अपने भले अभिप्रायों को पूरा न कर सके?[21] पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर की संतानों के नाम उसके हाथों की हथेलियों पर खोदकर लिखे गये है।[22] क्या वे किसी प्रकार उसके ध्यान से बच सकते है या उसकी पिता जैसी देखभाल से भाग सकते है? क्या परमेश्वर जो मनुष्यों को आज्ञा देता है कि वे अपने बच्चों को परमेश्वर के भय में बढ़ाये और चेतावनी दे, स्वयं अपने बच्चों को उपेक्षित दशा में छोड़ देगा?[23] क्या वह प्राचीनों से अपेक्षा करेगा कि वे अपने अपने घर का अच्छा प्रबंध करे जबकि परमेश्वर का घर बेतरतीब हो?[24] इब्रानियों 12:6–8 पर विचार करने पर हम उत्तर पाते हैं – परमेश्वर अपने लोगों से पुत्र जानकर व्यवहार करता है और जिनसे प्रेम करता है, उनकी ताड़ना भी करता है।

अपने बच्चों की परवाह और अनुशासन में परमेश्वर कभी रूकता नहीं। सुसमाचार–प्रचारकीय समाज में बहुत से लोग अनुशासनहीनता का जीवन जीते है, यह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से इंकार का नहीं परन्तु उनके अवैध होने का प्रमाण है। परमेश्वर ने उनकी उपेक्षा नहीं की है। डरावना सच यह है कि वे परमेश्वर की संतान नहीं है। यदि होते, तो इब्रानियों में लिखे अनुसार परमेश्वर उनकी ताड़ना करता और वे सुधर जाते।

हम 1 यूहन्ना और इब्रानियों की पत्री से एक बड़ा सत्य पाते है – हमारा पवित्रीकरण विश्वासी और परमेश्वर दोनो का कार्य है जिसने हमें बुलाया है। वह विश्वासी जिसने उद्धार के लिये अपनी आशा मसीह पर सचमुच स्थिर की है, वह स्वयं को पवित्र बनाता है जैसा वह पवित्र है, और वह जिसने उसे लेपालक पुत्र बनाया है वह बड़ी चिन्ता (परवाह) करता है कि उसे अपनी इच्छा के अनुरूप ढ़ाले। वह विश्राम नहीं करता, भले ही बड़ी से बड़ी ताड़ना और दण्ड देकर अनुशासन करना पड़े।[25]

पुनः, विश्वासी का पाप, शरीर, और संसार से संघर्ष जारी रहेगा वह असफल भी होगा। साथ ही परमेश्वर के पवित्रीकरण के कार्य में कुछ ढ़ील भी दिखेगी और कभी–कभी लगेगा कि विश्वासी के जीवन में कुछ अधिक कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। अकसर बहुत अधिक काँटछाँट

---

19 इफिसियों 2:10.

20 भजन.115:3, 135:6; इफिसियों 1:11.

21 यशायाह 46:9–10.

22 यशायाह 49:15–16.

23 इफिसियों 6:4.

24 1 तीमुथियुस 3:4–5.

25 इब्रानियों 12:6 में दी गयी क्रिया ''कोड़े लगाना'' की क्रूरता पर अति बल देना कितना कठिन है। यह यूनानी भाषा की क्रिया *मेस्टिजू* से अनुवादित की गयी है, अर्थात ''कोड़े से पीटना।''

और तैयारी का कार्य तब सम्पन्न होता है जब बाहरी तौर पर फल दिखाई नहीं देता। इसका अर्थ यह है कि वे जो उद्धार के लिये मसीह पर आशा रखते और उसके आगमन पर भावी महिमा की प्रतीक्षा करते है वे उस आशा का प्रमाण पवित्रता का पीछा करने, शुद्धता की लालसा रखने या प्रयत्न करने और मसीह के स्वरूप की समानता में वास्तविक एवं प्रगट अभिलाषा में प्रस्तुत करते है। जिस अंश तक ये बातें दिखाई देती और बढ़ती जाती है, हम इस निश्चयता में बढ़ सकते है कि हमने उसे सचमुच जान लिया है। जिस अंश तक ये बातें हमारे जीवनों से अनुपस्थित रहती है, हमें चिन्ता करनी चाहिए।

पवित्रशास्त्र बहुत अधिक स्पष्टता के साथ सिखाता है कि बिना पवित्रता कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।[26] इसका अर्थ यह नहीं कि हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने पवित्र बनने का प्रयास करे क्योंकि ऐसा करना उद्धार के लिये अनुग्रह नहीं पर कामों पर निर्भर करता है। ''यदि यह अनुग्रह से हुआ, तो फिर कर्मों के आधार पर कदापि नहीं, अन्यथा अनुग्रह, अनुग्रह ही न रहा'' (रोमियों 6:11)। व्यक्तिगत पवित्रता के कारण हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरने का अधिकार या अनंत उद्धार प्राप्त नहीं करते, परन्तु यह प्रमाण है कि हमने यह विश्वास से अनुग्रह के द्वारा पाया है। वर्तमान युग तक यह सत्य सुसमाचार प्रचार में महत्वपूर्ण स्थान रखता आया था परन्तु अब बहुत से समकालीन मसीहियों के लिए यह सत्य अनजाना है। अकसर यह सत्य मसीह का विश्वास करने वालों के विवेक पर उचित रीति से सुस्पष्ट और अंकित नहीं किया जाता। इस कारण कुछ सच्चे विश्वासी भी उतने आश्वस्त नहीं है जितना उन्हें होना चाहिए, और कुछ झूठे विश्वासी आश्वस्त है जबकि उनके पास निश्चयता का कोई आधार नहीं है।

मसीही केवल इस प्रतीक्षा में नहीं है कि मसीह के आगमन पर वे पवित्र बना दिये जायेंगे, परन्तु वे स्वयं को विश्वासयोग्यता से अलग रखकर, परमेश्वर के वचन का अध्ययन और प्रार्थना करके स्वयं की पवित्रता का उपाय करते हैं। सच्चे विश्वासी में एक आंतरिक चाह होती है कि वह उसके उद्धारकर्त्ता के समान बनें और यह बात सर्वप्रथम उसके धर्म और राज्य को खोजने और भक्ति के लिये स्वयं को अनुशासित करने में प्रगट होती है।[27] यदि ये बातें हमारे लिये अनजानी है, हमें स्वयं को जाँचने में सम्पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए कि हम जान सके कि हम विश्वास में बने हैं, या नहीं, और अपनी बुलाहट और चुन लिये जाने को सिद्ध कर रहे हैं या नहीं।[28]

मसीही के लिये प्रोत्साहन

हमारी बुलाहट अकेले यात्रा करने और अनिश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ने की नहीं है। हमें प्रतिज्ञा दी गई है कि परमेश्वर हम में कार्य करेगा, उसने जो भला काम हम में आरम्भ किया है, उसे

26 इब्रानियों 12:14.

27 मत्ती 6:33; 1 तीमुथियुस 4:7.

28 2 कुरिन्थियों 13:5; 2 पतरस 1:10.

पूरा करेगा। यद्यपि यूहन्ना कहते है कि हम नहीं जानते जब परमेश्वर का कार्य हम में पूर्ण होगा तब हम क्या कुछ होंगे, हम इतना अवश्य जानते है कि हम उसके (प्रभु यीशु) समान होंगे।[29] हम क्या होंगे, इस बारे में हम इसलिए अनजान नहीं है कि परिणाम अनिश्चित है, परन्तु इसलिए है कि हम उस परिणाम की भव्यता के विषय में नहीं जानते। विश्वासी का अंत इतना भव्य है कि हम कह सकते हैं, जिसे आँख ने नहीं देखा, जिसे कान ने नहीं सुना और जो बातें सबसे अधिक ज्ञानवान मनुष्यों के चित्त (हृदय) में कभी नहीं उतरी वे परमेश्वर ने उनके लिये तैयार की है, जो उससे प्रेम रखते है।[30] यद्यपि सर्वोत्तम मसीहियों को भी वर्तमान में पाप, असफलता, निर्बलता और संदेह के कारण शोकित होना चाहिये हमारे बीच जो सबसे अधिक निर्बल और दयनीय है, उनके लिये भी भविष्य में अनुग्रह है। यद्यपि उसमें विलम्ब होता है, वह मसीह के साथ संसार में उसके बड़े महिमामय आगमन पर प्रगट होगी। तब न केवल मसीह को प्रभुत्व और महिमा मिलेगी, उसके साथ साथ उसके तुच्छ समझे जाने वाले, कमतर महत्व पाने वाले लोगों को भी उसके साथ विजय, रूपान्तरण और महिमा मिलेगी। यह हमारे पुत्र होने की अंतिम और संदेह रहित पुष्टि होगी। यह बड़ी आशा ईश्वरीय आदेश पर आधारित है और कलवरी पर बहे लहू से प्रमाणित है और विश्वासियों को अभिव्यक्त न किये जा सकने वाले आनन्द और महिमा की भरपूरी से भरती है और उसे पवित्र बनने की दिशा में ले जाती है, और चाहती है कि 'वह पवित्र बनें जैसा वह (प्रभु) पवित्र है'' (1 पतरस 1:7–8,16)।

---

29 1 यूहन्ना 3:2.

30 1 कुरिन्थियों 2:9.

अध्याय – 12

धार्मिकता का अभ्यास

अतः हे बच्चो, उसमे बने रहो, जिस से कि जब वह प्रकट हो तो हमें साहस हो और उस के आगमान पर हमें उसके सम्मुख लज्जित न होना पड़े। यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है तो यह भी जानते हो कि प्रत्येक जो धार्मिकता पर आचरण करता है, उस से उत्पन्न हुआ है।

– 1 यूहन्ना 2:28–29

प्रत्येक जो पाप करता है वह व्यवस्था का उल्लंघन करता है क्योंकि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए और उसमे कोई भी पाप नहीं। जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता जो पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जानता है।

बच्चो, कोई तुम्हे धोका न दे। जो धार्मिकता का आचरण करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसा ही जैसा वह धर्मी है। जो पाप करता है वह शैतान से है, क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इस अभिप्राय से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्य को नष्ट करे। जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बिज उस में बना रहता है और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।

इसी से परमेश्वर के संतान और शैतान के संतान जाने जाते है कि जो कोई धार्मिकता पर आचरण नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और वह भी नहीं जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता।

– 1 यूहन्ना 3:4–10

पिछले अध्याय में हम ने सीखा कि सच्चे विश्वासी का चिन्ह है – पवित्रता के संदर्भ में मसीह के स्वरूप की समानता में बढ़ना। यूहन्ना ने लिखा है, ''प्रत्येक जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा कि वह पवित्र है'' (1 यूहन्ना 3:3)। हमारे समक्ष जो दो वृतान्त है, उनमें हम सीखते हैं कि मसीह के स्वरूप की समानता में सच्चे विश्वासी का चिन्ह है कि वह धार्मिकता का अभ्यास करता है। इन दो जाँचों में समानता दिखाई देती है –

> विश्वासी स्वयं को वैसा पवित्र करता है जैसा मसीह पवित्र है।[1]
>
> विश्वासी उस धार्मिकता का अभ्यास करता है जो मसीह में है।[2]

इस बात का एक अर्थ है कि वास्तविक मसीही के ये दो लक्षण वास्तव में हूबहू एक जैसे है, जैसे दर्पण में प्रतिछाया। यद्यपि पवित्रता और धार्मिकता में विभेद किया जा सकता है, और करना भी चाहिए एक व्यक्ति में एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है। जिसमें एक लक्षण है, उसमें दूसरा लक्षण भी उसी परिमाण में होगा। हम जिस अंश में स्वयं को पवित्र करते हैं उसी अंश में धार्मिकता में बढ़ते है।

एक दूसरी दृष्टि से धार्मिकता शब्द 'विशुद्ध' या 'पवित्र' के अर्थ को स्पष्ट करता है। यह प्रमाणित करता है कि सच्ची पवित्रता या नैतिक परिशुद्धता का आँकलन किसी भावना या आवेगात्मक आत्मिक दशा के द्वारा नहीं परन्तु धार्मिकता के अभ्यास से होता है। 'धार्मिकता' शब्द ग्रीक शब्द dikaiosune का अनुवाद है और किसी वस्तु या व्यक्ति की परमेश्वर के सामने सही या धर्मी ठहरने की स्थिति का परिचायक है। जब यह शब्द परमेश्वर के सामने विश्वासी की स्थिति (धर्मी ठहरने) के संबंध में उपयोग किया जाता है तब यह मसीह के व्यक्ति और काम पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर के सामने उसकी न्यायिक, प्रामाणिक, और सही स्थिति को प्रगट करता है। जब यह शब्द विश्वासी की व्यक्तिगत धार्मिकता के संदर्भ में उपयोग किया जाता है, तब यह परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा के प्रति उसकी समानता को दर्शाता है, जैसा कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में और सबसे अधिक यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रगट किया गया है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि मसीह में और व्यवस्था में कोई अंर्तविरोध नहीं है, परमेश्वर और उसकी इच्छा से संबंधित सभी बातों में मसीह सबसे अधिक बड़ा प्रकाशन है। हम भला करेंगे यदि यह समझ ले कि यूहन्ना ने मसीह को पवित्रता और धार्मिकता दोनों के लिये परम मानदण्ड ठहराया है।[3] यह एक सामर्थशाली और रूपान्तरकारी सत्य है जो विश्वासीजन की नैतिकता और नीतिगत बातों को मसीह में वास्तव में केन्द्रित करता है।

---

1 1 यूहन्ना 3:3.

2 1 यूहन्ना 2:29.

3 1 यूहन्ना 3:3, 7.

शब्द अभ्यास ग्रीक शब्द Poieo का अनुवाद है जिसका अर्थ है, बनाना, करना, कार्य करना, कारण उत्पन्न करना, सम्पन्न करना, पूर्णकरना, अभ्यास करना, रखना और काम करना इत्यादि। इस लम्बी सूची का कारण यह दर्शाना है कि शब्द Poieo किसी गतिविधि का परिचायक है, और यूहन्ना जिसे धार्मिकता कहते हैं वह क्रियात्मक, व्यवहारिक, और दिखाई देने योग्य है। यह केवल वचन के सुनने वालों की धार्मिकता नहीं है परन्तु उनकी है जो उस पर वास्तव में अमल करते हैं। ''परन्तु अपने आप को वचन पर चलने वाले प्रमाणित करों, न कि केवल सुनने वाले जो स्वयं को धोका देते हैं'' (याकूब 1:22)। यह रहस्यवादियों की धार्मिकता नहीं है और न उनकी जो ज्ञान में बढ़ते हैं पर अमल नहीं करते; परन्तु यह परमेश्वर की व्यवस्था और मसीह के अनुसरण की सरल आज्ञाकारिता, दिखने योग्य अनुकृति है।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि क्रिया शब्द Poieo वर्तमानकाल में है, और लगातार क्रिया, जीवनशैली या निर्धारित अभ्यास (अमल) को दर्शाता है। यद्यपि मसीही जीवन में पाप और बार–बार की असफलताओं के बड़े संघर्ष शामिल होते हैं उसमें परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बदलने, समर्पण में बढ़ने और जब गलती हो जाए, व्यक्तिगत रूप में मन का अधिक टूटापन, धुन या प्रयास दिखाई देते है।

एक अति-आवश्यक चेतावनी

हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि व्यवहारिक और दिखाई देने वाली आज्ञाकारिता हृदय–परिवर्तन की एक जाँच है। हम पहले ही दो बार इस सत्य को समझ चुके हैं। 1 यूहन्ना 1:5–7 में हम ने प्रथम जाँच सीखी कि वास्तविक मसीही ज्योति में चलता है – उसकी जीवन शैली, परमेश्वर के व्यक्ति और इच्छा के प्रकाशन के अनुरूप होती है। 1 यूहन्ना 2:3–5 में दी गई तीसरी जाँच के अनुसार हम पाते हैं कि जो सचमुच हृदय–परिवर्तन पा चुके हैं, वे परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं। अब, 1 यूहन्ना 2:29 में हमें बताया गया है कि प्रत्येक जो धार्मिकता का पालन करता है, अपनी जीवन शैली और कामों को परमेश्वर की व्यवस्था के मानदण्ड के अनुरूप बनाता है, वह सचमुच परमेश्वर से जन्मा है। ये पाठ और समस्त नये नियम में मिलने वाले अन्य पाठों के साथ मिलकर दर्शाते हैं कि विश्वास से अनुग्रह के द्वारा होने वाला उद्धार कामों से प्रगट होता है[4] अर्थात् धर्मी ठहराया जाना, पवित्रीकरण के द्वारा प्रमाणित होता है,[5] धार्मिकता की स्थिति का मूल्याकंन व्यक्तिगत धार्मिकता से होता है,[6] यह कि मसीह के प्रभुत्व का व्यक्तिगत अंगीकार

4 याकूब 2:14–26.

5 फिलिप्पीयों 1:6; 2:12–13; इब्रानियों 12:14.

6 तीतुस 1:16.

व्यवहारिक आज्ञाकारिता से जाँचा जाता है,[7] और यह कि यदि कोई मसीह में है, वह नयी सृष्टि है जिसके लिये पुरानी बातें बीत चुकी है और अब सब कुछ नया है।[8]

यद्यपि ये कथन सम्पूर्ण रीति पर बाइबल सम्मत है और कलीसियाई इतिहास के प्रमुख स्त्री–पुरूषों एवं अंगीकारों द्वारा मान्य है, समकालीन सुसमाचार प्रचारवादी इन्हें लगभग भुला चुके है। यह विचार करना कि उद्धार के व्यवहारिक प्रमाण संभव है और वे जो पूरी तरह संसार में लिप्त है, वे वास्तव में हृदय–परिवर्तन नहीं पाये है, सुसमाचारकीय समाज के बहुमत की ठोकर का कारण बनता है और कटुनिन्दा को उपजाता है। इसी कारणवश हमें यूहन्ना की चेतावनी पर बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैः

> ''बच्चों, कोई तुम्हें धोका न दें, जो धार्मिकता का आचरण करता है वह धर्मी है, ठीक वैसा, जैसा वह धर्मी है (3:7)
>
> यहाँ परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान के भेद प्रगट होते है, वह जो धार्मिकता का अभ्यास नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता (3:10)।

हमें ध्यान देना होगा कि हम किसी विधिवादी के कटुता और आलोचना भरे शब्दों को नहीं पढ़ रहे हैं। प्राचीन यूहन्ना अपने पाठकों को दो कारणोंवश 'बच्चों' कहते है – प्रथम, उनके प्रति अपने पिता समान प्रेम को एक प्रेरित और मसीह के झुण्ड के चरवाहे के रूप में दर्शाना और दूसरा उन्हें स्मरण कराना कि छोटे बच्चों के समान उन्हें धोका हो सकता है, वे ''मनुष्यों की ठग विद्या, धूर्तता और भ्रम की युक्तियों से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते है'' (इफि. 4:14)। यह बात मसीही नीतियों या नैतिकता के संबंध में विशेष रूप में सत्य है।

मसीही कलीसिया संकरे मार्ग पर चलती है जिसके दोनों ओर प्राणघातक खाईयाँ है – एक ओर विधिवाद है – नियमों और प्रतिफलों का धर्म, मनुष्यों के कार्यों का महिमा–मण्डन, और इसके परिणाम स्वरूप मसीह के व्यक्ति और कार्य को कमतर समझना। मनुष्य जय पाता है और परमेश्वर उसकी धर्मपरायणता और भली उपलब्धियों के कारण उसे प्रतिफल देने के लिये बाध्य और ऋणी बन जाता है। यह मनुष्य को फरीसी बनाता है जो परमेश्वर से अधिक नियमों से प्रेम करता है, और वह अनुग्रह को कमतर लोगों की आवश्यकता मानता है।[9] ऐसा धर्म 'तिनकों' पर आपत्ति करता है पर लट्ठों की अनदेखी करता है, मच्छरों को छानता है और ऊँट को निगल जाता है।[10] वह लगातार नापतौल, तुलना और प्रतिस्पर्धा करता रहता है।[11] इनका संबंध पद की

7 मत्ती 7:21.

8 2 कुरिन्थियों 5:17.

9 लुका 18:11.

10 मत्ती 7:3–5, 23:24.

11 मत्ती 7:1–2; 2 कुरिन्थियों 10:12.

श्रेणियों, क्रम और आधीनता से है।[12] अकसर इन बातों का अंत एक दूसरे को दांतों से काटने, चीरने–फाड़ने और नाश करने में होता है।[13]

मसीहत के इस जोखिम भरे संकरे मार्ग के दूसरी ओर स्वच्छंदता या नियमविहीनता की खाई है।[14] यद्यपि यह भी विधिवाद के समान ही घातक है, यह समकालीन मसीहत से अधिक प्रमुखता से है, और इसलिए अवश्य है कि हम अधिक विस्तार से इस पर ध्यान दें। स्वच्छंदता या नियम–विहीनता की धर्मशिक्षा जहरीली है और परमेश्वर के अनुग्रह को पाप के लिये अनुमति बना देती है और एक भयंकर विचार पर गर्व करती है[15] – "तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहे कि अनुग्रह अधिक होता जाये?" (रोमियों 6:1; 3:8)। इसके सबसे चरम स्वरूप में यह आसानी से पहिचानी और अस्वीकृत की जा सकती है। परन्तु जब यह धर्मशिक्षा रंगबदलकर मन के खुलेपन, तरस और मसीह के प्रेम (कल्याण) छदम का रूप धरती है तब यह धोकेबाज और प्राणघातक बन जाती है।

हमें यह समझना चाहिए कि हम सापेक्षतावाद के युग में रह रहे हैं जिसमें नैतिक मानदण्डों को नकारा जाता है। यह व्याधि कलीसिया में प्रवेश कर चुकी है और इसके परिणाम विनाशकारी रहे है। इसने परमेश्वर की व्यवस्था के धर्ममय मानदण्डों को तोड़ दिया है, और इंकार करती है कि मसीही जीवन जीने की एक विशेष शैली भी है, और यह संकरे मार्ग की परिभाषा को असंभव बनाती है। इस कारण हम में से बहुत से लोग, हमारी नैतिकता के मानदण्डों के संबंध में किसी भी प्रचार को शंका की दृष्टि से देखते है। जिस क्षण, कोई व्यवस्था या सत्य हमारे विवेक पर अंकित किया जाता है, हम प्रचारक को विधिवादी और उसकी शिक्षा को बंधन मानते है। चूंकि हम यह मान चुके है कि हमारे व्यवहार या आचरण का सत्य अब कोई नहीं जान सकता, हमारे पास अब केवल एक ही संभावित विकल्प शेष है – स्वशांसन, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति वह करता है जो उसकी अपनी दृष्टि में सही है।[16] इस बारे में पहले भी बहुत बार प्रयास किये गये है परन्तु हर बार वही विनाशकारी परिणाम मिले, क्योंकि जहाँ कोई दर्शन या व्यवस्था का प्रकाशन नहीं, वहाँ लोग बेलगाम हो जाते है और अन्ततः नाश हो जाते है, "ईश्वरीय प्रकाशन के अभाव में लोग अराजक या निरंकुश हो जाते हैं, पर धन्य है वह जो व्यवस्था का पालन करता है" (नीतिवचन 29:18)।[17]

---

12 मत्ती 23:5–7; मरकुस 12:38–39; लुक 11:43, 20:45.

13 गलातियों 5:15.

14 ऐंटीनोमियनिज्म (अर्थात् अनुग्रह के नाम पर व्यवस्था का विरोध करनेवाला)वह सिद्वांत है जिसके अनुसार अनुग्रह मसीही जन को व्यवस्था के नैतिक बंधनों से मुक्त करता है, जिसका परिणाम अनैतिकता का अप्रतिबंधित अभ्यास होता है।

15 यहूदा पद 4। "दुराचार" शब्द यूनानी भाषा के ऐसेलजिया शब्द से अनुवादित होकर निकला है और यह अनियंत्रित कामुकता, अतिवाद, स्वच्छंदता, विषयासक्ति, लज्जाहीनता और निर्लज्जता को प्रगट करता है।

16 न्यायियों 17:6, 21:25.

17 इस पद का दूसरा वाक्यांश पहले को परिभाषित करता है, इसे स्पष्ट करते हुए कि दर्शन परमेश्वर की व्यवस्था

हम मानवतावाद और व्यक्तिवाद के युग में रहते हैं जिसमें मनुष्य ही सब बातों का केन्द्र और अंत है, और लोग स्वयं को अभिव्यक्त करने लेशमात्र की आपत्ति के बिना अनियंत्रित अधिकार की माँग करते है। अब चूंकि ईश्वरीय मानदण्ड का ज्ञान नहीं है, और उसका पालन नहीं किया जाता, हम एक दूसरे के अभिमतों के सहारे छोड़ दिये गये हैं। इस कारण यदि कोई व्यक्ति दूसरे की निन्दा करता है उसे अज्ञानी और हठीला मानकर अस्वीकृत कर दिया जाता है, क्योंकि वह अपने अभिमत को अन्य दूसरों के अभिमतों से अधिक बढ़कर महत्व देता है। क्योंकि अब हम नहीं मानते कि जो परमेश्वर ने कहा है उसे विशेष रूप में समझा और अमल में लाया जा सकता है, हम पवित्रशास्त्र की सर्वाधिक सही व्याख्या के लिये कान बन्द करने को उचित ठहरा सकते है, और जो कहते हैं, ''प्रभु यहोवा यों कहता है!'' उन्हें खतरनाक चरमपंथी कहकर उनकी भर्त्सना कर सकते है। हम यह समझ पाने में असफल रहते हैं कि हम उस दुष्ट के चंगुल में है जब हम उसके मंत्र को दोहराते है, क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा है?'' (उत्पत्ति 3:1)।

अंत में, हम विकृत भावनाप्रधानता के युग में रह रहे है, जहाँ धर्मपरायंणता को हर बात के लिये खुली सोच के रूप में और सहनशीलता को प्रेम के सर्वोच्च प्रगटीकारण के रूप में पुर्नपरिभाषित किया गया है। इस कारण डाँट–फटकार के किसी भी स्वरूप को अनैतिकता का कार्य माना जाता है। इन बातों के कारण मसीहत के अधिकतर शब्दों के अर्थ पुर्नपरिभाषित किये गये है या पूरी तरह से हटा दिये गये है। ''मैं गलत हूँ'' कहना आत्म–विनाशक है, और 'तुम गलत हो' आपराधिक है। इसलिये भविष्यद्वक्ताओं को निर्वासित कर दिया गया है और आत्मिक जीवन के गुरूओं को उनका स्थान दे दिया गया है। बाइबल–सम्मत शिक्षाएँ जैसे – डाँट, सुधार और धार्मिकता में प्रशिक्षण इत्यादि का स्थान आत्म–अनुभूति[18] की ओर ले जाने वाले प्रेरणास्पद सिद्धांतों को दिया गया है। लोहा लोहे को चमकाता है, यह परस्पर सहमति[19] का कथन है, और कलीसियाई अनुशासन की प्रक्रिया को जादू–टोना करने वालों के समतुल्य राक्षसी कार्य समझा जाता है, प्रतीत होता है कि हमारा प्रेम इतना परिष्कृत और उन्नत हो चुका है कि अब हम मसीह की आदिम आज्ञाओं को पचा नहीं सकते।

इस प्रकार, हमारी ओढ़ी गई अज्ञानता, व्यक्तिगत खुलेपन और सहनशीलता को दिये जाने वाले सम्मान में हम ने प्रभावी रूप में सभी मानदण्डों को तोड़ दिया है और व्यवहारिक रूप में स्वच्छंद और अराजक बन गये है वे लोग जिनमें बुद्धि या सिद्धान्त नहीं है। हम संसार में रहते है और संसार के समान दिखते है। हम संकरे मार्ग पर लेकर जाने वाले बाइबल सम्मत प्रत्येक चिन्ह की अनदेखी करते हैं या फिर उसे वाक्पटुता के नीचे दफन कर देते है। हमें बताया गया

का प्रकाशन है।

18 2 तीमुथियुस 3:16.

19 नीतीवचन 27:17.

है कि हम सत्य को नहीं जान सकते, और असत्य पर विश्वास करके हमने स्वयं की भर्त्सना की है ताकि अंधकार के मार्ग में चले।

यदि समकालीन मसीहत को पुनः स्वास्थ्य और बल प्राप्त करना है, तो उसे उस धोके को समाप्त करना चाहिये जो उस पर छा गया है। हमें यह समझना चाहिए कि उद्धार करने वाला विश्वास और वास्तविक हृदय–परिवर्तन, पवित्रता एवं धार्मिकता में क्रमिक, व्यवहारिक और दिखाई देने वाली उन्नति में प्रदर्शित होता है। हमें प्रेरित यूहन्ना द्वारा दिये गये सरल और सामान्य ज्ञान के निर्देश पर वापस आना चाहिए, जो 1 यूहन्ना 3:7 और 10 में है, कि एक व्यक्ति जो मसीह का अंगीकार करता है, उसे उसी अंश, तक उद्धार की निश्चयता प्राप्त होगी, जिस अंश में वह धार्मिकता के लिये लालसा करता है, वास्तव में धार्मिकता का अभ्यास (या अमल) करता है, और न कर पाने पर शोकित होता है।

पशुओं के साम्राज्य को उन गुणधर्म और नस्ल के आधार पर अर्थात् दिखाई देने वाले लक्षण और आचरण के अनुरूप विभाजित (अलग–अलग) किया जाता है। मनुष्य श्रेणी में कमतर पशुओं से इस आधार पर भिन्न माना जाता है, कि वह क्या है और क्या करता है। दिखाई देने वाले लक्षणों के कारण हम कभी घोड़े को मछली नहीं मान सकते और न वानर जाति के किसी प्राणी को भंवरा समझ सकते हैं। किन्तु अनेकता और विविधता से भरी भ्रमित समकालीन मसीहत में हमने न केवल यह पाया है कि परमेश्वर की संतानों और शैतान की संतानों में भेद करना हमारे लिये असंभव है, परन्तु यह भी कि उनके बीच किसी विभेद का विचार करना भी युक्ति युक्त नहीं है।

हम में यह सामर्थ नहीं है कि किसी दूसरे के हृदय–परिवर्तन को अंतिम रूप में मान्यता दे या अस्वीकार करे, और हमें स्वयं का न्याय करते समय भी सावधान रहना चाहिए। संतुलन आवश्यक है और हमें एक ओर स्वच्छंदता और दूसरी ओर कठोरता की दो खाईयों से बचने का प्रयास करना चाहिए। यद्यपि हम किसी को निश्चयता दे नहीं सकते और न किसी के निश्चयता को दूर कर सकते है, हमें लोगों को चेतावनी देना चाहिये और हम दे सकते है, कि पवित्रता के संबंध में और धार्मिकता पर अमल के संबंध में स्वयं की जाँच करे।[20] यदि पवित्रशास्त्र के प्रकाश में वे स्वयं को धार्मिकता के प्रति उदासीन, बिना खेद या सुधार के पाप के मार्ग पर बना रहने वाला, व्यवस्था–विहीन, अनैतिक, और सांसारिक पाते हैं, उन्हें चेतावनी दी जानी चाहिए कि ये बातें हृदय–परिवर्तन न होने के लक्षण है। उन्हें कहा जाना चाहिए कि 'जब तक यहोवा मिल सकता है, तब तक उसकी खोज में रहो, और ''जब तक वह निकट है तब तक उसको पुकारो'' (यशायाह 55:6)। परन्तु यदि पवित्रशास्त्र के प्रकाश में वे स्वयं को परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करता हुआ पाते हैं,[21] मसीह के स्वरूप की समानता में बढ़ रहे हैं, और जो अब

20 2 कुरिन्थियों 13:5.

21 मत्ती 6:33.

तक नहीं बदला है, उस पर विलाप करते हैं,[22] जब उनके पाप उन्हें बताए जाते हैं वे मन में टूटे और खेदित होते है,[23] उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि ये परमेश्वर की संतानों के लक्षण है।

पारिवारिक लक्षणों को समझना

अध्याय 3 की कुछ आरम्भिक पदों में प्रेरित यूहन्ना परमेश्वर की संतानों और शैतान की संतानों के बीच लम्बा–चौड़ा विभेद प्रदर्शित करते है। यद्यपि इस प्रकार का विभाजन हमारे अतिशय संवेदनशील समाज के लिए विचलित करने वाला हो सकता है, हमें स्मरण रखना चाहिए कि यह पवित्र शास्त्र की आमप्रक्रिया है जिसमें संसार को परस्पर भिन्न–भिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता हैः जैये यहूदी और अन्यजातीय, विश्वासी और अविश्वासी, कलीसिया और संसार।

इन वर्गीकरणों को कोई कितना भी आपत्तिजनक मानें, इनमें से कोई भी इतना महत्वपूर्ण या परेशान करने वाला नहीं है जितना यह दो है जो इस पाठ में है। क्या सचमुच संसार को परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान में विभाजित किया जा सकता है? क्या अविश्वासी संसार में उनके लिये बीच की कोई श्रेणी नहीं है, जिन्होंने शैतान से संधि नहीं की है या वे हिटलर की क्रूरता से प्रतिबद्ध नहीं हैं? भाषा अत्याधिक चोट पहुँचाने वाली लगती है परन्तु यह नये नियम की भाषा है। यूहन्ना के अनुसार, और मसीह के अनुसार – संसार का विभाजन मसीहियों, जिनका आत्मिक पितृत्व मसीह के माध्यम से परमेश्वर में है, और अविश्वासियों के बीच किया जा सकता है जो आदम के माध्यम से, और स्वयं अपनी अनाज्ञाकारिता से अपनी पहिचान शैतान के साथ प्रदर्शित करते है।

इन बाइबल–सम्मत सत्यों के प्रकाशन में हम यह समझना आरम्भ कर सकते हैं कि यूहन्ना अपने प्रथम पत्र का यह भाग (3:10) इस निश्चय के साथ अंत करेगा कि विश्वासी और अविश्वासी के बीच दिखाई देने वाले अन्तर है, अर्थात् एक व्यक्ति का विश्वास का अंगीकार जाँचा जा सकता है और जाँचा जाना चाहिए, यह कि उद्धार की निश्चयता केवल इस बात पर आधारित नहीं है कि एक व्यक्ति क्या कहता और अनुभव करता है, परन्तु उसके बदले हुए और बदलते हुए जीवन के व्यवहारिक प्रमाणों पर आधारित है।[24] इस पद में यूहन्ना कहते है कि विश्वासी और अविश्वासी के बीच का अंतर 'प्रगट' या 'स्वाभाविक' है। यह शब्द ग्रीक विशेषण Phanerós

---

22 मत्ती 5:4.

23 भजन. 51:17; यशायाह 66:2.

24 यह वाक्यांश ''एक परिवर्तित और परिवर्तित होता हुआ जीवन'' महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पुर्नज्जीवन की प्रारंभिक सामर्थ और विश्वासी के जीवन में पवित्रीकरण का निरंतर कार्य दोनों को प्रगट करता है। इन दो सत्यताओं को कसाव में रखना आवश्यक है। सच्चे अर्थ में, विश्वासी पुर्नज्जीवन द्वारा परिवर्तित हुआ है, परंतु दूसरे अर्थ में जो सच्चाई के ही बराबर है, विश्वासी पवित्रीकरण के प्रगतिपूर्ण कार्य के द्वारा, परिवर्तित होना जारी रखता है, एक कार्य जो विश्वासी के स्वर्ग में अंतिम रूप से महिमा पाने के समय तक जारी रहता है।

का अनुवाद है जिसका अर्थ–प्रतीत होना, प्रगट होना, प्रमाणित होना या सरल रूप में पहिचानने और जानने योग्य होना है। मरकुस ने भी यीशु की शिक्षाओं के वर्णन में इसी मूल शब्द का प्रयोग किया है, जब वह लिखता है, ''क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं जो प्रकट न किया जाये, न ही कुछ गुप्त है जो प्रकाश में न आये'' (4:22)।

हमारे हृदय–परिवर्तन के प्रमाण रहस्यमय या पहिचान में न आने वाले गुप्त प्रमाण नहीं है, परन्तु वे हमारी जीवनशैली से प्रगट होते है। विश्वासी और अविश्वासी के बीच के अंतर स्वाभाविक और आसानी से पहिचान में आने योग्य है। यूहन्ना ने अद्‌भुत स्पष्टता के साथ उन्हें संक्षेप में लिखा हैः

> अविश्वासी पाप में जीवन जीता है और धार्मिकता पर अमल नहीं करता (3:8–10)।
>
> विश्वासी धार्मिकता में जीवन जीता है, और पाप पर अमल नहीं करता (3:7–9)।

यूहन्ना के अनुसार, अविश्वासी में दो अशुभ वास्तविकताओं की पहिचान होती हैः वह क्या करता है, और क्या नहीं करता। वह पाप का जीवन जीता और धार्मिकता पर अमल नहीं करता। यद्यपि ये दोनों लक्षण अलग–अलग दर्शाये गये है, मूल रूप में वे एक ही बात को दर्शाते है – अनाज्ञाकारिता, परमेश्वर की इच्छा से चूक जाना या उसके मानदण्ड से विचलित हो जाना। इस प्रकार, अविश्वासी परमेश्वर की धार्मिकता पर अमल करने में लगातार चूक या उपेक्षा करने के द्वारा उजागर हो जाता है, जैसा कि आज्ञाओं में प्रगट है और उसके द्वारा उन बातों को करने से प्रगट है जो परमेश्वर ने वर्जित रखी है। शैतान के कामों में सलंग्न होने के द्वारा, शैतान के साथ उसकी मैत्री या सहमति साबित होती है, वे काम जिन्हें मसीह नाश करने आये और वह उन पापों पर अमल करता है जिन्हें दूर करने के लिये मसीह ने प्राण दिये।[25]

हम पहले ही संक्षेप में वर्णन कर चुके हैं कि शैतान के साथ किसी व्यक्ति की सलंग्नता का अर्थ यह नहीं कि वह किसी रहस्यमय पंथ जैसे जादू–टोना या शैतानवाद में शामिल हो। और न ही उसे बहुत बड़ा पापी होने की आवश्यकता है जो सार्वजनिक रूप में परमेश्वर के प्रति अपने विरोध (आक्रामकता) की अभिव्यक्ति करे, और सब प्रकार की अनैतिकता में लिप्त रहे। वास्तव में, बहुत से जो मसीहत और सुसमाचारकीय विश्वास से अपनी पहिचान बताते है, वे भी उतने ही दोषी है। यद्यपि वे मसीह के साथ संबंधों का दावा करते हैं, उनका सम्पूर्ण जीवन चक्र साबित करता है कि उनके यह संबंध झूठे हैं। उन्होंने पापियों की प्रार्थना की है, साप्ताहिक आराधना में भाग लिया है, और नैतिक मूल्यों का प्रदर्शन किया है, और यह इस वर्तमान बुरे संसार में नैतिकता का एक चरण है। परन्तु फिर भी वे इस संसार की बातों और लालसाओं में लिप्त है। वे पवित्रशास्त्र को समझने में रूचि नहीं रखते और परमेश्वर की इच्छा से अनजान है। परिणाम

25 1 यूहन्ना 3:5, 8.

स्ववरूप, वे बाइबल–सम्मत परख की कमी दर्शाते है और विवेक की बाधा के बिना स्वतंत्र होकर पाप में भाग ले सकते है। प्रेरित पौलुस ने शब्दों में, ''वे भक्ति का रूप तो धारण करते है, पर उसकी शक्ति को नहीं मानते'' (2 तीमुथियुस 3:5)।

हमें यह सोचकर धोका नहीं खाना चाहिए कि परमेश्वर का सीधे–सीधे विरोध करने की अपेक्षा भक्ति के प्रति उदासीनता और व्यवस्था की उपेक्षा एक कमतर अपराध है। 1 यूहन्ना 3:4 के अनुसार सभी पाप व्यवस्था का विरोध है, परमेश्वर के साथ विश्वासघात और उसके सिंहासन के विरूद्ध युद्ध की उद्घोषणा है। मसीह के साथ पहिचान रखने वाले परन्तु उसके वचन में लगातार अरूचि दर्शाने वाले वे है, जो उनके समान ही बड़े खतरे में हैं जो खुलकर अवज्ञा करते और परमेश्वर की ओर घूंसे लहराते है। पहाड़ी उपदेश के अंत में विश्वास का दावा करने वाले चेलों को दी गई मसीह की चेतावनी का सार है, ''तब मैं उनसे स्पष्ट कहूंगा, मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्मियों मुझे से दूर हटो!'' (मत्ती 7:23)।

इस चेतावनी में मसीह उसी शब्द का उपयोग करते हैं जिसे हमारे पाठ में यूहन्ना ने किया है – अराजक या कुकर्मी। यूहन्ना के समान ही मसीह हम से कह रहे हैं कि वे जो उसे प्रभु कहते हैं और अपने मन की व्यवस्था पर चलते हैं, वे न्याय के दिन दोषी ठहराए जाएंगे। एक बार फिर कहूं, कि न तो मसीह और न यूहन्ना यह शिक्षा दे रहें कि व्यवस्था या कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जा सकता है। हमारा उद्धार अनुग्रह से केवल विश्वास के द्वारा हुआ है, यह हमारे अपने कामों से नहीं हुआ कि कोई मनुष्य गर्व करे। किन्तु वास्तविक अनुग्रह कभी भी व्यवस्थाविहीनता या अराजकता की ओर नहीं ले जाता, परन्तु भक्ति, मसीह की समानता और वास्तविक धर्म–परायणता की ओर ले जाता है। तीतुस को लिखे अपने पत्र में प्रेरित पौलुस इस सत्य की पुष्टि करते है: ''क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तो सब मनुष्यों के उद्धार के लिये प्रकट हुआ है, *वह हमें यह सिखाता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं का इंकार करके इस युग में संयम, धार्मिकता और भक्ति से जीवन बिताये''* (2:11–12)।

अनुग्रह हमें परमेश्वर की धार्मिकता से मुक्त नहीं करता कि हम अपनी देह के अंगों को अधार्मिकता का हथियार बनने के लिये सौंप दे।[26] वह पुराने नियम के अनंत सत्यों को निर्मूल नहीं करता जो हमारे लिये निर्देश के रूप में लिखे गये थे,[27] और न ही यह मसीह को उसके सिंहासन से अलग करके संप्रभु इच्छा और अधिकार से विहीन नाम मात्र का प्रभु बनाता है।[28] धार्मिकता का क्षय और अराजकता का उन्नयन कभी भी अनुग्रह का उद्देश्य नहीं था, फिर भी वर्तमान युग में यही प्रचलित अभिमत प्रतीत होता है। सुसमाचारकीय समाज में बहुत कम है जिन्हें पवित्रशास्त्र के निर्देशों के अनुसार अपने जीवन को व्यवस्थिति करने की चिन्ता है। पवित्रशास्त्र द्वारा परिभाषित

26 रोमियों 6:12–13.

27 रोमियों 15:14.

28 लुक 6:46.

किसी निश्चित एवं विशेष नैतिकता का उल्लेख तुरन्त ही विधिवादमान लिया जाता है। बहुत अधिक सुसमाचार प्रचारकीय लोग पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं से अनभिज्ञ रहकर, उसकी डाँट–फटकार से मुक्त होकर, सुधारों के स्पर्श के बिना, उसके प्रशिक्षण के द्वारा सौष्ठव न पाकर संतुष्ट प्रतीत होते है।[29] बहुत से लोग ऐसा व्यवहार करते हैं मानों इस्राएल में कोई राजा नहीं, सबके सब अपनी दृष्टि के अनुसार चलने के लिये छोड़ दिये गये हो। इस कारण कलीसिया में ऐसे व्यक्तियों की भरमार है जो मसीह को उद्धारकर्त्ता मानते हैं और अनंत जीवन की आशा रखते हैं, परन्तु वे परमेश्वर की प्रगट इच्छा के प्रति उदासीन है, और अराजकता के जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। यह दुखदायी है, क्योंकि यह झूठी निश्चयता उन्हें अंतिम और न बदले जाने वाले दण्ड में पहुँचाती है।

अविश्वासी की भाँति वास्तविक मसीही भी दो वास्तविकताए प्रदर्शित करता है – वह क्या करता है, और क्या नहीं करता। किन्तु इस स्थल में विश्वासी और अविश्वासी के बीच समानताएँ समाप्त होती है और बड़ी विभिन्नता आरम्भ होती है, क्योंकि मसीही उस धार्मिकता का अभ्यास करता है जिसका अविश्वासी व्यक्ति इंकार करता है, और उस पाप का इंकार (निषेध) करता है जिस पर अविश्वासी अमल करना जारी रखता है।[30] यूहन्ना के लिए, इस अचूक व्यवहार की भिन्नता का कारण स्पष्ट है – वे जिनका वास्तव में हृदय–परिवर्तन हुआ है वे आदतन पाप का आचरण नहीं कर सकते क्योंकि वे परमेश्वर से जन्में है, और परमेश्वर का बीज उनमें बना रहता है।[31]

शब्द 'बीज' ग्रीक भाषा के शब्द Sperma का अनुवाद है। शाब्दिक रूप में इसका अर्थ उस बीज से है जिस से पौधा अंकुरित होता है या वीर्य जिसके परिणामस्वरूप मानव जीवन गर्भ में आता है। यहाँ इस शब्द को एक रूपक के रूप में समझना अधिक बेहतर होगा, कि पवित्रात्मा का ईश्वरीय जीवन विश्वासी की आत्मा में क्रियान्वित होकर पुनः जन्म उत्पन्न करता है, और पवित्रीकरण में बढ़ाता है। यूहन्ना का 'ईश्वरीय बीज' और 'नये जन्म' से अभिप्राय इस बात पर जोर देना था कि 'हृदय–परिवर्तन' परमेश्वर का अलौकिक कार्य है और मसीही व्यक्ति एक नये स्वभाव के साथ एक नयी सृष्टि है जो धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता में पुनः सृजा गया है।[32] जैसा प्रेरित पतरस ने लिखा है, मसीहीजन ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार बनता है और ईश्वरीय सामर्थ उसके जीवन और भक्ति दोनों में परिलक्षित होती है।[33]

परमेश्वर के इस असाधारण कार्य के कारण, यूहन्ना प्रत्येक विश्वासी के जीवन के लिये बड़े विश्वास के साथ लिख सका कि – "जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप करता हुआ

---

29 2 तीमुथियुस 3:16.

30 1 यूहन्ना 3:7, 9–10.

31 1 यूहन्ना 3:9.

32 2 कुरिन्थियों 5:17; इफिसियों 4:24.

33 2 पतरस 1:3–4.

नहीं रह सकता'' और न वह ऐसा करने में समर्थ है (3:9)। इसका अर्थ यह नहीं कि विश्वासी में कोई पाप नहीं, वह परीक्षाओं में अप्रभावित है, या शरीर के साथ संघर्ष नहीं करता, यह नैतिक असफलताओं की संभावना से परे है। इसका अर्थ यह है कि वह व्यक्ति जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा पुनः जन्मा है वह आदतन पाप के जीवन में बना नहीं रह सकता जिस प्रकार, एक मछली लम्बे समय तक पानी से बाहर नहीं रह सकती। यह अयोग्यता विश्वासी की अपनी इच्छाशक्ति की सामर्थ के कारण नहीं परन्तु परमेश्वर के कार्य के कारण है, जो उसमें किया जा चुका है, और अब भी किया जा रहा है। परमेश्वर ने उसे एक 'नयी सृष्टि' बना दिया है जो पाप और अधार्मिकता को सहन नहीं कर सकता, जिस में वह एक समय आनन्दित होता था। वह अपने विवेक में दुख और अशुद्ध होने की मतली के अनुभव के बिना पाप का आचरण नहीं कर सकता। इसके साथ ही परमेश्वर की लगातार होने वाला कृपा का कार्य जो अनुशासन में, प्रगट होता है, सुनिश्चित करता है कि विश्वासी जो पाप में गिरा है, शीघ्र पाप में अलग होगा, पश्चाताप करेगा और शुद्धीकरण एवं पुर्नगठन का प्रयास करेगा।[34]

नये नियम में इस प्रसिद्ध सुसमाचारकीय अभिमत के लिये कोई स्थान नहीं है कि एक व्यक्ति जो धार्मिकता के प्रति उदासीन है और खुले रूप में पाप एवं विद्रोह का जीवन जीता है, वास्तव में नया जन्म प्राप्त व्यक्ति हो सकता है। वे जो मसीह पर विश्वास का दावा करके ऐसा जीवन जीते हैं उन्हें उनके अनंतकालीन कल्याण के लिए बड़ी चिन्ता करनी चाहिए। उन्हें धोके में नहीं रहना चाहिए परन्तु यूहन्ना के शब्दों में दी गयी इस सरल जाँच पर ध्यान देना चाहिए ''जो धार्मिकता का आचरण करता है, वह धर्मी है'' परन्तु ''जो धार्मिकता का आचरण नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं है।''[35]

34 1 यूहन्ना 1:8–10.

35 1 यूहन्ना 3:7, 10.

अध्याय – 13

संसार पर जय पाना

क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है और वह विजय जिस ने संसार पर जय प्राप्त कि यह है हमारा विश्वास। और वह कौन है जो संसार पर विजयी होता है, सिवाय उस के जो यह विश्वास करता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है?

– 1 यूहन्ना 5:4–5

बच्चो, तुम परमेश्वर से हो और तुम उन पर विजयी हुए हो क्योंकि वह जो तुम में है, उस से जो संसार में है, कहीं बढ़कर है। वे संसार के है, इसलिए संसार की बातें बोलते है, और संसार उनकी सुनता है। हम परमेश्वर से है, वह जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है और जो परमेश्वर से नहीं, हमारी नहीं सुनता। इसी से हम सत्य की आत्मा और भ्रान्ति की आत्मा को पहिचानते है।

– 1 यूहन्ना 4:4–6

एक अर्थ में, मनुष्यों की केवल दो समस्याएँ है – पाप की दण्डाज्ञा और पाप की सामर्थ, और ये दोनों यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में हल की गई है।[1] उस पर विश्वास करने के द्वारा हम 'धर्मी ठहराये गये' है, इस कारण पाप की दण्डज्ञा निरस्त हो चुकी हैः ''अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में है, दण्ड की आज्ञा नहीं है'' (रोमियों 8:1)। पवित्रात्मा के पुनः जन्म के कार्य के द्वारा हम नया जन्म और जीवन के नयेपन में चलने की शक्ति पाते हैं, इस कारण पाप की सामर्थ

1 पास्टर चार्ल्स लायटर, लेखक के साथ रोमियों 6 के संदर्भ में वार्ता।

टूट चुकी है।[2] विश्वासी अपनी इच्छा शक्ति के बल या व्यक्तिगत समर्पण के कारण नहीं परन्तु क्रूस पर उसके लिये जो किया गया है और वर्तमान में पवित्रात्मा द्वारा जो किया जा रहा है, और परमेश्वर के कृपा की विश्वासयोग्य कार्य के कारण जयवन्त है।

नये नियम की शिक्षाओं में परमेश्वर की संतान भीतर और बाहर बहुत से संघर्षों से जूझती है। कभी–कभी वह पराजित होती है, यहाँ तक कि खेदित भी होती है। किन्तु वास्तविक विजय का एक आभास और तेज जीवनभर उसके साथ रहता है। भले ही वह सात बार गिरे, वह बार–बार उठता है।[3] चाहे वह बहुतेरी अंधेरी घाटियों में से होकर चलें, अपनी आत्मिक यात्रा में वह अधिक से अधिक ऊँचाइयों पर जाता है। यद्यपि बीच–बीच में वह असफल होता है, असफलता अंतिम निर्णय नहीं करती। भले ही वह कभी–कभी पराजित हो जाए, मसीही अंतिम रूप में कभी पराजित नहीं होता। उद्धार की ऐसी ही प्रकृति है, क्योंकि परमेश्वर ने जो भला काम आरम्भ किया है, उसे वह अवश्य पूरा करेगा। 1689 लन्दन बैप्टिस्ट अंगीकार, अध्याय 17 में यह इस प्रकार लिखा गया है:

> परमेश्वर ने जिन्हें अपने प्रिय पुत्र में ग्रहण किया उन्हें प्रभावी रूप में बुलाया और पवित्रात्मा के द्वारा पवित्र किया है, और उन्हें अपने चुने हुओं का बेशकीमती विश्वास दिया है, वे कभी पूर्ण और अंतिम रूप से अनुग्रह की दशा से गिर नहीं सकते, परन्तु निश्चित रूप में अंत तक प्रभु के बनें रहेंगे और अनंतकाल के लिये उद्धार पाएंगे, यह जानकर कि परमेश्वर दान–वरदान और बुलाहट देकर पछताता नहीं है जब वह उन्हें नया जन्म देकर विश्वास, पश्चाताप, प्रेम, आनन्द, आशा, और अविनाशिता के लिए सभी प्रकार का अनुग्रह देकर पोषण करता है, और यद्यपि बहुत से आँधी–तूफान और बाढ़ें उसके विरूद्ध उठती और टकराती है, वे उसे उसकी नींव और चट्टान से डिगा नहीं सकती, जिस पर वे विश्वास के द्वारा दृढ़ किए गए है। भले ही अविश्वास और शैतान की परीक्षाओं के कारण परमेश्वर का महसूस होने वाला प्रकाश और प्रेम कुछ समय के लिये बादलों से आच्छादित और अदृश्य हो जाये, वह तब भी अपरिवर्तनीय है और वे सुनिश्चित रह सकते हैं कि वे उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा संभाले जाएंगे। और उनके लिये खरीदे गये भाग का आनन्द उठाएंगे, क्योंकि वे परमेश्वर की हथेली पर खोदे गये हैं और उनके नाम समस्त अनंतकाल के लिये जीवन की पुस्तक में लिखे गये है।

उद्धार की इस जाँच में हम सीखते हैं कि सच्चे हृदय–परिवर्तन के बड़े लक्षणों में एक लक्षण यह है कि संसार कभी भी मसीही पर जय नहीं पाएगा कि वह मसीह का इन्कार करे और संसार में लौट जाये। और न ही संसार विश्वासी के जीवन में परमेश्वर के कार्य को रोकने में सफल होगा कि वह फलविहीन रह जाये। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर को जानते है और वास्तव में नया जन्म पाए है, क्योंकि भले ही अनगिनत युद्ध हमारे भीतर और बाहर चले और बार–बार असफलाएँ और पतन हो परमेश्वर हमें संभालते हैं और हम में हमारे भले और अपनी महिमा के लिए लगातार काम करते रहते है।

---

2 रोमियों 6:4–6.

3 नीतिवचन 24:16.

संसार बनाम मसीही

जैसा हमने पहले के एक पाठ में सीखा था, संसार उन सब बातों का प्रतिनिधित्व करता है जो परमेश्वर के प्रति आक्रामक है और एक मसीही के विरूद्ध खड़ा होता है जब वह मसीह की आज्ञाओं को मानकर संकरे मार्ग पर चलना चाहता है। जॉन बनयन ने इस विशेष युद्ध के विषय में 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' में अच्छी तरह समझाया है जिसमें मसीही जीवन की घटनाओं का वर्णन है, जब वह 'विनाश के नगर' से 'आकाशीय नगर' की ओर लम्बे मार्ग पर यात्रा करता है। उसे वह सब मिलता है जो यात्रा करते समय संसार उस पर फेंक सकता है – अनगिनत परीक्षाएँ, धोकेबाज मनुष्य और शैतान, निराश करने वाली घटनाएँ, दुर्भावनायुक्त निन्दा, निर्दय आरोप, सताव, दबाव और संसार में वापस लौट जाने के अनगिनत अवसर। किन्तु विरोध और असफलता की समस्त ठोकरों के बावजूद मसीही 'मेम्ने के लहू' (प्रका. 12:11) और 'परमेश्वर के वचन' (1 यूहन्ना 2:14) और उसकी कृपा, के द्वारा जय पाता है जिसने कहा था, ''मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा और न कभी त्यागूंगा'' (इब्रा. 13:5)।

एक मसीही के रूप में हमारे प्रति संसार की आक्रामकता को देखकर और मसीह में हमारी उन्नति को रोकने के उनके प्रयासों में परिश्रम की सीमा हमें कभी भी आश्चर्यचकित और भयभीत नहीं होना चाहिए। इसी कारणवश प्रेरित पौलुस हमसे कहते है – "वास्तव में वे सब जो मसीह यीशु में भक्ति पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते है, सताए जाएंगे'' (2 तीमु. 3:12)। प्रेरित पतरस भी हमें चेतावनी देते हैं कि अग्निमय परीक्षाओं के बीच गुजरते समय हम यह न सोचे कि यह कोई अनोखी बात है जो हमारे साथ घट रही है।[4] विश्वासी और संसार एक दूसरे से इतने भिन्न है जितने धार्मिकता और अधार्मिकता, दिन की रोशनी और अंधकार, मसीह और बलियाल, जीवित परमेश्वर और मूक मूरतें हैं।[5] इस कारण विभिन्नता और वैरभाव इन दोनों के बीच संधि की लेशमात्र संभावना के बिना सदैव बने रहेंगे। अब क्योंकि एक मसीही और संसार के बीच का युद्ध कभी समाप्त नहीं होगा, उसे परमेश्वर पर आशा रखनी होगी, मसीह की ओर देखना होगा, और विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़नी होगी। उसे प्रभु में और परमेश्वर की सामर्थ में बलवन्त बनना होगा, और परमेश्वर के सारे हथियार धारण करने होंगे ताकि वह शैतान और मनुष्य, दोनों की बुरी युक्तियों का सामना कर सके।[6]

पृथ्वी पर कभी भी ऐसा युद्ध नहीं छेड़ा गया जिसमें किलेबन्दी और जुटकर लड़ने की ऐसी आवश्यकता पड़ी हो जैसी मसीहीजन के विरूद्ध प्रतिदिन के जीवन में चलने वाले युद्ध में होती है। पृथ्वी पर कभी ऐसी सेना का गठन और नेतृत्व नहीं किया गया जिसके बल और चातुर्य की

4 1 पतरस 4:12.

5 2 कुरिन्थियों 6:14–16.

6 इफिसियों 6:10–11.

तुलना हम उस सेना से करे जिसका सामना एक विश्वासी रोजाना करता है। हम शत्रु की सेना के पीछे है जो इस अजनबी संसार में हमारी धर्मशिक्षा और हमारी नैतिकता का विरोध करती है। हम मानवीय और शैतानी दोनो प्रकार के धोकेबाजों से घिरे है। हमें अपने धार्मिक उन्माद के लिये हतोत्साहित और समझौते के लाभों पर विचार करने प्रोत्साहित किया जाता है। हम उन आवाजों के शोरगुल में डूब जाते है जो हमें हमारे प्रभु का इंकार करने की परीक्षा में डालती है, कि हम अपनी बुलाहट छोड़ दे और विनाश की नगरी में वापस लौट जाए।

विजय का निश्चय

संसार की ओर से मिलने वाले अथक विरोध के प्रकाश में, हम प्रश्न कर सकते हैं कि हम कैसे आश्वस्त हो कि मसीहीजन संसार पर जयवन्त होगा और हारेगा नहीं। उत्तर आसान हैः हमारी आशा हमारी नैतिक किलेबन्दी, धार्मिक समर्पण या व्यक्तिगत धर्मपरायणता, पर नहीं परन्तु हमारे उद्धारकर्त्ता की महानता और उद्धार की प्रकृति पर निर्भर है जो परमेश्वर में हमारा है। प्रेरित पौलुस के शब्दों में, ''हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया, जयवन्त से भी बढ़कर है'' (रोमियों 8:37)।

1 यूहन्ना 5:4–5 में, मसीही व्यक्ति की निश्चित विजय का श्रेय तीन महत्वपूर्ण वास्तविकताओं को दिया गया है। वह नये जन्म, मसीह के व्यक्तित्व और कार्य पर विश्वास करने के द्वारा और उसकी महानता के द्वारा जो उसमें निवास करता है, जय पाता है।[7] दूसरे शब्दों में, हमारी जय निश्चित है क्योंकि यह प्रभु की जय है, उसकी सामर्थ से प्राप्त की गई है और उसके भले अभिप्राय और महिमा के लिये सम्पन्न की गई है। मसीही व्यक्ति का युद्ध वास्तविक है, उसे प्रयत्न करने,[8] दृढ़ बने रहने[9] और सर्वाधिक यत्नशीलता[10] और धुन के साथ युद्ध करने की बुलाहट दी गई है।[11] किन्तु जब युद्ध समाप्त होता है और प्रत्येक शत्रु जीत लिया जाता है तब मसीही व्यक्ति स्वीकार करता है कि यह विजय प्रभु की थी।[12] यदि हमने विश्वास किया कि विजय उस विश्वास के द्वारा है जो उसने हमें दिया, यदि हम परीक्षा में नहीं गिरे, तो इसलिए कि उसने हमें छुटकारा दिया। यदि हम ने संदेह और अवसाद की भूलभुलैया के अंधेरों से अपना मार्ग खोज लिया है[13] तो यह इसलिए हुआ कि वह हमारा मार्गदर्शक था।[14] यदि युद्ध में हमने बड़ा चरित्र बल दर्शाया, तो यह

7 1 यूहन्ना 4:4, 5:4–5.

8 लुक 13:24; रोमियों 15:30.

9 1 कुरिन्थियों 15:2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:21; इब्रानियों 3:6,14, 4:14, 10:23; प्रकाशितवाक्य 2:25, 3:11.

10 इफिसियों 6:12; 1 तीमुथियुस 1:18, 6:12.

11 रोमियों 12:11; इब्रानियों 6:11; 2 पतरस 1:5.

12 1 शमुएल 17:47; 2 इतिहास 20:15; जकर्याह 4:6.

13 मरकुस 9:24.

14 मत्ती 6:13; 1 कुरिन्थियों 10:13; 2 पतरस 2:9.

चरित्र बल उसने हम में सृजा था।[15] यदि हम युद्ध में खड़े रहे तो इसलिये कि उसने हमें युद्ध में बनाये रखा। यदि हमने बड़ी यत्नशीलता और त्याग के साथ परिश्रम किया, तो यह केवल उसके अनुग्रह के कारण था।[16] कोई भी मसीही जिसने कभी भी ऐसे अनुग्रह को जाना है, कभी उसके विरोध में तर्क नहीं करेगा।[17] कोई यह विचार नहीं करेगा कि परमेश्वर को आवश्यकता से अधिक श्रेय दिया गया है और स्वयं को श्रेय देने लामबन्द नहीं होगा।[18] इसके बदले वे राजा दाऊद और प्रेरित पौलुस के साथ रोमांचित होकर कहेंगे –

> ''हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं
> वरन अपने नाम की महिमा,
> अपनी करूणा और सच्चाई के निमित्त कर'' (भजन संहिता 115:1)।
>
> ''यदि कोई गर्व करे तो वह प्रभु में करें'' (1 कुरिन्थियों 1:31)।

यूहन्ना के अनुसार मसीही व्यक्ति को विजय का निश्चय दिलाने वाली प्रथम वास्तविकता नया–जन्म हैः ''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर जय पाता है'' (1 यूहन्ना 5:4)। इस पूरे कार्य में हम बहुत बार इस धर्मशिक्षा पर लौटकर आये हैं। पुनः जन्म की धर्मशिक्षा परमेश्वर का अद्भुत कार्य है, जिसमें पाप में पतित मनुष्य जो तत्वरूप में परमेश्वर के प्रति आक्रामक है और उसकी इच्छा के प्रति समर्पण नहीं कर सकता, एक नये प्राणी के रूप में रूपान्तरित किया जाता है जो परमेश्वर से प्रेम, उसकी इच्छा[19] में आनन्द, और उसकी महिमा की खोज करता है। यह स्पष्ठ करता है कि कैसे हम जो अपने पापों और अपराधों में मृत थे, परमेश्वर में जिलाए जाते हैं।[20] यह लम्बे समय से पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर देता है – ''क्या ये हड्डियाँ जीवित हो सकती है?'' (यहेजकेल 37:3)।

पुनः जन्म की धर्मशिक्षा को हम समकालीन सुसमाचारवाद की खोई हुयी धर्मशिक्षा भी कह सकते है। इसे समझने और प्रचार करने की असफलता के कारण बहुत से परिणाम सामने आए है। हृदय–परिवर्तन की महिमा कमतर मन्द होकर यीशु का अनुसरण करने का मानवीय निर्णय मात्र रह जाती है, जिसमें उस आश्चर्यकर्म की चर्चा ही नहीं होती जो ऐसा परिवर्तन उत्पन्न करने के लिये आवश्यक है। मसीही व्यक्ति को केवल एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जिसने एक निर्णय लिया है। उसकी आगे उन्नति होती है, वह फल लाता है या बना रहता है या नहीं, यह आगे उसके द्वारा लिये व्यक्तिगत निर्णयों पर निर्भर माना जाता है। इस प्रकार, उसने मसीह

---

15 भजन. 5:8, 31:3, 43:3, 48:14, 139:10.

16 यहेजकेल 36:26; 2 कुरिन्थियों 5:17.

17 भजन. 18:33; 66:9; यहेजकेल 37:10; रोमियों 14:4.

18 1 कुरिन्थियों 15:10; इफिसियों 3:7.

19 रोमियों 8:7.

20 इफिसियों 2:1–5.

में एक सही निर्णय के द्वारा अनंतजीवन प्राप्त कर लिया है पर वह शारीरिकता, सांसारिकता और अनैतिकता में अपना जीवन जारी रख सकता है, यदि वह इस अनुभव के आगे नहीं जाने का निर्णय लेता है। इस प्रकार का सोचना हृदय–परिवर्तन की प्रकृति के प्रति अज्ञानता प्रगट करता है और उद्धार की पूरी प्रक्रिया को एक व्यक्ति की संकल्प–शक्ति पर निर्भर बना देता है[21] जिसके स्वभाव में थोड़ा सा या कुछ भी रूपान्तरण नहीं हुआ है।

किन्तु पुनः जन्म और हृदय–परिवर्तन को सही रूप में समझने पर एक व्यक्ति पश्चाताप करता है और उसके स्वभाव, और अनुरागों और इच्छा को रूपान्तरित करने वाले परमेश्वर के अलौकिक कार्य के परिणाम स्वरूप विश्वास करता है। वह नयी सृष्टि है जो परमेश्वर से प्रेम करता है, उसे प्रसन्न करने की अभिलाषा रखता है और उसके स्वरूप की समानता में बदलना चाहता है। वह अब सही निर्णय करता है क्योंकि उसके अनुराग सही है – उसका स्वभाव सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता में नया किया जा चुका है। इस कारण पुनः जन्म के आश्चर्यकर्म के ईश्वरीय कार्य के कारण वह जो बनता है उसके गुणों के द्वारा वह संसार पर जय पाता है।

दूसरा, 1 यूहन्ना 5:4 में एक मसीही की निश्चित विजय का कारण मसीह के व्यक्तित्व और कार्य पर विश्वास करना बताया गया है। केवल विश्वास के द्वारा विश्वासी की परमेश्वर के समक्ष स्थिति और धार्मिकता ही मसीहत की आधारशिला है। विश्वासी के जीवन में इस यथार्थ से अलग होकर अन्य कोई निश्चित आधारशिला नहीं है, और भीतरी और बाहरी द्वंदों की चोट से बचने या उनका प्रतिरोध करने का बल या शांति अन्यत्र नहीं मिल सकती। विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाने की धर्मशिक्षा से पृथक होकर विजय पाना असंभव है।

हृदय–परिवर्तन के लिये अवश्य है कि व्यक्ति को परमेश्वर के धर्ममय मानदण्डों की गम्भीरता और उनके अनुरूप स्वयं को ढ़ालने की असफलता का कुछ ज्ञान होना चाहिये। जैसे–जैसे वह पवित्रशास्त्र के ज्ञान में बढ़ता है, वह परमेश्वर और स्वयं के चरित्र के बीच के बड़े अन्तर, परमेश्वर की अहर्तायें क्या है और वह क्या करने में सक्षम है, इस विभेद के प्रति और भी अधिक कायल होता है। ऐसा ज्ञान विश्वासी को अवसाद और पराजय की ओर ले जाता है यदि वह उसे दी गयी निश्चित, अभेद्य, और अपरिवर्तनीय धार्मिकता के प्रति आश्वस्त नहीं है, जो उसे मसीह में विश्वास के द्वारा दी गयी है। वह अवसाद और निराशा में डूबने की हर परीक्षा में जय प्राप्त करने योग्य है, केवल इसलिये कि वह जानता है कि वह विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है; उसे मसीह की धार्मिकता का वस्त्र पहिनाया गया है, और परमेश्वर के सामने उसकी 'सही स्थिति' का आधार उसके अपने गुण और प्रवीणता नहीं है पर उसके गुण और प्रवीणता है

21 उद्वार की संपूर्ण प्रक्रिया स्वयं में उद्वार की पूर्णता की ओर संकेत देती है, या तीनों काल के कार्य को प्रगट करती है– भूतकाल में निर्दोषता, वर्तमान में पवित्रीकरण, भविष्य में महिमा।

जो दोषरहित और त्रुटिरहित है। वह अपनी निर्बलताओं और असफलताओं के बीच में भी जयवन्त होता है क्योंकि वह सुसमाचार के निश्चित वचन पर भरोसा करता हैः

> ''इसलिए विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर परमेश्वर से हमारा मेल अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा है'' (रोमियों 5:1)
>
> ''अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में है, दण्ड की आज्ञा नहीं'' (रोमियों 8:1)।

विश्वासी की रूकावटों में उसकी असफलताएँ, संदेह और अवसाद हैं जो उसके मन के भीतर उठते हैं। उसे भाइयों पर दोष लगाने वाले, पुराने सांप जिसे दुष्ट और शैतान भी कहा जाता है, उसके भीषण आरोपों का सामना भी करना पड़ता है, वह समस्त संसार को धोका देता है, और क्रोध से व्याकुल है क्योंकि वह जानता है कि उसका समय समाप्त होने पर है, वह गरजने वाले सिंह के समान घूमता–फिरता रहता है और खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाये।[22] वह क्रूर और निर्दय शत्रु है जो अकल्पनीय घृणा के साथ परमेश्वर के लोगों से घृणा करता है। वह नर्क की आग से प्रज्वलित धुन के साथ उनके विनाश की कामना करता है।

यद्यपि शैतान के युद्ध के हथियारों में एक बड़ा हथियार जिसे वह उपयोग करता है, उसकी सबसे बड़ी चाल विश्वासीजन की असफलता की ओर संकेत करना और यह तर्क देना है कि वे परमेश्वर के अनुग्रह के बाहर है। तलवार की एक धार से वह विश्वासी को घायल करता है और दूसरी से वह उपचार की आशा को खण्ड–खण्ड कर देता है। वह विश्वासियों की असफलता को बढ़ा चढ़ाकर बताने और परमेश्वर की सन्तानों के प्रति परमेश्वर के प्रेम की बिनाशर्त प्रकृति को कमतर दर्शाकर यह कार्य करता है।

यदि मसीहत कामों का धर्म होती या पूरक धर्मशिक्षा के किसी ऐसे स्वरूप से पनपती जिसमें हमारे द्वारा व्यक्तिगत धार्मिकता की सबसे कम से कम आवश्यकता होती, तो हम अवसाद में घिर जाते है। हम दोषी ठहरकर मसीही विश्वास से कहीं दूर चले जाते है, और उसकी शिक्षाओं को एक ईश्वरीय चाल मान लेते जिसमें हमसे ऐसा कुछ माँगा गया है जो हमारे दे देने की क्षमता से परे है। यह उन ग्रीक पौराणिक कथाओं से अधिक क्रूरतापूर्ण होता, जिन में देवी–देवता मनुष्यों के भाग्यों से खेल खेलते और उनकी वेदना में आनन्द लेते थे। ठीक यही वह बात है जो शैतान चाहता है कि हम विश्वास करे!

परन्तु मसीहत कामों के धर्म से यथासंभव अधिक से अधिक दूरी बनाकर रखती है। वास्तव में, मसीहत में अनुग्रह मन्द नहीं होता और किसी अन्य से मिश्रित नहीं होता। एक व्यक्ति विश्वास और कामों के संयुक्त बल के द्वारा नहीं परन्तु केवल विश्वास से अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। विश्वासी के कार्य मसीह के द्वारा सम्पन्न सिद्ध कार्य में कुछ जोड़ते नहीं है, पर उस से प्रवाहित होते है। वे जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाते हैं वे आत्मा के द्वारा जिलाये

22 1 पतरस 5:8; प्रकाशितवाक्य 12:9–10,12.

भी जाते है; वे नयी सृष्टि बनाये जाते हैं, जिनमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये नये अनुराग होते है। जहाँ मसीहत अपने सबसे विशुद्ध स्वरूप में होती है, वहाँ विश्वास के द्वारा उद्धार की उद्‌घोषणा की जाती है, पर कार्य उद्धार से प्रवाहित होते है और वे उद्धार का प्रमाण है।

शैतान इस उद्धार की सुन्दर धर्मशिक्षा का क्रम बिगाड़ने के लिये चाहता है कि हम विश्वास के साथ काम जोड़ दे और मानने लगे कि काम परमेश्वर के उद्धार के काम का परिणाम नहीं परन्तु साधन है। इस प्रकार दो बीजों का मिश्रण करना पवित्रशास्त्र को विकृत बनाना है जिसमें उद्धार के संदर्भ में कामों को अनुग्रह से सदैव पृथक दर्शाया गया है। जैसा कि पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखा है, ''यदि यह अनुग्रह से हुआ, तो फिर कार्मों के आधार पर कदापि नहीं, अन्यथा अनुग्रह, अनुग्रह ही न रहा'' (रोमियों 11:6)। पुनः यह कथन याकूब का विरोध करना नहीं है जिसने लिखा कि विश्वास बिना कर्मों के मृत है। हम केवल विश्वास से अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराये जाते है परन्तु 'धर्मी ठहरने' और 'पुनः जन्म पाने का प्रमाण काम हैं।

विश्वास वह साधन है जिसके द्वारा विश्वासीजन संसार पर जय पाता है और उसकी परीक्षाओं के आमंत्रण या निर्दय आक्रमणों के समक्ष घुटने नहीं टेकता। भीतर और बाहर चलने वाले युद्धों में, शत्रुओं और असफलताओं का सामना करते हुये, विश्वासी केवल मसीह की अटल नींव पर बना रहता है। वह मसीह यीशु में महिमा करता और 'शरीर पर भरोसा नहीं करता'' (फिलिप्पियों 3:3)। जब संदेह उठते हैं और शत्रु के प्रहार प्रखर होते हैं, व्यक्ति स्वयं के भीतर व्यक्तिगत गुण या बल की खोज नहीं करता परन्तु शत्रु के निर्मम आरोपों के उत्तर में अपनी आँखें स्वयं पर से हटा लेता है और मसीह में परमेश्वर की ओर संकेत करता है और जय के साथ ललकारता है, ''परमेश्वर के चुने हुओं पर कौन दोष लगाएगा? परमेश्वर ही है जो धर्मी ठहराता है; वह कौन है जो दोष लगायेगा? मसीह यीशु ही है जो मरा हाँ, वरन मृतकों में से जिलाया गया, जो परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन करता है'' (रोमियों 8:33–34)।

विश्वास के द्वारा विश्वासी स्वयं अपने हृदय और शत्रु के लगाये आरोपों पर जय पाता है। यहाँ तक कि उसकी व्यक्तिगत असफलता की वास्तविकता में भी कोई सामर्थ नहीं है कि भय या अवसाद में बाँधकर उसे दासत्व में रखें। वह परमेश्वर के समक्ष अपनी सही स्थिति के स्थायी आत्मविश्वास में लगातार बना रहता है, क्योंकि वह उसके उद्धारकर्त्ता यीशु के व्यक्ति और कामों पर आधारित है। भजन लेखक होरेशियों स्पैफोर्ड ने इस सत्य का सार बड़ी सुन्दरता से लिखा है:

चाहे शैतान भोज करे, चाहे परीक्षायें आये,
यह धन्य निश्चयता बनी रहे,
कि मसीह ने मेरी असहाय दशा पर ध्यान दिया है,
और अपना लहू मेरी आत्मा के लिये बहाया है।

मेरे पाप, इस धन्य विचार में कैसी बड़ी खुशी है!
मेरे पाप, कुछ भाग में नहीं,

परन्तु सम्पूर्ण रूप में क्रूस पर कीलों से ठोंके गये है,
और अब मैं उन्हें नहीं उठाता, प्रभु की स्तुति हो, हे मेरे मन, प्रभु की स्तुति कर![23]

अंत में मसीही जन की निश्चित विजय उसकी महानता के कारण मानी जाती है जो उसमें निवास करता है। यूहन्ना लिखते है, ''वह जो तुम में हैं, उस से जो संसार में है, कहीं बढ़कर है'' (1 यूहन्ना 4:4)। सीखने योग्य एक बड़ा सत्य यह है कि परमेश्वर न केवल हमारे साथ है परन्तु पवित्रात्मा के द्वारा हमारे भीतर निवास भी करता है। यहाँ तक कि हममें जो सर्वाधिक भक्तिमय है उन्होंने भी इस सत्य के द्वारा संचारित अंतरग सहभागिता की गहिराई पूरी तरह मापी नहीं है।[24] क्योंकि हम पुत्र हैं, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को हमारे हृदयों में भेजा है, जो ''हे अब्बा हे पिता!'' कहकर पुकारता है, और वह इस बात की मोहर और प्रमाण है कि अब हम दास नहीं है, परन्तु पुत्र और परमेश्वर के वारिस है।[25] वह हमारे लेपालकपन का निश्चय हमारी आत्माओं में यह साक्षी देकर देता है कि हम परमेश्वर की संतान है।[26] वह भविष्य में हमारे छुटकारे के पूर्ण होने तक हमारी मीरास का बयाना है, जो दिया गया है।[27]

हमारी आवश्यकता के अनुसार हमारे भीतर निवास करने वाला आत्मा हमारी सेवकाई करता है ताकि परमेश्वर के महान उद्देश्य हम में पूरे किये जाये। वह हमें यह समझने के योग्य बनाता है कि परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया है और मसीह में हमें क्या दिया है।[28] वह सुसमाचर की धर्मशिक्षा की अभिरक्षा करने बल देता है जो हमें सौंपी गई है ताकि हम सत्य से न भटके या अन्य दूसरों को किसी और सुसमाचार के द्वारा गलत दिशा में न ले जाये।[29] वह हमारे शरीर के साथ युद्ध करता है और उसके साथ बड़े टकराव में हमारी सहायता करता है।[30] वह हमारे आंतरिक मनुष्यत्व में सामर्थ देकर हमें बल देता है ताकि हम मसीह के प्रेम को जान सके और परमेश्वर की सारी भरपूरी के साथ भर जाये।[31] वह हमें धोके से बचाता है, अपने फल को हमारे जीवनों में देता है, हमारी अगुवाई करता है और सेवकाई के लिये हमें सामर्थ देता है।[32] वह ''हमारी निर्बलला में हमारी सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें प्रार्थना किस प्रकार करनी चाहिये'' परन्तु वह स्वयं भी ऐसी आहें भर–भर कर जो वर्णन से बाहर है, हमारे लिये विनती

23 Horatio Spafford, "It Is Well with My Soul.'
24 2 कुरिन्थियों 13:14; फिलिप्पियों 2:1.
25 गलातियों 4:6–7.
26 रोमियों 8:16.
27 2 कुरिन्थियों 1:22, 5:5; इफिसियों 1:13–14, 4:30.
28 1 कुरिन्थियों 2:12; 1युहन्ना 2:20–27.
29 1 तीमुथियुस 6:20; 2 तीमुथियुस 1:14; गलातियों 1:6–7.
30 गलातियों 5:17.
31 इफिसियों 3:16–19.
32 प्ररितों के काम 1:8; रोमियों 8:14; गलातियों 5:18, 22–23; 1 यूहन्ना 2:26–27.

करता है'' (रोमियों 8:26)। हम इस संसार, शरीर, और यहाँ तक कि पूरे नर्क पर भी जय कैसे नहीं पाएंगे जबकि ऐसा अभिभाषक अर्थात् पवित्रात्मा (Paraclete) हमें मसीह में निःशुल्क दिया गया है?[33]

एक और महान सत्य जो हम इस पाठ से सीखते हैं वह यह है कि हमारे भीतर जो परमेश्वर निवास करता हैं, वह सभी शत्रुओं के संयुक्त बल से भी बढ़कर असीम बलशाली है। यदि समस्त ब्रह्मांड के मनुष्य और दुष्टात्मायें मिलकर परमेश्वर के सिंहासन पर आक्रमण करे तो उसका प्रभाव एक छोटे से मच्छर के ग्रेनाइट के संसार से सिर टकराने से भी कम होगा। परमेश्वर के सामने देश–देश के लोग बाल्टी में पानी की एक बून्द के समान है। परमेश्वर उनके संयुक्त बल को शून्य से भी कम और निरर्थक समझते हैं। वे आकाश को पर्दे के समान खींचते, राजाओं को शून्य करते, और पृथ्वी के न्यायियों को अर्थहीन ठहरा देते है।[34] वह आकाश की समस्त सेना और पृथ्वी के निवासियों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता हैं, कोई उसके हाथ को रोक नहीं सकता और न प्रश्न कर सकता है कि वह क्या करता हैं" (दानिय्येल 4:35)। उसके विरूद्ध न कोई बुद्धि है, न समझ और न कोई युक्ति![35]

यही वह परमेश्वर है जो मसीहीजन के भीतर निवास करता है। वह ऐसा विश्वासयोग्य परमेश्वर नहीं जो अयोग्य है और न ही ऐसा योग्य परमेश्वर है जो विश्वास के बिना है परन्तु वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है जो अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है, और वह जो प्रतिज्ञा करता है, वैसा ही कर सकने में समर्थ है।[36] वह जिसने हम में एक भला काम आरम्भ किया है, उसे पूरा (सिद्ध) करेगा। वह हमें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की उपस्थिति में निर्दोष और बड़े आनन्द के साथ खड़ा कर सकता है।[37] इस कारण हमारे मध्य जो सबसे अधिक छोटा और सबसे अधिक निर्बल है, वह प्रेरित पौलुस के साथ ऊँचे स्वर से यह कह सकता है, ''परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मुझे पूर्ण निश्चय है कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न शक्तियाँ, न ऊँचाई, न गहिराई, और न कोई सृजी हुई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में हैं, अलग कर सकेगी'' (रोमियों 8:37–39)।

---

33 शीर्षक ''पैराक्लिट'' यूनानी शब्द ''पैराक्लिटोज'' से निकला है। यह उस एक व्यक्ति की ओर संकेत देता है जिसे सहायता के लिये अलग से पुकारा जाता है; एक परामर्शदाता या अधिवक्ता। यूहन्ना अक्सर इस शीर्षक को पवित्र आत्मा के संदर्भ में प्रयुक्त करता है (यूहन्ना 14:16,26; 15:26; 1 यूहन्ना 2:1)

34 यशायाह 40:15–23.

35 नीतीवचन 21:30.

36 व्यवस्था. 7:9; रोमियों 4:21.

37 यहुदा पद 24.

जयवन्त होने का प्रश्न

मसीही व्यक्ति नये जन्म के द्वारा, मसीह के व्यक्ति और काम पर विश्वास करने के द्वारा, और उसकी महानता के द्वारा जो उसमें निवास करता है, संसार पर जय पाता है।[38] परन्तु हमें इस बारे में आश्वस्त होने की आवश्यकता है कि एक मसीही के जयवन्त होने के सही विचार का अर्थ क्या है। पहला, इसका अर्थ यह नहीं कि वह शरीर पर एक ही बार में सदा के लिये जय पा लेगा, और बाद में उसे जय पाने की परवाह नहीं करनी होगी। कभी–कभी शरीर के साथ युद्ध विकराल हो सकता है, और यहाँ तक कि सबसे अधिक परिपक्व और पवित्र विश्वासियों के जीवन में भी यह संभव है।[39] दूसरा, इसका अर्थ यह भी नहीं कि सच्चा विश्वासी इस जीवन में पाप पर जय प्राप्त करेगा और पाप रहित सिद्धता में बे–रोकटोक चलता रहेगा। याकूब जो प्रेरितों के बीच भक्ति के लिये जाना जाता था, उसने स्वयं को शामिल करके लिखा कि – ''हम सब कई बातों में चूक कर जाते हैं'' (3:2)। और प्रिय प्रेरित यूहन्ना इस बारे में लिखते हुये अधिक कठोर बात कहते हैं, "यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं, तो हम अपने आप को धोका देते है और सत्य हम में नहीं है'' (1 यूहन्ना 1:8)।

जयवन्त मसीही जीवन का अर्थ यह नहीं है कि हम सब संकटों और टकरावों यहाँ तक कि युद्ध में पराजय से ऊपर उठ चुके हैं। जयवन्त मसीही जीवन लगातार जुटे रहने और बने रहने में हैं। जयवन्त होने का अर्थ है, असफलताओं के बावजूद हम लगातार आगे बढ़ते हैं। हमारी यात्रा भले ही लगातार दो कदम आगे और एक कदम पीछे की हो, परन्तु हम लगातार विश्वास, पश्चाताप, और अनुसरण करते जाते है। हम आगे मसीह का इंकार नहीं कर सकते और न ही अपनी निज वास्तविकता का इंकार कर सकते है।[40] हम फिर से संसार में नहीं लौट सकते क्योंकि हम जानते हैं कि केवल उसी के पास अनंत जीवन के वचन हैं।[41] हम बिना हार मानें सुसमाचार से लिपटे रहते हैं, और परमेश्वर के राज्य में[42] बलपूर्वक अपना मार्ग बनाते हैं, हमारे भीतर इच्छाशक्ति के बल के कारण नहीं और न ही असाधारण धर्मपरायणता के कारण, परन्तु अपनी लाचारी जानकर। हम अपनी अयोग्यता को अच्छी तरह समझते है और मसीह से वैसे लिपटे रहते है जैसे कि डूबने वाला कोई व्यक्ति जीवन रक्षा के साधन को जकड़े रहता है या कोई पर्वतारोही चट्टानों में लगाये गये हुक (*पीटोन*) और रस्सी को नहीं छोड़ता।[43]

38 1 यूहन्ना 5:4–5.

39 गलातियों 5:17.

40 पास्टर चार्ल्स लायटर, लेखक के साथ वार्ता।

41 यूहन्ना 6:68.

42 लुक 16:16.

43 एक *पीटोन* वह खूंटी है जो चट्टान में किसी बेल को सहारा देने के लिये प्रयुक्त होती है।

जय पाने का अर्थ है हम मसीह के साथ आगे बढ़ते जाते हैं और अंत तक विश्वास में दृढ़ बने रहते हैं।[44]

किन्तु यदि हम अविश्वास, समझौता, या सांसारिकता की दशा में लम्बे समय से उलझे हैं, हमारे पास डरने के कारण है। यदि हम लगातार पाप के द्वारा पराजित होते हैं और पवित्रीकरण के प्रमाण नहीं मिलते तब संदेह करने के लिये आधार है।[45] यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं से भटक जाये और अनुशासन या सुधार ग्रहण न करे, हम कम से कम हमारे जन्म की वैधता पर प्रश्न करने में सही है।[46] यदि हम स्वयं को परमेश्वर और उसके मसीह, और उसके सुसमाचार के प्रति उदासीनता की निन्द्रा में पाते हैं, हमें स्वयं को पवित्रशास्त्र के प्रकाश में जाँचना चाहिये और देखना चाहिये कि क्या हम विश्वास में है।[47] जैसा कि बीज बोने वाले के दृष्टांत में है, हमारा उद्धार इस बात पर इतना निर्भर नहीं करता कि हम सुसमाचार में कैसा आरम्भ करते है, जितना इस पर कि कैसे अंत करते है।[48] वे जो अच्छा आरम्भ करते हैं पर अंत में पराजित होकर गिर जाते हैं और फलदायी नहीं बनते, वे सशक्त प्रमाण देते हैं कि उनका विश्वास दौड़ के आरम्भ से ही झूठा था।

44 मत्ती 24:13.

45 इब्रानियों 12:14.

46 इब्रानियों 12:8.

47 2 कुरिन्थियों 13:5.

48 मत्ती 13:3–9, 18–23.

अध्याय – 14

यीशु पर विश्वास करना

यदि हम मनुष्यों की साक्षी मान लेते है तो परमेश्वर की साक्षी कहीं बढ़कर है क्योंकि परमेश्वर की साक्षी यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में साक्षी दी है। जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह स्वयं में साक्षी रखता है वह जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता उसे झूठा ठहरता है, क्योंकि उसने उस साक्षी पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। वह साक्षी यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है उस के पास जिवन है जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उस के पास वह जीवन भी नहीं।

– 1 यूहन्ना 5:9–12

अकसर श्रृंखला में सर्वोत्तम वस्तु सबसे अंत में रखी जाती है। यही बात हमारे साथ भी है जब हम हृदय–परिवर्तन के सबसे अंतिम परीक्षण की बात कर रहे हैं: परमेश्वर के पुत्र के विषय में परमेश्वर की साक्षी पर व्यक्तिगत विश्वास। यूहन्ना के अनुसार, हम जानते है कि हम परमेश्वर की सन्तान बन चुके है क्योंकि हम उन बातों पर विश्वास करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने पुत्र नासरत के यीशु मसीह के बारे में प्रगट किया है। प्रेरित पौलुस के वचनों में से एक के अनुसार हम इसलिये मसीही है क्योंकि हम केवल मसीह को महिमा देते हैं और शरीर पर आशा नहीं रखते![1]

1 फिलिप्पियों 3:3.

विश्वास का अवमूल्यन और दिशाभ्रम

इसके पहले कि हम आज के पाठ पर विचार करे, हमें दो लोकप्रिय किन्तु त्रुटिपूर्ण अभिमतों का सामना करना होगा जिनका संबंध उद्धार करने वाले विश्वास से हैं। प्रथम त्रुटि विश्वास की प्रकृति और उस पर हमारी धारणा से है। आधुनिक दिनों के अधिकतर सुसमाचार प्रचारवाद में उद्धार करने वाले विश्वास को कमतर बनाकर कुछ आत्मिक सिद्धांतों या नियमों के संदर्भ में मानसिक और अकसर सतही स्वरूप दिया जाता है। बहुतों के विचार से यह यंत्रवत प्रार्थना करने के द्वारा मसीह को स्वीकार करने की एक बार की इच्छा का निर्णय है। यद्यपि जो हृदय–परिवर्तन का दावा करते हैं वे अपना शेष जीवन मसीह का विचार किये बिना ही गुजारते हैं, वे अपने उद्धार के बारे में आश्वस्त है, क्योंकि वे अतीत में देखकर कि कभी उन्होंने सही निर्णय लिया था और सही काम किया था, निश्चिंत रहते हैं। इस प्रकार, उद्धार करने वाले विश्वास को जीवन भर प्रभु की ओर देखना या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर लगातार भरोसा करना नहीं माना जाता, पर एक निर्णय के रूप में देखा जाता है जो कभी किया गया था और जिसे अकसर भुला दिया जाता है।

पवित्रशास्त्र और कलीसिया के महान् अंगीकारों में उद्धार करने वाले विश्वास को परमेश्वर की 'गहिरी बातों' में गिना जाता है, एक ऐसी अथाह गहिराई की धर्मशिक्षा जिसे बड़े ध्यान और परवाह के साथ जाँचा–परखा और सोचा–विचारा जाना चाहिये। किन्तु सुसमाचार को सरलीकृत करने के हमारे प्रयासों में हमने उद्धार करने वाले विश्वास को उसके महत्व और विभव से घटाकर एक रीति–रिवाज से कुछ बड़ा स्थान दिया है। हमने महिमा के इस विश्व को घटाकर भूमि का एक छोटा टुकड़ा बना दिया है जिसे कुछ क्षणों में चलकर देखा जा सकता है। अपने पुर्नपरिभाषित और कमतर स्वरूप में अब यह मसीह में बालकों के लिये दूध समझा जाता है जिसे आसानी से समझा जा सकता है और मसीही धर्मशिक्षा के अधिक महत्वपूर्ण मसलों की ओर बढ़ते हुये मार्ग में छोड़ा जा सकता है। पुनः कहूंगा कि उद्धार करने वाले विश्वास का यह आधुनिक युग का अवमूल्यन पवित्रशास्त्र के विपरीत है, उसमें इस पर अधिकतम महत्व दिया गया है, और इसे समझाने और परिभाषित करने के लिये बहुत विस्तार से बताया गया है।[2] यदि हम चाहते है कि सुसमाचार कभी अपने मूल विभव और सामर्थ को प्राप्त करें, हमें बाइबल की यह समझ पुनः प्राप्त करनी होगी

2 इब्रानियों का लेखक ''परमेश्वर के प्रति विश्वास'' को मसीह के बारे में (6:1) ''प्राथमिक'' शिक्षा के हिस्से के रूप में पहचानता है। पहली दृष्टि में कोई सोच सकता है कि वह बचाने वाले विश्वास को मसीही विश्वास के सवार्धिक आधारभूत सिद्वांतों में से एक के रूप में वर्गीकृत कर रहा है। परंतु, बात ऐसी नहीं है। ''प्राथमिक'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द *आर्ची* का अनुवाद है, जिसका अर्थ है आरंभिक, मूल, और क्रम में प्रथम। इस तरह, यह विचार प्रगट हुआ है कि बचाने वाला विश्वास मसीहत के प्राथमिक और आधारभूत सिद्वांतों में से एक है। यद्यपि, इसे उचित रूप में, मसीही जीवन का प्रारंभिक कदम कहा जा सकता है, और यह अंतिम कदम भी है। सच में, संपूर्ण मसीही जीवन, यथार्थतः, विश्वास के मार्ग के रूप में वर्णित किया जा सकता है। परमेश्वर की धार्मिकता सुसमाचार के द्वारा प्रगट होकर विश्वास से विश्वास पर आधारित होती है।

कि परमेश्वर के प्रिय पुत्र के विषय में परमेश्वर की साक्षी पर विश्वास करने का क्या अर्थ है। हमें आधुनिक दिनों के तौर तरीकों का इंकार करना होगा जो लोगों को पापियों की प्रार्थना पर भरोसा दिलाते हैं, और उन्हें विश्वास में दृढ़तापूर्वक 'मसीह की ओर देखने' के स्थान में लाना होगा।

विश्वास के बारे में दूसरे त्रुटिपूर्ण अभिमत का संबंध उसकी दिशा या प्रमुख लक्ष्य से है। समकालीन सुसमाचार प्रचार में विश्वास की कलीसियाएँ, विश्वास के अभियान, विश्वास की सभायें (सम्मेलन) और विश्वास की पुस्तकों की भरपूरी या बहुतायत है। किन्तु इन सबका प्रमुख विचार या कार्य उस विश्वास से संबंधित है जो परमेश्वर से तात्कालिक आशीषें प्राप्त करता है और उस प्रकार के विश्वास में रूचि नहीं रखता जो अनंतकाल के लिये धर्मी ठहराने की ओर ले चलता है। मसीही पुस्तक – केन्द्रों में विजय, समृद्धि और सामर्थ के लिये विश्वास के निर्देशों की भरमार है, किन्तु वास्तविक रूप में उद्धार देने वाले विश्वास की प्रकृति एवं प्रमाण के संबंध में बाइबल–सम्मत व्याख्या के बारे में व्यवहारिक रूप में बंजर है। यदि अनंत छुटकारे के बदले तात्कालिक भौतिकवाद और परमेश्वर के ज्ञान के बदले व्यक्तिगत समृद्धता पर सुसमाचार प्रचारवाद के हृदय और आत्मा के किसी भी क्षेत्र में जोर दिया जाता है, तो हम एक खतरनाक स्थिति में है।

यदि हम सुसमाचार का उसके मूल विभव और सामर्थ में पुर्नगठन करना चाहते है, हमें तात्कालिकता के विचलित करने वाले अभ्यास का परित्याग करके हमारा ध्यान, अनंतकालीन बातों की ओर लगाना चाहिये। हमें अपने तराजू को समायोजित करना होगा ताकि हम सही–सही माप पता कर सके, जब पलड़ों पर अनंतकालिक और तात्कालिक रखकर तौला जाये, तब तराजू अनंतकाल के पक्ष में संकेत करे। प्रेरित परतस ने शीघ्रता से हमें हमारे विश्वास का लक्ष्य दर्शाया है कि वह लक्ष्य तात्कालिक लाभ नहीं परन्तु हमारी आत्माओं का उद्धार है: "अपने विश्वास के प्रतिफल स्वरूप (परिणाम, या ग्रीक में telos) अपनी आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो" (1 पतरस 1:9)। इस प्रकार, telos या हमारे विश्वास का महान लक्ष्य, इस मरणहार जीवन के आगे देखता है, और अनंत विनाश या दण्ड से हमारी आत्माओं के छुटकारे की चिन्ता करता है, और परमेश्वर के साथ अपने पुर्नगठित संबंधों और भविष्य की महिमा की आशा पर दृष्टि रखता है। यद्यपि हमें तात्कालिक और अनंतकालीन दोनों बातों के लिये परमेश्वर पर विश्वास करना है, किन्तु अनंतकालिक से अधिक तात्कालिक को महत्व देने का अर्थ सोने को छोड़कर उसके मैल को प्राथमिकता देना है।

विश्वास की प्रकृति

हमारे पाठ का मूल विचार परमेश्वर के पुत्र के संबंध में परमेश्वर की साक्षी पर विश्वास करना है। विचार काफी साधारण लगता है, परन्तु विश्वास की वास्तविक प्रकृति के चारों ओर व्याप्त भ्रम बहुत अधिक है। बहुत से सुसमाचार प्रचारक ऐसा विश्वास करने का दावा करते हैं जो उद्धार तो

करता है परन्तु उनके दैनिक जीवनों पर उसका वास्तव में जरा भी प्रभाव नहीं होता। यह व्याधि हमें कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्नों की ओर ले जाती है – परमेश्वर के पुत्र के बारे में परमेश्वर की साक्षी पर विश्वास करने का क्या अभिप्राय है? विश्वास रखने का क्या अर्थ है? इब्रानियों के लेखक हमें बताते हैं, "विश्वास तो आशा की गई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (11:1)।

इब्रानियों के लेखक के अनुसार विश्वास वह निश्चय है जो एक व्यक्ति आशा की गई किसी बात की वास्तविकता के बारे में रखता है, परन्तु उसने अब तक उसे देखा या पाया नहीं है। यह परिभाषा कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों की ओर ले जाती हैः कोई तर्कसंगत व्यक्ति यह कैसे कर सकता है? विश्वास और कामनायुक्त विचार में क्या अन्तर है, क्या यह व्यक्तिगत कामनाओं को सच मानकर उनका विवेकहीनता से पीछा करना नहीं है? उत्तर परमेश्वर के व्यक्ति की एकनिष्ठा और उसके प्रकाशन की विश्वासयोग्यता में है। एक व्यक्ति आशा की गई वस्तु के प्रति आश्वस्त हो सकता है, और मान सकता है जबकि उसने देखा नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी साक्षी दी है। नूह का जीवन इस सत्य का स्पष्टता से उदाहरण देता है, और इब्रानियों के लेखक ने उसके बारे में लिखा है, "विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय तक दिखाई नहीं देती थी, चेतावनी पाकर, भय के साथ अपने परिवार के बचाव के लिये जहाज बनाया। इस प्रकार उसने संसार को दोषी ठहराया, और उस धार्मिकता का उत्तराधिकारी हुआ, जो विश्वास के अनुसार है"। (11:7)।

नूह ने एक जहाज़ बनाया क्योंकि उसने विश्वास किया कि संसार शीघ्र ही जल–प्लावन से नष्ट किया जायेगा। इसके पहले विश्व में जल प्रलय का ऐसा कोई इतिहास या प्रमाण मौजूद नहीं था जिस पर वह आधारित हो सकता था। और न ही उन दिनों उसे ऐसा कोई प्रमाण मिला कि जलप्रलय की घटना शीघ्र संभावित थी। उसके पास भविष्य में जलप्रलय के आने का निश्चय था और उसने पूरा जीवन उस जहाज़ को बनाने में केवल इसलिये लगा दिया कि क्योंकि "उसे उन बातों के बारे में चेतावनी दी गई थी जो उस समय तक दिखाई नहीं देती थी।" नूह ने विश्वव्यापी जलप्रलय के आने पर विश्वास किया और अपने विश्वास पर कार्य किया, क्योंकि परमेश्वर ने आने वाले जल प्रलय की साक्षी दी थी।

अब्राहम का जीवन भी विश्वास का एक और उदाहरण प्रस्तुत करता है। उसके विषय में प्रेरित पौलुस ने यह टिप्पणी की है, "वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मृतक समान शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा जानते हुये भी विश्वास में निर्बल न हुआ, परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए विश्वास में दृढ़ रहा। और पूर्णतः आश्वस्त होकर जो प्रतिज्ञा उसने की थी वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है।" (रोमियों 4:19–21)।

इस लेख के अनुसार अब्राहम 'पूर्णतः आश्वस्त' था कि वह अपनी पत्नी सारा के द्वारा एक पुत्र प्राप्त करेगा। किन्तु उसका यह बड़ी निश्चयता या निश्चय किसी दिखाई देने वाली बात पर आधारित नहीं था, क्योंकि वह और सारा दोनों ही बच्चों को जन्माने की आयु पार कर चुके थे। उसने आशा के विरूद्ध आशा रखते हुए विश्वास किया और अविश्वास में विचलित न हुआ परन्तु उसे पूरा निश्चय था कि एक पुत्र मिलेगा जो अब तक गर्भ में आया नहीं था, केवल इसलिये कि उस बारे में परमेश्वर ने साक्षी दी थी। उसका निश्चय इस आधार पर था कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, और वह उसे पूरा करने में समर्थ था।

इन पदों के प्रकाश में हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वास्तविक विश्वास वह व्यक्तिगत निश्चय या निश्चयता है जिसकी हम आशा करते हैं और उस बात का निश्चय है जो अब तक अनदेखी है, केवल इसलिये कि परमेश्वर ने उस की साक्षी दी है। यह बात परमेश्वर के पुत्र के संदर्भ में विशेष रूप से सत्य है, जिसके विषय में परमेश्वर ने सबसे बड़ी साक्षी दी है।

परमेश्वर की साक्षी

1 यूहन्ना 5:9–12 का मुख्य विचार परमेश्वर की उसके पुत्र, यीशु मसीह अर्थात् यीशु नासरी के बारे में दी गई साक्षी है। शब्द 'साक्षी' मूल ग्रीक शब्द marturia का अनुवाद है, यह शब्द नये नियम में 113 बार आया है। इन 113 मेंसे 64 बार यह यूहन्ना के लेखन में प्रयुक्त हुआ है। यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले,[3] प्रेरित यूहन्ना,[4] परमेश्वर–पिता,[5] परमेश्वर–पवित्र–आत्मा,[6] पवित्रशास्त्र,[7] यीशु के काम,[8] और स्वयं यीशु[9] की साक्षियाँ दी गयी है। यूहन्ना की प्रथम पत्री में यीशु की साक्षी देने वाले हैं – प्रेरित यूहन्ना,[10] आत्मा, जल और लोहू[11] और अंत में परमेश्वर–पिता।[12] यूहन्ना के सुसमाचार में साक्षी का उद्देश्य यह है कि सब विश्वास करे कि यीशु ही मसीह अर्थात् परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करने के द्वारा उद्धार पाये।[13]

3 यूहन्ना 1:6–8,15, 3:26, 32–33;5:32–34.

4 यूहन्ना 19:35, 21:24.

5 यूहन्ना 5:37, 8:18.

6 यूहन्ना 15:26.

7 यूहन्ना 5:39.

8 यूहन्ना 5:36, 10:25.

9 यूहन्ना 3:11, 32–33, 8:14, 18:37.

10 1 यूहन्ना 1:2, 4:14.

11 1 यूहन्ना 5:6–8। ''जल और लहू'' का संदर्भ शायद यीशु के बपतिस्मे और क्रूसीकरण का संदर्भ है। उसका बपतिस्मा और रक्तिम क्रूसीकरण दोनों मिलकर गवाही देते हैं कि वह मसीह है, जो परमेश्वर का पुत्र और संसार का मसीहा है।

12 1 यूहन्ना 5:9–11.

13 यूहन्ना 20:31.

यूहन्ना की प्रथम पत्री में साक्षी का उद्देश्य यीशु मसीह और उसके सुसमाचार के बारे में सत्य की पुष्टि करना है, ताकि सच्चे विश्वासियों को आश्वस्त किया जाये, जो झूठे शिक्षकों के कारण विश्वास में डगमगा गये थे।[14]

यूहन्ना परमेश्वर की विश्वसनीयता और उस पर विश्वास करने की सार्थकता के बारे में एक सशक्त तर्क देकर अपनी बात का आरम्भ करता है। वह मनुष्यों और परमेश्वर के बीच का अन्तर बताता है और फिर 'कमतर' और 'बेहतर' के बारे में तर्क देता है। यदि हम मनुष्यों की 'कमतर' साक्षी स्वीकार करते है तो हमें परमेश्वर की 'बेहतर' साक्षी को स्वीकार करने के लिये कितना अधिक तैयार रहना चाहिये?[15] इस संसार में, हमें कितनी साक्षियों पर विश्वास करने का आमंत्रण मिलता है – तर्क संगत और विश्वसनीय से लेकर सबसे अधिक धोकेयुक्त। वास्तव में, यदि हम किसी पर विश्वास न करे तो व्यक्तिगत रूप में या समूह में कार्य करना असंभव हो जायेगा। इसलिये हम उनके बारे में सबकुछ जानने के बाद भी लोगों पर भरोसा करते हैं, विशेषकर यह जानने के बाद भी कि वे सत्य को तोड़–मरोड़ देते हैं।[16] यदि हम मनुष्यों पर विश्वास करने को उचित मानते हैं, जो झूठ बोलने के आदी है, तब हमें सत्य के परमेश्वर पर कितना अधिक विश्वास करना चाहिये, जिसके विषय में पवित्रशास्त्र की साक्षी है कि वह झूठ नहीं बोल सकता?[17] वास्तव में, उसके स्वभाव की सिद्धता झूठ बोलना असंभव बना देती है।[18] भविष्यद्वक्ता शमूएल ने कहा था, ''इस्राएल का महिमामय परमेश्वर न झूठ बोलता, न अपना मन बदलता है'' (1 शमूएल 15:29)। यहाँ तक कि पथ भ्रष्ट बिलाम भी यह कथन कहने विवश किया गया था:

> ''परमेश्वर मनुष्य नहीं कि वह झूठ बोले,
> न वह मानव–पुत्र है कि पछताये।
> क्या वह कुछ कहे, और उसे न करें?
> या वह कुछ बोले, और उसे पूरा न करे?'' (गिनती 23:19)

कमतर (मनुष्य) पर विश्वास करना और बेहतर (परमेश्वर) का इंकार करना, न केवल अनुचित है परन्तु परमेश्वर के चरित्र पर अविश्वास करना या उसके प्रति विश्वासघात भी है। यहाँ तक कि मानवीय संबंधों के संदर्भ में भी किसी के शब्दों पर संदेह करने का अर्थ उसके चरित्र पर लांछन लगाना है, और हम दूसरों के शब्दों के साथ क्या करते हैं, वह प्रगट करता है कि हम उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचते है। यदि मनुष्यों के बारे में यह सत्य है, तो परमेश्वर के बारे में यह और

---

14 इस विषयपाठ के पूर्ण अर्थ के लिये, पाठक को *यूहन्ना की पत्रियों* की ओर निर्देशित किया जाता है, कोलीन जी. क्रूसे 179–84

15 1 यूहन्ना 5:9.

16 भजन. 116:11; रोमियों 3:4.

17 भजन. 31:5; यशायाह 65:16; तीतुस 1:2.

18 इब्रानियों 6:18.

भी अधिक सत्य है जिसका चरित्र उसके वचनों के साथ अति दृढ़ता से बँधा है।[19] यही कारण है कि परमेश्वर के वचन पर मनुष्य के अविश्वास को पवित्रशास्त्र एक जघन्य अपराध, परमेश्वर के चरित्र पर अक्षम्य प्रहार, और विरोध मानता है। इस पाठ में यूहन्ना के शब्दों में – ''वह जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसे झूठा ठहराता है'' (5:10)।

परमेश्वर की सच्चाई और उसकी साक्षी की विश्वसनीयता के पक्ष में तर्क देने के बाद यूहन्ना अब परमेश्वर की साक्षी के विषय को प्रगट करता है – अर्थात् परमेश्वर का पुत्र। पद 9 में यूहन्ना घोषणा करता है कि ''परमेश्वर ने अपने पुत्र की साक्षी दी है।'' यूहन्ना ने पूर्ण वर्तमानकाल की क्रिया का उपयोग किया है जो दर्शाता है कि यह उसके पुत्र के बारे में स्थायी और न बदलने वाली घोषणा है। उसने अपने पुत्र के बारे में साक्षी दे दी है और वह उसे बदलेगा नहीं। डी.एडमन्ड हायबर्ट जोर देकर कहते हैं, ''परमेश्वर ने अपने पुत्र की साक्षी देते हुए स्वयं को स्थायी तौर पर अभिलेखों में दर्ज कर दिया है।''[20] उसने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं,[21] यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले,[22] आत्मा के कामों,[23] उसकी सुनाई देने वाली आवाज[24] और यीशु को क्रूस पर चढ़ाये जाने[25] के समय अलौकिक और भौगोलिक हलचल की घटनाओं, पुनरूत्थान,[26] पेन्टिकुस्त के दिन[27] पवित्रात्मा के उण्डेले जानें, और कलीसिया के द्वारा पवित्रात्मा की लगातार साक्षी के द्वारा यह कार्य किया है।

ऐसी मुग्ध करने वाली ईश्वरीय साक्षियों के प्रकाश में जो परमेश्वर पुत्र के विषय में है, अविश्वास करने का विकल्प ही नहीं है। पवित्रशास्त्र कभी अविश्वासी के प्रति कोमल भाव नहीं दर्शाता और न ही उसकी अधिक जानकारी या सुबूत की माँग को महत्व देता है। अविश्वास न सहन किया जाता है, न उसे क्षमा किया जाता है। अविश्वास पापी व्यक्ति के द्वारा तथ्यों के हठीले इंकार का परिणाम है जो इंकार केवल इसलिये करता है क्योंकि वह परमेश्वर की धार्मिकता की आधीनता में नहीं रहना चाहता। यीशु की चेतावनी में अविश्वास के गम्भीर और भयानक लक्षण को प्रगट किया गया है ''जो उस पर विश्वास करता है वह दोषी नहीं ठहराया जाता, जो विश्वास

19 भजन. 138:2.

20 Hiebert, *Epistles of John*, 241.

21 लुका 24:44–47; यूहन्ना 5:39.

22 यूहन्ना 1:6–8,15, 3:26, 32–33, 5:32–34.

23 यूहन्ना 5:36, 10:25.

24 मसीह के बपतिस्में पर (मत्ती 3:16–17; मरकुस 1:10–11); उसके रूपांतरण पर (मत्ती 17:5; मरकुस 9:7; लूका 9:35); और भीड़ के समक्ष फसह के पर्व पर (यूहन्ना 12:27–39) स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज सुनाई दी।

25 मत्ती 27:50–53.

26 रोमियों 1:4, 4:25.

27 प्ररितों के काम 2:1–36.

नहीं करता वह दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया'' (यूहन्ना 3:18)।

अनंत जीवन का अर्थ

इस विचार तक यूहन्ना ने यह साबित करने के लिए परिश्रम किया है कि परमेश्वर ने यीशु नासरी के बारे में कि वह परमेश्वर का अवतारी पुत्र है जो अपने लोगों के पापों के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया, स्पष्ट और पक्की साक्षी दी है। उसने इस साक्षी पर विश्वास करने को तर्कसंगत बताने और इंकार करने को अपराध बताने के पक्ष में भी तर्क दिये है – ''जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसे झूठा ठहरता है'' (5:10)। इसलिये अपने तर्क को स्थापित करने के बाद, यूहन्ना अब परमेश्वर के पुत्र के विषय में परमेश्वर की साक्षी के सही स्वरूप के बारे में लिखता है, ''वह साक्षी यह है कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है'' (5:11)। यह अतिशयोक्ति कथन नहीं है कि इन थोड़े से शब्दों में सुसमाचार का कुलयोग और तत्व है। किन्तु इस पाठ को पूरी तरह समझने के लिये हमें दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर खोजने होंगे: अनंत जीवन क्या है? और वाक्यांश 'पुत्र में' इसके होने का क्या अर्थ और अनुप्रयोग है?

अनंतकाल के समय और प्रकृति दोनों को गलत रूप में समझने के कारण बहुत सी भ्रांतियाँ और गड़बड़ियाँ उभरती है। समय के संदर्भ में बहुत से लोग अनंतजीवन को केवल भविष्य की एक आशा के रूप में देखते हैं, और इसे स्वर्ग में भविष्य के जीवन या महिमाकरण का समानअर्थी मानते है। ऐसा विचार या सोच पवित्रशास्त्र के विपरीत है, जो यह सिखाता है कि अनंत जीवन नये जन्म के क्षण से आरम्भ होता है और समस्त अनंतकाल तक चलता है। यूहन्ना के सुसमाचार से हम समझते हैं कि – ''जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनंतजीवन उसका है'' (3:36)। शब्द "है" ग्रीक भाषा में वर्तमानकाल का शब्द है, जो दर्शाता है कि अनंतजीवन एक वर्तमान वास्तविकता है, उनके लिये जो सचमुच विश्वास करते है। 1 यूहन्ना 5:11 में यूहन्ना कहते हैं कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है। यहाँ 'दिया है' वह मूल क्रिया है जो ग्रीक भाषा में कार्य के समाप्त होने (perfect past tense) को दर्शाती है, अर्थात् जो पुत्र पर विश्वास कर चुके हैं उन्हें यह दिया जा चुका है। इस बाते से हम समझते है कि अनंतजीवन भले ही भविष्य की आशा है, यह वर्तमान की एक वास्तविकता भी है। यह मसीह पर पहली बार विश्वास करने के क्षण से आरम्भ होती है और यह अनंतकाल के आने वाले अनगिनत युगों तक कभी समाप्त न होगी।

अनंत जीवन के बारे में सबसे अधिक सामान्य प्रथम त्रुटि यह है कि उसे जीवन की गुणवत्ता न मानकर केवल समय का परिमाण माना जाता है और उसकी प्रकृति को अनदेखा किया जाता है। यद्यपि अनंतजीवन कभी समाप्त नहीं होगा, अधिक जोर उस *नये प्रकार के जीवन* पर है जो एक विश्वासी ने मसीह में प्राप्त किया है। उपरौठी कोठरी के वृतान्त में प्रभु यीशु मसीह ने

अनंत जीवन की व्याख्या इस प्रकार की है ''और अनंतजीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें जिसे तू ने भेजा है'' (यूहन्ना 17:3)।

यहाँ यीशु अनंत जीवन को समय का परिमाण नहीं किन्तु परमेश्वर और उसके पुत्र के साथ सहभागिता के जीवन की गुणवत्ता मान रहे है। इस सत्य के महत्व को समझने के लिये हमें शब्द 'जाने' (Know) के अभिप्राय को समझना होगा। यह ग्रीक शब्द ginósko का अनुवाद है और अकसर यह किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत संबंध के आधार पर जानने इब्रानी शब्द विचार को अभिव्यक्त करता है। पवित्रशास्त्र में इसे अकसर एक पुरूष और एक स्त्री के बीच व्यक्तिगत, यहाँ तक कि शारीरिक घनिष्ठता के संबंधों को दर्शाने के लिये उपयोग किया गया है। यहाँ यह शब्द अनंतजीवन का वर्णन परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सहभागिता के जीवन के रूप में करता है। यूहन्ना इस समझ की पुष्टि आगे अपनी प्रथम पत्री का समापन करते समय करता है, वह लिखता है, ''हम जानते हैं कि पमरेश्वर का पुत्र आ चुका है, और उसने हमें समझ दी है कि हम उसे जो सत्य है जान सकें, और हम उसमें है जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है'' (5:20)।

एक बार फिर अनंतजीवन को पुत्र के साथ व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ संबंधों के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान के समतुल्य बताया गया है। तर्कसंगत क्रम इस प्रकार हैः सुसमाचार के प्रचार और भीतर निवास करने वाले पवित्रात्मा के 'नये जन्म' और प्रकाशित करने वाले कार्य के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को जीवन, समझ और इच्छा करने वाला हृदय देते हैं। परिणाम स्वरूप वे परमेश्वर के साथ विश्वास, संचार, स्तुति–प्रशंसा और सेवा के नये जीवन में प्रवेश करते है। यह अनंत जीवन है – केवल दिनों की लम्बाई का बढ़ते जाना या भविष्य में स्वर्ग की आशा मात्र नहीं है, परन्तु मसीह में एक नया जीवन है। अनंत जीवन परमेश्वर के सामने एक अनजानी स्थिति (या पद) या धर्मजीवन की परिकल्पना नहीं है। यह पृथ्वी पर विश्वासी के जीवन की आत्मिक यात्रा में वर्तमान, अनुभवजन्य और समझ सकने योग्य वास्तविकता है। यह उसके लिये उतनी ही वास्तविक है जितनी एक अंधे को दृष्टि वापस मिलना, बहिरे को श्रवणशक्ति का उपहार, और एक मृत को पुनः जीवन मिलना। यद्यपि इस जीवन की अनुभवजन्य वास्तविकता विश्वासियों में अलग–अलग एवं दिनों दिन भिन्न अंशों में हो सकती है, तौभी यह एक वास्तविकता है।

पुत्र में जीवन

अब हम अपना ध्यान इस असीमित सत्य की ओर लगाते हैं कि यह जीवन ''उसके पुत्र में है'' (1 यूहन्ना 5:11)। ये तीन शब्द ग्रीक वाक्यांश en to huio का अनुवाद है, और समस्त पवित्रशास्त्र के सबसे सुन्दर सत्यों में से एक को प्रगट करते हैं। ग्रीक भाषा में पूर्वसर्ग यह समझने में सहायता करता है कि संज्ञा उस कारक में है जो उस क्षेत्र को दर्शाता है जिसमें अनंत जीवन पाया जाता

है। यह विशेष रूप में केवल 'पुत्र में' ही है। यह प्रमाण है कि यीशु केवल वह सब नहीं है जो हमें चाहिये परन्तु वही 'सबकुछ' है जो हमारे पास है! उससे अलग या बाहर परमेश्वर में हमारा कोई भाग नहीं है। उसमें हम परमेश्वर की ओर से मनुष्यों को मिलने वाली प्रत्येक आशीष पाते हैं। उसके बाहर हमारे पास कुछ नहीं है। हम ''अभागे, तुच्छ, दरिद्र, अंधे और नंगे है'' (प्रकाशितवाक्य 3:17)। केवल मसीह वह नींव है जिस पर बनाने योग्य कोई भी वस्तु बनाई गई है। यह वह कब्जा है जिस पर सभी बातें झूलती है। वह सब बातों का प्रमुख निर्णायक तत्व है जिसका संबंध परमेश्वर के सामने सही स्थिति और सही संबंधों से है। यह असीमित सत्य और इसके अनुप्रयोग पूरी तरह समझे नहीं जा सकते और न ही उन्हें बढ़ा चढ़ाकर बताया जा सकता है।

मसीहत के सबसे बड़े और आधारभूत सत्यों में एक यह सत्य है कि अनंत जीवन और अन्य सभी आत्मिक आशीषें केवल और केवल पुत्र में हैं। यीशु ने स्वयं के बारे में साक्षी दी है ''मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। पतरस, इस्राएल के हाकिमों के समक्ष खड़ा हुआ और उसने यह उद्घोषणा की, ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हम उद्धार पाये'' (प्रेरितों के काम 4:12)। प्रेरित पौलुस ने युवा तीमुथियुस को लिखा, ''परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ भी है अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5)। यह सत्य कि अनंतजीवन केवल और केवल 'पुत्र में' है, अधिक बढ़ा चढ़ाकर नहीं कहा जा सकता है। वास्तव में, मसीहत अपने सबसे विशुद्ध स्वरूप में होती है जब यह माना जाता है कि मसीह से अलग होकर हम, ''इस्राएल की प्रजा कहलाये जाने से वंचित, प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागीदार न थे, और आशाहीन तथा संसार में परमेश्वर रहित थे'' (इफिसियों 2:12)।

इफिसियों के अध्याय 1 में मसीह की अद्विितीयता, आवश्यकता और विशिष्ठिता को अचूक रूप में स्थापित किया गया है। प्रथम 14 पदों में, पौलुस ने 'मसीह में' वाक्यांश का उपयोग किया है या उसके समकक्ष शब्दों का उपयोग 11 बार किया है। 'पुत्र में' हम सभी आत्मिक आशीषों से आशीषित किये गये है। 'पुत्र में' हम संसार की नेव रखे जाने से पूर्व चुने गये थे। पुत्र में परमेश्वर ने हम पर अपने अनुग्रह को निःशुल्क दिया है। पुत्र में हमें छुटकारा और पाप–अपराधों की क्षमा मिलती है। पुत्र में, परमेश्वर ने उसकी इच्छा के रहस्य को हम पर प्रगट किया है। 'पुत्र में' परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सभी वस्तुओं को एकीकृत किया है। 'पुत्र में' हम पर प्रतिज्ञा की पवित्रात्मा से मोहर की गई है।[28] प्रत्येक आत्मिक आशीष जो हमारे पास है जिसमें अनंत जीवन भी है, वह परमेश्वर के प्रिय पुत्र और हमारे बदले में उसके द्वारा किये गये कार्य के कारण है! इसी कारण से यूहन्ना ने पवित्रशास्त्र के सबसे अधिक शक्तिशाली कथनों में से एक में उद्घ

28 इफिसियों 1:3–4, 6–7, 9–10, 13.

ार के संदर्भ में मसीह की अद्वितीयता, सर्वोच्चता और केन्द्रीयता के विषय में निष्कर्ष निकाला है, ''जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है, जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास वह जीवन भी नहीं'' (1 यूहन्ना 5:12)।

मसीहियों के लिये यह सत्य बेशकीमती है क्योंकि यह स्वर्ग की प्रत्येक आशा मसीह पर आधरित करता है और उसके व्यक्ति और कार्य की असीमित सार्थकता को स्वीकार करता है। मनुष्य का हृदय जो वास्तव में पवित्रात्मा के द्वारा 'नया जन्मा' है और मसीह के लोहू पर विश्वास करने के द्वारा 'धर्मी ठहराया' गया है, वह बुरा नहीं मानेगा यदि समस्त श्रेय और सराहना पुत्र को दी जाती है। इसके विपरीत, वह ऐसे किसी भी विचार या शब्द से आनन्दित होगा, जो मसीह को महिमा देता और उसे सबसे ऊँचे स्थान में रखता है। आगे मसीही जन यह जानने और घोषणा करने में आनन्दित होता है कि उसके उद्धार में मसीह ही सब कुछ है। वह उस छुटकारे में महिमा का अनुभव करता है जिसे उसने बिना कुछ दिये पाया है और उस 'धर्मी ठहराये जाने' में जो उसके स्वयं के गुणों और अहर्ता के बिना मिला है। वह आसमान पर अपने पापों को चित्र जैसा रंगवाने में भी सम्मान का अनुभव करेगा यदि उनकी कालिख में सुबह का तारा[29] और अधिक चमकीला दिखाई देगा। यदि हम वास्तव में मसीही है हम अपने उद्धार का समस्त श्रेय पुत्र को देने में आनन्द का अनुभव करेंगे, और हमें दुख होगा यदि लेशमात्र श्रेय भी हमें दिया जायेगा।

पवित्रशास्त्र में मसीह का एकमात्र उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मध्यस्थ के रूप में चित्रण एक मसीही के लिये बेशकीमती सत्य है। किन्तु अविश्वासी के लिये यह सबसे बड़ा विक्षोभ, ठोकर का पत्थर, और विरोध की चट्टान है।[30] अविश्वासीजन इसे हठधर्मितायुक्त असहिष्णुता कहते हैं क्योंकि यह मसीहत को एक अलग, सबसे अलग धर्म के रूप में स्थापित करती है जो मसीह के बाहर उद्धार की किसी भी आशा को मानने से इंकार करता है। अति–आधुनिककाल के मनुष्यों की अधार्मिकता उनके निज मन को विवश करती है कि वे इस बेतुकी परिकल्पना की ओर प्रवृत हो कि सभी धर्म एक बराबर सत्य है, यह एक अक्षम्य पाप है। यही कारण है कि आरम्भिक मसीही अनीश्वरवादी कहलाये और क्रूस पर जला दिये गये, और यही कारण है कि बाइबल सम्मत एवं ऐतिहासिक मसीहत का कोई भी स्वरूप वर्तमान दिनों में आदरणीय नहीं समझा जाता। यदि कलीसिया बस इस आग्रह को छोड़ दे और इस प्रकार की घोषणाओं में परिवर्तन कर दे, तो वह संसार के साथ संधि कर सकती है और स्वयं को शेष मानवता के साथ जोड़ सकती है। किन्तु ऐसा करना मसीहत के साथ विश्वासघात और परमेश्वर के साथ मेल और एकता का परित्याग कहलायेगा।

29 A reference to the Messiah गिनती 24:17; 2 पतरस 1:19; प्रकाशितवाक्य 22:16.

30 रोमियों 9:32–33; 1 पतरस 2:8.

आंतरिक साक्षी

प्रेरित यूहन्ना ने अनुसार परमेश्वर की साक्षी यह है: ''उसने हमें अनंतजीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है।'' यूहन्ना कहते हैं कि प्रत्येक जो वास्तव में पुत्र पर विश्वास करता है, उसमें यह साक्षी है।[31]

यह महत्वपूर्ण सत्य भावार्थ समझने की दृष्टि से जैसा हम समझते हैं, उससे कहीं अधिक कठिन है। यहाँ तक कि रूढ़िवादी और सुधारवादी विद्वानों के बीच बहुत से विचार रखे जाते है। क्या यूहन्ना का यह अभिपाय है कि जो विश्वास करता है उसने परमेश्वर द्वारा उसके पुत्र के संदर्भ में दी गई साक्षी को स्वीकार और आत्मसात् कर लिया है? क्या यूहन्ना यहाँ आत्मा की आंतरिक साक्षी की बात कर रहे है जो विश्वासी के भीतर निवास करता है? या वह अनंतजीवन की अनुभवजन्य साक्षी की बात कर रहे हैं जो अब विश्वासी में है, एक नये प्रकार के जीवन की वास्तविकता जो पिता और पुत्र के साथ घनिष्ठ सहभागिता में केन्द्रित है? यह भी संभव है कि यहाँ अर्थ इतना व्यापक है कि सभी भावार्थों को समाहित कर ले।

सबसे पहला चिन्ह कि हमारा हृदय–परिवर्तन वास्तव में हुआ है, यह कि हमने परमेश्वर की साक्षी को स्वीकार किया है जिसे चश्मदीद गवाहों जैसे कि प्रेरितों[32] ने हमें बताया था। और तब विश्वासयोग्य सुसमाचार–प्रचार के द्वारा प्रत्येक आने वाली पीढ़ी को बताया गया। हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम यीशु मसीह के सुसमाचार को मानते और उस पर भरोसा करते हैं, ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सदा के लिये सौपा गया था'' (यूहदा पद 3)। हम पवित्रशास्त्र पर आधारित होते हैं और ऐतिहासिक सुसमाचार–प्रचार की प्रमुख धारा की मसीहत के साथ बने रहते है। हम सुसमाचार की आशा से दूर नहीं हुये है पर दृढ़ एवं स्थिर स्थापित विश्वास में लगातार बने हुये है।[33]

यह विचार महत्वपूर्ण है कि वास्तविक रूप में परमेश्वर की साक्षी को स्वीकार करना जिसका परिणाम उद्धार है, वह सतही या अप्रभावी नहीं है, परिणाम स्वरूप, हम धीरे–धीरे उसे हमारे जीवन के सभी पहलुओं में शामिल करते जाते है। सच्चे विश्वासी (हृदय–परिवर्तन पा चुके) के लिये मसीह माँस और लहू दोनों बनते है। यीशु ने उनसे कहा, ''मैं तुम से सच–सच कहता हूँ, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का माँस न खाओ और उसका लहू न पियों, तुम में जीवन नहीं'' (यूहन्ना 6:53)।[34] परमेश्वर के वचन आधारशिला, पद्धति और जीवन का लक्ष्य बनते हैं। सुसमाचार

---

31 1 यूहन्ना 1:10.

32 1 यूहन्ना 1:1–4.

33 कुलुस्सियों 1:23.

34 वाक्यांश ''हमारा मांस खाना और पीना'' जॉन न्यूटन द्वारा रचित, *ओने हिम्स*, से लिया गया है, ''व्हॉट थिंक यू ऑफ क्राईस्ट,'' संख्या 89:

हमारा एक भाग और हमें पहिचान देने वाला चिन्ह बनता है कि हम क्या है। यह हमें परिभाषित करता और हमारा मार्ग तय करता है। यह हमारे भीतर है और हमारे अस्तित्व का एक अंग है। हम सुसमाचार से स्वयं को उसी प्रकार अलग नहीं कर सकते जिस प्रकार हम अपने व्यक्तित्व का विभाजन नहीं कर सकते और उसे संसार के चार कोनों में नहीं भेज सकते। हमारे आंतरिक मनुष्यत्व की अतल गहिराईयों में हम सुसमाचार से सहमत उसके सौंदर्य में मुग्ध रहते, और उसकी आज्ञाओं के अनुरूप स्वयं को ढ़ालने की इच्छा रखते है। सुसमाचार का प्रत्येक विश्वासयोग्य उद्घोष जिसे हम सुनते या पढ़ते हैं, वह भी हमारे ह्रदयों में एक प्रमाण है कि मसीह ही सबकुछ है और अनंत जीवन केवल पुत्र में है!

हमारे वास्तव में मसीही होने का दूसरा चिन्ह हमारे भीतर निवास करने वाले पवित्रात्मा की आन्तरिक साक्षी है। यूहन्ना के सुसमाचार से हम सीखते हैं कि पवित्रात्मा मसीह की साक्षी देने, विश्वासी में निवास करने, और उसे सम्पूर्ण सत्य में मार्गदर्शन देने के लिये भेजा गया है।[35] यूहन्ना की प्रथम पत्री से हम सीखते हैं कि पवित्रात्मा विश्वासियों में उनके पुत्र होने का निश्चय कराने का प्रमाण और बल देने के लिये परिश्रम भी करता है। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के संतान है और पवित्रात्मा के द्वारा हमारा मसीह में बना रहने का संबंध है जिसे प्रभु ने हमें दिया है।[36] आत्मा हमारे ह्रदय के भीतर मसीह के अवतार लेने और प्रायश्चित के कामों की साक्षी और उन की वास्तविकता का प्रमाण देता है।[37]

ध्यान दीजिये, कि पवित्रात्मा की इस आंतरिक साक्षी की शिक्षा न केवल यूहन्ना के लेखन में हैं परन्तु मसीही जीवन के संदर्भ में पौलुस के विचारों का भी आवश्यक अंग है। पवित्रआत्मा और उससे प्रवाहित होने वाला जीवन प्रत्येक विश्वासी को आत्मा के प्रथम फल के समान दिया गया है, और यह एक बयाना है कि हमारे अंतिम रूप में महिमाकरण के समय वह जीवन प्रगट होगा।[38] पवित्रात्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे ह्रदयों में उण्डेला गया है जो एक वास्तविक एवं समझ में आने योग्य अनुभव हैं।[39] और यह हमें पुत्रत्व का दृढ़ निश्चय देता है जिसके कारण

अगर पूछा जाये कि मैं मसीह के बारे में क्या सोचता हूं?
यद्यपि तौभी मेरे उत्तम विचार दीन ही हैं;
मैं कहता हूं, वह मेरे लिये मांस और मेरा पेय है,
मेरा जीवन और मेरी सामर्थ और मेरा भंडार है।

35 यूहन्ना 14:16, 15:26, 16:13.

36 1 यूहन्ना 3:24, 4:13.

37 1 यूहन्ना 4:2, 5:6–8.

38 रोमियों 8:23; इफिसियों 1:13–14.

39 रोमियों 5:5 पाठक को यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिये कि स्वर्गिक प्रेम के ऐसे प्रकटीकरण निरंतर या हमेशा समान तीव्रता से अनुभव किये जा सकते हैं। यद्यपि, परमेश्वर का प्रेम विश्वासी के जीवन में एक स्थाई सत्यता है, तौभी उस प्रेम का प्रत्यक्ष प्रकाशन विश्वासी की आवश्यकता के अनुसार, उसके समर्पण या परमेश्वर की विद्व तापूर्ण ईश्वरीय रक्षा के कारण बढ़ सकता हैं अथवा क्षीण हो सकता है।

हम ''हे अब्बा, हे पिता''[40] कहकर पुकारते हैं। पवित्रात्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारी निर्बलता के बीच हमारी अगुवाई और सहायता करता है।[41] अंत में, पवित्रात्मा उसके द्वारा सम्पन्न होने वाले अनवरत पवित्रीकरण के कामों के द्वारा हमें मसीह के स्वभाव में ढ़ालकर और मसीह में हमारे भीतर फलदायी जीवन उत्पन्न करने के द्वारा साक्षी देता है कि हम परमेश्वर की संतान है।[42]

यूहन्ना और पौलुस के अनुसार पवित्रात्मा का यह आंतरिक कार्य परमेश्वर की प्रत्येक संतान के जीवन में एक वास्तविकता होगा। इसका प्रगटीकरण प्रत्येक विश्वासी में भिन्न–भिन्न हो सकता है, और सबसे अधिक परिपक्व पवित्रजनों के जीवनों में भी काँट–छाँट, बाँझपन और परमेश्वर की प्रगट उपस्थिति के अभाव या कमी के अवसर आते हैं।[43] किन्तु फिर भी प्रत्येक विश्वासी के जीवन में पवित्रात्मा के कामों का व्यवहारिक और दिखाई देने योग्य प्रगटीकरण अवश्य होगा। यह परमेश्वर की सन्तानों का जन्म सिद्ध अधिकार है और एक साधन भी है जिसके द्वारा हम निश्चय पाते हैं कि हम उसे जानते हैं।

तीसरा चिन्ह, कि हमने उद्धार के लिये वास्तव में विश्वास किया है, हमारे भीतर अनंतजीवन की वास्तविकता की साक्षी है। इस कथन को समझने के लिये हमें अनंतजीवन की वास्तविक प्रकृति को स्मरण रखना चाहिये। यह केवल दिनों की असीमित लम्बाई नहीं है परन्तु परमेश्वर और उसके मसीह के अतंरग ज्ञान और संचार पर आधारित और उससे प्रवाहित जीवन की गुणवत्ता है।[44] यदि अनंत जीवन को केवल समाप्त न होने वाला जीवन या स्वर्ग में भावी वास्तविकता ही माना जाये, तो सबसे अधिक शारीरिक और सांसारिक व्यक्ति भी उसे पाने का दावा कर सकते है और कोई भी उनका खण्डन नहीं कर पायेगा। किन्तु यदि अनंत जीवन एक नये प्रकार का जीवन है जो परमेश्वर के वास्तविक ज्ञान और उसके साथ सहभागिता में प्रगट होता है, तब शारीरिक और सांसारिक व्यक्तियों का आत्मविश्वास सर्वोत्तम रूप में तत्वहीन और निकृष्टतम रूप में पूर्णतः झूठ साबित होता है।

---

40 रोमियों 8:15; गलातियों 4:6। पुनः, यह पहचाना जाना चाहिये कि विश्वासी की पुत्रत्व में प्रतीति, सामर्थ और तीव्रता में भिन्न हो सकती है। यद्यपि, उद्धार में हमारी प्रबल प्रतीति, परमेश्वर की इच्छा है, यहां तक कि सर्वाधिक सिद्व संत भी संदेहयुक्त रहते हुए उसके विरूद्व शत्रुओं की व्यूह रचना से संघर्ष करते रहते हैं – अर्थात देह, संसार, और शैतान।

41 रोमियों 8:14, 26.

42 रोमियों 8:16; 15:13; गलातियों 5:22–23। आत्मा की गवाही भावनाओं या रहस्यवाद तक निश्चित ही सीमित नहीं है। वह हमारे पुत्रत्व की गवाही भी ईश्वरीय और मसीह के समान जीवन के आभ्यासिक और प्रत्यक्ष प्रमाणों के द्वारा देता है।

43 यद्यपि परमेश्वर सर्वव्यापी है, वह सदैव अपनी उपस्थिति प्रकाशित नहीं करता, न ही उसकी उपस्थिति विश्वासी के लिये हमेशा उपलब्ध है। यहां तक कि बहुत अधिक सिद्व और ईश्वरीय विश्वासी ऐसे समयों से होकर गुजर सकता है जब उसके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति का बहुत कम बोध हो। ऐसे अवसर विश्वासी को विश्वास से चलना और अंधकार में भी परमेश्वर पर विश्वास रखना सिखाते हैं।

44 यूहन्ना 17:3.

सुसमाचारकीय मसीहत में एक कहावत लोकप्रिय और बाइबल–सम्मत दोनों है – ''हम जानते हैं कि अनंतजीवन हम में है क्योंकि हम विश्वास करते हैं'' किन्तु हम शब्दों का क्रम उलट सकते हैं और एक नयी कहावत बना सकते हैं जो उतनी ही बाइबल सम्मत है – ''हम जानते हैं कि हमने विश्वास किया है क्योंकि अनंत जीवन हम में है'' दूसरे शब्दों में हम जानते है कि हमने मसीह पर सचमुच विश्वास किया है और विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये गये हैं क्योंकि हृदय–परिवर्तन के समय जो नया जीवन हम में आरम्भ हुआ है वह समझ में आने योग्य एवं निरन्तर बनी रहने वाली एक वास्तविकता है। हम जानते है कि हमने उद्धार के लिये विश्वास किया है क्योंकि हम एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह के साथ जिसे परमेश्वर ने भेजा है,[45] एक वास्तविक, जीवन्त, और बनी रहने वाली सहभागिता में प्रवेश कर चुके है। यह अनंतजीवन है! क्या हम में यह एक वास्तविकता है?

सार–संक्षेप

हमारे अध्ययन में निष्कर्ष निकालने के लिये हम परमेश्वर की वास्तविक संतान के उन लक्षणों पर संक्षेप में विचार करेंगे जिन्हें 1 यूहन्ना में प्रस्तुत किया गया है। हमारी यह आशा है कि विश्वासी उद्धार के निश्चयता में बढ़े और जिनका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है वे इस समझ को प्राप्त करें कि उन्हें अब भी मसीह को जानने की आवश्यकता है।

जाँच 1 : हम जानते हैं कि हम मसीही हैं क्योंकि हम ज्योति में चलते हैं (1 यूहन्ना 1:4–7)। हमारे जीवन की शैली धीरे–धीरे बदल रही है जैसा परमेश्वर ने अपना स्वभाव और इच्छा हम पर प्रगट की है।

जाँच 2 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि पाप, पश्चाताप और अंगीकार के प्रति संवेदनशीलता हमारे जीवन की पहचान है (1 यूहन्ना 1:8–10)।

जाँच 3 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने हैं (1 यूहन्ना 2:3–4)। हम परमेश्वर की इच्छा जानने की अभिलाषा करते, उसे पूरा करने का प्रयत्न करते और अनाज्ञाकारिता पर विलाप करते है।

जाँच 4 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम मसीह के समान चलते है (1 यूहन्ना 2:5–6)। हम मसीह की अनुकृति करना चाहते है और उसके स्वभाव की समानता में बढ़ना चाहते है।

जाँच 5 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम अन्य मसीहियों से प्रेम करते हैं, उनकी सहभागिता करना चाहते हैं और कार्य एवं सत्य में उनकी सेवा करना चाहते है (1 यूहन्ना 2:7–11)।

45 यूहन्ना 17:3; 1 यूहन्ना 5:20.

जाँच 6 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि संसार के प्रति हमारी विरक्ति लगातार बढ़ती जाती है, और वह सब जो परमेश्वर की प्रकृति और इच्छा का विरोध करता है और उसके विपरीत है, उसका इन्कार करते हैं (1 यूहन्ना 2:15–17)।

जाँच 7 : हम जानते हैं कि हम मसीही है, क्योंकि हम मसीही विश्वास की ऐतिहासिक धर्मशिक्षा और अभ्यासों में बने रहते हैं और अन्य सब जो ऐसा करते हैं उनकी सहभागिता में बने रहते है (1 यूहन्ना 2:18–19)।

जाँच 8 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम मसीह को परमेश्वर मानते और सबसे सर्वोत्तम स्थान देते है (1 यूहन्ना 2:22–24; 4:1–3,13–15)।

जाँच 9 : हम जानते है कि हम मसीही है क्योंकि हमारे जीवनों में व्यक्तिगत पवित्रता की एक ललक और व्यवहारिक रूप में उसे पाने के प्रयास दिखाई देते है (1 यूहन्ना 3:1–3)।

जाँच 10 : हम जानते है कि हम मसीही है, क्योंकि हम धार्मिकता का अभ्यास (आचरण) करते हैं (1 यूहन्ना 2:28–29; 3:4–10)। हम उन कामों को करते हैं जो हमें परमेश्वर की धार्मिकता के मानदण्ड के अनुरूप बनाती है।

जाँच 11 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम संसार पर जय पाते है (1 यूहन्ना 4:4–6; 5:4–5)। यद्यपि बहुत बार हम पर दबाब होता है और हम श्रमित होते हैं, पर हम विश्वास में आगे बढ़ते जाते हैं। हम यीशु मसीह के पीछे लगातार चलते हैं और पीछे मुड़कर नहीं देखते।

जाँच 12 : हम जानते हैं कि हम मसीही है क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा उसके पुत्र, यीशु मसीह के बारे में प्रगट की गयी बातों पर विश्वास करते है। केवल उसी में हमारे पास अनंतजीवन है (1 यूहन्ना 5:9–12)।

यदि हम में ये गुण है और वे हम में बढ़ते जा रहे हैं, हमारे पास प्रमाण है कि हम परमेश्वर को जानते हैं और परमेश्वर की संतान का फल हम में हैं। किन्तु यदि ये गुण हमारे जीवनों से अनुपस्थित हैं हमें अपनी आत्माओं की बड़ी चिन्ता करनी चाहिए। हमें हमारे उद्धार के संदर्भ में परमेश्वर की खोज करने में यत्नशील होना चाहिये। हमें स्वयं का पुनः परीक्षण करके देखना चाहिये कि क्या हम विश्वास में है। हमें अपनी बुलाहट और चुन लिये जाने को सुनिश्चित करने का प्रयत्न करना चाहिये।[46]

46 2 कुरिन्थियों 13:5; 2 पतरस 1:8–11.

भाग - 2

सुसमाचार की चेतावनियां या व्यर्थ अंगीकारो को चेतावनियां

तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर हैरू तू अच्छा करता हैरू दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।

याकूब 2:19

सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता हैय और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

मत्ती 7:13–14

अध्याय – 15

सुसमाचार को कमतर बनाना

तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक ही है तो तुम ठीक करते हो, दुष्टात्माएं भी विश्वास करती और थरथराती है।

– याकूब 2:19

दो वस्तुएँ जब तक साथ–साथ रखकर न देखी जाये, बिलकुल एक जैसी लग सकती है। आभासी विभिन्नता या छोटा–मोटा अन्तर बहुत बड़ा बन जाता है। प्रत्येक विषय में खोज करके तुलना करना और विभिन्नताओं को परखना लाभदायक साबित हुआ है, और यह पवित्रशास्त्र के अध्ययन एवं तंत्रात्मक धर्मविज्ञान की संरचना में भी अत्याधिक सहायक है। कलीसिया और व्यक्तिगत विश्वासी जन पवित्रशास्त्र के बड़े मानदण्ड और कलीसियाई इतिहास के अपेक्षाकृत कम किन्तु उपयोगी मानदण्डों के साथ अपने विश्वासों और व्यवहारों की तुलना और भिन्नता का आँकलन करके सदैव लाभ प्राप्त करते आये है। वर्तमान में सुसमाचारकीय समाज इस प्रक्रिया पर अमल करके अच्छा ही करेगा, भले ही यह प्रक्रिया और उसके प्राप्त परिणाम कितने भी कष्टदायी क्यों न हो। सबसे बुरी व्याधि का पता चलना भी बुरा समाचार नहीं है यदि उपचार के लिये अब भी समय है।

सुधारवादियों के समय से अब तक ऐतिहासिक मसीहियों का कम से कम सिंहावलोकन भी प्रगट करता है कि समकालीन मसीहत और हमारे बापदादों की मसीहत में बहुत बड़ा अन्तर है। यह अन्तर उदारवादी सहभागिता तक ही सीमित नहीं है जो रूढ़िवादिता के प्रमुख स्तंभों का इंकार करती है, परन्तु इसका अस्तित्व सर्वाधिक परम्परावादी और सुसमाचारकीय कलीसियाओं में

भी है। हमने 'धन्य परमेश्वर के महिमामय सुसमाचार' को हाथों हाथ लेकर उसे एक उथले विश्वास वचन में बदल दिया है (1 तीमु. 1:11)। जो भी इस विश्वास वचन को मानने का दावा करता है उसे नया जन्मा और पूर्ण रूप में मसीही मान लिया जाता है।

गलत-प्रश्नों के सही उत्तर

प्रेरित याकूब एक बड़ी चिन्ता में प्रतीत होते है – परमेश्वर की दृष्टि में 'शुद्ध और निर्मल भक्ति' क्या है (1:27)। इस कारण सामान्य लोगों को लिखा गया उनका पत्र दो टूक बात करने वाला और अकसर चुभने वाला है। वे स्पष्ट और बड़े–बड़े शब्दों में अपनी बात कहते हैं और व्यर्थ बातों के फेर में नहीं पड़ते। वे हमें स्पष्ट रूप में बताते हैं कि वे हमारे विश्वास और धर्म–परायणता के दावे से प्रभावित नहीं है। वे और भी अधिक बड़े प्रमाण चाहते हैं और हमारे विश्वास को कार्यों के द्वारा प्रमाणित देखना चाहते है।

हम जिस पद पर विचार कर रहे हैं, उसमें याकूब अपने साथी यहूदियों के हृदय पर चोट करते हैं जो मसीह पर विश्वास का दावा केवल शब्दों में करते है। वे खाली विश्वास वचनों के घातक खड्ड में गिर चुके हैं। उन्होंने मसीही विश्वास की बड़ी धर्मशिक्षाओं को एक मानसिक सहमति का स्वरूप दे दिया है परन्तु अब भी उनका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है। इस स्थिति का समाधान करने याकूब इस्राएल के सबसे बड़े धर्मशिक्षा संबंधी अंगीकार – शेमा का स्मरण करते हैं "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है!" (व्यवस्थाविवरण 6:4)।[1] तब चुभने वाले व्यंग के साथ वे तर्क करते है कि सभी विश्वास वचनों से सहमति रखने वाला बड़े से बड़ा अंगीकार भी व्यर्थ है यदि उसमें वह वास्तविक विश्वास शामिल नहीं है जो संबंधित व्यवहार में परिलक्षित होता है। एक व्यक्ति जिसका विश्वास है कि केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है, अच्छा करता है। किन्तु यदि ऐसा विश्वास मौखिक अंगीकार से बढ़कर नहीं है, तो यह दुष्टात्माओं के विश्वास से भी बदतर है, क्योंकि ये अधर्मी और दोषी ठहराये गये प्राणी भी उसी सत्य पर विश्वास करते हैं, पर डरते और कांपते हुए परमेश्वर के प्रति अधिक आदर प्रदर्शित करते हैं बजाय उनके जो विश्वास का अंगीकार करते और अक्रियाशील रहते है।

याकूब से हम सीखते हैं कि मसीह में हमारे विश्वास का सार्वजनिक अंगीकार और विशुद्ध धर्मशिक्षा के कथनों के प्रति हमारी मौखिक सहमति उद्धार के निर्णायक प्रमाण नहीं है। दुष्टात्मायें परमेश्वर के बारे में सभी प्रकार की सही (सत्य) बातों पर विश्वास करती हैं, और पवित्रशास्त्र में लेख भी है कि उन्होंने मसीह के बारे में सार्वजनिक रूप से सही उद्‌घोषणायें भी की, "और जब कभी अशुद्ध आत्माएँ उसे देखती थी तो उसके आगे गिर पड़ती थी, और चिल्लाकर कहती थी, "तू परमेश्वर का पुत्र है" (मरकुस 3:11)। फिर भी इन दुष्टात्माओं को उद्धार नहीं मिला। यद्यपि

1 *शेमा* इब्रानी भाषा के शब्द "सुनना" से निकला है।

उन्होंने बड़े सत्यों पर विश्वास किया, बड़ी–बड़ी धर्मशिक्षाओं पर अपनी अंर्तदृष्टि (समझ) प्रदर्शित की, और बड़ी बातों पर दावा किया, वे दुष्टात्माएँ ही थी और उनका रूझान बुराई की ओर ही था, धार्मिकता के विरूद्ध वे परमेश्वर के साथ शत्रुता रखती थी। उसी प्रकार, भले ही एक व्यक्ति परमेश्वर के बारे में सही बातों पर विश्वास करे और सार्वजनिक रूप में उनका अंगीकार करे, हो सकता है कि वह दुष्टात्माओं से बेहतर न हो।

याकूब लगभग दो हजार वर्ष पहले जिस बात के लिये संघर्ष कर रहा था वह समकालीन मसीहत में आज भी जीवित और प्रचलित है। यहूदियों ने इस्राएल के प्राचीन विश्वास को एकेश्वरवाद के विश्वास के सार्वजनिक अंगीकार के रूप में कमतर बना दिया है। हमने भी मसीही विश्वास को कुछ सरल प्रश्नों के सकारात्मक प्रत्युत्तर के रूप में कमतर बना दिया है। आधुनिक समय में सुसमाचार की प्रस्तुति अकसर इस प्रश्न के साथ आरम्भ होती है – क्या आप जानते हैं कि आप एक पापी है? यदि व्यक्ति का उत्तर सकारात्मक है, तब एक अन्य प्रश्न पूछा जाता हैः क्या आप स्वर्ग जाना चाहते हैं? यदि व्यक्ति दूसरी बार भी सकारात्मक उत्तर देता है, उसे प्रोत्साहित किया जाता है कि प्रार्थना करे और यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित करे। यदि वह प्रार्थना करता है और ईमानदारी पूर्वक मान लेता है उसे उद्धार का निश्चय दिया जाता है और परमेश्वर के परिवार में उसका स्वागत किया जाता है।

इस अध्याय में हम सुसमाचार प्रचारवाद के इस लोकप्रिय तरीके पर निकटता से विचार करेंगे और पता करेंगे कि यह न केवल अपर्याप्त है परन्तु अत्याधिक खतरनाक भी है। लाखों–लाख लोग कलीसिया की दर्शकदीर्घा में बैठते हैं जिनके हृदय–परिवर्तन नहीं हुए है पर वे उनके उद्धार के प्रति आश्वस्त है, क्योंकि एक बार उन्होंने गलत प्रश्नों के सही उत्तर दिये थे।

क्या आप पापी है?

हमारा संसार पाप में पतित है, और हम सब पतित नस्ल (जाति) हैं। पवित्रशास्त्र के अनुसार मनुष्यों में परमेश्वर की प्रतिकृति गम्भीर रूप में विकृत हो चुकी है और नैतिक अधःपतन ने उसके समूचे व्यक्तित्व को प्रदूषित कर दिया है – 1) शरीर[2] 2) विचार[3] 3) भावनाएँ[4] और 4 इच्छा।[5] तब कैसे एक व्यक्ति, पवित्रशास्त्र और पवित्रात्मा के कामों से अलग होकर जब उससे यह पूछा जाये यह समझ सकता है कि क्या वह पापी है? यदि वह कहता है – हाँ, तो इसका क्या अर्थ है? हमने उस व्यक्ति के बारे में क्या जाना? हमारा समाज ''अधर्म को पानी के समान पीता है'' (अय्यूब 15:16)। पाप में आनन्द किया जाता है, उसे मूल्यवान समझा जाता है, उसको उन्नत किया

2 रोमियों 6:6,12, 7:24, 8:10,13.

3 रोमियों 1:21; 2 कुरिन्थियों 3:14–15, 4:4; इफिसियों 4:17–19.

4 रोमियों 1:26–27; गलातियों 5:24; 2 तीमुथियुस 3:2–4.

5 रोमियों 6:17; 7:14–15.

और पनपाया जाता है। हम न केवल पाप करते है पर हम हमारे पाप के विस्तार और लज्जित न होने के विषय में बड़ी बातें भी करते है। इस कारण जब एक व्यक्ति केवल यह मानता है कि वह पापी है तब उसका अर्थ कुछ नहीं होता। शैतान हमसे कह सकता है कि वह एक बहुत बड़ा पापी है, परन्तु उसका अंगीकार उसे परमेश्वर के पास लेकर नहीं आता और न यह साबित करता है कि परमेश्वर उसके हृदय में काम कर रहा था। यही बात हम मनुष्य के बारे में भी कह सकते है।

यह जानने के बाद, बेहतर होगा कि हम जान ले कि उचित प्रश्न यह नहीं है कि क्या व्यक्ति जानता है कि वह पापी है परन्तु यह कि क्या सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर ने उसके हृदय में काम किया है, जिसके कारण पाप और उसकी प्रकृति के प्रति उसके विचार या दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। क्या वह पाप को उस दृष्टि से देखने लगा है जिस दृष्टि से परमेश्वर देखते हैं या जैसा पवित्रशास्त्र उसके विषय में कहता है? क्या अब वह स्वयं को सभी भली बातों से शून्य और परमेश्वर के न्याय के योग्य समझता है? क्या स्वयं और पाप के प्रति उसके प्रेम का स्थान प्रबल अनिच्छा और लज्जा ने ले लिया है? क्या वह क्षमा किया जाना, स्वतंत्र और शुद्ध किया जाना चाहता है?

एक व्यक्ति के लिये यह कहना कि वह पापी है, यहां तक कि पाप के विरूद्ध आवाज़ उठाना एक बात है, परन्तु पाप से घृणा करना और उसके कारण लज्जित होना एक बिल्कुल भिन्न बात है। पवित्रशास्त्र के अनुसार पाप की सार्वजनिक घोषणा नहीं परन्तु हृदय का आंतरिक परिवर्तन प्रमाणित करता है कि परमेश्वर ने उस व्यक्ति के हृदय में उद्धार का कार्य सम्पन्न किया है।

बनयन की पिलग्रिम्स प्रोग्रेस एक व्यक्ति के स्वयं को पापी मानने और एक व्यक्ति जिसकी मनोवृत्ति पाप के विरूद्ध हो चुकी है, उनके बीच का अन्तर दर्शाने के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह अन्तर वास्तविक विश्वासी 'विश्वासयोग्य' और झूठे विश्वासी 'बातूनी' के बीच के वार्त्तालाप में परिलक्षित होता है:

> *बातूनी* – मैं समझता हूँ कि हमें वस्तुओं के बल के बारे में चर्चा करनी चाहिये। अच्छा, यह एक अच्छा प्रश्न है और मैं आपको इसका उत्तर देने तैयार हूँ। सर्वप्रथम, संक्षेप में, जब हृदय में परमेश्वर का अनुग्रह है, वह पाप के विरूद्ध आवाज़ उठाता है।
>
> *विश्वासयोग्य* – रूकिये!, सुनिये! भला हो कि हम एक बार में एक बात पर विचार करे। मैं सोचता हूँ कि आपको यह कहना चाहिये कि अनुग्रह आत्मा को उसके पाप से घृणा करने की भावना के द्वारा प्रमाण देता है।
>
> *बातूनी* – क्यों, पाप के विरूद्ध बोलने और पाप से घृणा करने के बीच क्या अन्तर है?

> *विश्वासयोग्य* – ओह, बहुत बड़ा अन्तर है, एक व्यक्ति पाप के विरूद्ध बोल सकता है, सामान्य रूप से, परन्तु वह पाप से घृणा तब तक नहीं करेगा, जब तक उसमें पाप के प्रति ईश्वरीय घृणा न हो।[6]

बेचारा, आत्म–प्रवंचना का शिकार बातूनी जानता था कि कौन–कौन सी अच्छी बातें बोलनी चाहिये। पर उन बातों में से कोई भी उसके हृदय में वास्तविक नहीं थी। वह जानता था कि व्यक्ति के लिये अपने जीवन के पाप को मान लेना और उसके विरूद्ध बातें करना उचित है, परन्तु उसके हृदय में पाप के प्रति वास्तविक घृणा और पाप करने के कारण कोई लज्जा नहीं थी।

'विश्वासयोग्य' और 'बातूनी' के बीच इस संक्षिप्त वार्त्तालाप से हम सीखते है कि हमें सुसमाचार –प्रचार में या परामर्श चाहने वालों से बातें करते समय पाप को हल्के रूप में नहीं लेना चाहिये। उनसे इतना पूछना पर्याप्त नहीं है कि उनके स्वयं के अभिमत में इस विषय पर उनकी समझ और परिभाषा के आधार पर क्या वे स्वयं को पापी मानते हैं। हमें पवित्रशास्त्र के प्रत्येक संसाधन को खर्च करना चाहिये जब तक कि खोजी जिज्ञासु पाप के बारे में बाइबल की समझ को प्राप्त न कर ले और अपने पापमय होने के विषय में विचार न कर ले और पाप के प्रति एक नयी मनोवृत्ति का प्रमाण न प्रस्तुत करे। केवल तब हम पाप के बारे में विचार–विमर्श बन्द कर सकते हैं और सुसमाचार के अन्य मसलों पर आगे बढ़ सकते है।

क्या आप स्वर्ग जाना चाहते हैं?

अकसर समकालीन सुसमाचार प्रचार के तरीकों में यदि व्यक्ति प्रथम प्रश्न अर्थात् उसके पाप के बारे में सकारात्मक उत्तर देता है, तब वह दूसरे प्रश्न का सामना करता हैः क्या आप स्वर्ग जाना चाहते हैं? इस विचार पर हमें स्वयं से एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहियेः यदि एक व्यक्ति नकारात्मक या सकारात्मक उत्तर देता है, तो क्या उसका उत्तर हमें उसके हृदय की वास्तविक दशा के बारे में कुछ बताता है? यदि कोई व्यक्ति स्वर्ग के बदले नरक को चुन ले, इसका सरल अर्थ यह है कि वह या तो नर्क के भय या आतंक को ठीक से नहीं समझता या फिर वह पागल है। किन्तु यदि वह स्वर्ग को अपनी प्राथमिकता बताता है, क्या यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर काम कर रहे है, वहाँ पश्चाताप है, या उसके पास उद्धार करने वाला विश्वास है? लोग स्वर्ग की कामना अनगिनत कारणोंवश करते हैं या कर सकते हैं, उनमें से अधिकतर कारण स्वार्थमय है।

प्रथम, लोगों को स्वर्ग के लिये स्वर्ग चाहिये, गैरधार्मिक मानवतावाद और उसके सामाजिक सुधारों ने हमें सिखाया कि सभी मनुष्यों में एक काल्पनिक सुख के स्थान, आदर्श रूप में सिद्ध

---

6 John Bunyan, *The New Pilgrim"s Progress: John Bunyan"s Classic Revised for Today with Notes by Warren Wiersbe* (Grand Rapids: Discovery House Publishers, 1989), 99.

स्थान की जन्मजात अभिलाषा होती है। कोई पागल या आपराधिक दृष्टि से विक्षिप्त व्यक्ति ही आनन्दलोक के बदले में संकट को चुनेगा। सब लोग एक सिद्ध संसार की कामना करते हैं जहाँ सबकुछ सुन्दर है, भय नहीं है, मृत्यु पराजित है, और प्रत्येक स्वप्न साकार होता है। किन्तु क्या ऐसी अभिलाषा करना व्यक्ति के हृदय में हृदय–परिवर्तन के कार्य की ओर संकेत करती है? ''स्वर्ग के लिये'' स्वर्ग की कामना करने का कोई अर्थ नहीं है।

दूसरा, लोग स्वर्ग की कामना इसलिए करते हैं कि दूसरा एकमात्र विकल्प नरक है। पेरू के उत्तरीय जंगलों में वर्ष के एक निश्चित कालखण्ड में किसान अपने चाँवल के खेतों में आग लगा देते हैं ताकि वे भूसे को जला दे। लपटें तेज होती है और लगता है सार संसार धुएँ और राख में समा जायेगा। यदि आप ध्यानपूर्वक देखे तो आप पायेंगे कि सब प्रकार के सांप और कीड़े–मकोड़े आग से निकलकर भागते हुए दिखाई देंगे। वे अपनी सहज प्रवृति से ही सही, अपने संरक्षण का संज्ञान रखते हैं। वे रेंगकर और खेतों से जितना शीघ्र हो सके बाहर निकलकर भागते हैं पर जैसे ही वे सुरक्षित स्थान में पहुँच जाते हैं वे फिर अपनी मूल प्रवृत्ति में आ जाते हैं वे फिर सांप और कीड़े–मकोड़ों की तरह व्यवहार करते है। वे नये प्राणी नहीं है। उनकी अभिलाषायें बदली नहीं है, वे अब भी अंधेरे और घने कीचड़ की कामना करते है जिसे उन्होंने छोड़ा है और जिस ऊँची भूमि पर वे भागकर आ गये हैं, उसकी उन्हें कोई अभिलाषा नहीं है। एक स्थान को छोड़कर दूसरे में जाने के पीछे उनकी एकमात्र अभिलाषा स्वयं का बचाव करने की है।

इसी प्रकार नर्क के भय के कारण जन्मी स्वर्ग की अभिलाषा हमें यह नहीं बताती है कि परमेश्वर ने उनके हृदय में कोई परिवर्तन किया है या नहीं। हाँलाकि यह सत्य है कि नरक का भय उद्धार के लिये एक बाइबल सम्मत प्रोत्साहन है, किन्तु यह कभी भी प्राथमिक या एकमात्र प्रेरकतत्व नहीं है। यहून्ना बपतिस्मा देने वाले ने लोगों को चिताया कि वे आने वाले क्रोध से भागे।[7] यीशु ने लोगों को चिताया कि वे उस से डरे जो शरीर और प्राण दोनों को नर्क में नाश कर सकता है।[8] पिन्तेकुस्त के दिन, प्रेरित पतरस ने अपने सुनने वालों को ऊँचे स्वर से चिताया कि उस विकृत पीढ़ी से बचकर रहे।[9] यहाँ तक कि पिलग्रिम्स प्रोग्रेस में क्रिश्चियन व्यक्ति सेलेस्टियल नगरी को भागा क्योंकि उसने उसके उस समय के निवास पर विनाश को आते देखा था। वास्तविक हृदय–परिवर्तन में एक व्यक्ति में नर्क का भय और स्वयं को सुरक्षित रखने का संज्ञान अतिशीघ्र परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम और धार्मिकता की अभिलाषा से ढँक जाता है। वास्तविक हृदय–परिवर्तन में लोग केवल उस बात से नहीं भागते जिससे वे डरते हैं, पर वे जिसकी अभिलाषा करते हैं उसकी ओर भागते है – एक बेशकीमती मोती,[10] परमेश्वर का राज्य

7 मत्ती 3:7.

8 मत्ती 10:28.

9 प्रेरितों के काम 2:40.

10 मत्ती 13:45–46.

और उसकी धार्मिकता।[11] वे खो जाने से डरते है क्योंकि वे यीशु को खोना नहीं चाहते![12] स्वयं को बचाने की एक व्यक्ति की अभिलाषा कितनी भी केन्द्रित और वास्तविक प्रतीत हो, वह उसके हृदय–परिवर्तन के कार्य को प्रमाणित नहीं करती।

तीसरा, लोग परमेश्वर के बिना भी स्वर्ग की कामना कर सकते हैं। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, अधिकतर लोग स्वर्ग की कामना करते हैं, परन्तु स्वर्ग कैसा हो और उसका प्रशासन कैसा हो, इस बारे में वे एकमत नहीं होते। बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहाँ लोग जो चाहते हैं, उन्हें वही मिलता है। किन्तु उसके निवासियों के परस्पर विरोधी बहुत से विचारों और अभिलाषाओं के चलते ऐसे स्थान का अस्तित्व कैसे संभव है? यदि ऐसा होगा, तो सभी को उनका अपना व्यक्तिगत स्वर्ग देना पड़ेगा, जहाँ वह पुरूष या स्त्री सभी नियम बनाएंगे और सम्पूर्ण संप्रभुता के साथ वहाँ राज्य करेंगे। क्या पवित्रशास्त्र का परमेश्वर ऐसी किसी व्यवस्था में सटीक बैठता है? हमें यह मानना चाहिये कि जब बड़ी संख्या में लोग ऐसे स्वर्ग की इच्छा रखते है, तब वे वास्तव में ऐसे स्थान के बारे में नहीं सोचते जिसमें परमेश्वर सभी विचारों, आनन्द और आराधना के केन्द्र में है। एक राज्य जिसमें केवल परमेश्वर ही सम्पूर्ण रूप में संप्रभु शासक है, और उसकी इच्छा ही एकमात्र नियम है, न केवल विचारों के लिये अजनबी है परन्तु अरूचिकर भी है।

एक फिल्म जिसका शीर्षक है – ''व्हाट ड्रीम्स मे कम'', एक डॉक्टर के बारे में हैं जो मानता था कि कुछ भी परमसत्य नहीं है, वह मरने के बाद स्वर्ग जाता है। जब वह वहाँ खड़ा होता है, मृत्यु के बाद के जीवन की वास्तविकता देखकर आवाक रह जाता है, एक स्वर्गदूत उसके पास आता है। वार्त्तालाप के दौरान वह भला डॉक्टर तर्क करता है – यदि स्वर्ग है तो क्या परमेश्वर भी है? स्वर्गदूत सकारात्मक कथन कहता है, और भला डॉक्टर पूछता है – वह कहाँ है? स्वर्गदूत उपर की ओर संकेत करके उत्तर देता है – ''वह वहाँ है।''

यह सरल वार्त्तालाप हमें मनुष्य और परमेश्वर के विरूद्ध उसकी शत्रुता के बारे में बहुत कुछ बताता है। परमेश्वर के अस्तित्व का इंकार करना असंभव पाकर मनुष्य ने अपनी सामर्थ में वह सब किया है कि जो कुछ वह परमेश्वर के बारे में जानता है कि सच है, उसे दबा दे।[13] पिछले दशकों में मनुष्य ने पृथ्वी के जीवन के प्रत्येक पहलू से परमेश्वर को हटा देने का प्रयास किया है (संस्कृति, सरकार, शिक्षा और यहाँ तक कि धर्म भी) और अपनी सुविधानुसार उसे स्वर्ग में निर्वासित कर दिया है जहाँ वह अनदेखा और सबसे पृथक रहता है। अब यह लगता है कि मनुष्य ने परमेश्वर के साथ अपने युद्ध में एक बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है और परमेश्वर को स्वर्ग से निकालकर किसी और ऊँचे स्थान में रख दिया है। जिस प्रकार एक शिक्षक परेशान

11 मत्ती 6:33.

12 पास्टर चार्ल्स लैटर के विचार

13 रोमियों 1:18.

करने वाले छात्र से पीछा छुड़ाने के लिये उसे उत्तीर्ण कर देता है ताकि वह उसकी कक्षा से निकल जाये, मनुष्यों ने परमेश्वर से पीछा छुड़ाने के लिये उसे अति ऊँचे स्थान पर रख दिया है। ये सभी बातें एक सामर्थशाली और अकाट्य सत्य को प्रदर्शित करती है – सब लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं पर अधिकांश लोग परमेश्वर को वहाँ नहीं चाहते।

लोग स्वर्ग बिना परमेश्वर के चाहते हैं इसका एक और प्रमाण यह है कि यहाँ पृथ्वी पर अधिकतर लोगों की इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएं स्वर्ग के बिल्कुल विपरीत है। क्यों एक व्यक्ति जिसमें पृथ्वी पर आराधना करने की कोई इच्छा नहीं है स्वर्ग जाना चाहेगा जहाँ आराधना करना ही सबकुछ है? वे लोग जो पाप से प्रेम करते है क्यों ऐसे स्थान की अभिलाषा रखेंगे जहाँ पाप नहीं हो सकता? क्यों एक व्यक्ति जो धार्मिकता के प्रति उदासीन है ऐसे स्थान की कामना करेगा जिसमें धार्मिकता का वास है? क्यों वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर की इच्छा की परवाह नहीं है एक ऐसे स्थान की कामना करेगा जहाँ परमेश्वर की इच्छा ही सब कुछ है?

सब लोग स्वर्ग जाना चाहते है, परन्तु उनका अपेक्षित स्वर्ग पवित्रशास्त्र में वर्णित या प्रगट किये गये स्वर्ग से भिन्न है। इस कारण यह प्रश्न कि क्या एक व्यक्ति स्वर्ग जाना चाहता है, बेहतर रूप में इस प्रकार पूछा जा सकता है: क्या सुसमाचार सुनने के द्वारा परमेश्वर ने आपके हृदय में इस प्रकार कार्य किया है कि अब परमेश्वर के लिये आपमें एक वास्तविक और निश्चित लालसा है? क्या वह परमेश्वर जिसमें एक समय आपकी कोई रूचि नहीं थी और उसकी कोई अभिलाषा नहीं थी, अब आपकी लालसाओं का पात्र बन गया है? क्या अब आपके हृदय में परमेश्वर के लिये प्रेम जागृत हो गया है? क्या अब आपके हृदय के नये अनुराग आपको उसके पास आने में विवश कर रहे हैं? प्रश्न यह नहीं है कि क्या व्यक्ति स्वर्ग जाना चाहता है, पर प्रश्न यह है कि क्या वह परमेश्वर को चाहता है। जैसा यीशु मसीह ने कहा था, "और अनंतजीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें जिसे तू ने भेजा है" (यूहन्ना 17:3)।

क्या आप प्रार्थना करना चाहते है?

आधुनिक दिनों के सुसमाचार–प्रचार में अधिकतर जब कोई व्यक्ति उसके पाप के विषय में प्रथम प्रश्न और स्वर्ग के विषय में दूसरे प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देता है, तब उसके सामने तीसरा और अंतिम प्रश्न रखा जाता है: क्या आप प्रार्थना करना और यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित करना चाहते हैं? यदि व्यक्ति स्वतः प्रार्थना करने में संकोच करता है, तो उसे पापियों की प्रार्थना दोहराने के लिये कहा जाता है, जो अकसर सुसमाचार प्रचारकीय परचों के अंत में लिखी होती है। प्रार्थना के बाद, उस व्यक्ति को निश्चय दिया जाता है कि यदि उसने ईमानदारीपूर्वक प्रार्थना की है, तब परमेश्वर ने उसका उद्धार कर दिया है और यीशु उसके हृदय में आ चुके हैं।

यद्यपि यह समकालीन मसीहत में सुसमाचार–प्रचार का एक तरीका बन चुका है, फिर भी हमें स्वयं से ये प्रश्न अवश्य पूछने चाहिये। क्या ऐसे तरीके का बाइबल में पहले उपयोग हुआ है? क्या यह मसीह या उसके प्रेरितों की शिक्षाओं और उदाहरणों में पाया जाता है? यद्यपि पवित्रशास्त्र में मनुष्यों द्वारा मसीह को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने की शिक्षा दी गई है,[14] यह सोचना गलत होगा कि इस बाइबल – सम्मत आवश्यकता की पूर्ति केवल मसीह के लिये निर्णय करने या पापियों की प्रार्थना करने मात्र से हो सकती है, विशेषकर इसलिये कि मसीह और उसके प्रेरितों ने कभी ऐसा निमंत्रण नहीं दिया। वास्तव में, उद्धार पाने के लिये लोगों को आमंत्रित करने का तरीका, आज दिये जाने वाले निमंत्रण से सर्वथा भिन्न था:

> यूहन्ना के बन्दी बना लिये जाने के बाद यीशु तो परमेश्वर का सुसमाचार सुनाता हुआ गलील को आया, और वह कहने लगा, ''समय पूरा हुआ है परमेश्वर का राज्य निकट है, मन फिराओ, और सुसमाचार पर विश्वास करो।''(मरकुस 1:14–15)
>
> और कि मैं किस प्रकार तुम्हारे लाभ के लिये कोई भी बात बताने से न झिझका और सबके सामने तथा घर–घर जाकर तुम्हे उपदेश देता रहा। मैं यहूदी तथा यूनानी दोनों को ही दृढ़तापूर्वक साक्षी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराओ और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो (प्रेरितों के काम 20:20–21)।

यह ध्यान देने योग्य है कि पवित्रशास्त्र में हम कहीं भी मसीह, प्रेरितों या अन्य किसी को भी लोगों से पापियों की प्रार्थना को दोहराने या अपने हृदय को खोलने और यीशु को प्रवेश करने का निमंत्रण देने का उल्लेख नहीं पाते है। परन्तु हम बार–बार पाते हैं कि पश्चाताप करने और यीशु मसीह पर वास्तविक रूप में विश्वास करने के लिये कहा गया है। तब प्रश्न यह नहीं है कि एक व्यक्ति प्रार्थना करना और यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित करना चाहता है, परन्तु यह है कि क्या सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर ने उसके जीवन में काम किया है और अब वह पाप के लिये पश्चाताप कर रहा है और अपनी आत्मा के उद्धार के लिए यीशु मसीह पर विश्वास कर रहा है।

यदि एक व्यक्ति यीशु पर विश्वास की उद्घोषणा करता है, उसके साथ आनन्द मनाना उचित है, परन्तु यह कार्य उसे घुड़कने और चेतावनी देने के बिना नहीं होनी चाहिये। उसे इस सत्य के द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिये कि यदि उसने वास्तव में पश्चाताप किया और विश्वास किया है, उसका उद्धार हुआ है। किन्तु उसे आगे यह निर्देश भी दिया जाना चाहिए कि यदि उसका हृदय–परिवर्तन वास्तव में हुआ है, तब परमेश्वर की बातों में लगातार बने रहने के द्वारा उसकी पुष्टि होगी। उसे जानना चाहिये कि उद्धार एक बार दी गयी 'दवा' नहीं है जिसे देने के बाद, ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। यदि एक व्यक्ति ने वास्तव में उद्धार पाने के लिये पश्चाताप किया है, तब वह अपने जीवनभर लगातार पश्चाताप करेगा और पश्चाताप करने की

14 यूहन्ना 10:9.

गहिराई में बढ़ता जायेगा। यदि उसने उद्धार के लिये सचमुच विश्वास किया है, वह लगातार विश्वास करने और परमेश्वर पर निर्भर होने में बढ़ता जायेगा। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने वास्तव में हृदय–परिवर्तन के द्वारा व्यक्ति के जीवन में कार्य आरम्भ किया है, इसका प्रमाण है कि वह उसके जीवन भर उसमें अपने कार्य को जारी रखता है। यदि हृदय–परिवर्तन के बाद कोई व्यक्ति परमेश्वर की बातों से उदासीन होकर वापस लौट जाता है, भक्ति के जीवन में उन्नति नहीं करता, और विश्वास करने वालों के समाज से दूर हो जाता है, तब उसके पास बाइबल के अनुसार कोई आधार नहीं है कि उसका हृदय परिवर्तन का अनुभव वास्तविक था या वह कभी परमेश्वर की एक सन्तान था। नये विश्वासी या हृदय–परिवर्तन करने वाले को ऐसी चेतावनी के बिना आगे बढ़ने देना एक बड़ी और खतरनाक भूल है।

गलत प्रश्न और गलत बात पर भरोसा

इस बात से कोई इंकार नहीं करेगा कि सड़कों और दर्शकदीर्घाओं में बहुत से ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने उनके पाप का अंगीकार किया है, एक निर्णय लिया है, और मसीह को ग्रहण करने की प्रार्थना की है, परन्तु वे वास्तविक हृदय–परिवर्तन का कोई फल प्रदर्शित नहीं करते। यद्यपि पवित्रशास्त्र सिखाता है कि विश्वास के झूठे अंगीकार भी होते हैं यहाँ तक कि सर्वोत्तम प्रचार के बाद भी,[15] लगातार अंगीकार करने वाले शारीरिक मसीहियों की संख्या वास्तव में बहुत अधिक है। इस व्याधि का क्या कारण हो सकता है?

यदि हम सुसमाचारकीय मसीहत के विशाल विस्तार का सर्वेक्षण करे, और व्यक्तिगत एवं सामूहिक सुसमाचार–प्रचार की सबसे अधिक लोकप्रिय विधियों की जाँच करे, हमें इस निष्कर्ष पर आना होगा कि हम एक सतही सुसमाचार और पापियों को मसीह के पास आने के अत्याधिक सतही निमंत्रण की फसल काट रहे हैं। परिणाम स्वरूप जिन्होंने हाथ उठाये, चलकर सामने आये, निर्णय किये और पापियों की प्रार्थना की, उनमें बहुसंख्यक लोगों का वास्तव में कभी हृदय–परिवर्तन हुआ ही नहीं था। उन्होंने केवल सभी गलत प्रश्नों के सही उत्तर दिये, और सुसमाचार के भण्डारी जिन्हें बात को बेहतर रूप में समझना चाहिये था, उन्होंने उन्हें झूठी निश्चयता दी। उनकी आधारशिला बालू पर है और उनका अंत विनाश होगा। हमें उनको बताना चाहिये कि लोग केवल निर्णय करके और प्रार्थनाएँ बोलकर उद्धार नहीं पाते परन्तु मसीह की ओर देखकर उद्धार पाते हैं। हमें उन्हें चेतावनी देनी चाहिये कि अतीत में हुये हृदय–परिवर्तन का प्रमाण वर्तमान में हृदय–परिवर्तन के कार्य के लगातार जारी रहने से मिलता है: जो परमेश्वर उद्धार देता है, वह पवित्र भी करता है। यदि अतीत में किया गया उनका निर्णय वर्तमान जीवन को लगातार प्रभावित नहीं करता, तो संभव है कि उनकी आशा व्यर्थ है!

15 मत्ती 13:3–23

अध्याय – 16

संकरा द्वार

संकरे फाटक से प्रवेश करो क्योंकि विशाल है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से है जो उस से प्रवेश करते है। परन्तु छोटा है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है और थोड़े ही है जो उसे पाते है।

– मत्ती 7:13–14

बहुत से लोग 'पहाड़ी उपदेश' को मसीही सार्वजनिक घोषणा–पत्र मानते हैं। उसमें मसीह की कुछ सबसे अधिक सुन्दर शिक्षाएँ, मसीही विश्वास के महान सदगुण, और मसीही शिष्यता की सबसे अधिक महत्वपूर्ण माँगे है। मसीही जीवनकाल में हम में से कोई भी कितने भी संदेशों को समझें इस अकेले सन्देश का महत्व उन सबसे अधिक है।

मत्ती 7:13–14 – में इस प्रभावशाली संदेश के अंत का आरम्भ होता है। यह एक समुचित समापन या निष्कर्ष है – यीशु के वचनों और उनके अनंतकालीन अनुप्रयोगों की यह अत्यन्त सीधी सपाट और उसकी गम्भीरता के संबंध में चुभने वाली, तीखी चेतावनी भी है। हम पर यह साबित होता है कि इस संदेश में मानवीय अस्तित्व की छोटी–मोटी नहीं वरन वजनदार (महत्वपूर्ण) बातों पर विचार किया गया है। जबकि मसीही मंच पर आते हैं और स्वर्ग और नरक, अनंत–जीवन और अनंत–विनाश जैसे मसलों पर चर्चा करते हैं, प्रत्येक वचन पर अनंतकाल की मोहर लगाई गई है। वे उस व्यक्ति के रूप में भयंकर गम्भीरता के साथ बोलते है, जिसे ऐसे अनंतकालिक मसलों पर

चर्चा करने का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है।[1] जब हम इसे पढ़ते हैं, हम चकित[2] होते हैं और इस बात से कायल भी होते हैं कि पहले कभी ऐसा समय नहीं आया जब हम पुत्र के विषय में उसके पिता की साक्षी पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देतेः "यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो" (मरकुस 9:7)।

इस वृतान्त में, और मत्ती 7 में आगे आने वाले वृतांतों में, हमारे सामने विरोधाभासों की एक श्रृंखला आयेगी। हम पायेंगे कि दो फाटक और दो मार्ग हैः एक जीवन और दूसरा विनाश को ले जाता है। हम दो प्रकार के प्रचारकों से मिलते हैं – एक वे जो भेड़ों को चराते हैं और दूसरे वे जो उनका शोषण करते हैं (पद 15)। हम दो प्रकार के वृक्ष पाते हैंः भले वृक्ष जो भले फल देते हैं, और काँटे–छाँटे जाते हैं, और दूसरे बुरे वृक्ष जो बुरे फल देतें हैं, जिन्हें काटा और आग में झोंका जाता है (पद 16–20)। हमें दो प्रकार के मसीही दावेदार मिलते हैः एक वे जो मसीह के प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं और स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते हैं, और दूसरे वे जो उसी प्रभु का अंगीकार करते हैं, परन्तु स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के लिये प्रतिबंधित हैं और नरक में डाले जाते हैं (पद 21–23)। अंत में हम दो घर बनाने वालों के बारे में पढ़ते हैं, एक तो चट्टान पर घर बनाता है और परमेश्वर के क्रोध की भीषण बाढ़ से सुरक्षित रहता है, और दूसरा वह जो बालू पर घर बनाता है और अंतिम एवं अपरिवर्तनीय दण्ड का भागीदार होकर ढ़ह जाता है।

फाटक मसीह है

हमारे वृतान्त के आरम्भ में गम्भीर और दृढ़ प्रोत्साहन है, "संकरे फाटक से प्रवेश करो"। इस आदेश में केवल 5 शब्द है, परन्तु वे असीम वजनदार है और हमारे पूरे ध्यान को केन्द्रित करने की माँग करते हैं। उन्हें सुनकर हम स्वयं को ऐसे प्रकाश में पाते हें कि हम छिप नहीं सकते। हम एक चौराहे पर होते है, एक स्थिति में जहाँ हमें निर्णय करना है। हम ऐसा दिखावा नहीं कर सकते कि हमने नहीं सुना और न हम विकल्प चुनने में देर कर सकते हैं या इसके लिये किसी और को जिम्मेवार बना सकते है। हमें जीवन और मृत्यु, स्वर्ग और नरक, मसीह और परमेश्वर के पास पहुँचाने वाले अन्य सभी संभावित द्वारों के बीच एक महत्वपूर्ण निर्णय करना चाहिये। जब हम 'निर्णय की घाटी' में होते हैं, हमारे चारों ओर अनगिनत फाटक (द्वार) होते हैं, प्रत्येक का एक अभिकर्त्ता होता है जो हमारा ध्यान आकर्षित करता है, किन्तु शोरगुल के बीच में हम मसीह का एक बड़ा शब्द सुनते हैं (योएल 3:14)। वे हमें अपने पास बुलाते हैं, वे ही एकमात्र सच्चे द्वार है, बन्दीगृह में से बाहर निकलने की एकमात्र दरार जो हमें स्वतंत्रता में ले जा सकती है। परमेश्वर ने यह दरार बनाई है, वह स्वयं वह दरार है, वह द्वार जिससे प्रवेश करने वाला उद्धार पा सकता

1 मत्ती 7:29.

2 मत्ती 7:28.

है।[3] हमें एक निर्णय करना चाहिये।3 हम किस की सुनेंगे? हम किस पर विश्वास करेंगे? पुनः परमेश्वर–पिता के वचन हमारे कानों में गूंजते हैं – इसकी सुनो! (मत्ती 17:5)।

नये नियम में यदि इंकार न करने योग्य कोई सत्य है जो सभी विवादों के मध्य अटल है, तो वह यह है कि नासरत का यीशु मसीह ''मार्ग सत्य और जीवन है'' और ''बिना उसके (यीशु मसीह) कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। ''परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमु. 2:5)। ''स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हम उद्धार पाये'' (प्रेरितों के काम 4:12)। यह बड़ा सत्य है और मसीह एवं मसीहत का विक्षुब्धकारी सत्य है। नासरत के यीशु समस्त संसार के सामने खड़े होकर पुकारते हैं, ''मैं हाँ, मैं ही यहोवा हूँ, और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं है'' (यशायाह 43:11)। इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि संसार अपने कान बन्द रखता है, अपने वस्त्र फाड़ता है, और अपने दांत पीसता है। परमेश्वर ने बहुत पहिले परमेश्वर की अनंत एक गुप्त इच्छा में इस मसले पर निर्णय दे दिया है।

मसीहत को एक अधिक विश्वव्यापी एवं केन्द्रीय भूमिका में आने के लिये कुछ इंच आगे बढ़ने की आवश्यकता है ताकि वह पृथ्वी पर सबसे अधिक प्रिय धर्मों में एक धर्म बनें। मसीहत और आधुनिक मनों के बीच संघर्ष को समाप्त करने के लिये एक छोटा सा परिवर्तन करने की आवश्यकता है ताकि एक धन्य सह–अस्तित्व और परस्पर सहमति के युग का शुभारम्भ हो सके। हमें अंग्रेजी के निश्चय सूचक आर्टिकल 'द' को हटाकर अनिश्चय सूचक 'अ' कहना पड़ेगा, हमें यह दावा करने के बदले कि 'केवल मसीह उद्धारकर्त्ता' है और कोई नहीं, यह कहना होगा कि मसीह भी एक उद्धारकर्त्ता है। यदि हम इस एक मसले पर समझौता करेंगे, मसीह के बारे में अधिक सुना जायेगा, और हम उनकी प्रशंसा के पात्र बनेंगे जो अभी हमारा विरोध करते, हमें संकीर्ण मन वाला कहते और वैश्विक मानव समाज का सार्वजनिक शत्रु मानते है। यदि हम यह करें, यह अधिक बड़ी बात प्रतीत नहीं होती, हम यह भी पायेंगे कि संसार मसीह को बहुतेरे उद्धारकर्त्ताओं के प्रमुख या प्रधान के रूप में मान्यता देगा, और हमें उसके मंत्रिमण्डल के महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में मान्य भी करेगा। फिर मसीही लोग इस बात पर समझौता क्यों नहीं करते, देखने में यह एक छोटी बात है? वे क्यों सामाजिक अलगाव, सताव और मृत्यु को चुनते है बजाय इसके कि अपनी विशिष्ठता का परित्याग कर दे? अति–आधुनिक मनों में सबसे अधिक सहनशील मनों को यह परेशान और कुपित करने के लिये पर्याप्त है।

किन्तु इसका उत्तर सरल है: मसीहत एक सम्पूर्ण धर्म है या धर्म नहीं है। नासरत का यीशु या तो परमेश्वर का पुत्र था या फिर वह ईश निन्दक था; या तो सत्य का महानतय प्रकाशन था या फिर इस पृथ्वी पर कभी जन्मा सबसे जघन्य झूठ बोलने वाला था, वह संसार का

3 यूहन्ना 10:9.

उद्धारकर्त्ता था या फिर निर्लज्ज धोकेबाज था। अन्य धर्मों के विपरीत मसीहत प्राथमिक रूप में शिक्षाओं या नीतिगत सिद्धांतों की परिक्रमा करने वाला ऐसा धर्म नहीं है जिसके चेले उसका आंशिक रूप में या पूर्ण रूप में अनुपालन करे। इसके बदले वह ऐसा धर्म है जो एक व्यक्ति पर आधारित है जो वह है या वह नहीं है जो वह अपने बारे में कहता है कि वह है। श्री सी. एस. लेंविस के अब प्रसिद्ध तीन विकल्पों में चुनाव करना होगा – यीशु नासरी विक्षिप्त, झूठे या फिर प्रभु है। उसके व्यक्तित्व के विषय में कोई ओछी बात नहीं कहीं जा सकती और पवित्रशास्त्र का दावा कि वह कौन है और अन्य मान्यताओं के बीच कोई मध्यमार्ग नहीं है, मसला या विचलन कितना भी कम हों, उसका पक्ष नहीं लिया जा सकता।[4] मसीही होने का अर्थ है कि हम इस विचार या विश्वास पर दृढ रहें। मसीह का व्यक्तित्व और न उसकी शिक्षाएँ किसी बात में छूट देने या समझौता करने की अनुमति देते हैं। यदि हम संसार की अनुशंसा चाहते है तब हमें मसीह की अनुशंसा को खोना होगा। यदि हम इस युग में हमारे जीवन को पाना चाहते हैं तो हमें अगले जीवन (मृत्यु के बाद) में उसे खोना होगा।[5]

यदि हम वास्तव में मसीही बन चुके हैं तब हम संसार के द्वारा हम से की जाने वाली किसी भी ऐसी माँग के सामने घुटने टेकने के खतरे को समझते हैं जिसका संबंध मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की अद्वितीयता से है। आगे, हम यह भी मानते हैं कि स्वयं के संरक्षण और इस बुरे युग की दृष्टि में स्वयं को अधिक स्वीकार योग्य बनाने से बढ़कर अन्य कोई विवश करने वाला कारण नहीं है।[6] हम जिस मसीह को जानते और जिसकी सेवा करते हैं उसे इस संसार से मोलभाव करने या अन्य तथा कथित उद्धारकर्त्ताओं और प्रभुओं के बीच एक स्थान प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह संसार का उद्धारकर्त्ता है और सबका प्रभु है।[7] पवित्रशास्त्र से

4 सी.एस. लैविस ने लिखा थाः ''मैं यहां प्रयत्न कर रहा हूं कि लोग परमेश्वर के बारे में सचमुच मूर्खता की बातें अक्सर करते रहते हैं, तो वे ऐसा न करें किः 'मैं' यीशु को एक महान नैतिक शिक्षक के रूप में स्वीकार करने को तैयार हूं, परंतु मैं उनका परमेश्वर होने का दावा स्वीकार नहीं करता।' यह वह एक बात है जो हमें नहीं कहना चाहिये। एक मनुष्य जो मात्र मनुष्य था और उस प्रकार की बातें करता था जैसा यीशु कहते थे तो वह मनुष्य एक बड़ा नैतिक शिक्षक नहीं हो जायेगा। वह या तो पागल होगा – उस स्तर तक के मनुष्य के समान जो कहता है कि वह एक उबला हुआ अंडा है – या फिर वह नर्क का शैतान होगा। आप को चुनाव करना आवश्यक है। या तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था, और हैः या कोई पागल मनुष्य या उससे बढ़कर कोई बुरा जन...... आप उसे मूर्ख मान खामोश हो सकते हो, आप उस पर थूक सकते हो और उसे शैतान समझ कर मार सकते हो; या आप उसके पैरों पर गिर सकते हो और उसे प्रभु और परमेश्वर पुकार सकते हो। परंतु उसके बारे में कि वह एक महान मानवीय शिक्षक था, ऐसी किसी दंभपूर्ण बकवास पर हमें नहीं जाना है। उसने यह चुनाव हमारे उपर नहीं छोड़ा है। ऐसा करने का उसका इरादा नहीं था।'' *मियर क्रिश्चियनिटी* (वेस्टवुड, एन जेः बारबर ऐंड कंपनी, 1943), 45।

5 मत्ती 10:33,39; 2 तीमुथियुस 2:12.

6 गलातियों 1:4.

7 यूहन्ना 4:42; प्रेरितों के काम 10:36; रोमियों 10:12.

हम जानते है कि परमेश्वर ने इसी यीशु को जिसे हमने क्रूस पर चढ़ाया, हमारा प्रभु और मसीहा दोनों बनाया है। उसने उसे अपने दाहिने हाथ बैठाया है, सभी सत्ता, अधिकार, सामर्थ, और प्रभुत्व से बहुत ऊँचे पर उठाया, और न केवल इस युग में पर आने वाले युग में भी जितने भी नाम है उन सबसे उपर। उसने घोषणा की है कि प्रत्येक घुटना उसके सामने झुकेगा और प्रत्येक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु नासरी ही प्रभु है।[8] भले ही सारा संसार इस सत्य का विरोध करें, परमेश्वर का आदेश बदला नहीं जा सकता। परमेश्वर ने वचन और सामर्थ के द्वारा मसीह के पुत्रत्व की उद्घोषणा कर दी है।[9] उसने उसे उद्धारकर्त्ता और सिय्योन में राजा नियुक्त कर दिया है, और पृथ्वी के देशों को उसकी मीरास और देश–देश के लोगों को उसकी निज सम्पत्ति होने के लिये दे दिया है।[10]

सुसमाचारकीय समाज के पास अब भी उद्धार के संकरे फाटक के रूप में मसीह की उद्घोषणा के बारे में आनन्द करने के पर्याप्त कारण है। अंगीकार करने वाले सुसमाचारकीय समाज का बहुमत मसीही विश्वास के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक पर आधारित है – सोलस क्रिस्टस, या केवल मसीह। यद्यपि बहुत सी बातों में सुसमाचार प्रचारकीय लोग परस्पर असहमत रहते हैं, कुछ कमतर महत्व की और कुछ अत्याधिक महत्व की बातों को लेकर, परन्तु हम इस बात में आनन्द कर सकते हैं कि अधिकांश लोग इस महान सत्य को मानते हैं और इसके लिये दुख उठाने के लिये तैयार भी है कि मसीह का व्यक्तित्व और पद (कार्य) अद्वितीय है। मसीह प्रभु है और उसे छोड़ कोई और उद्धारकर्त्ता नहीं है।[11]

किन्तु हमें सदैव सतर्क रहना चाहिये क्योंकि पतन के कुछ चिन्ह अंगीकार करने वाले सुसमाचार प्रचारकों के मध्य समझौते का संकेत करते है। समकालीन अति–आधुनिक मन के लिये अन्य दूसरों का निषेध करने से अधिक क्रूरतामय और विक्षुब्धकारी और कुछ नहीं है। संस्कृति, शिक्षा, राजनीति और आर्थिक जगत के प्रत्येक क्षेत्र में यहाँ तक कि सभी धर्मों में अब यह विश्वास किया जाने लगा है कि समाज में शांतिमय सह–अस्तित्व तभी संभव है जब सब एक दूसरे से सहमति रखें, या कम से कम किसी को गलत न कहें। इस कारण यदि कोई व्यक्ति विशेष या समुदाय (समाज) जो सत्य के किसी परम मानक स्तर को मानता है और अन्य दूसरों से भी उसी को मानने का आग्रह करता है, वह पूर्वाग्रही, पक्षपात करने वाला, उपहास करने योग्य और परिनिन्दा का हकदार है। हमें युग की इस नयी आत्मा (भावना) की शक्ति को कमतर नहीं आँकना चाहिये। जैसे–जैसे यह बढ़ती है, मसीह और केवल मसीह का प्रचार करने वालों को न केवल

---

8 प्रेरितों के काम 2:36; इफिसियों 1:20–22; फिलिप्पियों 2:10–11.

9 भजन. 2:7; मत्ती 3:17; 17:5; रोमियों 1:4.

10 भजन. 2:6, 8.

11 यशायाह 42:11.

गलत रूप में प्रस्तुत करती है, उन्हें दरकिनार भी करती है, साथ ही भयभीत करके और उनकी परिनिन्दा करके उन्हें चुप कराने का प्रयत्न भी करती है।

एक मसीही के रूप में हमें यह समझना चाहिये कि स्वर्ग के राज्य का संबंध मन, हृदय, और विवेक से है। हमें कभी भी उस आक्रामक संस्कृति का विरोध नहीं करना चाहिये जो हमें केवल सुसमाचार के सत्य, प्रार्थना की सामर्थ, और धार्मिकता के जीवन के प्रभाव को छोड़ अन्य किसी बात से घेरे है। साथ ही साथ हमें बढ़ते हुये विरोध या आत्म संरक्षण की परीक्षा को भी अवसर नहीं देना चाहिये। हमें उस झूठ पर विश्वास नहीं करना चाहिये जो वर्तमान में सुसमाचारकीय समाज में प्रचलित है कि हम सुसमाचार में संशोधन या पुर्नगठन करके उसके अति–आवश्यक तत्वों को खोए बिना भी दूसरों को ठोकर न पहुँचाने वाला बना सकते है। यह उन लोगों के द्वारा रचित बहुत बड़ा धोका है जिनका निर्बल धर्म–विज्ञान उन्हें परमेश्वर का भय मानना या उन निर्देशों पर गौर करना नहीं सिखाता, जो चेतावनी देकर कहते है, ''परन्तु यदि हम या कोई स्वर्गदूत भी उस सुसमाचार को छोड़कर जो हमने तुमको सुनाया है, कोई अन्य सुसमाचार तुम्हें सुनाये तो शापित हो'' (गलातियों 1:8)। यद्यपि अपने धीरज और सहनशीलता पर गर्व करने वाली किसी भी संस्कृति में हमारी स्थिति असहनीय है, यद्यपि यह हमारे लिये बड़ी से बड़ी कठिनाईयाँ उत्पन्न करती है, और बहुसंख्यक लोगों के बीच हमें निन्दनीय बनाती है, फिर भी हमें धारा के प्रवाह के विपरीत आगे बढ़ना चाहिये। जैसा कि हम से पहले विश्वासयोग्य संतों ने किया, हम ईश्वरविहीन संस्कृति के परामर्शों के सामने अपनी उद्घोषणा को समर्पित नहीं कर सकते। हमें पवित्रशास्त्र को आधार मानकर खड़े होना चाहिये। हमें मसीह के लिये खड़े होना चाहिये।[12] हम पीछे हट नहीं सकते और न हमें हटना चाहिये। मसीह की सर्वोच्चता और अद्वितीयता को कम करने का अर्थ उसका इंकार करना है।

आक्रामक रूप में प्रवेश करना

मसीह वह संकरा द्वार है, केवल वही उद्धार की ओर ले चलता है, हमें इस सत्य के प्रति अपने प्रत्युत्तर पर विचार करना चाहिये। हमें उस संकरे द्वार से प्रवेश करने की आज्ञा दी गई है। यह आज्ञा ग्रीक शब्द eiserchomai का अनुवाद है, जो कहीं प्रवेश करने की क्रिया अभिव्यक्त करता है। क्रिया एक आज्ञा है और सुनने वाले से आज्ञाकारिता की माँग करती है। यह क्रिया सामान्य भूतकाल से है जो एक लगातार नहीं पर अकेले कार्य की ओर संकेत है। विचार यह है कि मसीह

12 मार्टिन लूथर द्वारा 1521 में डायट ऑफ वर्म्स के उपर प्रसिद्व घोषणा से साभारः मैं अपने विष्वास को या तो पोप या सभाओं के प्रति समर्पित नहीं कर सकता, क्योंकि यह समझने में आसान है कि उनके मध्य अक्सर त्रुटियां और विसंगतियां है। इसलिए जब तक मैं पवित्रषास्त्र की गवाही से आष्वस्त नहीं हो जाता तब तक मैं....... अपनी राय नहीं बदल सकता और न ही बदलुंगा......। मैं दृढ हूं........ इसके अलावा मैं और कुछ नहीं कर सकता। इसलिए, हे परमेष्वर मेरी सहायता कर आमीन।

की शिक्षाओं के प्रत्युत्तर में सुनने वाला एक निर्णय ले या फिर निर्णायक रूप में प्रत्युत्तर दे। भला होगा कि हम स्मरण रखें कि मसीह एक दार्शनिक नहीं है जिसकी बातों पर मनन–चिन्तन करते रहना है, परन्तु प्रभु अवतार है, वे माँग करते है कि उन्हें सुना और उनकी आज्ञा का पालन किया जाये। उद्धार के लिये केवल एक द्वार है जो मनुष्यों के लिये सीमित समय के लिये खोला गया है। इसलिये लोगों को चेतावनी दी जाती है कि वे शीघ्रता और यत्नशीलता के बड़े संज्ञान के साथ उसमें प्रवेश करे। यदि हम यत्नशीलता वरन् आक्रामकता की कल्पना कर सके कि नूह के बताने के बाद और विश्वास न करने पर लोगों ने नूह के जहाज़ में प्रवेश करने के लिये कितना संघर्ष किया, तब संभव है कि हमें कुछ संज्ञान प्राप्त हो कि संकरे द्वार से प्रवेश करने के लिये लोगों को कितनी शीघ्रता और प्राथमिकता के साथ प्रयत्न करना चाहिये।

हमारे वृतान्त में शीघ्रता और यत्नशीलता का भाव लूका के सुसमाचार में यीशु के द्वारा दिये गये ऐसे ही एक अन्य उलाहना के प्रकाश में और अधिक बेहतर प्रदर्शित होता है। पवित्रशास्त्र में वर्णन है कि यीशु जब पूरे गाँव में शिक्षा दे रहा था, और किसी ने पूछा – ''हे प्रभु, क्या उद्धार पाने वाले थोड़े ही है?''(लूका 13:22)। यीशु ने उसे परोक्ष किन्तु त्रुटिरहित निश्चय के साथ कहा, ''संकरे द्वार से भीतर जाने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से हैं जो प्रवेश करने का यत्न तो करेंगे पर सफल न होंगे''(लूका 13:24)।

यीशु के शब्दों में 'फटकार' और 'चेतावनी' दोनों है। पहले, वह हमें फटकारते हैं कि 'संकरे द्वार से भीतर जाने का यत्न करो'। यत्न शब्द ग्रीक क्रिया शब्द agonizomai का अनुवाद है जिसका अंग्रेजी समकक्ष agonize है, इसका अर्थ 'संघर्ष करने', लड़ने, भरसक प्रयत्न करने, या तनाव उत्पन्न करने वाली लगन या धुन के साथ काम करने से है। मूल रूप में इसका अभिप्राय प्रतिद्वंदिता में उतरने या ज़िम के खेलों में स्पर्धा करने से है, अकसर इसे शत्रु या प्रतिद्वंदी के साथ लड़ने या कठिनाईयों और खतरों के विरूद्ध संघर्ष करने के अर्थ में उपयोग किया जाता है। एक अन्य संबंधित शब्द agonia है जिसे गतसमनी के बाग में यीशु के संघर्ष को अभिव्यक्त करने के लिये उपयोग किया गया है।[13] इस प्रकार हम समुचित रूप में निष्कर्ष निकाल सकते है कि ''संकरे द्वार से परमेश्वर के राज्य प्रवेश में करना जिसका द्वार मसीह है, किसी रीति से आसान नहीं होगा। यद्यपि हम पश्चाताप और विश्वास के द्वारा प्रवेश करते हैं, इसमें संघर्ष और यत्नशीलता शामिल है।

दूसरा, यीशु न केवल बड़ी यत्नशीलता के साथ भीतर प्रवेश करने के लिये फटकारते हैं, वे यह चेतावनी भी देते हैं कि – "बहुत से हैं जो प्रवेश करने का यत्न तो करेंगे पर सफल न होंगे।'' यह एक महत्वपूर्ण सत्य है जिसे अकसर बहुत ही गलत समझा जाता है। यीशु की शिक्षा यह नहीं है कि बहुत से लोग उद्धार पाना चाहेंगे पर उसके योग्य नहीं ठहरेंगे। परन्तु वे समझा रहे

13 लुका 22:44.

हैं कि यद्यपि बहुत से लोग प्रतिज्ञाओं की अभिलाषा और परमेश्वर के राज्य के लाभों की लालसा रखेंगे, किन्तु उनकी उदासीनता, हृदय की कठोरता, आत्मसंरक्षण की अभिलाषा, और संसार के प्रति प्रेम के कारण उद्धार की बुलाहट का प्रत्युत्तर देने से वंचित कर देगी। अपने आपे का इंकार करना आवश्यक है और परीक्षायें, सताव और परमेश्वर के राज्य के साथ जुड़ी कठिनाईयाँ सबसे अधिक प्रयत्नशील व्यक्तियों को छोड़ अन्य सभी को प्रवेश करने से रोक देगी। जॉन मैक आर्थर ने मसीह के शब्दों का अर्थ इस प्रकार समझा है, उन्होंने लिखा हैः

> मसीह के कहने का अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति यत्नशीलता के कारण स्वर्ग में प्रवेश करने की अहर्ता पा सकता है। वे भले ही कितना कठोर परिश्रम करें, पापी जन कभी भी स्वयं का उद्धार नहीं कर सकतें। उद्धार केवल अनुग्रह से है, कामों से नहीं। परन्तु संकरे द्वार से प्रवेश करना फिर भी कठिन है क्योंकि यह मानवीय गर्व या घमण्ड के रूप में कीमत माँगता है क्योंकि पापियों का स्वाभाविक प्रेम पाप के प्रति है, और संसार और शैतान का विरोध सत्य के प्रति है।[14]

यह विचार कि उद्धार प्राप्त करना अति आसान है, पवित्रशास्त्र, अति सम्माननीय धर्मशास्त्रियों और कलीसियाई इतिहास में हुये सेवकों के लिये पूरी तरह अजनबी विचार है। विलियम हेन्ड्रिकसेन लिखते है,

> इसलिए स्पष्ट है कि हमारे प्रभु उस तरीके का उपयोग नहीं करते जो कुछ स्वनाम धन्य, आत्मिक–जागृति के कर्णधार करते हैं, वे इस प्रकार बात करते हैं मानों उद्धार प्राप्त करना संसार की सबसे अधिक आसान बातों में से एक है। यीशु इसके विपरीत परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की ऐसी तस्वीर दिखाते है, जो एक ओर सबसे अधिक चाहनेयोग्य है, परन्तु दूसरी ओर, बिलकुल भी आसान नहीं है। प्रवेश द्वार संकरा है। उसे पाना आवश्यक है, और वह जिस मार्ग से जुड़ा है वह अत्याधिक संकरा है – क्या यह सत्य नहीं है कि वे सुसमाचार प्रचारक जो वास्तव में महान् थे – व्हाइट फील्ड, स्पर्जन और वर्तमान युग में उनके सुयोग्य अनुयायियों का विचार करे, उन्होंने इसी सत्य पर जोर दिया था और अब भी दे रहे है?[15]

न केवल यह कि उद्धार पाना आसान नहीं है परन्तु यह भी कि परमेश्वर की सामर्थ के बिना यह सम्पूर्ण रूप में असंभव है। वास्तव में, एक ऊँट के लिये सुई के छेद से निकलना एक व्यक्ति के हृदय–परिवर्तन से अधिक आसान है।[16] यद्यपि सभी हृदय–परिवर्तन के अनुभव भिन्न–भिन्न होते हैं और व्यक्तिगत संघर्ष की तीव्रता में एक समान नहीं होते, पवित्रशास्त्र हृदय–परिवर्तन को एक कठिन बात के रूप में दर्शाता है जिसमें खोजियों को अधिक दृढ़–निश्चय और निर्णायक–भाव

---

14 John MacArthur, *MacArthur Study Bible*, 1542.

15 William Hendriksen, *New Testament Commentary: Exposition of the Gospel According to Matthew* (Grand Rapids: Baker, 1973), 367.

16 मत्ती 9:24; मरकुस 10:25; लुका 18:25.

की आवश्यकता होती है। नीचे दिये गये वृतान्त या वचन इस सत्य को समझाने में विशेष रूप से सहायक है –

> "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से लेकर अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता जा रहा है, और प्रबल मनुष्य उस पर बलपूर्वक अधिकार कर लेते हैं" (मत्ती 11:12)।[17]

> "यूहन्ना के समय तक तो व्यवस्था और नबियों का प्रचार हुआ। तत्पश्चात् परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया गया, और प्रत्येक व्यक्ति उस में बलपूर्वक प्रवेश कर रहा है" (लूका 16:16)।

स्वर्ग का राज्य जैसे–जैसे समस्त संसार और प्रत्येक आने वाली पीढ़ी में आगे बढ़ता जाता है, कुछ लोग बलपूर्वक उसे दबाने की चेष्ठा करते हैं और कुछ समतुल्यों के साथ उस में प्रवेश का प्रयास करते हैं, यद्यपि वे बड़े बल के साथ आगे नहीं बढ़ते। यह सत्य हमें समझना और आत्मसात करना चाहिये कि स्वर्ग का राज्य निष्क्रिय, उदासीन, या परवाह न करने वालों के लिये नहीं है परन्तु उनके लिये है जो ईमानदारीपूर्वक और निर्णायक रूप में प्रवेश करने की इच्छा रखते हैं और उसके लिये विश्वास के साथ कार्य करते है। इसका अर्थ यह नहीं है कि लोग इच्छाशक्ति के बल पर या आत्म–अनुशासन और दृढ़–निश्चय के दम पर परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करते है। यीशु की शिक्षा यह नहीं है कि उनका राज्य केवल बलवानों के लिये है; वास्तव में, वे इसके विपरीत शिक्षा दे रहे है।

शीघ्रता, सच्चाई और यहाँ तक कि आक्रामकता जिसके द्वारा लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं, वह परमेश्वर के आत्मा के द्विपक्षीय कार्य का परिणाम है। पहला, आत्मा एक व्यक्ति को उद्धार के लिये उसकी असमर्थता का सम्पूर्ण संज्ञान देता है, इस प्रकार उसमें एक बलवन्त धुन का सृजन करता है कि वह उस एकमात्र को प्राप्त करे जो उसका उद्धार कर सकता है, अर्थात् यीशु मसीह। सामान्य परिस्थितियों में एक कमतर सौष्ठव वाला शारीरिक रूप में निर्बल व्यक्ति तीन बलवान और उच्च्व प्रशिक्षित खिलाड़ियों के लिये खतरा नहीं बन सकता। किन्तु यदि व्यक्ति जल में डूब रहा हो और तीसरी बार नीचे जा रहा हो, वह उन तीनों के लिये बहुत बड़ा खतरा बन सकता है। घबराहट और विवशता में, अपने विनाश का विचार करके, निर्बल व्यक्ति इतना बल और साहस जुटायेगा कि जो भी उसकी बाँहों की पकड़ में आ जाये, उसे वह जकड़ ले। भय के प्रभाव में वह बलपूर्वक बलवन्त मनुष्य को ऐसे जकड़ लेगा कि वह स्वयं को छुड़ा नहीं पायेगा। निर्बल मनुष्य का बिना रूकें जोर लगाकर जकड़ लेना, उसके किसी शारीरिक लक्षण या चरित्रगत गुण का परिणाम नहीं है परन्तु आवश्यकता का परिणाम है। ऐसे समय में जब डूबने और

17 इस विषयपाठ में और लूका की पुस्तक में मसीह के सही अर्थ के संदर्भ में विवाद निरंतर जारी रहता है 16:16 यद्यपि बहुत प्रकार की व्याख्यायें उत्पन्न हो चुकी हैं, उसमें सर्वाधिक प्रचलित वह है जो यहां लागू की गयी है: कि जो सचमुच परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं, वे ईमानदारी, दृढ़ निश्चय और बचाये जाने की उमंग के साथ चिंन्हित किये जाते हैं।

मरने की स्थिति है, उसने उद्धार की एक आशा पाई जिसे उससे दूर हटाया नहीं जा सकता चाहे कितना भी बल प्रयोग किया जाये।[18] उसी प्रकार व्यक्ति में स्वयं का उद्धार करने की असमर्थता और अयोग्यता की समझ उसे किसी से और उन सबसे लड़ने की शक्ति प्रदान करती है जो संकरे द्वार से प्रवेश करने के उसके मार्ग में उसका विरोध करते है।

दूसरा, परमेश्वर का आत्मा व्यक्ति के हृदय और मन को पुर्नजीवित करता है ताकि वह मसीह को अन्य सभी वस्तुओं को मिलाकर देखने से अधिक बहुमूल्य समझने लगे, और इस प्रकार वह उसमें सब बातों से बढ़कर मसीह को पाने का बलवन्त आग्रह उत्पन्न करता है। नये और पवित्र अनुरागों के साथ एक व्यक्ति उसे प्राप्त करने के लिये परिचालित होता है जो अब उसके लिये मसीह की अप्रतिरोधी सुन्दरता बन चुकी है। उसे केवल मसीह और बस मसीह ही चाहिये! यद्यपि उसे एक सिद्ध दशा में जीवन दिया गया है जिसका अंत नहीं है और उसके अनंत सुख के लिये सभी सृजित सौंदर्य दिया गया है, यदि मसीह वहाँ नहीं है, वह स्वयं को अनंत नरक की दुर्दशा में पाता है। परमेश्वर की आत्मा के पुनः सृजन और पुर्नजीवन के कार्य के द्वारा उसे मसीह की उत्कृष्टता के प्रति जागृत किया जाता है, और अन्य कोई भी बात ऊँचे से ऊँचे आकाश (स्वर्ग) में उसे अब संतुष्टि नहीं दे सकती। मसीह की तुलना में अन्य सभी वस्तुएं विकृत, छायामात्र, और दूषित है। जॉन फ्लेवल के शब्दों में:

> हे प्रिय सूर्य और प्रिय चन्द्रमा, प्रिय सितारों और प्रिय फूलों, प्रिय गुलाबों और प्रिय कुमुदिनी और प्रिय प्राणियों। परन्तु उनसे हजार वरन दस हजार गुना अधिक प्रिय प्रभु यीशु! खेद है, मैंने इस प्रकार की तुलना करके उसके साथ गलत किया। हे काले सूर्य और चन्द्रमा, पर हे उज्जवल प्रभु यीशु! हे काले फूलों, काली कुमुदिनी और गुलाबों, परन्तु हे उज्जवल, अति उज्जवल और अत्याधिक उज्जवल प्रभु यीशु! ओह, सभी उज्जवल, काली, कुरूप और सौन्दर्य विहीन वस्तुएँ, जब तुम्हे अति उज्जवल प्रभु यीशु के समकक्ष रखा जाये। हे काले आसमान, परन्तु हे उज्जवल मसीह! हे काले स्वर्गदूतों पर समझ से परे उज्जवल एवं प्रिय प्रभु यीशु![19]

परमेश्वर के आत्मा के कार्य के द्वारा एक व्यक्ति को आक्रामक, यहाँ तक कि अथक आक्रामक बनाया जा सकता है, जिसके दो प्रेरक तत्व है जो एक दूसरे अधिक से पूर्ण रूप में विपरीत नहीं हो सकतेः एक है विकर्षित करने वाला, आतंक या भय और दूसरा है – अप्रतिरोधी सौन्दर्य। फिर भी अंत मे, यदि वह केवल मसीह के चेहरे को देखेगा और उस चेहरे में स्वर्ग की महिमा की एक झलक नहीं देख पायेगा, वह नरक के आतंक को चुनेगा।

इसके पहले कि परमेश्वर ने हम पर दया की, हम सब धर्म की महान् वास्तविकताओं के प्रति उदासीन थे। तब परिस्थितियों या प्रचार या दोनों के द्वारा हमें हमारे पाप और हमारे जीवनों की रिक्तता के प्रति जागृत (सजग) किया गया। हमने पाया कि हम व्यवस्था की माँगों को पूरा

18 पास्टर चार्ल्स लायटर, लेखक के साथ वार्ता

19 The Life of John Flavel,' in *The Works of John Flavel* (London: Banner of Truth,1968), 1: ixx–xx.

करने में असमर्थ थे और निश्चित रूप में मिलने वाले दण्ड से स्वयं को स्वतंत्र करने की सामर्थ से विहीन थे। उस समय परमेश्वर के आत्मा ने मसीह को हम पर प्रगट किया और हमने उसे एक बेशकीमती मोती के रूप में देखा और हर कीमत पर उसे हासिल करना चाहा। हमने कीमत कम कराने के लिए मोलभाव करने का विचार नहीं किया परन्तु हम सब कुछ त्यागने, सबकुछ छोड़ने के लिये तैयार थे कि हम उसे पा सके।[20] अब जबकि हम उसके हैं, और वह हमारा है, हमने चखा और देखा है कि प्रभु अच्छा है, हम उसे जाने नहीं दे सकते, न जाने देंगे।[21] स्वयं का उद्धार न कर पाने की हमारी अयोग्यता की वास्तविकता और साथ में यह ज्ञान कि केवल उसी के पास अनंत जीवन की बातें है, एक अटल आक्रामकता के साथ उसी से लिपटे रहने और उसे जकड़े रहने का कारण है।[22] हम मसीह को छोड़ने के बदले अपनी पकड़ ढ़ीली करेंगे और एक चट्टानी दरार में नीचे गिरकर मृत्यु को प्राप्त करना अधिक पसंद करेंगे। हम उत्तर अटलांटिक के मध्य बिना किसी सहारे के बहना पसंद करेंगे, बजाय इसके कि परमेश्वर के बिना एक पल भी रहे। हम जानते हैं कि सर्वाधिक धार वाले पत्थरों और सर्वाधिक उग्र समुद्र परमेश्वर के क्रोध की तुलना में कुछ भी नहीं है, जो उनके लिये है जो बिना मसीह के है। आगे, अब क्योंकि हम उसे चख और देख चुके है कि प्रभु अच्छे हैं, अब जबकि हम उसकी सुन्दरता को निहार चुके है, इस कारण अब परमेश्वर के क्रोध का भय नहीं परन्तु उस के व्यक्तित्व का महात्मय और उत्कृष्ठता है जो हमें प्रभु से लिपटाकर रखते है।[23] हमारे नया जन्म प्राप्त हृदय और नये–नये प्राप्त अनुरागों को अवश्य है कि परमेश्वर चाहिये। हम सर्वाधिक बड़ी दुर्दशा के अतिरिक्त अन्य किसी दशा में परमेश्वर के बिना नहीं जी सकते। इस कारण हमारी आक्रामकता विवशता से और हमारी दयनीयता परमेश्वर की हमारी आवश्यकता और जरूरत के कारण उत्पन्न होती है।

अपना मार्ग बनाना

अब तक हमने विचार किया कि उद्धार को वास्तव में खोजने वालों के हृदय में पवित्र आक्रामकता, सच्चाई और शीघ्रता उत्पन्न करने वाली बातें कौन सी है। परन्तु अब हमें यह विचार करना चाहिये कि ये बातें क्यों इतनी आवश्यक है। उत्तर यह है कि एक सजग पापी और संकरे द्वार जिसमें से उसे गुजरना है, इन दोनों के बीच भयानक शत्रु और निराश करने वाली रूकावटें है।

यह सत्य 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' में बड़ी सुन्दरता और सशक्तता के साथ समझाया गया है – प्रमुख पात्र, क्रिश्चियन उस विनाश के बारे में समझ गया था जो विनाश की नगरी पर आने पर था। अपनी हताशा के मध्य उसे सुसमाचार प्रचारक द्वारा अनुवाद करने वाले के घर भेजा जाता

20 मत्ती 13:45–46.

21 भजन. 34:8.

22 यूहन्ना 6:68.

23 भजन. 27:4.

है जहाँ उसे बहुत से अद्‌भुत दृश्य दिखाये जाते हैं, उनमें से एक उन सत्यों पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है जिन पर हम अब विचार कर रहे है। बनयन लिखते हैं:

> तब अनुवाद करने वाले ने क्रिश्चियन को साथ लिया और महल के द्वार की ओर चल दिया। द्वार पर लोगों की बड़ी भीड़ खड़ी थी जो भीतर जाना चाहते थे परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं की; उस द्वार से कुछ दूर एक मेज पर पुस्तक और कलम लिये एक व्यक्ति बैठा था, और वह भीतर जाने वालों के नाम लिख रहा था। उसने यह भी देखा कि दरवाजे के मार्ग में बहुत से लोग शस्त्रधारण कर उसकी रक्षा करने खड़े थे। भीतर प्रवेश करने वाले व्यक्ति को चोट पहुँचाने और दुर्व्यवहार करने के लिये तैयार थे। यह देखकर क्रिश्चियन चकित रह गया।
>
> अंत में, जबकि सशस्त्र लोगों के डर से सभी लोग प्रवेश करने से डर रहे थे और रूके हुये थे, क्रिश्चियन ने देखा कि एक बलशाली, दृढ़–संकल्पित, लगने वाला व्यक्ति आगे बढ़ा और जो वहाँ बैठा उससे कहने लगा, ''महाशय, मेरा नाम लिखिये, और जब उसने नाम लिख लिया, उस मनुष्य ने अपनी तलबार खींची, अपने सिर पर टोप पहना, और उन सशस्त्र लोगों की ओर दौड़ा, जिन्होंने उस पर घातक प्रहार किये, परन्तु वह मनुष्य जरा भी निराश नहीं हुआ, उसने बलपूर्वक मारकाट की और आगे बढ़ता गया। इस प्रकार उसने रास्ता रोकने वालों को बहुत से घाव दिये और उसे भी बहुत से घाव मिले, उसने उनके बीच से अपना मार्ग बनाया और महल के भीतर प्रवेश कर गया। इस पर वहाँ महल में पहले से प्रवेश कर चुके लोगों की हर्षध्वनि सुनाई दी, वे कह रहे थे, ''आओ, आओ, अनंत महिमा में आओ, तुम विजय पाओगे।'' वे महल के ऊँचे स्थानों में खड़े थे।[24]

अनुवाद करने वाले के घर के इस दृश्य में बनयन ने हमें संकल्प की सजीव और चित्रमय तस्वीर दिखाई है जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने वालों में आवश्यक है। उद्धार की विवश आवश्यकता और मसीह के लिये एक तृप्त न होने वाली अभिलाषा से परिचालित जागृत पापी को उन सबके विरूद्ध प्रयत्न करना चाहिये जो उसका विरोध करता है और विश्वास के द्वारा मसीह को पकड़े रखना चाहिये। मसीह के कहने का अर्थ यही है जब वह उन लोगों को चेतावनी देते हैं जो उद्धार पायेंगे कि वे संकरे द्वार से प्रवेश करने का यत्न करे और आक्रामकता या बल के साथ उसमें प्रवेश करे।[25]

परमेश्वर के राज्य में यत्न पूर्वक प्रवेश करने का यह विचार सुधारवादियों, प्यूरिटन और आरम्भिक सुसमाचारवादियों की सामान्य बातचीत का अंग था। किन्तु यह भाषा समकालीन मसीहियों के लिये अब अनजानी या अजनबी है। उद्धार एवं हृदय–परिवर्तन का वर्णन अब केवल उन रूपकों के द्वारा किया जाता है जो शारीरिक मन के लिये सबसे अधिक रूचिकर है, वे रूपक उद्धार को आसानी से मिलने वाले उपहार के रूप में लेते हैं, जैसे कि एक नीची डाल से सेब का फल तोड़ लेना, या क्रिसमस पर मिले उपहार को खोलना। यद्यपि हमें हठपूर्वक अभिरक्षा करना

24 Bunyan, *New Pilgrim"s Progress*, 43–44.

25 मत्ती 11:12; लुका 13:24; 16:16.

और निडर होकर उद्घोषणा करना चाहिये कि उद्धार एक निःशुल्क उपहार है जो सबके लिये है, ये रूपक अपूर्ण है यदि उन्हें अकेले अकेले दर्शाया जाये। सिक्के का मूल्य तब है जब उसके दोनों और मुद्रण हो। इसी प्रकार सुसमाचार का निःशुक्ल प्रस्ताव अवश्य है कि उन निश्चित एवं विशेष चेतावनियों के साथ हो जिसमें लोगों से विश्वास के साथ परमेश्वर के राज्य में आगे बढ़ते जाने और प्रयत्न करते रहने की बुलाहट शामिल है कि वे तब तक प्रयत्न करते रहे जब तक पूर्ण निश्चय के साथ यह न जान ले कि उन्होंने द्वार के भीतर प्रवेश कर लिया है और ईनाम पा लिया है। इस विषय पर चार्ल्स स्पर्जन लिखते हैः

> अब हमारे उद्धारकर्त्ता ने जब देखा कि उसके पास आने के लिये कैसा संघर्ष चल रहा है उसने कहा, "यह एक तस्वीर मात्र है जो आत्मिक रूप में दर्शाती है कि उद्धार प्राप्त करने वाले क्या करते है। जब तुम मुझे खोजते और धक्कामुक्की करते हो, और मेरी आवाज़ सुनने पास आने के लिये एक दूसरे को हाथों और कोहनियों से ढ़केलते हो, इतना अधिक प्रयास करते हो कि तुम उद्धार को प्राप्त कर लो। क्योंकि स्वर्ग के राज्य पर बल के साथ प्रवेश किया जाता है और बलवान उसमें प्रवेश कर पाते है, मसीह ने अपनी स्वयं की तस्वीर दर्शाई है कि जीवते उद्धारकर्त्ता की अभिलाषा करने वाली भीड़ उस पर गिरी पड़ती है। वह उन्हें एक दूसरे को ढ़केलते, भीड़ बनाते और गिरे पड़ते हुए उसे पाने की अभिलाषा की व्यग्रता में और एक दूसरे को कुचलते हुये आगे बढ़ता हुआ देखता है। उसने अपने श्रोताओं को चेतावनी दी कि यदि उनके आत्मा में ऐसी धुन, ईमानदारी नहीं है, वे कभी उद्धार के लिये उस तक नहीं पहुँच पाएंगे... कोई मुझसे कह सकता है, "क्या आप हमें समझाना चाहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति उद्धार पाना चाहता है, अवश्य है कि वह आक्रामक हो और उद्धार प्राप्त करने के लिये हठपूर्वक धुन या ईमानदारी रखे?" हाँ मेरा मानना है, निश्चित तौर पर इस वृतान्त में यही धर्मशिक्षा है। पुनः कोई प्रत्युत्तर दे सकता है, "मैं सोचता था कि यह सब परमेश्वर का कार्य था" यह परमेश्वर का कार्य तो है, आरम्भ से लेकर अन्त तक, परन्तु जब परमेश्वर ने आत्मा में यह कार्य आरम्भ कर दिया है, परमेश्वर के काम का लगातार प्रभाव हमें काम करने नियुक्त करना है; और जहाँ परमेश्वर का आत्मा हमारे साथ वास्तव में यत्नशील है, हम भी यत्नशील होने लगते हैं। यह मात्र एक जाँच है, जिससे हम अन्तर पता कर सकते हैं कि पवित्रात्मा किसने पाया है और किसने नहीं पाया। जिन्होंने आत्मा पाया है वे धुन वाले आक्रामक लोग हैं, उनमें उद्धार पाने की बलवन्त व्यग्रता है और वे बलपूर्वक प्रयत्नशील रहते हैं कि वे संकरे द्वार से प्रवेश कर सके।[26]

वे जिनका उद्धार होना है, उनमें बनयन और स्पर्जन दोनों को ईमानदारी और संकल्पशक्ति दोनों के लक्षण दिखाई देते हैं, क्योकि यद्यपि उद्धार निःशुल्क है, फिर भी यह आसान नहीं है। भीतर बहुत सी रूकावटें और बाहर बहुत से शत्रु पापियों को मसीह के पास आने से रोकते हैं। उनका सामना करना और पवित्र आक्रामकता के साथ उन पर जय पाना आवश्यक है। यद्यपि ये रूकावटें संख्या में अनगिनत है, परन्तु हम उनमें से कुछ सबसे आम रूकावटों पर विचार करेंगे।

26 C. H. Spurgeon, *The New Park Street Pulpit* (Pasadena, Tex.: Pilgrim Publications, 1981), 1:217–18.

सर्वप्रथम, अवश्य है कि मसीह के पास आने वाले उद्धार की सबसे बड़ी रूकावट के विरूद्ध यत्न करें, अर्थात् उनकी स्व–धार्मिकता। उद्धार उन्हें दिया जाता है जो उद्धार पाने के लिये अपनी अहर्ता और परमेश्वर के सामने सही ठहरने में अयोग्यता को पूरी तरह स्वीकार करते है। कार्य और उद्धार, स्व–धार्मिकता और उद्धार करने वाला विनम्र विश्वास, एक दूसरे से सर्वथा विपरीत है। वे जो आधा रास्ता पार करके, मसीह की सहायता को अपने गुणों के पूरक के रूप में चाहते हैं, वे उद्धार से उतने ही दूर है जितने कि फरीसी थे जिनका दावा है कि उन्हें सहायता की कोई आवश्यकता नहीं है। इस बात में किसी प्रकार का विचलन संभव नहीं है। प्राचीन काल के पवित्र–जन अकसर कहा करते थे कि एक व्यक्ति उसकी बहुतेरी कमियों और गलतियों के बावजूद परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकता है, किन्तु यदि उसमें लेशमात्र भी स्व–धार्मिकता है, वह प्रवेश नहीं कर सकता। भीतर प्रवेश करने के लिये अवश्य है कि व्यक्ति अपनी कब्र पर चूना पोतने के प्रत्येक प्रयास का विरोध करे। उसे चाहिये कि वह अपने हृदय, शरीर, शैतान, और यहाँ तक कि समकालीन सुसमाचारकीय समाज के धोके के विरूद्ध यत्न करे और उसे काटकर आगे बढ़े जो उससे कहेगा कि वह इतना भी बुरा नहीं जितना पुरातनपंथी प्यूरिटन प्रचार उसे मानता है।

दूसरा, वे जो मसीह के पास आयेंगे उन्हें स्व–प्रशासन की अभिलाषा के विरूद्ध प्रयास करना चाहिये। पवित्रशास्त्र में ऐसे किसी उद्धार की चर्चा नहीं है जो यीशु का प्रभु के रूप में अंगीकार नहीं करता[27] या ऐसे वास्तविक अंगीकार को मान्यता नहीं देता जो परमेश्वर की इच्छा के प्रति एक नये और बढ़ने वाले समर्पण के सदंर्भ में स्वयं को प्रमाणित नहीं करता।[28] वे जो मसीह के पास आते हैं, अवश्य है कि वे सम्पूर्ण प्रभुत्व के उसके दावे और शिष्यता के प्रति उसकी महत्वपूर्ण माँगों दोनों को दृढ़तापूर्वक थामें रहे। वे जिन्हें उद्धार मिलेगा उनके लिये कुछ विनाशकारी विकल्पों के बीच में से अपना मार्ग निकालने के लिये संघर्ष करना आवश्यक है। लूका हमें बताते हैं कि जब यीशु ने उस बड़ी भीड़ को देखा जो उसके साथ–साथ चल रही थी, उसने कहा, ''यदि कोई मेरे पास आये, और अपने माता–पिता, पत्नी, बच्चों तथा भाई–बहिनों को यहाँ तक कि अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, वह मेरा चेला नहीं हो सकता। जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।''[29] चेला बनने वालों से ऐसी माँग करना यीशु की सुसमाचार प्रचार की विधि में एक आम बात थी।[30] भीड़ को खींचने और हर कीमत पर उसके पीछे आक्रामक धुन के साथ चलने वालों को प्रगट करने का उसका यह तरीका था। चूंकि आधुनिक युग का सुसमाचारवाद ऐसी माँग की अनदेखी करता है, सुनने वालों के पास इन महत्वपूर्ण और बड़े विकल्पों को चुनने का कोई कारण नहीं है। इस कारण बिना कीमत का

27 रोमियों 10:9.

28 मत्ती 7:21.

29 लुका 14:26–27.

30 मत्ती 10:39, 16:24–26; मरकुस 8:34–38; लुका 9:23–26.

अनुमान लगाये और प्रभु के सम्पूर्ण प्रभुत्व के प्रति उनके समर्पण के वास्तविक संज्ञान के बिना भीड़ मसीह का अंगीकार और उद्धार का दावा करती है। यही कारण है कि आधुनिक युग का सुसमाचार ऐसे उद्धार की उद्घोषणा करता है जो इतना निःशुल्क नहीं है जितना कि सस्ता है।

तीसरा, वे जो मसीह के पास आयेंगे उन्हें कुछ विशेष सुखदायी पापों से जुड़े रहने की अभिलाषा के विरूद्ध प्रयत्न करना चाहिये। मत्ती हमें एक धनी युवा शासक के बारे में बताता है जो अपने धर्म के पालन में ईमानदार था और नैतिक रूप में त्रुटिरहित था। वह पूरी ईमानदारी के साथ अनंत जीवन की अभिलाषा करता था, परन्तु हमारे प्रभु ने बिना गलती किये पहिचान (परख) लिया कि उसमें अपनी आत्मा के उद्धार से कहीं अधिक एक वस्तु अर्थात् उसके धन की अभिलाषा थी। एक अकेला पाप, जिसे उसने माना नहीं और छोड़ा नहीं, उसने उसे स्वर्ग से वंचित कर दिया और उसकी आत्मा को नरक के दण्ड के लिये दोषी ठहरा दिया। यह उस बाज पक्षी के समान है जो झील में गहिरे प्रवेश करता है क्योंकि वह एक बड़ी मछली को पकड़ना चाहता है जिसकी लालसा करता है पर उसे पानी से बाहर लेकर नहीं आ सकता। इसी प्रकार, पापी नरक में डूब जायेंगे यदि वे अपने पाप का परित्याग नहीं करते। यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि मसीह उस नवयुवक से सिद्धता की माँग नहीं कर रहे थे। उन्होंने यह माँग नहीं की कि वह अपने पाप को दूर करे ताकि उसे उद्धार मिल सके पर यह माँग की कि वह अपने पाप का अंगीकार करें, उससे घृणा करे, और उसके विरूद्ध प्रयत्न करें, उससे जुड़ाव की सभी बातों को आक्रामकता के साथ काट दें, और मसीह की ओर दौड़ें। अब्राहम को इसहाक का बलिदान करना था और धनी युवा शासक को अपनी धन–सम्पत्ति का समर्पण करना था। वे सब जो संकरे द्वार से प्रवेश करेंगे अवश्य है कि वे उन्हें सबसे अधिक सुख देने वाली बुराई का परित्याग करे ताकि उनकी धुन–लगन की सच्चाई प्रमाणित (प्रगट) हो।

चौथा, वे जो मसीह के पास आयेंगे उन्हें इस संसार के आकर्षण से बचने का प्रयत्न करना चाहिये। भौतिक–विज्ञान में वस्तु का भार जितना अधिक होता है उसकी गुरूत्वाकर्षण शक्ति भी उतनी अधिक होती है। हम यह नियम आत्मिक–जगत में भी लागू कर सकते हैं – पाप में पतित मानवता का बहुत अधिक भार, जिसमें उसके विचार, दृष्टिकोण और कार्य शामिल है, खोजियों पर बहुत अधिक प्रभाव डालते हैं। यदि उसे मसीह के पास आना है, उसे उन सब बातों से स्वयं को पृथक करना होगा जो संसार में हैं और उसके विरोध में हैं। उसे धारा के विरूद्ध तैरना चाहिये जबकि वे जो विपरीत दिशा में जा रहे हैं, वे उसे अपनी ओर वापस खींचना चाहेंगे। बनयन ने अद्भुत रीति पर पिलग्रिम्स प्रोग्रेस में इस सत्य को समझाया है। जैसे ही क्रिश्चियन ने विनाश की नगरी से भाग जाने का निर्णय लिया, उसके परिजन, मित्रों और साथी नागरिकों ने उसे रोकने के लिये लम्बे–लम्बे और चतुराई भरे तर्क दिये। जब वह संकरे द्वार की ओर चल पड़ा, उसे बहुत से ऐसे व्यक्ति मिले जो उसे वापस उसी संसार में लाना चाहते थे और क्रूस की ओर जाने वाले

मार्ग से दूर करना चाहते थे। क्रिश्चियन की बुरी तरह पराजय हो जाती यदि परमेश्वर का अनुग्रह न होता और सुसमाचार प्रचारक वहाँ नहीं आता, उसने क्रिश्चियन को चेतावनी दी कि उनकी न सुनें, और जब उसने सुना, उसे डाँटा।

इसी प्रकार, वे सब जो मसीह में विश्वास करने के द्वारा उद्धार पाना चाहते हैं, उनको धोकेबाजी से भरी परीक्षाओं और इस वर्तमान युग के दबावों के बीच से मार्ग निकालना होगा। उन्हें संसार से मैत्री तोड़नी होगी यदि वे मसीह को थामें रहना चाहते हैं, क्योंकि ये दोनों बातें एक दूसरे के बिना है और एक दूसरे के अत्याधिक विपरीत है। पवित्रशास्त्र हमें स्पष्ट रूप से चेतावनी देता है कि संसार से मित्रता रखना, परमेश्वर से बैर रखना है, और जो संसार का मित्र होना चाहता है, वह स्वयं को परमेश्वर का बैरी बनाता है।[31] इस कारण उद्धार पाने वालों के लिये बहुत बार दोहराई जाने वाली सूक्ति है – यदि मनुष्य सारें जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाये, उसे क्या लाभ होगा?[32]

पाँचवा, वे जो मसीह के पास आयेंगे, अवश्य है कि वे शत्रु अर्थात् – शैतान की झूठी बातों के विरूद्ध लडें। पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उसके जालफंदों में फँसा हुआ और उसकी इच्छा पूरी करने के लिये उसके दासत्व में है।[33] जब परमेश्वर के अनुग्रह से एक व्यक्ति अपने संज्ञान में आता है और बचना चाहता है, शैतान उसके पीछे गरजने वाले सिंह के समान घूमता है कि किसको फाड़ खाये।[34] यदि कोई सोचता है कि शैतान का पीछा करना मात्र दिखावा है, उसे यह समझना चाहिये कि शैतान की गुफा में उन अनगिनत खोजियों की सूखी हड्डियाँ और टूटे कंकाल भरे पड़े है जिन्होंने उसके झूठ पर कान लगाया और सदा के लिये नाश हो गये।[35] वह आरम्भ ही से हत्यारा है, और उसके मारे हुओं की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जाती है।[36] वह झूठा है और झूठों का पिता है, और परमेश्वर पर और उन सब पर जिनका परमेश्वर से मेल–मिलाप हुआ हैं, दोष लगाने वाला है। उसके पास उन सबके लिये जो मसीह को पाने का निर्णय करते है, विष का असीमित भण्डार है। उसके तीर विष से बुझे हैं और नरक की आग से प्रज्वलित है।[37] कोई कैसे विचार कर सकता है कि आत्माओं के ऐसे शत्रु के कारण जो आत्माओं को नाश करने की खोज में हैं, उद्धार प्राप्त करना आसान होगा? यीशु के दिनों के भ्रष्ट धार्मिक अगुवों के समान, वह लोगों के लिये स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करता है और जो प्रवेश करने का

31 याकुब 4:4.

32 मरकुस 8:36.

33 2 तीमुथियुस 2:26.

34 2 तीमुथियुस 2:26–26; 1 पतरस 5:8.

35 मत्ती 13:19; मरकुस 4:15.

36 उत्पत्ती 3:1, 4–5; यूहन्ना 8:44; प्रकाशितवाक्य 12:10.

37 इफिसियों 6:16.

प्रयत्न करते हैं, उनका विरोध करता है।[38] ऐसे हिंसक विरोध पर जयवंत होने के लिये परमेश्वर के अनुग्रह, परमेश्वर के वचन और आगे, और आगे बढ़ते रहने और मार्ग बनाने के लिये एक पवित्र आक्रामकता की आवश्यकता है।[39]

अंत में, वे जो मसीह के पास आयेंगे, अवश्य है कि वे सुसमाचार की कठिनाई के कारण हार मानने की परीक्षा के विरूद्ध प्रयत्न करे। यह सत्य आजकल लगभग अनसुना है, इसलिये इसे सावधानीपूर्वक समझाने की आवश्यकता है। पापियों के उद्धार के संदर्भ में परमेश्वर की कृपा का मार्ग अनंतकाल तक एक रहस्य बना रहेगा, जब वह स्वयं उसे प्रगट करने का निर्णय करेगा। कुछ लोग सुसमाचार सुनते है और तुरन्त ही उसे समझ लेते है वे जिस दिन उसे सुनते हैं उसी दिन से उसे पूर्ण निश्चय के साथ अपना लेते हैं। किन्तु कुछ लोगों के लिये मार्ग बहुत कठिन होता है। वे सुसमाचार सुनते और बड़ी ईमानदारी के साथ नजदीक आते हैं, परन्तु वे उसे समझ नहीं पाते और उसकी माँगों के कारण निर्बलता का अनुभव करते है। वे वास्तविक पश्चाताप और विश्वास की खोज करते हैं और दुविधा में रहते है कि क्या उन्होंने इनको पा लिया है, या नहीं। वे पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते परमेश्वर को पुकारते, और स्वयं को जाँचते–परखते है कि क्या वे विश्वास में है। वे थक जाने तक परिश्रम करते है और बीच में जरा भी विश्राम नहीं करते। बनयन के 'पिलग्रिम' के समान वे स्वयं को निराशा की केंचुली में परित्यक्त पाते हैं, जिन पर शंका और अवसाद का आधिपत्य ही जाता है। ऐसे प्रकरण में, उन्हें सावधानी और धीरज के साथ परामर्श दिया जाना चाहिये। सुसमाचार–प्रचारक को यह अवश्य जानना चाहिये कि कब वचन के साथ निकट जाये और कब उन्हें परमेश्वर के पास अकेला छोड़ दे। उसे चाहिये कि वह उनके संघर्ष को कम करने के लिये उनको कुछ काम देने का साहस न करे जैसे कि – पापियों की प्रार्थना, और तब उन्हें उद्धार मिल गया, जैसी घोषणा न करें, क्योंकि उन्होंने उनका बताया काम किया है।[40] उसे उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिये कि वे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विचार करें और प्रार्थना में परमेश्वर की खोज करें, जब तक कि मसीह पवित्रशास्त्र को समझने के लिये[41] उनके मनों को खोल न दे, जब तक कि परमेश्वर पिता उनके हृदयों में अपना प्रेम न उण्डेल दे और उनके लेपालक[42] होने की उद्घोषणा न करें; जब तक कि पवित्रात्मा उनकी आत्मा के साथ मिलकर गवाही न दें कि वे परमेश्वर की सन्तानें है।[43] इस प्रकार, उसे उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिये कि

38 मत्ती 23:13.

39 2 तीमुथियुस 2:25–26; 1 यूहन्ना 2:14.

40 पापी के द्वारा की जाने वाली प्रार्थना के द्वारा खोजी मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने तक लाना और उन्हें बचाया हुआ घोषित करना, यूहन्ना 1:12, रोमियों 10: 8–9 और प्रकाशितवाक्य 3:20 जैसे विषय पाठों की गलत व्याख्या पर आधारित है।

41 लुका 24:45.

42 रोमियों 5:5, 8:15; गलातियों 4:6.

43 रोमियों 8:16; 1 यूहन्ना 5:10.

वे संकरे द्वार से केवल विश्वास के बल पर प्रवेश करने का यत्न करे, वे मसीह में उनके विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करे जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने साक्षी दी है:

> इसलिये जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक बनी हुई है, तो हम सतर्क रहे, कहीं ऐसा न मालूम हो कि हम में से कोई उस से वंचित है। क्योंकि वास्तव में, हमें भी उन्हीं के सदृश्य सुसमाचार सुनाया गया, परन्तु उस सुने गये वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ, क्योंकि सुनने वालों ने उसे विश्वास के साथ ग्रहण नहीं किया। अतः हम जिन्होंने विश्वास किया है, विश्राम में प्रवेश करते हैं जैसा उसने कहा है, ''जैसा कि मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई:
>
> वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे''
> तथापि उसके कार्य संसार की नेंव के समय से पूरे हो चुके थे।[44]

अवश्य है कि सुसमाचार प्रचारक एक नाजुक संतुलन बनाकर रखें। एक ओर, कुछ लोग उद्धार को हल्के तौर पर लेते हैं और अपना पूरा जीवन एक झूठी निश्चयता के साथ बिताते हैं जिसका परिणाम उनको अंतिम रूप में दण्ड योग्य ठहराता है। वे अपने हृदय–परिवर्तन के अनुभव में वास्तविक पश्चाताप का प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते, उनका विश्वास उथला और गलत बातों पर होता है। साथ ही वे लगातार चलने वाले पवित्रीकरण या अनुग्रह में दिखाई देने वाली उन्नति का कोई प्रमाण नहीं दिखाते। वे केवल उनके सुसमाचार प्रचारकीय धर्म में आगे बढ़ते रहते हैं, जिसमें उन्हें अनंतकाल और धर्मपरायणता की वास्तव में परवाह (चिन्ता) नहीं होती, और न ही वे स्वयं की जाँच करने और यह देखने की आवश्यकता समझते हैं कि वे विश्वास में हैं या नहीं।[45]

दूसरी ओर, कुछ लोगों के धर्म विज्ञान में इसी के समकक्ष खतरनाक असंतुलन होता है, और वे स्वर्ग के दरवाजों को बन्द करते है और बड़ी कठोरता के साथ स्वयं को बाहर रखते हैं। वे उद्धार के बारे में अति उच्चविचार रखते हैं और इस मसलें को अत्याधिक गम्भीर मानते है। वे स्वेच्छापूर्वक स्वयं को बाइबल की चेतावनियों के आधीन जाँचते और परखते हैं, और अपनी बुलाहट एवं चुने जाने को सिद्ध करते है।[46] किन्तु उन्होंने एक ऐसा मानदण्ड निश्चित किया है जो पवित्रशास्त्र से परे है। वे मानते हैं कि इस बात का जरा सा भी निश्चय पाने से पहले अवश्य है कि उनमें सर्वाधिक परिपक्व मसीही के लक्षण पाये जाये। वे उनके आरम्भिक पश्चाताप और विश्वास की तुलना पवित्रशास्त्र में वर्णित उनसे करते हैं जिनमें यह दो धर्मशिक्षायें उनके सर्वाधिक सिद्ध एवं परिपक्व स्वरूप में है, और वे स्वयं में कमी घटी पाते है। वे उनके लगातार चलने वाले पवित्रीकरण जिसे सर्वाधिक सिद्ध एवं परिपक्व मसीहियों ने भी नहीं पाया है, और यहाँ भी वे स्वयं में कमी घटी पाते है। वे एक नैतिक मानदण्ड को प्राप्त करने के लिये परिश्रम और प्रयत्न करते हैं, जिसके द्वारा उन्हें उद्धार पाने का कुछ निश्चय मिल सके। और इस प्रक्रिया में उन्होंने मसीहत

44 और देखें इब्रानियों 3:18–19, 4:10–11.

45 2 कुरिन्थियों 13:5.

46 2 कुरिन्थियों 13:5; 2 पतरस 1:10.

को 'कर्मो के एक धर्म' में बदल दिया है। अब वे मसीह को नहीं देख रहे हैं परन्तु उन्होंने अपनी आँखें स्वयं पर लगा ली है और वे स्वयं पर और कार्य (उपलब्धियों) पर केन्द्रित है। यह ध्यान केन्द्र प्राणघातक है!

स्वाभाविक है, कि इन व्याधियों के निदान के लिये विभिन्न उपायों (समाधानों) की आवश्यकता है। प्रथम चरम अवस्था में लिप्त व्यक्ति के साथ उसके धर्म के सतहीपन का समाना किया जाना चाहिये। परन्तु दूसरी चरम अवस्था के व्यक्ति का सामना उसके धर्म की कठोरता के साथ करना चाहिये। यद्यपि हमारे युग और समय में प्रथम अधिक प्रचलित है, दूसरा यद्यपि अधिक धर्म–परायण लगता है, उतना ही प्राणघातक है। बार–बार सुसमाचार प्रचारक को विश्वासयोग्य ठहरना चाहिये और स्पष्ट एवं जोरदार उद्घोषणा करनी चाहिये कि उद्धार तब मिलता है जब एक व्यक्ति मसीह और केवल मसीह पर दृष्टि करने में अपनी सम्पूर्ण अयोग्यता को मान लेता है। उन्हें स्पष्ट रूप में समझना चाहिये कि भले ही हमारी निश्चयता हमारी वर्तमान जीवनशैली के समुचित परीक्षण से निर्बल या किलेबन्द हों, मूलभूत प्रश्न जो हमें पहले पूछना चाहिये, वे ये है, क्या हम मसीह यीशु को महिमा देते हैं, और शरीर पर जरा भी भरोसा नहीं रखते है?[47] क्या हमने स्वयं से सभी आशायें करना बन्द कर दिया है? क्या हमारी दृष्टि केवल मसीह पर है? क्या मसीह हमारे लिए बेशकीमती बन चुका है?

स्वयं को बाइबल से असम्मत कठोरता के साथ जाँचने परखने वालों को उद्धार की प्रकृति के बारे में कुछ और परामर्श देने की आवश्यकता है। यद्यपि यह लोकप्रिय सूक्ति है कि हृदय–परिवर्तन का परिणाम बदला हुआ जीवन है, यह कहना अधिक सही है कि यह लगातार बदलने वाले जीवन में दिखता है। यद्यपि हृदय–परिवर्तन परमेश्वर के सामने हमारी स्थिति में तुरन्त बदलाव की ओर ले चलता है, उसमें हमारे स्वभाव का परिवर्तन और आत्मिक जीवन का आरम्भ भी होता है। इस रूपान्तरण का बाहरी तौर पर क्रियान्वयन, दिखने वाली वास्तविकता बनने में समय लेता है और इसे बहुत से संघर्षों के बाद प्राप्त किया जा सकता है।[48] यद्यपि उद्धार का परिणाम लाने वाले पश्चाताप और विश्वास का सच्चा होना अवश्य है, हमें उसी गहिराई में टूटेपन और विश्वास की आशा, जो 40 वर्षों के मसीही में है, एक नये विश्वासी में नहीं करनी चाहिये। पश्चाताप और विश्वास, अन्य सभी मसीही सद्गुणों के समान पवित्रीकरण के आधीन है। आगे यह कि भले ही एक नया विश्वासी आरम्भ से ही अपनी जीवन शैली में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तनों को पायें, हमें उसमें उस पवित्रीकरण की आशा नहीं करनी चाहिये जो हम एक परिपक्व विश्वासी में पा सकते है। हमारे उद्धार का निश्चय, हमारे और अन्य दूसरे विश्वासियों के पवित्रीकरण की तुलना पर आधारित नहीं होना चाहिये। परन्तु केवल मसीह के गुणों पर आधारित होनी चाहिये

47 फिलिप्पियों 3:3.

48 रोमियों 5:1; 2 कुरिन्थियों 5:17; इफिसियों 2:4–5.

और हमारे जीवनों में परमेश्वर के कृपामय और पवित्र करने वाले काम को मान्यता देने पर आधारित होनी चाहिये।[49] हम उसकी कारीगरी बन चुके है।

उद्धार के निश्चय की दुविधा में जो लोग है, उनके लिये आधुनिक सुसमाचार वादियों के पास एक समाधान है। इन शंका करने वालो को केवल पापियों की प्रार्थना करने की आवश्यकता है और उन्हें प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना है। बाद में यदि आशंका बनी रहती है, उन्हें उसे शैतान की ओर से झूठी भर्त्सना मानकर उसका इंकार करना चाहिये। किन्तु यह झूठी औषधि है जो चंगाई को लगातार बनाकर नहीं रखेंगी, और इस औषधि को काम में लाने वाले सेवक वे हैं जो परमेश्वर के लोगों के टूटेपन को उपर ही उपर चंगा करते हैं। पापियों के हृदय–परिवर्तन को इतने सतही, क्षुद्र रूप से नहीं लेना चाहिये। बहुत कुछ दांव पर है, और परामर्श देते समय सेवक को उतनी ही सच्चाई के साथ काम करना चाहिये जितना एक खोजी को लगातार आगे बढ़ने का भाव प्रदर्शित करना चाहिये।

सुसमाचार-प्रचारकों के लिये समकालीन अनुप्रयोग

जब सुसमाचार–प्रचारक सुसमाचार का प्रचार करता है, उसे सभी लोगों को मसीह के पास आने की भावनामय बुलाहट देनी चाहिये, किन्तु अवश्य है कि वह यह बुलाहट पवित्रशास्त्र के अनुसार दे। उसे समझौता नहीं करना चाहिये और न ही मसीह द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने वालों से की गई मांगों से कमतर मांग करना चाहिये, और न ही उसे उसके श्रोताओं के सामने उद्धार का ऐसा तरीका या निश्चयता प्रस्तुत करनी चाहिये जो पवित्रशास्त्र में नहीं है और कलीसियाई इतिहास में अनजानी है। इन बातों में से कोई भी बात सुसमाचार में खतरनाक फेरबदल की द्योतक है और जिसका परिणाम – 'आसान विश्वासवाद' है, या फिर वह जिसे जर्मन शहीद डायट्रिच बॉनहॉपर 'सस्ते अनुग्रह' का नाम देते हैः

> सस्ते अनुग्रह का अर्थ है – अनुग्रह का बाजार में एक सस्ती वस्तु के रूप में बेचा जाना।[50] संस्कार, पापों की क्षमा, और धर्म की सांत्वना को कम से कम दाम पर बाजार में रखा जाता है। अनुग्रह को कलीसिया के खजाने की कभी समाप्त न होने वाली वस्तु के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ वह उदार हाथों से आशीष बरसाती है, बिना कोई सीमा तय किये या बिना कोई प्रश्न किये। अनुग्रह बिना किसी कीमत, अनुग्रह बिना दाम! और अनुग्रह का सार तत्व, जैसा हम मानते है कि दाम पहले ही चुका दिया गया है, और क्योंकि दाम चुकाया जा चुका है, सब कुछ निःशुल्क पाया जा सकता है। किन्तु दाम अमूल्य या असीम (अगण्य) था, उसे उपयोग करने और खर्च करने की संभावनायें भी असीम है। अनुग्रह 'सस्ता' न हो, तो क्या होगा?... ऐसी कलीसिया में संसार उसके पाप के लिये एक सस्ता आवरण पाता है... सस्ते अनुग्रह का अर्थ है – टूटेपन की आवश्यकता नहीं, उससे भी कम पाप से छुटकारा पाने की

49 फिलिप्पियों 2:12–13; इब्रानियों 12:5–11.

50 A seller of cheap or inferior goods; a hawker at a market or fair.

> वास्तविक अभिलाषा भी नहीं... सस्ते अनुग्रह का अर्थ है पापी को धर्मी ठहराये बिना, पाप को धार्मिकता ठहराना। केवल अनुग्रह सबकुछ करता है, वें कहते है, और इस कारण सब कुछ जैसा पहले था वैसा ही रह सकता है... सस्ता अनुग्रह पश्चाताप के बिना पाप क्षमा, कलीसियाई अनुशासन के बिना बपतिस्मा, बिना अंगीकार प्रभुभोज, बिना व्यक्तिगत अंगीकार के पाप क्षमा का प्रचार करना है। सस्ते अनुग्रह का अर्थ है शिष्यता के बिना अनुग्रह, क्रूस के बिना अनुग्रह और यीशु मसीह के बिना अनुग्रह जो जीवीत और अवतार है।[51]

मसीह की डाँट–फटकार और चेतावनियों के प्रकाश में हमें स्वयं से प्रश्न करना चाहिये – ''आधुनिक दिनों के सुसमाचार प्रचारवाद का अनुग्रह, बड़े दुख के साथ सस्ते अनुग्रह के बोन हॉफर के वर्णन से इतना अधिक क्यों मिलता है? परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये प्रयत्न और संघर्ष करने का विचार हमारे लिये इतना अनजाना क्यों है? ऐसा क्यों है कि बहुत से लोग बड़ी आसानी से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हुये प्रतीत होते है? इसके दो उत्तर है – पहला, सुसमाचार प्रचार में विरले ही वास्तविक रूप में मसीही बनने के मूल्य को बताया जाता है, इस कारण खोजियों के पास संघर्ष करने का कोई कारण नहीं है। मसीह की बुलाहट को लेकर सुनने वाले के हृदय में कोई आन्तरिक युद्ध नहीं चलता क्योंकि बाइबल सम्मत मसीहत की वास्तविकताओं से उसका सामना नहीं होता। मसीही शिष्यता की अति महत्वपूर्ण मांगों का स्थान अब ''परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और उनके पास आपके जीवन के लिये एक अद्‌भुत योजना है'', ने ले लिया है। मसीहत की पुर्नसंरचना करके उसे विस्तार दिया गया है जिसमें जोखिम कुछ नहीं केवल लाभ ही लाभ है। जिसमें व्यक्ति की संप्रभुता या स्वत्वाधिकार की अभिरक्षा की जाती है और बाइबल की आज्ञायें, संस्कृति और विवेक के आधार पर मात्र दिशा–निर्देशक है, जहाँ संसार से मित्रता रखने की न केवल अनुमति है वरन् उसे प्रोत्साहन भी दिया जाता है, जहाँ मसीही जनों की दोहरी नागरिकता है और भक्तों को सताया नहीं जाता।

जब सुसमाचार को वास्तव में प्रस्तुत किया जाता है, एक व्यक्ति युगों–युगों के इस युद्ध का सामना करता है: स्वत्वाधिकार विरूद्ध दूसरे के समक्ष अपनी इच्छा का समर्पण; स्व–संरक्षण विरूद्ध बहुमत के विरोध का जोखिम, प्रतिष्ठा एवं मनुष्यों द्वारा मान्यता के विरूद्ध सर्वोत्तम रूप में हाशिये पर रखा जाना और बदतर रूप में शहीद हो जाना; आँखों से दिखाई देने वाले संसार को पकड़े रहना विरूद्ध एक ऐसे नगर की खोज में रहना जिसकी आधारशिला है, जिसके रचने वाले और बनाने वाले स्वयं परमेश्वर है;[52] और पाप के मिटने वाले सुखों में आनन्द के विरूद्ध, इस संसार के खजानों से अधिक बढ़कर मसीह की निन्दा को बहुमूल्य मानने का विचार।[53]

---

51 Dietrich Bonhoeffer, *The Cost of Discipleship* (New York: Collier Books, 1963), 45–47.

52 इब्रानियों 11:9–10.

53 इब्रानियों 11:25–26.

जब सुसमाचार की मांगें, सुसमाचार के प्रस्तुतीकरण का एक अंग बन जाती है, तब सुसमाचार एक बार फिर विक्षुब्धकारी, और मसीह के लिये व्यक्तिगत निर्णय एक बड़ी यत्न शीलता और संघर्ष का परिणाम बन जाता है। वे जिनका हृदय–परिवर्तन होता है, वे बनयन के उस व्यक्ति के समान होंगे जिनकी मुखाकृति पर उसके निश्चय की दृढ़ता है, जो अपना टोप पहनते, अपनी तलवार निकालकर और संकरे द्वार की ओर दौड़ते और शरीर, संसार, और शैतान की सब बातों के बीच जो उसका विरोध करते हैं, बलपूर्वक अपना मार्ग बनाते हुये आगे बढ़ते जाते है। वह उस व्यक्ति के समान होगा जो एक मीनार बनाना चाहते हैं, परन्तु पहले बैठकर कीमत का आँकलन करते हैं ताकि देखे कि क्या वे उसे पूरा कर सकते है।[54] वह उस राजा के समान है जो युद्ध में दूसरे राजा का सामना करने के लिये जाने से पहले बैठकर विचार करता है कि क्या वह इतना बलशाली है कि जो उस पर 20 हजार लेकर आक्रमण करने वाले का सामना 10 हजार की सेना लेकर कर सकता है।[55] साथ ही साथ वह बीज बोने वाले के दृष्टांत में सतही तौर पर हृदय–परिवर्तन करने वाले के विपरीत ठहरेगा। वह पहले वचन सुनकर उसे अतिशीघ्र आनन्द के साथ स्वीकार करता है किन्तु उसकी जड़ें गहिरी नहीं होती। उसका अंगीकार कुछ समय का है और जब तकलीफें और सताव उस पर आते हैं और वह शीघ्र ही गिर जाता है।[56] दूसरा वह मनुष्य है जो वचन सुनता है, और संसार की चिन्ता और धन का धोका वचन को दबा देता है और वह निष्फल हो जाता है (मत्ती 13:22)।

दूसरा, बहुत से लोग प्रतीत होते है कि बड़े आराम से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं क्योंकि हमने आत्मा के द्वारा जनित पश्चाताप और विश्वास का स्थान विश्वासवाद और सुविधाजनक रीति–रिवाजों को दे दिया है। इस कारण खोजने वालों को सुसमाचार के महान् सत्यों को दृढ़तापूर्वक पकड़ने या यह परखने की आवश्यकता नहीं है कि ये सत्य उनके जीवन में एक वास्तविकता बन चुके हैं या नहीं। उन्हें 'पापियों की प्रार्थना' दोहराने की विधि सम्पन्न करना है, और उन्हें उद्धार की निश्चयता दी जाती है क्योंकि उन्होंने यह विधि सम्पन्न की है। तब, वह अपने जीवन भर यह मानकर चलता है कि वह विधि, अनन्त जीवन के लिये उसकी आशा का आधार है। यही कारण है कि गलियों और दर्शक दीर्घा में बैठे बहुत से शारीरिक और सांसारिक लोग यह मान बैठे हैं कि परमेश्वर के सामने उन्हें सही ठहराया गया है, क्योंकि अतीत में उन्होंने ऐसा कुछ किया है जिसका वास्तव में उनके वर्तमान पर बहुत कम या कुछ भी प्रभाव नहीं है।

यही वह स्थान है जहाँ हम एक ओर पवित्रशास्त्र और कलीसिया के इतिहास और दूसरी ओर समकालीन सुसमाचार प्रचारकीय तौर–तरीकों के बीच बड़ा भारी अन्तर पाते हैं। जब सुसमाचार प्रचारवाद बाइबल सम्मत होता है, तब सुसमाचार प्रचार किया जाता है और लोगों

---

54 लुका 14:25–30.

55 लुका 14:31–33.

56 मत्ती 13:20–21.

को पश्चाताप और विश्वास करने के लिये चिताया जाता है। वे जो सुसमाचार में प्रगट अभिरूचि रखते है, वे वास्तविक पश्चाताप और विश्वास की प्रकृति को अत्याधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिये पवित्रशास्त्र के पास लाये जाते है। आगे उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है कि वे पवित्रशास्त्र के प्रकाश में स्वयं का परीक्षण करे और सुनिश्चित करे कि क्या ये जुडवाँ सुसमाचार प्रचारकीय अनुग्रह उनके हृदयों में एक वास्तविकता बन चुकी है, या नहीं। यदि वे पवित्रशास्त्र पढ़ने के द्वारा कोई निश्चयता नहीं पाते तब सुसमाचार प्रचारक उन्हें किसी सुसमाचार प्रचारकीय विधि को सम्पन्न करने, सौदा तय करने के आधार पर निश्चयता प्रदान करने का प्रयास नहीं करता और न उनके उद्धार पा लेने की उद्घोषणा करता है। इसके बदले वह उन्हें लगातार परामर्श देता है, उनके लिये प्रार्थना करता है, और सबसे बढ़कर उन्हें प्रार्थना करने और पवित्रशास्त्र पढ़ने के द्वारा परमेश्वर की खोज करने का प्रोत्साहन देता है – जब तक कि उन्हें स्वयं परमेश्वर से वह निश्चयता न मिल जाये, जिसे वे खोजते है।

यही वह स्थान है जहाँ खोजी अकसर बड़े से बड़े संघर्ष को पाते हैं और उन्हें पवित्र आक्रामकता की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। पिलग्रिम्स प्रोग्रेस के सुसमाचार प्रचारक के समान आधुनिक दिनों का सुसमाचार प्रचारक आत्मिक यात्री को संकरे द्वार की ओर केवल संकेत कर सकता है; वह उसे उस द्वार से प्रवेश नहीं करा सकता। आत्मिक यात्री को अकेले ही यह युद्ध लड़ना होगा। परमेश्वर के समक्ष समर्पण से रोकने वाली प्रत्येक रूकावट के विरूद्ध उसे प्रयत्न करना चाहिये। उसे पवित्रशास्त्र से तब तक मल्लयुद्ध करना चाहिये, जब तक कि वह उसे जान न ले, उसे पश्चाताप और विश्वास के अर्थ को दृढ़ता से लेना चाहिये जब तक उसे निश्चत न हो जाये कि उसने उन्हें पा लिया है। यहाँ तक कि उसे परमेश्वर के साथ भी प्रयत्नशील रहना चाहिये जब तक कि परमेश्वर उसे प्रमाणित न कर दे। खोजने वाले को अकेले ही आगे बढ़ते जाना चाहिये, जब तक कि वह प्रभु को न पा लें या प्रभु उसे न पा लें।

यहाँ सुसमाचार प्रचारक को सबसे अधिक परीक्षा का सामना करना पड़ता है कि वह खोजी व्यक्ति के लिये हस्तक्षेप करे या उसे कोई ऐसा तरीका बताये जिसके द्वारा खोजी व्यक्ति निश्चयता पा ले। किन्तु इस प्रकार की कोई भी निश्चयता यांत्रिक और स्वाभाविक होगी और वह परमेश्वर के वास्तविक कार्य को नष्ट करेगी। अवश्य है कि खोजने वाले को परमेश्वर के पास अकेला छोड़ दिया जाये, उसे मसीह के साथ बातचीत करनी चाहिये, उसे उद्धार के लिये पश्चाताप पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये, और गहिराई से सोचना चाहिये कि ऐसी कोई बात उसके निज जीवन में प्रगट है या नहीं। उसे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विचार करना चाहिये और उन प्रतिज्ञाओं को दृढ़तापूर्वक थाम लेना चाहिये जब तक कि 'आत्मा के कार्य' के द्वारा बाइबल–सम्मत निश्चयता

उसके हृदय में न आ जायें, परमेश्वर का प्रेम उसके हृदय में न उण्डेला जाये और लेपालकपन का आत्मा उसे "हे अब्बा, हे पिता" कहकर प्रार्थना करने विवश न कर दे।[57]

जब लोग विश्वास का अंगीकार कर ले, बाइबल–सम्मत सुसमाचार प्रचारक को चाहिये कि उन्हें बड़ें आनन्द के साथ प्रोत्साहन दे, किन्तु चेतावनी दिये बिना नहीं। उन्हें यह जानना चाहिये कि यदि उनकी वर्तमान निश्चयता सच्ची है तो वे प्रभु के साथ आगे बढ़ेंगे और बहुत सी परीक्षाओं से गुजरकर पवित्रीकरण और मसीह की अनुकृति में बढ़ेंगे। परन्तु संसार में लौट जाने पर या फिर बिना ईश्वरीय अनुशासन शारीरिकता में लगातार बने रहने पर उनके अंगीकार की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह लगेगा।[58] उन्हें परमेश्वर की बुलाहट के बारे में और अपने चुनाव को सुनिश्चित करने के लिये और भी अधिक यत्नशील होना चाहिये।[59] उन्हें पवित्रशास्त्र के प्रकाश में स्वयं की जाँच या परीक्षण करना चाहिये कि वे विश्वास में हैं कि नहीं।[60]

व्यक्ति की आत्मा में परमेश्वर की आत्मा का कार्य एक बहुत बड़ा रहस्य है जो परमेश्वर की कृपा पर हमारे सम्पूर्ण भरोसे की मांग करता है। कुछ लोग सुसमाचार सुनते हैं, पश्चाताप और विश्वास करते हैं और परमेश्वर की आत्मा से जनित निश्चयता को तुरन्त प्राप्त करते है। अन्य दूसरे दिनों, सप्ताहों, यहाँ तक कि महीनों तक वैसी निश्चयता पाने के लिये संघर्ष करते रहते है। जिन्हें सुसमाचार सौंपा गया है, उनके समान हमें सावधान रहना होगा कि प्रत्येक प्रकरण में अत्याधिक परख और धीरज के साथ सही कार्यवाही करें। किसी को सुसमाचारकीय तंत्र के द्वारा अगुवाई करना और उन्हें उनके वास्तविक अनुपालन के कारण उद्धार प्राप्त बताना एक बात है। किन्तु उन्हें उद्धार की प्रतिज्ञाओं तक पहुँचाना और जब तक वे संकरे द्वार से प्रवेश न कर ले, और परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गयी निश्चयता का अद्‌भुत वरदान (उपहार) न प्राप्त कर ले तब तक उनके साथ प्रतीक्षा करना दूसरी बात है।

---

57 रोमियों 5:5; 18:5–16; गलातियों 4:6.

58 इब्रानियों 12:5–8.

59 2 पतरस 1:10.

60 2 कुरिन्थियों 13:5.

अध्याय – 17

संकरा मार्ग

संकरे फाटक से प्रवेश करो क्योंकि विशाल है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से है जो उस से प्रवेश करते है। परन्तु छोटा है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है और थोड़े ही है जो उसे पाते है।

– मत्ती 7:13–14

मत्ती 7:13–14 – में न केवल संकरे फाटक का वर्णन है परन्तु संकरे मार्ग का वर्णन भी है, दोनों ही छोटे और संकरे है। इस से हम समझ सकते हैं कि हृदय–परिवर्तन की व्याख्या केवल द्वार से नहीं की जा सकती जिससे व्यक्ति प्रवेश करता है परन्तु उस मार्ग से भी की जाती है जिससे वह चलता है। जब हम समकालीन सुसमाचार प्रचारकीय प्रचार कार्य का सर्वेक्षण करते हैं, तब प्रतीत होता है कि अकसर केवल आधी कहानी ही सुनायी जाती है।

परमेश्वर के अनुग्रह से अधिकांश सुसमाचार–प्रचारकीय जगत अब भी इस सत्य को मानते हैं कि यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर एवं मनुष्यों के बीच मध्यस्थ है।[1] हम परमेश्वर की प्रशंसा कर सकते हैं कि Sola Gratia और Sola fide की धर्मशिक्षाओं में अधिकतर लोग दृढ़ बनें रहते हैं (अर्थात उद्धार अनुग्रह के द्वारा केवल विश्वास से हैं)।[2] किन्तु परमेश्वर के राज्य में कैसे प्रवेश करें इस विषय पर बहुत अधिक प्रचार किया जाता है जबकि उन प्रमाणों के

1 यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2:5.

2 इफिसियों 2:8–9.

विषय में बहुत कम कहा जाता है जो व्यक्ति का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश प्रमाणित करते हैं। हम संकरे फाटक के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं, परन्तु हमने उस फाटक से प्रवेश कर लिया है, उसका प्रमाण है कि हम संकरे मार्ग पर चल रहे है।[3] हम मसीह के व्यक्ति और कार्य पर केवल विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहराये जाते हैं, किन्तु हमारे धर्मी ठहराये जाने का प्रमाण हमारा लगातार चलने वाला पवित्रीकरण है।[4] संकरा फाटक और संकरा मार्ग अपृथकनीय है। वह जो 'प्रथम' से प्रवेश करता है, उसका जीवन 'दूसरा' परिभाषित करता है।

संकरे मार्ग की परिभाषा

शब्द मार्ग ग्रीक भाषा में hodós है, जिसका शाब्दिक अर्थ एक मार्ग या सड़क है जिस पर लोग चलते हैं। रूपक के रूप में इसका आशय जीवन के मार्ग, आचरण के प्रकार, या सोच–विचार के तरीके से है। यह शब्द प्रेरितों के काम पुस्तक में छः बार मसीहत के पर्यायवाची शब्द के रूप में आया है।[5] इस प्रकार हम शीघ्र जान लेते हैं कि मसीही विश्वास अतीत में मसीह को ग्रहण करने के निर्णय से कहीं बढ़कर है। यह लगातार बना रहने वाला विश्वास है जो व्यक्ति के जीवन की दिशा को बदल देता है।

शब्द 'संकरा' ग्रीक भाषा के शब्द thlibo से हैं, जिसका अर्थ है आगे बढ़ना, दाख की बारी में काम करते हुये दाख रौंदना या कुचलना या मनुष्यों की भीड़ जो एक दूसरे पर गिर पड़ती हो। अक्रिय रूप में शब्द का अर्थ है तकलीफ, कठिनाई, या सताव सहना।[6] hodós के साथ मिलकर इसका अभिप्राय है – ऐसा मार्ग जो भीड़ भरा, संकरा और कम स्थान वाला (सिकुड़ा हुआ) है। विभिन्न लेखकों और प्रचारकों ने इस रूपक के अर्थ को समझाने के लिये एक संकरे मार्ग की तस्वीर बनाई है जिसमें एक बार में एक ही व्यक्ति चल सकता है दोनों ओर ऊँची–ऊँची चट्टानों की दीवार है। मार्ग का यह संकरापन मसीही जीवन के दो महत्वपूर्ण सत्यों की ओर संकेत करता है। यह मार्ग परमेश्वर की इच्छा से परिभाषित है और यह विरोध, कठिनाई और बड़े संघर्ष से युक्त मार्ग है।

---

3 William Hendriksen writes, "The order "gate" followed by "way" is therefore very natural and makes good sense, especially in view of what is probably the intended meaning: right initial choice (conversion) followed by sanctification; or else, wrong initial choice followed by gradual hardening.' *Matthew*, 368–69.

4 Hendriksen writes, "It is clear from the description that these—gate and way— should be combined: narrow gate and constricted way, wide gate and broad or roomy way. *Matthew*, 367.

5 प्रेरितों के काम 9:2, 19:9, 23, 22:14, 22.

6 The noun *thlípsis* is translated as "tribulation' in Romans 2:9 and 8:35.

परमेश्वर की इच्छा से परिभाषित मार्ग

वे जो संकरे फाटक से प्रवेश करते हैं वे संकरे मार्ग पर चलेंगे। वे बिना लक्ष्य के नहीं चलेंगे और न ही 'वैनिटी फेयर' और संसार के किलिंग फील्ड्स में स्वतंत्र होकर घूमने–फिरने की अनुमति पाएंगे। यह मार्ग परमेश्वर की इच्छा के द्वारा अच्छी तरह परिभाषित होगा और वे परमेश्वर की निरन्तर दी जाने वाली कृपा के द्वारा सुरक्षित रखे जाएंगे। वह उन्हें शिक्षा, अगुवाई और अनुसरण करने की सामर्थ देगा, और जब वे मार्ग से भटकेंगे तब उनकी ताड़ना करेगा। जैसा यीशु ने कहा था कि उसकी भेड़ें उसका शब्द सुनती और *उसके पीछे–पीछे* चलती है।[7]

परमेश्वर के निज लोगों के आचरण के लिये परमेश्वर द्वारा निर्धारित मार्ग समस्त पुराने नियम की पुस्तकों में एक आम विचार (अवधारणा) है। यह प्रभु का मार्ग, धर्मी का मार्ग, और धार्मिकता का मार्ग कहा गया है।[8] इस मार्ग में परमेश्वर की आज्ञाएँ है, और यह वास्तविक विश्वास के लिए एक बड़ी लिटमस जाँच है। भजनों की पुस्तक में हम पाते हैं कि प्रभु का मार्ग और धर्मियों का मार्ग, परमेश्वर की आज्ञाओं विधियों, निर्देशों और साक्षियों का समानर्थी है।[9] साथ ही, यह मार्ग अत्याधिक उपयोग किया गया एवं दोनों ओर से बंधा हुआ मार्ग है। यह मार्ग आरम्भ ही से, परमेश्वर द्वारा मनुष्यों से बातचीत के समय से ही अनगिनत पवित्रजनों के द्वारा उपयोग किया गया है, और भूमि पर काटकर बनाया जा चुका है। भजन 23 में दाऊद इस सत्य में आनन्दित होता है कि परमेश्वर उसे "धार्मिकता के मार्ग' में चला रहा था। वहाँ शब्द मार्ग, इब्रानी भाषा के शब्द ma'gal का अनुवाद है जिसका अर्थ है भूमि पर बनी लम्बी, गहिरी और संकरी खाई (खंदक)।

संकरे मार्ग के बारे में एक और महत्वपूर्ण सत्य यह है कि जब पवित्रजन इस पर चलते है इसके लक्षण (चिन्ह) अधिकाधिक स्पष्ट होते जाते है। नीतिवचन की पुस्तक हमें निर्देश देती है कि धर्मी का मार्ग, सूर्योदय की आभा के समान है जो दिन से दोपहर तक अधिकाधिक तेज प्रकाश देती है।[10] जब नया विश्वासी पहली बार इस मार्ग में पाँव धरता है, तब मार्ग को पहिचानने में अकसर कठिनाई होती है, किन्तु जब वह चलना आरम्भ करता है तब मार्ग अधिक आसानी से पहिचान में आने लगता है। अपने मन के नये हो जाने से वह परमेश्वर की इच्छा को जानना और पहिचानना आरम्भ करता है कि वह 'भली, ग्रहण योग्य और सिद्ध' इच्छा क्या है (रोमियों 12:2)। इब्रानियों का लेखक बताता है कि केवल दूध पीने वाले नये विश्वासी धार्मिकता के वचन के आदी नहीं है क्योंकि वे अभी शिशु ही है। परन्तु परिपक्वता में बढ़ने पर वे अधिक ठोस आहार ले सकते हैं और अभ्यास के द्वारा उनकी इंद्रियाँ भले और बुरे के ज्ञान की पहिचान में प्रशिक्षित हो जाती है।[11]

---

7 यूहन्ना 10:27.

8 उत्पत्ती 18:19; न्यायियों 2:22; भजन. 1:6, 23:3; नीतीवचन 8:20; 12:28; 16:31; यशायाह 26:7.

9 भजन. 119:14, 27, 32–33.

10 नीतीवचन 4:18.

11 इब्रानियों 5:13–14.

संकरे मार्ग की पहिचान परमेश्वर की इच्छा से है जो उसकी आज्ञाओं, नियमों, आदेशों और बुद्धि में प्रगट की गई है। किन्तु हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम इन सभी बातों को यीशु मसीह के व्यक्तित्व के संदर्भ के भीतर ही समझें। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वही मार्ग, सत्य और जीवन है और बिना उसके कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।[12] इस कारण हमें लगातार स्मरण रखना चाहिए कि इस संकरे मार्ग में हम किसी विशेष आचरण नियमावली या जीवन के लिये प्रक्रिया दर्शाने वाली किसी पुस्तक का नहीं परन्तु एक व्यक्ति यीशु का अनुसरण करते है। सैद्धांतिक सत्य और शर्ते मसीहत में अत्याधिक आवश्यक है और इसीलिये हमें आज्ञापालन के लिये बड़े–बड़े नियम, सिद्धांत और बुद्धि दी गई है।[13] किंतु यह भी सत्य कि वे मसीही विश्वास का सार तत्व नहीं है, और यदि हम उन पर मसीह के संदर्भ के बाहर विचार करे, वे हमें विधिवाद और स्व–धार्मिकता के खतरनाक मार्ग पर लेकर जा सकते है।मसीही होने के कारण हम एक व्यक्ति का अनुकरण करने की खोज और उसके पीछे चलने का प्रयास करते है।[14] पवित्रशास्त्र के सैद्धांतिक सत्यों का बहुत बड़ा मूल्य है, क्योंकि वे हमें समझाते हैं कि मसीह कौन है और हमें उसका अनुकरण कैसे करना चाहिये। परन्तु वे अपने आप में एक अंत नहीं है मसीहत और मसीही के प्रति बड़ी से बड़ी हिंसा के बिना उन्हें परमेश्वर (मसीह) से कभी अलग नहीं किया जा सकता। इस चेतावनी का सार तत्व मसीह के शब्दों में सशक्त रूप में उसके दिनों के उन लोगों से कहा गया है जिन्होंने इस्राएल के विश्वास को केवल एक आचरण नियमावली में बदलकर कमतर बना दिया था। यीशु ने कहा था, ''तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो, क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें अनंत जीवन मिलता है और ये वे ही है जो मेरे विषय में साक्षी देते हैं, और तुम मेरे पास आना नहीं चाहते कि जीवन पाओ'' (यूहन्ना 5:39–40)। मसीह को पवित्रशास्त्र के निर्देशों और आज्ञाओं से अलग नहीं किया जा सकता, और न ही इन आज्ञाओं को मसीह के व्यक्तित्व से अलग किया जा सकता है।

कठिनाई से भरा मार्ग

हमने सीखा है कि संकरा मार्ग परमेश्वर की इच्छा से परिभाषित होता है। अब हम अपना ध्यान उतने ही महत्वपूर्ण एक दूसरे सत्य की ओर लगायेंगे; यह मार्ग कठिनाईयों और संघर्ष से भरा है। यह एक आसान रास्ता नहीं है।

---

12 यूहन्ना 14:6.

13 संबंधकारक सत्य उस सत्य की ओर संकेत देता है जो वक्तव्यों या दावों के द्वारा प्रगट या संप्रेषित किये गये हैं (उदाहरणार्थ, ''प्रभु एक है'' {व्यवस्था. 6:4}; ''यीशु प्रभु है'' {1 कुरूंथियों 12:3}; ''तू प्रभु अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ नहीं लेना'' {निर्गमन 20:7})

14 मत्ती 4:19, 8:22, 9:9, 10:38, 16:24, 19:2; 1 कुरिन्थियों 1:12; इफिसियों 5:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:6.

जैसा हम पहले कह चुके है शब्द 'संकरा' ग्रीक भाषा में क्रिया शब्द से है, निष्क्रिय काल में इसमें कष्ट, कठिनाई और सताव या दुख का अनुभव है। यहाँ तक कि नये नियम को सरसरी तौर पर पढ़ने से प्रगट होता है कि मसीही जीवन में इन सब बातों का समावेश है। यदि मसीहत में प्रवेश के लिये यत्न करना या पवित्र आक्रामकता की आवश्यकता है, तो हम यह मान सकते हैं कि उतनी ही यत्नशीलता यदि उससे अधिक नहीं, उसमें बने रहने के लिये आवश्यक है। इस बात से अलग हटकर प्रचार करने वाला वस्तु बेचने वाला कोई धोके बाज है और मसीह का सच्चा सेवक नहीं है।

आरम्भिक कलीसिया का सबसे बड़ा एक लक्षण उनके द्वारा सही गयी कठिनाईयाँ और सताव था। मसीह एवं नये नियम के लेखकों ने बार–बार खोजियों और विश्वासियों को पहले ही चेतावनी दी कि सच्ची शिष्यता में बहुत दुख उठाना पड़ेगा। यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी कि संसार उनसे घृणा करेगा और इस कारण उन्हें महाक्लेश सहना होगा।[15] उन्हें सताया जायेगा, अपमानित किया जायेगा, और उनकी निन्दा की जायेगी।[16] उन्हें मारा–पीटा जायेगा, दोषी ठहराया जायेगा और अधिपतियों और राजाओं के समक्ष मसीह के कारण उनकी हत्या भी कर दी जायेगी।[17] प्रेरित पौलुस ने युवा तीमुथियुस को चिताया, ''वास्तव में वे सब, जो मसीह यीशु में भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)। फिलिप्पी की कलीसिया को उसने लिखा कि यह बात उनके लिये नियुक्त की जा चुकी थी कि वे न केवल मसीह पर विश्वास करे परन्तु मसीह के कारण दुख भी उठायें।[18] वह लुस्त्रा, इकुनियम और अन्ताकिया के चेलों को प्रोत्साहित करते हुए कहता है, ''हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है'' (प्रेरितों के काम 14:22)। पतरस प्रेरित ने सारे एशिया में तितर–बितर विश्वासियों को निर्देश दिया कि उनकी तकलीफें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार थी, उन्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिये कि जिस बड़े दुख के समय से वे गुजर रहे है वह कोई अनोखी बात नहीं है जो उनके साथ हो रही थी।[19] वास्तव में उसने उन्हें निर्देश दिये कि ऐसी तकलीफें और सताव समस्त संसार के विश्वासियों और कलीसियाओं का प्रमुख लक्षण है।[20]

पवित्रशास्त्र से हम समझते है कि मसीही व्यक्ति का मार्ग संकरा और सताव से भरा है, परन्तु ये परीक्षायें बिना उद्देश्य नहीं आती। परमेश्वर संरचना करते है कि हम परीक्षाओं और दुःखों के द्वारा परिष्कृत, परिवर्तित और उसके पुत्र के समान बनें। इस संसार की अग्निमय परीक्षाओं के

15 मत्ती 10:22; यूहन्ना 15:18–20; 16:33.

16 मत्ती 5:10–12.

17 मत्ती 10:22–28; लुका 21:12.

18 फिलिप्पियों 1:29.

19 1 पतरस 3:17; 4:12, 19.

20 1 पतरस 5:9.

द्वारा हमारा विश्वास वास्तविक सिद्ध होता है और अधिक से अधिक अंशों में परिशुद्ध किया जाता है जब तक कि वह सोने जैसा बहुमूल्य न बन जाये।[21] साथ ही विभिन्न परीक्षायें और क्लेश जो इस संकरे मार्ग में मिलते हैं वे हम में अधिकाधिक मात्रा में सद्‌गुणों को उत्पन्न करते है। प्रेरित पौलुस ने लिखा था, "इतना ही नहीं, हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं क्योंकि यह जानते हैं कि क्लेश में धैर्य उत्पन्न होता है, तथा धैर्य से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है" (रोमियों 5:3–4)। याकूब ने दुख उठाने वाले विश्वासियों को आज्ञा दी कि जब वे विभिन्न परीक्षाओं में पड़े उसे आनन्द की बात समझे, उनके परखे जाने से विश्वास उत्पन्न होता है, विश्वास से धीरज, और उसका परिणाम अधिक पवित्रता और परिपक्वता है।[22]

क्लेशों के बीच विश्वासी को निश्चयता दी गयी है कि, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात् उन ही के लिये जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाये गये हैं (रोमियों 8:28)। इसी कारणवश, मसीही जन बड़ा आनन्द करते हैं भले ही कुछ देर के लिये उन्हें नाना प्रकार की परीक्षाओं से होकर दुख उठाना पड़े।[23] वह जानता हैं कि वर्तमान समय की तकलीफें आने वाली महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं है जो आगे उस पर प्रगट होगी।[24]

यह सत्य कि हम परमेश्वर की कारीगरी है और वह जिसने एक भला काम हम में आरम्भ किया है, उसे पूरा करेगा, राहत देने वाला और परेशान करने वाला भी है। यह जानना राहत देता है, कि हम जैसे हैं, वैसे ही नहीं रहेंगे, फिर भी उस अग्नि के बारे में सोचना भयभीत करता है कि संकरे मार्ग पर चलते हुये उन बातों से मुक्त होने जिन्हें परमेश्वर कतई सहन नहीं कर सकते हमें उस आग में से होकर गुजरना अवश्य है। मसीहा इसलिये नहीं आया कि केवल अपने लोगों को आनन्दित करे परन्तु वह परिशुद्ध करने वाली अग्नि और धोकर साफ करने वाला साबुन भी है। वह सुनार और उसके समान बैठकर जो चाँदी शुद्ध करता है, लेवी के पुत्रों को शुद्ध करेगा, और उन्हें सोने और चाँदी के समान परिशुद्ध करेगा ताकि वे धार्मिकता के बलिदान होकर प्रभु परमेश्वर के सामने उपस्थित हो।[25] उसके लोगों के बीच शुद्ध करने का उसका कार्य इतना सशक्त होगा कि भविष्यद्वक्ता जिसने उसके आगमन की पूर्व सूचना दी, उसने पूछा, "परन्तु उसके आगमन के दिन को कौन सह सकेगा? और जब वह प्रगट हो, तब कौन खड़ा रह सकेगा?" (मलाकी 3:2)। पुराने नियम की बड़ी प्रतिज्ञाओं में एक यह है कि मसीहा उसके लोगों को उनकी सारी अशुद्ध

21 1 पतरस 1:6–7.

22 याकुब 1:2–4.

23 रोमियों 5:3; 1 पतरस 1:6; 4:12–13.

24 रोमियों 8:17–18.

25 मलाकी 3:1–3.

ता और मूर्तिपूजा से शुद्ध करेगा।[26] किन्तु शुद्ध करने का यह कार्य सदैव कोमलता से स्नान और शुद्ध करने के द्वारा नहीं होगा, परन्तु रगड़ने और पीटने के द्वारा भी होता है। इसी कारण से, इब्रानियों के लेखक लिखते हैं,

> "तुम उस उपदेश को जो तुम्हें पुत्र मानकर दिया गया है, भूल गये हो:
>
> हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न समझ, और जब वह तुझें झिड़के तो हताश न हो। क्योंकि प्रभु जिस से प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है और जिसे पुत्र बना लेता है, उसे कोड़े भी लगाता है" (इब्रानियों 12:5–6)।

संकरे मार्ग में प्रभु अपनी संतानों से जिस कठोरता का व्यवहार करते हैं, उसे समझने के लिये, हमें इब्रानियों 12:5–6 के इन तीन शब्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा। reprove अर्थात् डाँटना या उलाहना देना, discipline अर्थात् अनुशासन या ताड़ना और Scourge अर्थात् कोड़े लगाना। शब्द डाँटने के लिये ग्रीक शब्द elegcho है, जिसका अर्थ है गलती का अहसास कराना या उस बात पर प्रकाश डालकर, उजागर करके ग्लानिभाव उत्पन्न करना। सामान्य रूप में यह किसी व्यक्ति को उसके कार्य के कारण लज्जित करने का भाव रखता है। इस शब्द का अर्थ कठोरता से सुधार, ताड़ना, क्रोधमय आक्रोश या दण्ड देने से भी है। क्रिया discipline ग्रीक शब्द paideuo का अनुवाद है जो बच्चों को निर्देश देने और प्रशिक्षित करने का भाव प्रदर्शित करता है। अकसर इसमें जैसा कि इस वृतान्त के संदर्भ में है – डाँट–फटकार, चेतावनी, और कोड़े लगाने (कष्ट देकर सुधार) का विचार भी शामिल है। शब्द कोड़ें लगाना (courges) ग्रीक भाषा के क्रिया शब्द mastigoo का अनुवाद है जिसका अर्थ है – पीटना, कोड़े मारना या चाबुक से मारना। ऐसी भाषा समकालीन सुसमाचार प्रचारवादियों के अति संवेदनशील कानों में बहुत कठोर और यहाँ तक कि अनैतिक भी लग सकती है। फिर भी यह उनके लिये जो संकरे मार्ग पर बहुत समय चल चुके है एक बाइबल–सम्मत भाषा और वास्तविकता है। वास्तव में, संकरे मार्ग के किसी भी तीर्थ यात्री द्वारा सीखे गये महान् सबकों में से एक सबक यह है कि परमेश्वर सीमा से बाहर जाकर हर संभव प्रयास करेगा कि अपनी संतानों को पवित्र बनाये। वह अपनी सन्तानों से घृणा नहीं वरन् प्रेम करता है; और इसलिए वह छड़ी को छोड़ता नहीं परन्तु यत्नपूर्वक उनका अनुशासन करता है ताकि उनकी आत्माओं को नर्क से छुटकारा दे।[27]

विश्वास के द्वारा एक विश्वासी स्वयं को अनुशासन के इस ईश्वरीय कार्य के आधीन करता है और ताड़ना के लिये अपनी पीठ प्रस्तुत करता है। यद्यपि तात्कालिक रूप में अनुशासन बड़ा दुख यहाँ तक कि बड़ा कष्ट भी उत्पन्न करता है, मसीही व्यक्ति जानता है कि बाद में यह धार्मिकता का शांतिमय फल उत्पन्न करेगा, जिसके विषय में इब्रानियों के लेखक ने संकेत करके लिखा है,

---

26 यहेजकेल 36:25.

27 नीतीवचन 13:24, 23:14.

''सब प्रकार की ताड़ना कुछ समय के लिये सुखदायी नहीं, परन्तु दुखदायी प्रतीत होती है, फिर भी जो इसके द्वारा प्रशिक्षित हो चुके हैं, उन्हें बाद में धार्मिकता का शांतिदायक फल प्राप्त होता है'' (12:11)। साथ ही, वह यह जानता है कि कोड़े या ताड़ना की मार सीधे–सीधे स्वयं परमेश्वर के हाथ से मिले या उससे कमतर किसी अन्य साधन जैसे कि शैतान या संसार से मिले, वे सब परमेश्वर की ओर से संरचित है और उनकी सर्वज्ञानी और सर्वसामर्थी इच्छा के द्वारा निदेशित है। सैमुएल चैडविक ने काम करते हुए लोहार के अवलोकन में इसे बड़ी सुन्दरता से समझाया है –

> लोहार तपायी हुयी धातु के टुकड़े को लेकर पलटता है और बार–बार एक ही स्थान पर चोट करता है, वह अपने प्रहारों को नियंत्रित करता है कि वे सही समय पर चोट करें – वह धातु के टुकड़े को पलटता, पीटता, और आकार देता है जब तक कि वह चाहे गये आकार में न आ जाये। इसी प्रकार, परमेश्वर आत्मा को लेकर उस पर चोट करता है। कभी–कभी वह शैतान से हथौड़ा चलवाता है। शैतान चूर–चूर करने चोट करता है, परमेश्वर उसके प्रहारों पर नियंत्रण करता है और शैतान की बुराई का उपयोग हमें सिद्ध करने में करता है, और शैतान पवित्रजनों को मसीह की समानता में लाने के लिये पसीना बहाता (परिश्रम करता) है। अन्त में हम पाते है कि जीवन में सभी ताड़नायें, अनुग्रह के साथ मिलकर कार्य करती थी, और हम पिता के पुत्र की सम्पूर्ण पहिचान में अपनी पहिचान बनाकर खड़े होते है। महिमामय उद्देश्य पूरा हो चुका है और हम उसके (प्रभु के) समान होंगे – ''जब मैं जाग उठूंगा तो तेरे स्वरूप को देखकर तृप्त हो जाऊँगा (भजन 17:15)।[28]

अब चुंकि परमेश्वर का उद्देश्य उसके लोगों का भला करना है, हम संकरे मार्ग पर चलते और उसकी इच्छा की सुरक्षा और आशीष की परिधि के भीतर रहते हैं जो उसकी आज्ञाओं और बुद्धि में प्रकट की गयी है। साथ ही हम डरते और काँपते हुये अपने उद्धार के कार्य को पूरा करना चाहते हैं, यह जानकर कि यह परमेश्वर है जो अपनी सुइच्छा के लिये हम में इच्छा और कार्य दोनों को उत्पन्न करने के लिये कार्य करते है।[29] ऐसी प्रतिज्ञाओं को पाकर हम भक्ति के लिये स्वयं को अनुशासन में रखते हैं; हम शरीर और आत्मा की सभी अशुद्धियों से स्वयं को शुद्ध करते है; हम पवित्रता का पीछा करते है जिसके बिना कोई प्रभु को कभी न देखेगा, हम परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करते है।[30] यदि परमेश्वर सीमा से बाहर जाते हैं और हमें मसीह की प्रतिकृति में बदलने सभी प्रकार के प्रयत्न करते हैं तो अवश्य है कि हम उसी यत्नशीलता से उस बड़े ईनाम की ओर बढ़े। इस संकरे मार्ग में, पीछे क्या था, हमें भूल जाना चाहिए, और जो हमारे सामने रखा है उसे पाने के लिये बढ़ना चाहिये, लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिये, मसीह यीशु में परमेश्वर की उस उच्च बुलाहट का ईनाम पाने के लिये बढ़ते जाना चाहिये।[31]

---

28 Samuel Chadwick, *Humanity and God* (London: Hodder and Stoughton, 1904), 90.

29 फिलिप्पियों 2:12–13.

30 2 कुरिन्थियों 7:1; 1 तीमुथियुस 4:7; इब्रानियों 12:14.

31 फिलिप्पियों 3:13–14.

चौड़े मार्ग की परिभाषा

विशेषण 'चौड़ा' शब्द ग्रीक भाषा में euruchoros से आता है, जिसका अभिप्राय अधिक स्थान लेने वाला, चौड़ा, विस्तारित या सुविधाजनक से है। मसीह की शिक्षा के संदर्भ में 'चौड़ा मार्ग' पाप में पतित एवं विद्रोही मनुष्यों का मार्ग है जिन्होंने उन पर से परमेश्वर के अधिकार का इंकार या अनदेखी कर दी है, उसकी व्यवस्था को दूर कर दिया है, और वे परमेश्वर से स्वतंत्र और स्वत्व के नियंत्रण में अपना अस्तित्व बनाकर रखते है। इस चौड़े मार्ग और उसमें पहुँचाने वाले 'चौड़े द्वार या फाटक' के बारे में बहुत सी बातें ध्यान देने योग्य हैं।

प्रथम, चौडा मार्ग मूल रूप में मनुष्यों का मार्ग है। यह वह मार्ग है जिसमें पाप में पतित मनुष्य जाति का प्रत्येक सदस्य जन्म लेता है। भजनकार घोषणा करता है कि – ''दुष्ट लोग जन्म से ही पराये हो जाते हैं, ये गर्भ से निकलते ही झूठ बोल–बोलकर भटक जाते है।[32] भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भी ऊँचे स्वर से कहा – हम तो सबके सब भेड़ों के समान भटक गये थे, हम में से प्रत्येक ने अपना–अपना मार्ग लिया, (53:6)। चौड़े फाटक की खोज करने या चौड़े मार्ग में प्रवेश करने के लिये किसी बात की आवश्यकता नहीं है और न ही कुछ करने की आवश्यकता है। यह ठीक उसी भू–भाग पर है जिस पर आदम ने अपना घर बनाया था, और यह उसकी संन्तानों की विरासत बन गया है।[33] जैसे ही हम जन्म लेते हैं, पाप में पतन की अपनी प्रवृतियों के कारण इसे प्राप्त करते हैं, और जब हम इसे पाते हैं, इसे हमारे स्वभाव के सर्वथा अनुकूल पाते हैं। इसमें प्रवेश के लिये किसी प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है, और न ही कुछ करते रहने की आवश्यकता है, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इस से हम विमुख रहे। यही कारण है कि यीशु मसीह ने लोगों को चेतावनी दी कि वे बड़े बल के साथ इस चौड़े मार्ग से विमुख होने के लिये प्रयत्न करें जो विनाश को पहुँचाता है, पर संकरे फाटक से प्रवेश करे जो जीवन को पहुँचाता है।

दूसरा, चौड़ा मार्ग स्वायत्ता के अधिकार या नियंत्रण का मार्ग है। यह वह स्थान है जहाँ इस संसार के निवासी परमेश्वर और उसके मसीह के विरूद्ध यह कहकर मोर्चा बाँधते है कि – ''आओ हम उनकी जंजीरों को तोड़ डालें और उनके बंधनों को अपने उपर से उतार फेंकें (भजन 2:3)। यह वह स्थान है जहाँ हर एक व्यक्ति वह करना चाहता है जो उसकी दृष्टि में ठीक है।[34] चौड़े मार्ग को चुनने वाले डींग मारते हैं कि उन्होंने स्वर्ग के तानाशाह से स्वयं को मुक्त कर लिया है, परन्तु ऐसा करके उन्होंने स्वयं को उनके पाप से विकृत ह्रदयों की तानाशाही के आधीन कर दिया है। उन्होंने स्वर्ग के राजा के बदले छः अरब अयोग्य लोगों को स्वीकार कर लिया है जिनके सत्य के संबंध में अभिमत सुबह के कोहरे जैसे अस्पष्ट और आकाश के तारों के

---

32 भजन. 58:3.

33 रोमियों 5:12.

34 न्यायियों 17:6; 21:25.

समान अनगिनत है।[35] उन्होंने स्वयं की लालसाओं के अनुसार चलने के लिये ईश्वरीय व्यवस्था का परित्याग कर दिया है और ऐसे प्रतिबंधविहीन व्यक्ति बन गये है जो सिर के बल तेजी से विनाश की ओर जा रहे हैं। क्योंकि जहाँ दर्शन नहीं है या व्यवस्था का प्रकाशन नहीं है, लोग अनियंत्रित होते है, और जो मार्ग उन्हें ठीक जान पड़ता है, उसके अंत में सदैव मृत्यु मिलती है। उन्होंने परमेश्वर को जीवन के समीकरण से हटा दिया है और परम सत्य को असंभव बता दिया है। इस कारण से दुष्टों का मार्ग अवश्य ही चौड़ा होना चाहिये, क्योंकि बिना नैतिक दिशानिर्देश लोग लक्ष्यहीन होकर भटकने और जीवन के लक्ष्य या कारण के बिना दोषी ठहरते है। यहूदा की डरावनी भाषा में, वे जो परमेश्वर की संप्रभुता का इंकार करते और स्वशासन के पक्ष में जाते हैं, वे निर्जल बादलों के समान बन जाते हैं जो हवाओं के साथ–साथ भटकते हैं, वे समुद्र की अनियंत्रित लहरें हैं जो लज्जा का फेन उत्पन्न करती है, वे डाँवाडोल तारे है जिनके लिये अंधकार सदा के लिये ठहराया गया है।[36]

यद्यपि यह भाषा बुरी और अशुभ वचन जैसी है, यह चर्च मैन के साथ–साथ अनीश्वरवादी और धर्म या ईश्वर को न मानने वाले सभी पर लागू होती है। बहुत से लोग हमारी कलीसियाओं में बैठकर मसीहत में जुड़े होने का अंगीकार करते है, परन्तु उनके जीवन चौड़े मार्ग के अनुसार है। वे परमेश्वर की इच्छा जानने का प्रयत्न नहीं करते; वे उसकी आज्ञाओं को नहीं चाहते, वे उसकी कृपा के चिन्हों को नहीं चाहते, और वे सब बातों पर विचार कर सावधानीपूर्वक नहीं चलते। इससे भी अधिक विचलित करने वाली बात यह है कि ये लोग अनेको सुसमाचारकीय कलीसियाओं के प्रचार में अविचल भाव से बैठ सकते है और अधिकांश सुसमाचार प्रचार की परवाह तक नहीं करते। आकाश के नीचे वे परमेश्वर के राज्य से संबंध रखने का प्रत्येक दावा करते हैं परन्तु चौड़े मार्ग पर उनका लगातार चलते रहना उनके दावे का खण्डन करता है।

तीसरा, चौड़ा मार्ग स्वयं की संतुष्टि का मार्ग है। यह मार्ग उन सबके लिये है जो स्वयं को परमेश्वर से इस संसार को आने वाले संसार से, और जो तात्कालिक है, उसे अनंतकालीन से, और शारीरिक को आत्मिक से पहले स्थान देते है। यह वह क्षेत्र है जो प्रत्येक शारीरिक अभिलाषा और पाप में पतित शरीर की कामनाओं को बढ़ावा देता है। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि मनुष्य स्वभाव ही से स्वयं से प्रेम करने वाला, धन का प्रेमी, इस संसार से प्रेम करने वाला, और सुखों से प्रेम करने वाला है, न कि परमेश्वर से प्रेम करने वाला।[37] ये सभी बातें चौड़े मार्ग में उपलब्ध है, और उसमें चलने वाले "शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका के घमण्ड'' से चलित है (1 यूहन्ना 2:16)। यही कारण है कि चौड़े मार्ग को 'वैनेटी फेयर' (Vanity fair) कहा जा सकता है जैसा कि बनयन की पिलग्रिम्स प्रोग्रेस में बताया गया है:

---

35 नीतीवचन 14:12; 16:25; 29:18.

36 यहुदा पद 12–13.

37 2 तीमुथियुस 3:2,4; 1 यूहन्ना 2:15–17.

तब मैंने अपने स्वप्न में देखा कि जब क्रिश्चियन और फेथफुल जंगल से बाहर आये, उन्होंने पास ही में एक नगर देखा, वह उनके सामने था, उस नगर का नाम वैनिटी था। और उसमें एक मेला लगा था – ''वैनिटी फेयर'' यह मेला पूरे वर्ष भर चलता था। उसका नाम 'वैनिटी फेयर' था क्योंकि उसमें बेचे जाने वाली सब वस्तुयें व्यर्थ और मूल्यहीन थी, और वे सब जो वहाँ आये, वे सब व्यर्थ थे। जैसा कि बुद्धि की एक सूक्ति है – ''जो भी आता है, सब कुछ व्यर्थ है''

यह मेला एक नया–नया व्यापार नहीं था परन्तु बहुत लम्बे समय से चला आ रहा था। और मैं आपको बताऊँगा कि यह कैसे आरम्भ हुआ।

लगभग 5 हजार वर्ष पहले सेलेस्टियल नगरी में कुछ आत्मिक यात्री घूम–फिर रहे थे, जैसे कि ये दो ईमानदार व्यक्ति थे – और बालजबूल, अपोलियन और लीजन और उनके साथियों ने यह देखकर कि आत्मिक यात्री सदैव वैनिटी नगर से होकर गुजरते है, तय किया कि वे वहाँ एक मेला लगायेंगे, जो पूरे वर्ष भर चलता रहेगा, वहाँ वे सब प्रकार की व्यर्थ वस्तुए बेचेंगे: घर, जमीन, व्यापार, स्थान, सम्मान, पदोन्नति, नाम, देश, राज्य, लालसाएं, सुख और सब प्रकार के आनन्द जैसे कि वेश्यायें, पत्नियाँ, पति, बच्चें, स्वामी, सेवक, जीवन, रक्त, देह, आत्माएं, चाँदी, सोना, मोती और कीमती पत्थर इत्यादि।

इस मेले में व्यक्ति को खेल दिखाने वाले धोकेबाज, खेल तरकीबें, बेवकूफ, नकल करने वाले, छलने वाले और हर प्रकार के बदमाश लोग सदैव मिलेंगे।[38]

चौड़ा मार्ग सब प्रकार के सतही विकर्षणों से भरपूर है जिनको इसलिये तैयार किया गया है कि जो बातें वास्तव में महत्वपूर्ण है, उनकी चिन्ता या परवाह से लोगों को दूर रखा जाये। यह उन परीक्षाओं को लाता है जो शारीरिक मनुष्यों के हृदयों में भूख–प्यास का सृजन करती और उसमें वृद्धि करती है, जबकि उसी समय पवित्रीकरण के लिये उनकी क्षमता को कम करती है। यह लोगों को अति अनैतिक बातों के बुरे से बुरे स्वरूप में उलझाकर रखती है, यहाँ तक कि कुछ भली बातों के द्वारा भी, जो प्राणघातक मूरतें बन जाती है जब उन्हें परमेश्वर से अधिक बढ़कर महत्व (स्थान) दिया जाता है। इस क्षेत्र में लोग जितना अधिक समय बिताते हैं, परमेश्वर से उतने अधिक दूर चले जाते है। वे उतने ही अधिक व्यर्थ बनते है, उनके जीवन भी उतने ही अधिक फलरहित और बंजर बनते जाते है।

जब लोग सही दृष्टिकोण से देखते है, वे समझते है कि मनुष्य का मुख्य लक्ष्य परमेश्वर को महिमा देना और सदैव उसमें आनन्द करना है। वेस्टमिन्सटर शार्टर कैटेकिज्म के प्रश्न 1 में यही शिक्षा दी गई है। जब वे इस उद्देश्य से अपने हृदयों को विमुख करते है, वे उनके लिये नियुक्त ईश्वरीय प्रतिष्ठा को खो देते हैं। वे परमेश्वर को जाननें और उसके व्यक्तित्व एवं कामों की असीम आश्चर्यजनक बातों को खोजने और जानने के लिये सृजे गये थे परन्तु उन्होंने सूअरों के साथ कीच में लोटना और महत्वहीन वस्तुओं के साथ खेलने का विकल्प चुना। उन्होंने चौड़े मार्ग की अधोगत सीढ़ियों को चुना जिनके बारे में प्रेरित पौलुस ने रोमियों के प्रथम अध्याय में

38 Bunyan, *New Pilgrim"s Progress*, 108

वर्णन किया हैः यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, फिर भी उन्होंने उसे न तो परमेश्वर के उपयुक्त सम्मान, और न ही धन्यवाद दिया वरन् वे अनर्थ कल्पनायें करने लगे और उनका निर्बुद्धि मन अन्धकारमय हो गया। बुद्धिमान होने का दावा करके वे मूर्ख बन गये, उन्होंने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्य, पक्षियों, चौपायों और रेंगने वाले जन्तुओं की मूर्ति की समानता में बदल डाला (पद 21–23)।

हम मनुष्यों की ऐसी संस्कृति में रहते हैं जहाँ जो भी शारीरिक और व्यर्थ है, उसके प्रति अत्याधिक भूख–प्यास है। उनका वर्णन करते हुये पवित्रशास्त्र कहता है, ''उनका अंत विनाश है, उनका परमेश्वर पेट है, वे अपनी निर्लज्जता की बातों पर गर्व करते है, और सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं'' (फिलि. 3:19)। उन्होंने अनंतकालीन के बदले तात्कालिक, स्वर्ग के बदले पृथ्वी, और परमेश्वर के बदले स्वयं की अदला–बदली की है। वे चौड़े मार्ग पर चलते हैं और अपना धन उन पर खर्च करते है जो रोटी नहीं है और उन बातों में परिश्रम करते हैं जो उन्हें संतुष्ट नहीं करती।[39]

मनुष्यों की बहुत अधिक संख्या जिनमें वे भी है जो अपनी पहिचान मसीह के साथ बताते हैं, चौडे मार्ग पर है जो विनाश की ओर ले जाता है। समस्या बढ़ रही है क्योंकि केवल कुछ ही कलीसियाएँ तुरही फूंक रही है या दुष्टों को उनके आने वाले निश्चित विनाश की चेतावनी दे रही है। न केवल आत्म संतुष्टि के चौड़े मार्ग की निन्दा नहीं की जाती – वास्तव में उसकी अभिरक्षा और पदोन्नति की जाती है। यहाँ तक कि रविवार की सभाओं में शारीरिक लोगों की भीड़ को आकर्षित करने के लिये इसे बतौर साधन उपयोग भी किया जाता है। बहुत सी कलीसियाएँ 'वैनिटी फेयर' से बढ़कर कुछ नहीं है और उनके प्रचारक सस्ती वस्तुओं को गलियों में बेचने वालों से बढ़कर कुछ नहीं है। छोटे–छोटे धारदार उपदेशों को कुल्हाड़ी और फावड़ें के समान उपयोग करके उन्होंने चौड़े मार्ग की दिशा बदल दी है ताकि उनकी कलीसिया में आने वाली शारीरिक लोगों की भीड़ स्वर्ग में उतनी ही आसानी से प्रवेश कर सके जितना भक्तजन अधिक संकरे मार्ग से प्रवेश करते है। यह बिना क्रूस, दुख–तकलीफ, सताव या अपने आप से इंकार के बिना मिलने वाला उद्धार है। वे आत्म अनुभूति और आत्म–उन्नति का धर्म प्रस्तावित करते हैं, परमेश्वर के साथ मानों एक व्यापार जिसमें व्यक्ति धन, विलासिता, खर्चीलापन और जीवन का आराम इत्यादि रख सकता है जब तक वह दशवांश देता रहता है। आत्मिक यात्रा एक चौड़े और विस्तारित मार्ग में चलते हुये होती है जहाँ छुटकारा प्राप्त संभावित व्यक्ति संसार के हाथों में हाथ डालकर चल सकते है। परमेश्वर का अनुग्रह अनुमति पत्र बन गया है और यीशु मसीह के प्रभुत्व से इंकार किया जाता है।[40] ऐसा नहीं होना चाहिये। भला हो कि परमेश्वर हमें एक बार फिर से प्रचारक

39 यषायाह 55:2

40 यहूदा पद 4

और चरवाहें प्रदान करे जिनके मुख में वास्तविक निर्देश हो और जिनके होंठों पर किसी प्रकार की अधार्मिकता न हो, वे जो परमेश्वर के साथ शांति में चलते हैं और बहुतों को अधर्म से बचा लेते हैं।[41] आइये, हम फाटकों पर खड़े होकर ऊँचे स्वर से पुकार कर सब से कहें – ''संसार तथा उसकी लालसाएँ भी मिटती जा रही है, परन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा'' (1 यूहन्ना 2:17)।

चौथा, चौड़े मार्ग में कम से कम प्रतिरोध है। यह 'बहाव के साथ बहने' की कहावत के समान है। सबसे पहली बात यह है कि चौड़े मार्ग में शरीर की ओर से कोई विरोध नहीं होता। हमें उसमें प्रवेश करने के लिये प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं होती। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, हम वहाँ हमारी संरचना के कारण है। हम पाप में जन्में, गर्भ से ही पराये हो गये और जन्म से ही अपने मार्ग से भटके हुये है।[42] इसी कारणवश, हमारा पाप में पतित शरीर, चौड़े मार्ग पर मिलने वाले प्रत्येक विद्रोही साथी के साथ भाई–चारा रखता है और हृदय से सभी गलत दृष्टिकोणों और कामों का अनुमोदन करता है।[43] हमें स्मरण रखना चाहिये कि पाप में पतित शरीर, परमेश्वर के प्रति आक्रामक है और परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता।[44] किन्तु वह संसार से प्रेम करता है और स्वेच्छा से उसकी आवाज़ को सुनता है। शरीर को किसी दिशा निर्देश की आवश्यकता नहीं है कि वह वासनाओं को स्वतंत्र अधिकार दे और चौड़े मार्ग पर चले, जहाँ भी वह ले चले। इस कारण जो इस मार्ग पर चलना चाहते हैं उन्हें उनके शरीर के कोई शत्रु नहीं मिलते परन्तु केवल मित्र मिलते है जो धोकेबाज है।

इसी प्रकार, संसार की ओर से चौड़े मार्ग पर कोई उनका विरोध नहीं करता। विलियम हेन्ड्रिकसेन लिखते हैः "चौड़े मार्ग के दोनों ओर संकेत–पट्टिका पर यह लिखा है – 'आपमें से प्रत्येक का स्वागत है, आपके सभी मित्रों का भी स्वागत है, जितने अधिक होंगे, उतना आनन्द आयेगा। आप जैसे चाहे वैसे यात्रा करे, जितनी द्रुतगति से चाहे, यात्रा करें, यहाँ किसी प्रकार का प्रतिबंध या प्रतिरोध नहीं।''[45] वे जो चौड़े मार्ग पर चलते है, वे संसार के भू–भाग पर है। यह मानवता का मार्ग है, भाई चारे का मार्ग, इसमें सब शामिल है और सबकुछ सहने योग्य है। यह समाप्त न होने वाला पर्व है जहाँ परस्पर चाटुकारिता की माँग की जाती है, सत्य को खिड़की से बाहर फेंक दिया जाता है, और किसी को यह अधिकार नहीं कि वह राजा को बताये कि वह वस्त्रहीन है या समस्त परेड़ सीधे विनाश की ओर बढ़ती जा रही है।

---

41 मलाकी 2:6

42 भजन. 51:5, 58:8

43 रोमियों 1:32

44 रोमियों 8:7–8

45 हेन्ड्रीकसन, मत्ती, 369.

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि संसार अपनों से प्रेम करता और अपनों की सुनता है।[46] जब परमेश्वर का पुत्र संसार में आया, जिसे उसने सृजा था और लोग जिन्हें उसने चुना था उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया।[47] जब अंतिम रूप में चुनने का समय आया संसार ने उसे चुना जो उसका था, उन्होंने एक दुष्ट चोर और हत्यारे को क्षमा करने की माँग की, और पवित्र एवं धर्मीजन, जीवन के स्वामी को क्रूस पर चढ़ाने की मांग की।[48] संसार उन सबका मित्र है जो परमेश्वर के मित्र नहीं है। उसकी आक्रामकता उनके लिये आरक्षित है जो उनके साथ मैत्री या संधि को तोड़ने का साहस करते है, संसार के मार्ग से हट जाते हैं और परमेश्वर के साथ मैत्री संबंधों में जुड़ जाते है।[49]

साथ ही चौड़े मार्ग पर शैतान की ओर से कोई विरोध नहीं है। वास्तव में चौड़ा मार्ग शैतान की संरचना है और उसकी इच्छा के अनुसार निदेशित है। प्रेरित पौलुस के अनुसार, चौड़े मार्ग पर चलने का अर्थ है – ''तुम संसार की रीति और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है'' (इफि. 2:2)। हेन्ड्रिकसेन लिखते है – ''चौड़ा मार्ग शैतान ने बनाया था। उसके अनुयायी उसमें चलते हैं।[50] परमेश्वर के पवित्रजन जो संकरे मार्ग पर चलते हैं, लगातार परखे और जाँचे यहाँ तक कि आत्मिक यात्रा में रोके भी जाते है। शैतान प्रत्येक मोड़ पर उसका विरोध करेगा और विश्वास में उन्नति करने के उसके प्रत्येक प्रयास को विफल करने का प्रयास करेगा। यदि मसीह की ओर से सुरक्षा न मिले तो वह उसे गेहूँ के समान फटके और इतना कुचले कि वह परमेश्वर को शाप दे।[51] परन्तु वे जो चौड़े मार्ग पर है, शैतान उनका मित्र है, कम से कम कुछ समय के लिये, क्योंकि उसके होंठों से मधु टपकता है, और उसकी वाणी तेल से भी चिकनी है, परन्तु अंत में वह कड़वी जड़ी के समान है और दोधारी तलवार जैसा धारदार है।[52] उसकी बहुत सी लुभावनी बातें है जिनसे वह मनुष्यों को लुभाता है, अपनी चाटुकारिता से वह उन्हें वश में कर लेता है।[53] परन्तु उसके पाँव मृत्यु की ओर और उसके चरण नरक की ओर ले चलते है। वे जो उसका अनुसरण करते है उस बैल के समान है जो वध होने जाता है, वे एक मूर्ख के सदृश्य है जो बेड़ियों में बँधा दण्ड पाते जाता है, या एक पक्षी जिसे जालफंदे में फँसने की उतावली है।[54] वे नहीं जानते कि उनके चुनाव उनके लिये प्राणघातक है क्योंकि शैतान का घर मृत्यु में धंसता जाता है और उसके

46 यूहन्ना 15:19; 1 यूहन्ना 4:5.

47 यूहन्ना 1:11

48 मत्ती 27:16; 21, 26, मरकूस 15:7, 11, 15; लूका 23:18; यूहन्ना 18:40; प्रेरितों के काम 3:14–15.

49 यूहन्ना 15:19.

50 हेन्ड्रीकसन, मत्ती, 369.

51 अय्यूब 2:9–10; लूका 22:31.

52 नीतीवचन 5:3–4.

53 नीतीवचन 7:21.

54 नीतीवचन 5:5.

मार्ग मृतकों के पास पहुँचाते है।[55] जो भी उसके पास जाता है, उनमें से कोई लौटता नहीं और न ही वे जीवन के मार्गों तक पहुँचते है।[56]

पाँचवा, चौड़ा मार्ग बढ़ने वाले अंधकार का मार्ग है। नीतिवचन की पुस्तक से हम सीखते हैं – ''परन्तु धर्मियों का पथ भोर के प्रकाश के समान होता है, जो दिन की पूर्णता तक अधिकाधिक बढ़ता जाता है'' (4:18)। इसके विपरीत, ''दुष्टों का मार्ग घोर अंधकार के समान है, वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते है'' (4:19)। उनकी समझ अंधकारमय है और वे परमेश्वर के जीवन से वंचित है।[57] समय के साथ उनका विवेक मानों गरम लोहे से दागा गया है, उनका नैतिक दिशा ज्ञान उनसे ले लिया गया है, और उन्हें उनके हृदय की लालसाओं (वासनाओं) के आधीन दे दिया गया है अर्थात् अशुद्धता और निम्नस्तर की प्रवृतियाँ।[58] हम जितना समझ सकते है या स्वीकार करने का साहस कर सकते है, उससे कहीं अधिक आवृति के साथ लोगों और देशों पर परमेश्वर का भंयकर दण्ड आता है। यह सच है कि बुरे से बुरे पापी के उद्धार के लिये हम परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर होना बन्द नहीं कर सकते, हमें चाहिये कि चौड़े मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चेतावनी दे कि उनका प्रत्येक कदम उन्हें दण्ड के और निकट पहुँचाता है, वापस लौटने और सही स्थान में आने की सभी संभावनाओं से दूर करता है। यहाँ तक पहुँचकर उसका हृदय सूखे छिलकों के समान कठोर हो जाता है और उसकी आत्मा में इतना उथलापन आ जाता है कि चौड़े मार्ग के बदलावों से ही उसे भरा जा सकता है।

मसीही और छद्म हृदय-परिवर्तन का व्यक्ति

संकरे और चौड़े मार्ग के इन रूपकों से एक बहुत बड़ा सत्य हमें सीखना चाहिये कि हमारा आचरण या चाल–चलन हमारे हृदय–परिवर्तन का प्रमाण है। बार–बार हमें यह कहने और मानने की आवश्यकता है कि व्यक्ति का उद्धार केवल अनुग्रह से विश्वास ही से संभव है। परमेश्वर के सामने हमारी सही स्थिति हमारे किसी सद्गुण या कामों के कारण नहीं है पर यह परमेश्वर का वरदान है।[59] परन्तु फिर भी हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जितने अनुग्रह से विश्वास के द्वारा उद्धार पा चुके हैं वे सब परमेश्वर की कारीगरी बन चुके है। वे मसीह यीशु में भले काम के लिये पुनः सृजे गये हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी संप्रभुता में पहले से तैयार किया है कि वे उनमें चलें।[60] उद्धार परमेश्वर का अलौकिक कार्य है जिसमें विश्वासी नये एवं पवित्र अनुरागों के साथ

55 नीतीवचन 7:22–23.

56 नीतीवचन 2:18–19.

57 इफिसियों 4:17–19.

58 रोमियों 1:24, 26; 1 तीमुथियुस 4:2..

59 इफिसियों 2:8–9.

60 इफिसियों 2:10.

एक नयी सृष्टि बन जाता है।[61] ये नये अनुराग मसीही जन को संकरे मार्ग पर ले जाते हैं, यह जबर्दस्ती चलने का आग्रह नहीं परन्तु उनकी आत्मा की स्वेच्छा का कार्य है।[62] पवित्रात्मा के पुनः जीवित करने के कार्य और भीतर निवास करने के कारण विश्वासी जीवन के नयेपन में चलने के लिये उभारा जाता है।[63] अब वह आगे अन्य जातियों के समान मन की निर्बुद्धि और हृदय की कठोरता का आचरण करने की अभिलाषा नहीं रखता, परन्तु प्रयत्न करता है कि प्रभु के योग्य चाल चलन रखें, सब बातों में उसे प्रसन्न करें, और हर भले काम का फल लाये, और परमेश्वर के ज्ञान में उन्नति करे।[64] यद्यपि पहले उसमें अंधकार था अब वह प्रभु में, ज्योति है और ज्योति की संतान के रूप में चलना चाहता है, जैसा मसीह चलता था, और वह उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलना चाहता है।[65]

यह नए जन्म की वह धर्मशिक्षा है जिसे समकालीन सुसमाचार प्रचारवाद में पूरी तरह भुला दिया गया है, यदि कलीसिया को एक बार फिर सुसमाचार प्रचार करना है तो इस धर्मशिक्षा को पुनः खोजना अति आवश्यक है। हमें हमारे दिनों के कोरे विश्वासवाद की भर्त्सना करनी चाहिये, और समझना चाहिये कि वे जो उद्धार के लिये विश्वास करते हैं, उनका नया–जन्म हो चुका है। उन्होंने पुनः जीवन प्राप्त किया है, वे नयी सृष्टि बन चुके है जो जीवन के नयेपन के अनुसार चलेंगे।[66] हमें यह सत्य पुनः प्राप्त करना चाहिये कि धर्मी ठहराये जाने का प्रमाण लगातार पवित्रीकरण है, इस बात का चिन्ह कि व्यक्ति ने संकरे फाटक से प्रवेश कर लिया है यह है कि वह लगातार संकरे मार्ग पर चलता है जो मसीह की आज्ञाओं के अनुसार है और जो शरीर, संसार, और शैतान से सीधे–सीधे संघर्ष करता है। धर्मी ठहराया जाना विश्वास से है। परन्तु पुनः जन्म और निरन्तर मिलने वाली परमेश्वर की कृपा की उतनी ही महत्वपूर्ण धर्मशिक्षाएं सुनिश्चित करती है कि वे जो 'धर्मी ठहराये गये' है वे पवित्र भी किये जायेंगे।

मसीह में विश्वास का अंगीकार करने और संकरे मार्ग पर चलने वालों को उनकी बहुत सी निर्बलताओं और अधिक ठोकर खाने के बावजूद प्रोत्साहन दिये जाने की आवश्यकता है। परन्तु वे जो यही अंगीकार करते और निर्विकार भाव से चौड़े मार्ग पर चलते है, उसके दृश्यों का ध्यानपूर्वक अवलोकन और उसके सामानों को खरीदते हुये, उन्हें उनके दण्ड और भविष्य की भर्त्सना के लिये चेतावनी दी जानी चाहिये। यह पास्टर और सुसमाचार प्रचारक का एक बड़ा काम

---

61 2 कुरिन्थियों 5:17.

62 1 यूहन्ना 5:3.

63 रोमियों 6:4.

64 इफिसियों 4:1, 17–19; कुलुस्सियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12.

65 इफिसियों 5:8; 1 यूहन्ना 1:7; 2:6; 2 यूहन्ना 1:6.

66 1 यूहन्ना 5:1.

है। परमेश्वर के लोगों के सेवकों को यह जिम्मेवारी दी गई है कि वे न केवल परमेश्वर के अनुग्रह के शुभ–समाचार की उद्घोषणा करे परन्तु यह भी देखे कि कहीं कोई इससे वंचित न रह जाये।[67]

हमने जिन सत्यों पर विचार किया है उन्हें समझाने और अनुप्रयोग के लिये हम थोड़ी देर के लिये दो मनुष्यों पर विचार करेंगेः एक क्रिश्चियन और दूसरा जिसका वास्तव में हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है। क्रिश्चियन के प्रकरण में, हम पाते हैं कि एक व्यक्ति चौड़े मार्ग में चल रहा है। इसका कारण हो सकता है कि परमेश्वर पर उसका कोई विश्वास नहीं बचा है या फिर वह धर्म के किसी स्वरूप के प्रभाव में बेसुध है, उसे अपनी आत्मा की चिन्ता नहीं है। एक दिन वह सुनता है कि एक प्रचाकर यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ उससे बातचीत कर रहा है। संभव है कि उसने पहले हजार बार यह संदेश सुना हो, इस बार वह सुनने वाली आवाज़ के भीतर एक आवाज़ सुनता है। वह परमेश्वर के ज्ञान में, अपनी दुर्दशा, और मसीह के कामों के महत्व के प्रति जागृत हो उठता है। परमेश्वर की पवित्रता का यह नया प्रकाशन उसके पाप उजागर करता है, और वह क्या बन गया है और उसने क्या क्या किया है, यह जानकर टूट जाता है। वह पश्चाताप करता है, हालांकि यह मृत्यु पाने के लिये नहीं है परन्तु परमेश्वर की पवित्रता और उसके पाप के अधिक बड़े प्रकाशन के साथ वह पहली बार अपने जीवन में मसीह के चेहरे में परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह को भी देखता है। इस कारण वह विश्वास से मसीह की ओर दौड़ता है और उद्धार प्राप्त करता है।

बाद के दिनों में उसके हृदय–परिवर्तन की वास्तविकता प्रमाणित होती है। पहले की तुलना में अब वह सबकुछ एक अलग दृष्टिकोण से देखता है। वह अपने बहुत से पुराने अनुरागों का परित्याग करता है, उनका स्थान अब परमेश्वर को प्रसन्न करने की अभिलाषाएँ और उसकी आज्ञाओं के अनुकूल जीवन जीने की अभिलाषा ले लेती है। उसी समय, कष्ट के साथ वह अनुभव करता है कि उसके भीतर कुछ है जो अब भी परमेश्वर के साथ और धार्मिकता की प्रत्येक अभिलाषा के साथ युद्ध करता है। उसके व्यक्तित्व का कुछ भाग अब भी ऐसा है जिसे छुटकारा नहीं मिला है, पवित्रशास्त्र उसे सरल शब्दों में 'शरीर' कहता है। यह शरीर आत्मा के विरूद्ध लालसायें करता है और ये दोनों एक दूसरे से युद्ध करते हैं ताकि नया विश्वासी अतिशीघ्र जान लेता है कि मसीही जीवन एक संघर्ष है।[68] जैसे ही वह संकरे मार्ग की ओर यात्रा करना आरम्भ करता है, उसके चारों ओर और भीतर युद्ध आरम्भ हो जाता है। कभी–कभी अनुग्रह उसके पैरों को द्रुतगामी बनाता है और प्रतीत होता है कि उसने बड़ी प्रगति की है। अन्य समयों में लगता है कि वह तीन कदम आगे और दो कदम पीछे चलता है। ऐसे अवसर भी आते हैं जब वह संकरे मार्ग को छोड़ देने की परीक्षा में भी पड़ता है परन्तु परमेश्वर की कृपा उसके मार्ग को गहिराई से खोदकर तैयार करती है[69] और वह मार्ग से भटक नहीं सकता। यद्यपि शरीर, संसार और शैतान से

67 इब्रानियों 12:15

68 गलातियों 5:17.

69 भजन 23::3 में षब्द "राह/मार्ग" इब्रानी भाषा के "उंष्हंस" से आया है

लड़ना कठिन है, क्रिश्चियन पाता है कि परमेश्वर के विरूद्ध लड़ना असंभव है। मसीह में विश्वास के द्वारा अब वह परमेश्वर की सम्पत्ति और कारीगरी है। उसके जीवन के किसी पल में लगता है कि वह पीछे जा रहा है या नीचे गिर रहा है, परन्तु परमेश्वर की कृपा यह सुनिश्चित करती है कि यात्रा करते हुये पूर्ण कालखण्ड में वह आगे बढ़ेगा। वह पाप से संघर्ष करेगा और कभी–कभी वह किसी दुखदायी पाप में गिर भी सकता है, पर वह वहाँ पड़ा नहीं रहेगा। परमेश्वर ईष्या वश उस पवित्रात्मा की अभिलाषा करता है जिसे उसने उसके भीतर निवास करने बनाया है।[70] महान चरवाहा उसे ढूँढ़ निकालेगा क्योंकि जिसे पिता ने उसे दिया है, उसे वह नहीं खोएगा।[71] पिता उससे पुत्र के समान व्यवहार करेगा और कठोर दण्ड देकर यहाँ तक कि कोड़े मारकर उसकी ताड़ना (अनुशासन) करेगा, जो जीवन भर के लिये दाग छोड़ सकते है।[72] अंत में परमेश्वर ने जिस काम का आरम्भ किया है, उसे पूरा करेगा जब तक कि मसीही एक दिन महिमा को प्राप्त न कर ले – क्योंकि जिनके विषय में उसे पूर्वज्ञान था, उसने उन्हें पहले से ठहराया भी कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में हो जाए जिससे कि वह बहुत से भाईयों में पहलौठा ठहरें। फिर उन्हें उसने पहले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है'' (रोमियों 8:29–31)।

सच्चे विश्वासी के जीवन में हृदय–परिवर्तन का प्रमाण यह है कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं के संकरे मार्ग पर लगातार चलता रहता है। परमेश्वर की पवित्रता और उसके पाप के अधिकाधिक प्रकाशन के साथ वह हृदय के अधिकाधिक टूटेपन का अनुभव करता है। किन्तु उसकी निर्बलता और आवश्यकता का यह निरन्तर बढ़ने वाला प्रकाशन उसे अवसाद में नहीं पहुँचाता क्योंकि इस प्रकाशन के साथ ही साथ उसे मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह का अधिकाधिक बढ़ने वाला प्रकाशन भी प्राप्त होता है। अपने जीवन के अंत में विश्वासी जन स्वयं को संकरे मार्ग पर पाता है, अधिक पवित्र, अधिक टूटा हुआ, मसीह के लिये पहले से बढ़कर सराहना और जब उसने आरम्भ किया था तब की तुलना में अपने आप पर कमतर भरोसा।

हृदय–परिवर्तन के झूठे प्रकारण में जहाँ हृदय–परिवर्तन सच्चा नहीं है, हम एक व्यक्ति को पाते हैं जो चौड़े मार्ग पर चल रहा है और उसे अपनी आत्मा की जरा भी चिन्ता नहीं है। एक दिन वह सुनता है कि एक प्रचारक यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ उससे बात–चीत करता है, कुछ कारणोंवश वह उस संदेश को रूचिकर पाता है। समय आने पर वह मसीह में विश्वास का अंगीकार करता है। ऐसे समय में दो संभावनायें है – कम से कम किसी सुसमाचारकीय कलीसिया में अपने चौड़े मार्ग पर यथावत चलते हुये वह अपने हृदय–परिवर्तन के अनुभव और अनंतजीवन की आशा के विषय में आश्वस्त रह सकता है। उसकी अपरिवर्तनीय दशा और परमेश्वर की बातों

70 याकूब 4:5.

71 यूहन्ना 6:39.

72 इब्रानियों 12:5–11.

में रूचि न लेने का कारण शिष्यता की कमी को बताया जा सकता है। अन्य बहुत से सदस्यों के समान जो इतने ही धोके में हैं और जिनसे वह अपनी तुलना कर सकता है, वह अनंत विनाश के चौड़े मार्ग पर चलता रहेगा, और उसकी आत्मा के लिये जिम्मेवार चरवाहों की ओर से उसे कोई चेतावनी नहीं मिलेगी।

किन्तु यदि उसने एक सही कलीसिया में बाइबल सम्मत सुसमाचार वास्तविक हृदय–परिवर्तन की समझ के साथ अपने विश्वास का अंगीकार किया है, तब वस्तुस्थिति कुछ और ही होगी। उस व्यक्ति को संकरे मार्ग के चिन्हों के बारे में बताया जायेगा और उसमें चलने के लिये प्रोत्साहित किया जायेगा। उस समय संभव है कि वह शिष्यता की माँगों को तत्काल अस्वीकृत कर दे और अपनी हृदय–परिवर्तन न होने की दशा को प्रगट कर दे।किन्तु अकसर जैसा होता है, बाहरी तौर पर परिवर्तन के चिन्ह उसके जीवन में दिख सकते है। वह एक नये–नये प्राप्त आनन्द का प्रदर्शन करें और संभव है कि वास्तविक शिष्यता के लक्षण भी उसमें दिखाई दे। वह शरीर के विरूद्ध यत्न करे और संकरे मार्ग पर चलने वाले सच्चे आत्मिक यात्री के सभी लक्षणों को प्रदर्शित करें। किन्तु उसका असली स्वभाव या प्रकृति कुछ समय बीतने पर प्रगट होगी। वह संकरे मार्ग से भटकने लगेगा और अन्ततः पूरी तरह उससे दूर चला जायेगा। वह धर्म शिक्षा संबंधी गलतियाँ करेगा और विश्वास की मूल–भूत बातों का इंकार करेगा। वह पाप के विरूद्ध संघर्ष बन्द कर सकता है और जैसे कुत्ता अपनी वमन के पास लौटता है और सूअर नहाने के बाद वापिस कीच में लोटता है, वह भी अपनी बुराइयों में लौट जाता है।[73] देमास के समान इस युग के लिये उसका आगे बढ़ने वाला प्रेम पुनः जागृत हो सकता है, और उसे विश्वास का परित्याग करने, और संसार में वापस लौटने बाध्य करता है।[74] वह ईश्वर के प्रति उदासीन हों सकता है और आलस्य और थकान की ऐसी गहिरी दशा में पहुँचा सकता है जिससे वह वापस नहीं आ सकता। या अंत में, वह किसी अन्य सुसमाचार प्रचारकीय कलीसिया में जाकर शामिल हो जायेगा जहाँ शारीरिक लोग सुविधाजनक रूप में समृद्ध हो सकते है।

यद्यपि ये सभी दुखद बातें एक सीमा तक वास्तविक मसीही के जीवन में भी घट सकती है, स्पष्ट अन्तर यह है कि झूठे हृदय–परिवर्तन में परमेश्वर की निरन्तर मिलने वाली कृपा का अभाव होता है। ईश्वरीय अनुशासन का बाइबल–सम्मत कोई प्रमाण नहीं मिलता। व्यक्ति जो चाहे वह करने के लिये छोड़ दिया जाता है। वह उस मार्ग को त्याग देता है और झुण्ड से निकलकर चला जाता है उसे रोकने के लिये कोई ईश्वरीय हस्तक्षेप नहीं किया जाता। धर्म–परित्याग के द्वारा उसका झूठा हृदय–परिवर्तन उजागर कर दिया जाता है या उसे अवैध संतान प्रमाणित कर दिया जाता है। इब्रानियों के लेखक ने इस भयंकर सत्य को स्पष्ट रूप में लिखा है – ''वह कौन

73 2 पतरस 2:22कृ

74 2 तीमुथियुस 4:10.

सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? पर यदि वह ताड़ना सबकी होती है, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, परन्तु व्याभिचार की संतान ठहरे'' (इब्रानियों 12:7–8)।

बीज बोने वाले के दृष्टान्त में यीशु हृदय–परिवर्तन न करने वाले व्यक्ति का बड़े विस्तार के साथ वर्णन करते हैं। प्रथम उसका हृदय पथरीली भूमि के समान है जिस पर सुसमाचार का बीज गिरता है वह वचन सुनता और आनन्द के साथ शीघ्र उसे स्वीकार करता है किन्तु उसकी जड़ें गहिरी और मजबूत नहीं होती, इसका अर्थ है कि उसका नया जन्म नहीं हुआ है – परन्तु उसका अंगीकार कुछ समय के लिये हैं, जब वचन के कारण उस पर दुख और सताव आता है, वह तुरन्त विश्वास से गिर जाता है।[75] दूसरा, उसका हृदय कटीली झाड़ियों के समान है जिनमें सुसमाचार का बीज गिरता है। वह वचन को सुनता है, तब संसार की चिन्ता और धन का धोका वचन को दबा देता है और वह निष्फल हो जाता है।[76] दोनों ही प्रकरणों में हृदय–परिवर्तन न करने वाले का प्रकरण, मसीही से भिन्न है क्योंकि वह कभी परिपक्वता तक नहीं पहुँचता और बने रहने वाला फल नहीं लाता।[77] वह उस वृक्ष के समान है जिसका वर्णन करते हुये इब्रानियों के लेखक ने लिखा है कि वह उस वृक्ष के समान है जो भूमि पर गिरने वाली वर्षा के पानी को पीता है परन्तु कांटे और ऊँटकटारे उगाता है जिन्हें अंत में जला दिया जाता है।[78] वह उस वृक्ष के समान है जो अच्छे फल नहीं लाता और काटा एवं आग में झोंका जाता है।[79] बीज बोने वाले के दृष्टांत का सबसे अधिक अद्भुत और विचलित करने वाला सत्य यह है जिन चार व्यक्तियों का वर्णन किया गया है उनमें केवल सबसे पहला व्यक्ति ही सुसमाचार को सीधे–सीधे इंकार करता है, बाकी तीन विश्वास का अंगीकार करते हैं परन्तु उनमें से केवल एक का ही वास्तव में हृदय–परिवर्तन होता है।

बहुत और थोड़े

जब हम संकरे फाटक और चौड़े मार्ग के अध्ययन के अंत में पहुँचते हैं, हमारा सामना सबसे अधिक चकित करने वाले एक सत्य से होता हैः कि बहुत से लोग विनाश के मार्ग में है और केवल कुछ ही है जो उस फाटक और मार्ग को पाते हैं जो जीवन की ओर ले चलता है।[80] यह सत्य और भी अधिक कठोर लगता है जब हम मसीह के शब्दों को उचित संदर्भ में समझते है।

75 मत्ती 13:20–21

76 मत्ती 13:22.

77 मत्ती 13:23; यूहन्ना 1516.

78 इब्रानियों 6:7–8.

79 मत्ती 7:19.

80 मत्ती 7:13–14.

प्रथम दृष्टि में हम यह सोचने लगते है कि मसीह उनके साथ सार्वजनिक पहचान बनाकर रखने वालों और न रखने वालों के बीच अन्तर दर्शा रहे हैं। ऐसे परिदृश्य में, अनीश्वरवादी, ईश्वरत्व के अस्तित्व से इंकार करने वाले, अन्य जातीय, और संप्रदायवादी उस चौड़े मार्ग पर है जो विनाश की ओर ले जाता है, और वे जो मसीह का अंगीकार करते हैं वे उस संकरे मार्ग पर है जो जीवन की ओर ले जाता है। यदि ऐसा है तो सत्य सही है कि मानवजाति का बड़ा बहुमत विनाश के मार्ग में है। किन्तु मसीह जिस झुण्ड को बना रहे है वह इससे भी अधिक संक्षिप्त है। इस संदर्भ में, वे अधार्मिक और धार्मिक यहाँ तक कि स्वयं को मसीहत से बाहर मानने वाले और जो मसीह के अनुयायी है, उनके बीच भिन्नता (या अन्तर) को प्रदर्शित नहीं कर रह रहे हैं। इसके बदले में, वे केवल इस बात की चिन्ता कर रहे हैं कि कौन उनके अनुयायी होने का दावा करते है। वे चेतावनी उन्हें देते हैं जो उनके साथ अपनी पहिचान बनाते हैं, यहाँ तक कि उन्हें प्रभु जानकर सार्वजनिक अंगीकार करते हैं, उनमें से भी केवल कुछ ही उद्धार पायेंगे।

यह विचलित करने वाला सत्य बाद के वृतान्तों से प्रमाणित होता है जिसमें यीशु उन्हें जो स्वयं को यीशु के अनुयायी मानते हैं, एक अति कठोर चेतावनी देते हैं।[81] प्रथम, प्रत्येक भविष्यद्वक्ता जो मसीही लगता है, मसीही नहीं है। उसकी सेवकाई और अंगीकार की पुष्टि उसके फल से होती है, उसके जीवन के चाल–चलन (आचरण) से होती है।[82] दूसरा, प्रत्येक जो जोर देकर यीशु को प्रभु अंगीकर करता है और यहाँ तक कि उसके नाम की सेवकाई करता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा।[83] सच्चे विश्वास और हृदय–परिवर्तन का चिन्ह पिता की इच्छा के प्रति समर्पण है। अंत में प्रत्येक जो मसीह की शिक्षाओं को सुनता है, संसार पर आने वाले दण्ड से नहीं बचेगा, परन्तु केवल वे ही बचेंगे जो न केवल उसके वचन को सुनते हैं परन्तु उस पर चलते भी है।[84]

इन चेतावनियों से यह स्पष्ट है कि यीशु मानव जाति के उस बड़े भाग की बात नहीं कर रहे थे जो उनकी अनदेखी करते है या सार्वजनिक रूप में उनका इंकार करते है; परन्तु उनकी परवाह उनके लिये थी जो दावा करते हैं कि वे उसे जानते है और जो वास्तव में सार्वजनिक रूप में उनके साथ अपनी कुछ पहिचान बनाते है। इन लोगों में से ही कुछ लोगों का उद्धार होगा। शेष बचे मनुष्य, विवाह के भोज के दृष्टान्त में बताये गये उन लोगों के समान हैं जो तैयार नहीं थे।[85] जिन्होंने किसी तरह विवाह के निमंत्रण का प्रत्युत्तर तो दिया पर विवाह में भाग लेने के उपयुक्त वस्त्र प्राप्त करने की ओर ध्यान नहीं दिया। इस कारण, राजा ने उनके हाथ–पाँव बाँधकर बाहर अंधकार में डाल देने की आज्ञा दी। इसी प्रकार यीशु चेतावनी देती हैं कि ऐसे अनगिनत व्यक्ति

81 मत्ती 7:15–27.

82 मत्ती 7:15–20.

83 मत्ती 7:21–23.

84 मत्ती 7:24–27.

85 मत्ती 22:11–14.

होंगे जिन्होंने किसी न किसी रूप में सुसमाचार की बुलाहट का उत्तर दिया, परन्तु वास्तव में उनका कभी हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ और हृदय–परिवर्तन के वास्तविक लक्षण कभी उनके जीवनों में परिलक्षित नहीं हुये। यद्यपि उन्होंने एक सीमा तक प्रत्युत्तर दिया, यद्यपि उन्होंने उसे प्रभु कहकर पुकारा, यहाँ तक कि उसके नाम से सेवकाई भी की, वे "हाथ और पैर बांधकर बाहर अंधकार में डाल दिये जायेंगे वहाँ रोना और दांत पीसना होगा।" यही कारण है कि यीशु ने चिताया, ''बुलाये हुये तो बहुत है, पर चुने हुये थोड़े हैं'' (मत्ती 22:13–14)।

हमें इस चेतावनी पर ध्यान देना चाहिये। हम अपना सिर बालू में नहीं छिपा सकते और ऐसा नहीं दर्शा सकते कि हम वहाँ नहीं है। हम पश्चिम में सुसमाचार प्रचारकीय समाज की वास्तविकता की अनेदेखी नहीं कर सकते। सप्ताह दर सप्ताह, अनेकों व्यक्ति मसीह को प्रभु के रूप में अंगीकार करते और सब प्रकार की सुसमाचार प्रचारकीय गतिविधियों में भाग लेते हैं, इसके बावजूद उनके जीवन के लक्षण चौड़े मार्ग के है। उन्हें बुलाहट, यत्नशीलता, बलिदान, पाप का परित्याग, संसार से दूरी बनाकर रखना, या धार्मिकता का पीछा करने की जरा भी चिन्ता (परवाह) नहीं है। हमने जो होना चाहिये, उसके विकृत और खोखले स्वरूप को अपना लिया है और अब सारी बातें इतनी आम हो चुकी है कि कुछेक लोगों का ही ध्यान उन पर जाता है। सुसमाचार प्रचारवाद अब आगे इस संसार के 'वैनिटी फेयर' के विरूद्ध कोई चेतावनी नहीं देता; यह अब उसके प्रमुख आकर्षणों में से एक आकर्षण बन चुका है। संभवतः सबसे अधिक बड़ा पाप यह है कि यह सब मंच के बिना नहीं पर मंच के कारण हुआ है। समकालीन सेवक अब इन बातों के विरूद्ध रूकावट या प्रतिबंध नहीं रहे, अब वे अकसर इन बातों के उत्प्रेरक है। प्रचार अब जीवन के द्वारा नहीं किया जाता, लोगों को नियम या सिद्धांतों को सिखाने वाले इसलिये सिखाते हैं कि उन्हें वर्तमान में सर्वोत्तम जीवन मिले। कलीसिया की उन्नति के विशेषज्ञ कलीसियाओं को इस बारे में निर्देश देते है कि शारीरिक मनुष्यों को शारीरिक साधनों के द्वारा कैसे आकर्षित किया जाये और सदैव बढ़ने वाली शारीरिकता के द्वारा कैसे मण्डली में बनाकर रखा जाये। सुसमाचारवाद और मिशन के विशेषज्ञ सुसमाचार को प्रासंगिगता के अनुसार इतना ग्रहण योग्य और संस्कृति को ठोकर न पहुँचाने वाला बनाने में प्रयत्नशील है कि अब इन दोनों में कोई अन्तर समझ नहीं आता। इसी बीच, भीड़ जो मसीह यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार करती हैं, वे उस दिन के अधिकाधिक निकट आते जा रहे है जब वे उसके सामने खड़े होंगे और सुनेंगे – ''मैं तुम्हें नहीं जानता, हे कुकर्मियों मेरे पास से दूर हो जाओ।''

हमारे समस्त सुसमाचार प्रचारकीय कोलाहल और अफरातफरी और बड़े बोल के बावजूद कि हमारी सभाओं में कैसा बड़ा जनसमूह उमड़ता है, इन सत्यों पर मंथन और नये नियम के विद्वान क्रेग ब्लोमबर्ग के इस कथन पर विचार करके भला ही करेंगे – ''जब मसीही होना लोकप्रिय है तब उन स्थानों और समयों में वास्तविक विश्वासियों के प्रतिशत और सताव के समय में जब

बहुत ही कम लोग अंगीकार करते हैं कि वे गहिराई से प्रतिबद्ध नहीं है, तब मसीहियों के प्रतिशत में अधिक अन्तर नहीं है।''[86]

जीवन एवं मृत्यु

सच्ची मसीहत छोटी–छोटी बातों के बारे में नहीं है। यह जीवन और मृत्यु, स्वर्ग और नरक, परमेश्वर की उपस्थिति में अनंतकालीन सुख या वर्णन से बाहर भयंकर अनंतकालीन अस्तित्व के बारे में है। मसीहत वह धर्म है जिसमें मानव की अपरिवर्तनीय नियति तराजू के पलड़ों पर है। इस कारण यह एक अत्याधिक गम्भीर मसला है।

मत्ती 7:13–14 में यीशु 'जीवन' और 'विनाश' के बीच का अन्तर व्यक्त करते हैं। शब्द जीवन ग्रीक भाषा के शब्द Zoe का अनुवाद है। मसीह की सभी शिक्षाओं और नये नियम के लेखकों के संदर्भ में हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि वह केवल भौतिक अस्तित्व या कभी समाप्त न होने वाले कालखण्ड के अस्तित्व के बारे में नहीं बोल रहा था, परन्तु वह अनंत जीवन के संदर्भ में कह रहा है, जीवन की वह गुणवत्ता जो परमेश्वर के साथ आत्मीय (निकट) और व्यक्तिगत संबंधों के कारण आती है।[87] यह वे संबंध है जो निःशुल्क, पूर्ण, और पाप के कारण मृत्यु के द्वारा अलगाव के कारण बेरोकटोक है।[88] यह एक पारिवारिक संबंध है जिसमें विश्वासीजन को पुत्र होने का सौभाग्य और आशीष दी जाती है।[89] संक्षेप में, अंतहीन कालखण्ड का यह जीवन परमेश्वर की अनुग्रहमय उपस्थिति में हैं और यह यीशु मसीह के व्यक्ति और कामों में और उसके द्वारा है।[90]

'जीवन' शब्द के विपरीत 'विनाश' शब्द है। यह ग्रीक भाषा के शब्द apoleia से है जिसका एक अनुवाद 'विनाश' या 'सर्वनाश' भी है। मसीह की शिक्षाओं और नये नियम के संदर्भ में हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इसका अभिप्राय व्यक्तिगत अस्तित्व की समाप्ति से नहीं है परन्तु अनंतकालीन या नर्क में अंतहीन दण्ड से है। भले ही एक व्यक्ति अन्तहीन दण्ड की धर्मशिक्षा पर आपत्ति प्रगट करे या नये नियम को त्रुटिपूर्ण दस्तावेज कहकर उसका अनादर करे, वह तर्क पूर्ण ढ़ंग से इंकार नहीं कर सकता कि स्पष्ट शिक्षा यही है। अनंत जीवन और अनंत विनाश साथ–साथ चलते हैं। यह सत्य अंतिम न्याय के बारे में मसीह के वर्णन में स्पष्ट दृष्टिगोचर है, जहाँ वे उद्घोषणा करते है, ''ये (दुष्ट) लोग अनंतदण्ड भोगेगे, परन्तु धर्मी अनंतजीवन में प्रवेश

86 Craig Blomberg, *The New American Commentary: Matthew* (Nashville, Tenn.: Broadman, 1992), 132.

87 यूहन्ना 17:3.

88 रोमियों 5:1; 8:1.

89 यूहन्ना 1:12–13. रोमियों 8:15; गलातियों 4:6.

90 यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2:5–6.

करेंगे'' (मत्ती 25:46)। यदि दुष्टों का नर्क में दण्ड असीमित काल के लिये नहीं हैं तो हम यह नहीं मान सकते कि स्वर्ग में छुटकारा पाये हुओं का आनन्द अंतहीन है।[91]

नरक दुष्टों के विरूद्ध परमेश्वर की धर्ममय घृणा का अंतिम एवं सम्पूर्ण प्रगटीकरण है। यह चौड़े मार्ग पर आरम्भ होने वाले महान् पतन का अंतिम परिणाम है। नर्क में पापियों को जरा भी दया नहीं मिलती, और वह सिद्ध न्याय या दण्ड को भोगता है जिसका वह हकदार है। वह अंतिम रूप में और अपरिवर्तनशील दशा में उसके ह्रदय की लालसाओं के आधीन कर दिया जाता है और उसको पतन की ओर ले जानी वाली लालसाएँ बिना किसी प्रतिरोध के उस पर शासन करती है।[92] उसे परमेश्वर के लोगों को मिलने वाली आशीषों से सदा के लिये वंचित कर दिया जाता है, वह बिना परमेश्वर और बिना आशा के है।[93] पवित्रशास्त्र के इस सत्य को अभिव्यक्त करते हुये कवि डान्टे अपने महाकाव्य *''डिवाइन कॉमेडी''* में लिखते हैं कि नर्क के द्वार पर यह अंकित है, ''आप सब जो यहाँ आ चुके है, आशा को त्याग दे।'' सुप्रसिद्ध प्यूरिटन पास्टर रिचर्ड बैक्स्टर उद्घोष करते है – ''मैंने इस प्रकार प्रचार किया कि अगली बार शायद मुझे प्रचार करने का अवसर न मिले, जैसे कि एक मरता हुआ व्यक्ति किसी दूसरे मरते हुये व्यक्ति को प्रचार करता है।''[94]

हमें यह समझना चाहिये कि एक फाटक है जिसमें से हम सबको गुजरना है, यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं। वह द्वार मसीह है, और केवल मसीह है। और यह विश्वास है, केवल विश्वास जो उस द्वार को हमारे लिये खोलता है। परन्तु फिर भी पवित्रशास्त्र आग्रही है, वरन् बिना रूके इस प्रयास में हमें आश्वस्त करता है कि इस द्वार से प्रवेश करने का प्रमाण है कि हम संकरे मार्ग के आत्मिक यात्री बन चुके है।

कहा जाता है कि जन्म लेने के पल से हम मरना आरम्भ कर देते है। यह भी उतना ही सच है कि जिस पल हम इस संसार में प्रवेश करते हैं, हम इस संसार से चले जाने की यात्रा का आरम्भ करते हैं। यही कारण है कि मसीह हमें चेतावनी देते है कि एक संकरा मार्ग है जो अनंतजीवन की ओर ले चलता है; और एक चौड़ा मार्ग है जो अनंत विनाश की ओर ले चलता है।[95] यह बड़ा और भयानक सत्य है जिसे हमारे विवेक पर अंकित कर दिया जाना चाहिये। भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह हमें बताते हैं कि परमेश्वर ने हमारे सामने ''जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग'' दोनों रखे हैं (यिर्मयाह 21:8)। वह पुकारकर कहता है,

91 दानिय्येल 12:2; मत्ती 18:18; 25:41; प्रकाषितवाक्य 20:10.

92 रोमियों 1:24, 26.

93 इफिसियों 2:12.

94 Richard Baxter, *Poetical Fragments: Heart Imployment with God and It Self* (London: J. Dunton, 1689), 30.

95 मत्ती 7:13–14 में ''पहुंचाता है'' वाक्यांष यूनानी भाषा के *अपागो* से अनुवादित है। इसका अर्थ है लेकर चलना, जैसे एक व्यक्ति को दंड अथवा सम्मान के लिये लेकर जाया जाता है।

''सड़कों पर खड़े होकर देखो,
और पूछो कि प्राचीनकाल का मार्ग अर्थात् वह उत्तम मार्ग कहाँ है,
और उस पर चलो; तब तुम अपने मन में चैन पाओगे।''

हम यरूशलेम के उन हठीले मन वाले निवासियों के समान न बनें, जिनका उत्तर था, ''हम उस पर नहीं चलेंगे''(यिर्मयाह 6:16)। जिस प्रकार, यशायाह भविष्यद्वक्ता आग्रह करता है,

''दुष्ट अपनी चाल चलन और अनर्थकारी
अपनी सोच विचार छोड़कर यहोवा की ओर फिरे
और वह उस पर दया करेगा
हाँ, हमारे परमेश्वर की ओर,
क्योंकि वह पूरी रीति से क्षमा करेगा (55:7)।

अध्याय – 18

आंतरिक वास्तविकता का बाहरी प्रमाण

"झूठे नबियों से सावधान रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते है, परन्तु भीतर से वे भूखे, फाड़–खाने वाले भेडियें है। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या कंटीली झाड़ियों से अंगूर या कांटो से अंजीर तोड़े जाते है? इसी प्रकार प्रत्येक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है, परन्तु निकम्मा पेड़ बुरा फल देता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और न ही निकम्मा पेड़ अच्छा फल दे सकता है। प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है। अतः तुम उन के फलों से उन्हें पहिचान लोगे।

– मत्ती 7:15–20

इन पदों में प्रभु अपने लोगों को झूठे नबियों के निश्चित रूप में प्रगट होने की चेतावनी और निर्देश दे रहे हैं कि वे उन्हें कैसे पहिचान सकते है। प्रेरित पौलुस भी इफिसुस की कलीसिया को इसी से मिलती–जुलती चेतावनी देते है, ''मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुम्हारे मध्य आएंगे और झुण्ड को न छोड़ेंगे। और तुम्हारे ही बीच में से ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिये टेढ़ी–मेढ़ी बातें करेंगे'' (प्रेरितों के काम 20:29–30)।

मसीह के अनुसार, ये फाड़ने वाले किन्तु आत्मिक लगने वाले भेड़ों के समान दीखते हैं और झुण्ड में ऐसे रहते हैं मानों वे झुण्ड ही के है। परन्तु वे जैसे दीखते हैं, वैसे नहीं है, वास्तव में उसके विपरीत हैं। यद्यपि बाहरी तौर पर वे भेड़ों का स्वरूप धारण करते हैं भीतर से वे फाड़ खाने वाले भेड़िये हैं। वे ऐसे प्याले है जो बाहर से साफ है परन्तु भीतर गन्दगी से भरे हैं।[1] वे

1 मत्ती 23:25–26.

सावधानीपूर्वक पोती गई कब्रों के समान है जो 'मृतकों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता' से भरी है (मत्ती 23:27)। यहूदा का 12 पद वर्णन करता है कि वे 'समुद्र तल की छिपी चट्टान है, निर्जन बादल है जिनमें बरसात नहीं होती वे पतझड़ के फलहीन वृक्ष है जो भीतर सड़ चुके है। प्रेरित पौलुस के शब्दों में ये बुरे और पाखंड़ी लोग है जो बुरे से बदतर होते जाते है, "धोका देते और धोका खाते है" (2 तीमु. 3:13)।

इन सभी दुःखद वर्णनों का विचार यह है कि इन मनुष्यों की आतंरिक वास्तविकता उनके अंगीकार के विपरीत है, वे वैसे नहीं है, जैसे लगते हैं या जैसा अंगीकार करते है। उन्होंने स्वयं को मसीहत के परदे में छुपा रखा है और मसीह को प्रभु मानने के अपने मिथ्या अंगीकारों के द्वारा स्वयं को एवं अन्य दूसरों को भी धोका दिया है।[2] वे होंठो से तो उसका आदर करते है पर उनके हृदय उससे बहुत दूर है, वे उसे जानने का दावा तो करते हैं परन्तु अपने कामों से उसका इंकार करते है।[3]

यद्यपि मसीह मूल रूप में झूठे नबियों के गुप्त चरित्र के बारे में और उनके द्वारा मार्ग से भटकाने के खतरों के बारे में बोल रहे थे, उनके शब्दों को केवल इस मसले तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये। हमारे लिये यह समझना बेहतर होगा कि हम सबके लिये जो मसीह का अंगीकार करते है और उसके साथ पहिचान बनाने का दावा करते है, उनके अनुप्रयोग बहुत दूरगामी है। वास्तव में, मसीह के शब्द मसीही धर्म के मर्म तक पहुँचते है, और उसके एक सर्वाधिक आवश्यक प्रश्न का समाधान करते हैं, "मैं कैसे जान सकता हूँ कि मैं वास्तव में मसीही हूँ?" इस प्रश्न का उत्तर सरल है और यह गम्भीर भी है – हमारी आन्तरिक वास्तविकता बाह्य प्रमाणों के द्वारा प्रगट होती है; हमारी वास्तविक पहिचान हमारे दिखाई देने वाले कामों से उजागर होती है; हमारा हृदय–परिवर्तन या उसका न होना, हमारे जीवनों के फल से प्रगट होता है।

न बदलने वाला एक सत्य

मत्ती 7:16 में यीशु ने हमारे समक्ष एक निश्चित सूत्र रखा है जिसमें कोई अपवाद नहीं है – "तुम उनके फलों से उन्हें जान लोगे।" दूसरे शब्दों में, हम एक व्यक्ति के विश्वास के अंगीकार की वास्तविकता उसके जीवन के आचरण से जानेंगे।

शब्द 'जानना' ग्रीक भाषा के शब्द epiginosko का अनुवाद है, सामान्य रूप में यह शब्द किसी विषय में ज्ञान के लिये उपयोग में आने वाले शब्द ginosko को नहीं, परन्तु उससे बढ़कर विशेष या सही–सही ज्ञान को प्रदर्शित करता है। इसका अर्थ है सटीक रूप में जानना, पूर्ण या

2 लुका 6:46.

3 यशायाह 29:13; मत्ती 15:18; मरकुस 7:6; तीतुस 1:16.

सम्पूर्ण, या गहन एवं विस्तारित रूप में जानना–समझना।[4] शब्द 'फल' यहाँ ग्रीक शब्द karpos का अनुवाद है जिसका शाब्दिक अर्थ वृक्षों या दाखलताओं के फल से है। प्रतीक रूप में, यह शब्द उस वस्तु को दर्शाता है जो किसी के उत्पाद, प्रभाव या परिणाम के कारणवश उत्पन्न होता या प्राप्त होता है। डबल्यू. ई. वाइन्स फल का वर्णन करते हुये उसे – भीतर एवं अदृश्य रूप में कार्य करने वाली सामर्थ की दृश्य अभिव्यक्ति – कहते हैं। फल के लक्षण (गुण) उसे उत्पन्न करने वाली सामर्थ के लक्षण (गुण) का प्रमाण है।[5]

वर्तमान संदर्भ में शब्द Karpos का उपयोग आचरण, व्यवहार, कामों को प्रदर्शित करने में किया जाता है जिनका संबंध व्यक्ति के चरित्र से है और वे उसकी वास्तविक गुणवत्ता को प्रगट करते हैं। साथ ही इस बात पर विचार करना भी महत्वपूर्ण है कि यीशु ने फलों के बारे में कहा था, एकवचन नहीं परन्तु बहुवचन, अर्थात् यह किसी व्यक्ति के जीवन का केवल एक पहलू नहीं है परन्तु व्यक्तित्व की सम्पूर्णता शामिल है। यह सत्य बताया गया है कि व्यक्ति की आंतरिक वास्तविकता, उसके कार्यो से कि वह क्या है और प्रत्येक परिस्थिति में क्या करता है, के द्वारा प्रमाणित होगी। न तो सद्गुण और न अवगुण आसानी से छिप सकते हैं परन्तु दोनों ही समय आने पर प्रगट होंगे।[6]

इस सत्य की सुनिश्चितता इस वृतान्त में इस बात को दोहराये जाने से प्रदर्शित होती है। यह बात महत्वपूर्ण है कि मसीह अपनी चर्चा का आरम्भ और अंत 'फलों' के संदर्भ में उसी चेतावनी के साथ करते है – "उनके फलों से तुम उन्हें पहिचान लोगे" और पुनः, "उनके फलों से तुम उन्हें पहिचान लोगे" (मत्ती 7:16,20 और 12:33)। धर्मी जन पाप के साथ मुकाबला करेगा और समय–समय पर पराजित भी होगा। कभी–कभी दुष्ट–जन भले कामों को करेगा और संभव है धार्मिकता के लक्षण प्रगट करे। किन्तु समय के साथ–साथ उनके लगातार आचरण से धर्मी और दुष्ट दोनों ही प्रगट किये जायेंगे।

हमें आरम्भ ही से यह समझ लेना चाहिये कि यह सत्य समकालीन सुसमाचार प्रचार की अधिकांश लोकप्रिय शिक्षाओं के विपरीत है। यह न केवल अधिकांश सुसमाचार प्रचार और परामर्श से नदारत है परन्तु अकसर इसका इंकार खुलकर किया जाता है। प्रथम, सुसमाचारकीय समुदाय के अधिकांश भाग ने समकालीन संस्कृति के त्रुटिपूर्ण अभिमत को अपना लिया है जो आंतरिक चरित्र और बाहरी व्यवहार के बीच किसी भी संबंध से इंकार करते है। यह ऐसा अभिमत है जो व्यक्ति के अंगीकार के संदर्भ में उसे सिद्ध करने या उससे इंकार करने वाले तथ्यों के बदले व्यक्ति

4 William F. Arndt and F. Wilbur Gingrich, *A Greek-English Lexicon of the New Testament and Other Early Christian Literature* (Chicago: University of Chicago Press, 2000), 369.

5 W. E. Vines, *An Expository Dictionary of New Testament Words: With Their Precise Meanings for English Readers* (Nashville, Tenn.: Thomas Nelson, 1985), 133.

6 मत्ती 7:16 पर अपनी व्याख्या में, जॉन कैल्विन ने लिखा था, "गुण की नकल करने से बढ़कर कठिन कुछ नहीं है।"

के अंगीकार या उसकी भावना को अधिक श्रेय देते है। साथ ही हमने इस झूठ को स्थान दे दिया है कि किसी व्यक्ति का स्वयं के प्रति दावा, तथ्यों के आधार पर कितना भी खोखला और विपरीत हों, उस पर प्रश्न करना अनैतिक और मानवीय प्रतिष्ठा का अनादर करना है। हमने इस कहावत को सामान्य नियम के रूप में स्वीकार कर लिया है कि किसी पुस्तक का मूल्यांकन उसके आवरण के आधार नहीं किया जा सकता। किन्तु ऐसा करने पर हम मसीह की स्पष्ट शिक्षाओं का इंकार भी करते हैं कि तुम उनके फलों से उन्हें जान लोगे।

यहाँ यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जब लोग कहते हैं कि किसी पुस्तक का मूल्यांकन उसके आवरण के आधार पर नहीं कर सकते, वे परखने पर तात्कालिक प्रतिबंध नहीं लगाते परन्तु वे सतही अवलोकन के आधार पर निष्कर्ष या अंतिम विचार निश्चित करने के विरूद्ध चेतावनी देते है। उदाहरण के लिये, हमें किसी व्यक्ति की बुद्धि या योग्यता पर केवल इसलिये संदेह नहीं करना चाहिये, कि वह किसी आइवी लीग स्कूल से स्नातक नहीं है। परन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं कि हमें किसी शारीरिक और दुष्ट व्यक्ति द्वारा मसीह के अंगीकार पर केवल इसलिए प्रश्न नहीं करना चाहिये क्योंकि हम उसके हृदय की बातें नहीं जान सकते। मसीह के अनुसार हम हृदय से निकलने वाले बाहरी कामों के द्वारा उसे जान सकते हैः ''क्योंकि हृदय ही से बुरे–बुरे विचार, हत्याएँ, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरियाँ, झूठी साक्षी और निन्दा निकलती है। ये ही वे बातें हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती है, परन्तु हाथ धोए बिना भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता (मत्ती 15:19–20)।

पवित्रशास्त्र से यह आम विचलन हमारे लिये आश्चर्य का कारण नहीं होना चाहिये। अनाज्ञाकारियों का सबसे अधिक आम लक्षण यह है कि वे ऐसे अंगीकार का बहाना करते है, और तर्क देते हैं कि धर्म का संबंध हृदय से है और उसे किसी बाहरी प्रगटीकरण के द्वारा जाँचा–परखा नहीं जा सकता। इस सुविधाजनक परन्तु गलत अवधारणा के आधार पर कोई व्यक्ति अपने हृदय में परमेश्वर की बड़ी भक्ति का दावा कर सकता है जबकि बाहरी तौर पर परमेश्वर की आज्ञाओं के विरूद्ध बड़े से बड़ा पाशविक कृत्य करता रहे। यही कारण है कि पवित्रशास्त्र बिना तथ्य अंगीकार के किसी भी स्वरूप के विरूद्ध चेतावनियों से भरपूर है। मत्ती 7 में यीशु की चेतावनी और समग्र सेवकाई के साथ साथ प्रेरित पौलुस भी उनके विरूद्ध चेतावनी देते हैं जो परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं पर अपने कामों से उसका इंकार करते हैं। वह उन्हें घृणास्पद और अनाज्ञाकारी कहता है।[7] याकूब तर्क देते हैं कि विश्वास जो कामों से प्रगट नहीं होता, वह मृत है और उसमें उद्धार की सामर्थ नहीं है। ऐसा विश्वास रखने वालों के उद्धार की कोई आशा नहीं है।[8] अंत में, हम इस पुस्तक के प्रथम भाग में देख चुके हैं कि प्रेरित यूहन्ना ने एक पूरी पत्री लिखी थी कि वे

7 तीतुस 1:16.

8 याकुब 2:14–23.

जो मसीह का अंगीकार करते हैं, वे अपने व्यक्तित्व और जीवनशैली एक सच्चे मसीही के चारित्रिक लक्षणों के द्वारा तुलना करके उनके अंगीकार की वैधता को प्रमाणित कर सके।[9]

सार रूप में, वास्तविक विश्वासी फल लायेगा जो उसमें बनें रहेंगे। क्योंकि इसी के लिये वह चुना और नियुक्त किया गया है और इसी के द्वारा वह प्रमाणित करता है कि वह मसीह का वास्तव में चेला (शिष्य) है।[10] यद्यपि वह आभासी तौर पर फलहीनता के समय से गुजरेगा, रोकने या पीछे करने वाले किसी पाप के कारण और पिता के द्वारा काँटने–छाँटने के कारण किन्तु ईश्वरीय अनुशासन का कार्य उसे अधिक फलवन्त बनने में मदद करेगा।[11] बीज बोनेवाले के दृष्टान्त में यीशु हमें भरपूरी से फलप्रद्र होने के बारे में कुछ विचार देते हैं जो प्रत्येक मसीही के जीवन का चिन्ह है, जब वे अपने सच्चे शिष्यों के सामने उद्‌घोषणा करते हैं कि – ''कुछ सौ गुना, कुछ साठ गुना और कुछ तीस गुना फल लायेंगे'' (मत्ती 13:23; यूहन्ना 15:5)। यह एक अद्‌भुत और उद्धार में परमेश्वर की सामर्थ को प्रदर्शित करने वाली बात है कि स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा भी तीस गुना फल लायेगा![12] जैसा कि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने हमें बताया है कि परमेश्वर का उद्धार फलवन्त होगा और उसके साथ धार्मिकता अंकुरित होगी।[13]

आर्गुमेन्टम एड एबसर्डम *

आर्गुमेन्टम एड एबसर्डम या heductio ad adsurdum (तर्क या असंगत निष्कर्ष या निष्पादन) तर्क शास्त्र में उपयोग किया जाता है जिसके द्वारा विरोधी के तर्क को अस्वीकारयोग्य विरोधाभासी या बेतुका (मूर्खतापूर्ण) बताया (प्रदर्शित) जाता है। मत्ती 7:16 में यीशु ने ऐसा ही तरीका उन्हें निरूत्तर करने के लिये अपनाया जो इंकार करते हैं कि उनकी आन्तरिक वास्तविकता (अर्थात् वे क्या है) को उनके बाहरी कामों से जाँचा या जाना जा सकता है (अर्थात् वे क्या करते है) – "उनके फलों से तुम उन्हें जान लोगे, क्या कटीली झाड़ियों से अंगूर या कांटों से अंजीर तोड़े जाते है?''

यीशु एक असाधारण शिक्षक थे, और पहाड़ी उपदेश इस सत्य का सबसे बड़ा प्रदर्शन है। वे स्वयं सदेह बुद्धि और कुशलवक्ता थे और वे अजेय वाद–विवाद करने वाले थे। सुसमाचार के लेखक हमें निश्चय दिलाते है कि वाद–विवाद की किसी भी स्थिति में – ''कोई भी उसे उत्तर

9 1 यूहन्ना 5:13.

10 यूहन्ना 15:18.

11 यूहन्ना 15:2; इब्रानियों 12:11.

12 मत्ती 11:11; लुका 7:28.

13 यभायाह 45:8.

* तर्कशास्त्र में लैटिन भाषा में 'विसंगति की ओर अवनति' ('विसंगति के लिए बहस') Argumentum ad absurdum या reductio ad absurdum के लिए तर्क का एक रूप है जो यह दिखाकर कथन को या तो गलत साबित करता है कि वह निस्संदेह हास्यप्रद, विसंगत, या अव्यवहारिक निष्कर्ष की ओर जाता है, या उसे यह दिखाकर साबित करता है कि यदि वह सच नहीं होता, तो परिणाम विसंगत या असंभव होता।

देने योग्य न था'' (मत्ती 22:46)। और जब सबकुछ कहा और किया जा चुका, उसके विरोधी आश्चर्यचकित होकर चले गये और ''किसी को कुछ पूछने का साहस न हुआ'' (लूका 20:40)।

यीशु एक उदाहरण देते है जिसे सभी लोग, यहाँ तक कि वे भी समझ सकते है जो उन दिनों कृषि कार्य की बहुत कम समझ रखते थे। वे भीड़ से पूछते – ''क्या कंटीली झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते है?'' हम लोगों के प्रत्युत्तर की कल्पना कर सकते है, उन्हें अंत में वह प्रश्न पूछा गया है जिसका वे उत्तर दे सकते है। संभवतः कुछ दृढ़ता के साथ वे उत्तर देते – ''बिल्कुल नहीं! ऐसी बात की कल्पना करना भी बिल्कुल असंगत है, यह तो प्रकृति के विरूद्ध है।''

यीशु ऐसा ही एक और प्रश्न पूछते हैं – ''क्या कांटों से अंजीर तोड़े जाते है?'' पुनः भीड़ का उत्तर उनकी नयी प्राप्त निर्भीकता और संभवतः श्रेष्ठता के अहसास के साथ होगा – ''यह सोचना मूर्खता होगी। कुछ बातें है जिसकी संभावना है ही नहीं। कोई भी वृक्ष उसकी प्रकृति के विरूद्ध फल नहीं देगा। कंटीली झाड़ियों से अंगूर और कांटों से अंजीर तोड़ने की बात कहने वाला या तो विवेकहीन होगा या फिर झूठ बोल रहा है।''

लोग विजय का अनुभव करते है। उन्होंने महान प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न का सही उत्तर दिया है। उन्होंने सिखाने वाले को सिखाया है। किन्तु उनके विजय का भ्रम संक्षिप्त है। मसीह के प्रश्न वाक्चातुर्य से भरे थे। वे उसके नहीं पर उनके (सुनने वालों के) लिये लाभदायक थे। तब वह अपने जाल को खोलता और अपने प्रश्न के वास्तविक अभिप्राय को प्रगट करता है। वह उनके सामने वह निष्कर्ष रखता है जिसे उन्हें मानना ही पड़ेगाः

> यदि यह नितान्त असंगत होगा कि हम विश्वास करें कि कटीली झाड़ियों से अंगूर और कांटों से अंजीर तोड़े जा सकते हैं, तो यह विश्वास करना भी उतना ही असंगत होगा कि एक व्यक्ति जो सच्चे शिष्य के समान फल नहीं लाता, वास्तव में मेरा शिष्य है। और यदि कोई कंटीली झाडियों से अंगूर और कांटो से अंजीर तोड़ने का दावा करता है तो वह या तो पागल है या झूठा है, उसी प्रकार जो शिष्यता के अनुरूप फल लाये बिना मेरा शिष्य होने का दावा करता है, वह भी विवेकहीन और अनैतिक है।

कल्पना कीजिये कि कोई व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिये नियुक्त समय पर एक घण्टे विलम्ब से पहुँचता है, जैसे कि एक प्रचारक जिसे बहुत पहले से योजना बनाकर एक बड़ी भीड़ में प्रचार करने बुलाया गया था। जब वह विलम्ब से वहाँ पहुँचता है, उसे कुछ कठोरता के साथ पूछा जाता है कि उसे विलम्ब क्यों हुआ? वह नीचे दिया गया स्पष्टीकरण देता हैः

> सज्जनों, मैंने समयपर होटल छोड़ दिया था, परन्तु मार्ग में कार का एक टायर पंक्चर हो गया। जब मैं टायर बदल रहा था उसका एक नट मेरे हाथ से निकलकर लुढ़कता हुआ उस व्यस्त राजमार्ग के बीचोंबीच चला गया। बिना सोचे, मैं गया और उसे उठा लिया। जब मैं खड़ा हुआ, मैंने पाया कि लगभग 75 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से एक 30 टन का मालवाहक ट्रक मेरी ओर आ रहा था। उसने मुझे टक्कर मारी और मेरे उपर से निकल गया। मैं इसी कारण विलम्ब से आया। मैं असुविधा के लिये क्षमा चाहता हूँ जो मेरे कारण हुई।

जो सुन रहे थे, उन्होंने देखा कि वक्ता के बाल संवरे हुये है और उसके वस्त्र भी साफ–सुथरे है। साथ ही उसके शरीर पर किसी चोट के चिन्ह भी नहीं दिख रहे हैं। इन सबके आधार पर वे केवल यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रचारक दूसरों को पागल करने वाला, धोके में पड़ा और असाधारण रूप से झूठा है। उनके निष्कर्ष का आधार यह साधारण तथ्य है कि कोई भी सुरक्षा व्यवस्था के बिना 30 टन के ट्रक से टकरा कर और चोट खाकर ऐसी टक्कर को प्रमाणित करने वाली, दिखाई देनेयोग्य चोट (या सबूत) के बिना नहीं हो सकता।

इस उदाहरण के प्रकाश में सुसमाचार प्रचारकीय समुदाय के सामने कुछ असाधारण प्रश्न हैः कौन बड़ा है – मालवाहक ट्रक या परमेश्वर? यह कैसे असंभव है कि व्यक्ति छोटे से छोटे वाहन से टकराने के बाद भी बिना नाटकीय बदलाव के रह जाये, और यह कैसे संभव है कि जीवते परमेश्वर से आमना–सामना करने के बाद एक व्यक्ति के चरित्र पर खरोंच या परिवर्तन का चिन्ह न दिखाई दे? यह कैसे संभव है कि बहुत से लोग परमेश्वर के साथ संबंधों का दावा करते हैं, पर इस दावे के संबंध में प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते?

इसके दो प्राथमिक कारण है – एक धर्मशास्त्रीय और दूसरा व्यवहारिक। धर्मशास्त्रीय कारण यह है कि पुनः जन्म की अद्‌भुत धर्मशिक्षा को कमतर करके मात्र मानवीय निष्कर्ष या निर्णय बना दिया गया है। बहुत कम लोग समझते हैं कि 'नये जन्म' की अवधारणा, परमेश्वर के कार्य का अलौकिक चिन्ह है, जो व्यक्ति के स्वभाव को इस सीमा तक बदल देता है कि पवित्रशास्त्र में उसका उल्लेख करते हुये उसे 'नयी सृष्टि' कहा गया है।

व्यवहारिक कारण यह है कि बहुतों ने बाइबल–सम्मत सुसमाचार से कमतर कुछ स्वीकार किया है, और उनसे परमेश्वर को बदले में देने के लिये एक प्रार्थना को दोहराने से अधिक कुछ नहीं कहा गया है। वे पश्चाताप और विश्वास की वास्तविक प्रकृति से अनजान है, और शिष्यता की मांगों या मसीही जीवन के प्रतिबंधित स्वरूप के बारे में नहीं जानते। उन्हें अभी संकरे मार्ग से गुजरना बाकी है, और वे बड़ी खुशी के साथ चौड़े–मार्ग पर ही चल रहे हैं। उनके धार्मिक अधिकारियों[14] ने उन्हें उनके विवेक को चुप कराने पर्याप्त निश्चयता दी है ताकि उन्हें सुसमाचार की सच्ची चेतावनियों से अप्रभावित रखा जा सके।

आर्गुमेन्टम एड–होमीनेम *

जो नैतिकता या धर्म के किसी स्वरूप को मानते हैं उनकी आम प्रवृत्ति उस सत्य की अनदेखी या इंकार करने की होती है जिस पर मसीह बलपूर्वक आग्रह करते है – "कि व्यक्ति की आतंरिक

14 वर्तमान में धार्मिक अधिकारी इवेंजलीकल पास्टर्स, युवा कार्यकर्ता और इवेंजलिस्ट होते हैं, जिनका सुसमाचार और परिवर्तन के प्रति बाइबलविहीन दृश्टिकोण, उनके सुनने वालों को उद्धार का गलत दिलासा देता है और उन्हें किसी सच्चे निर्देभा से पृथक करके रखता है।

वास्तविकता उसके आग्रह की पुनरावृति या दृढ़ता पर नहीं किन्तु उसके फलों से जानी जाती है।" प्रेरित पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखी अपनी पत्री में इस समस्या का समाधान दिया है। वहाँ वे धार्मिक यहूदी अगुवों के विरूद्ध सविस्तार तर्क–विर्तक करते हैं, जो व्यवस्था पर घमण्ड करते, अन्य जातियों की अनैतिकता को दोषी ठहराते थे, परन्तु वे स्वयं भी उन्हीं पाशविक कामों के दोषी थे। वे Shema को मुखाग्र सुना सकते थे और परमेश्वर एवं उसकी व्यवस्था के प्रति निष्ठा के बड़े अंगीकार कर सकते थे, परन्तु उनके काम प्रमाणित करते थे कि वे वैसे नहीं थे जैसा वे दावा करते थे। पौलूस रोमियों 2:17–23 में लिखते हैः

> परन्तु यदि तू 'यहूदी' कहलाता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता तथा परमेश्वर पर गर्व करता है, और उसकी इच्छा को जानता और व्यवस्था में शिक्षित होकर उन बातों का समर्थन करता है जो अनिवार्य है, और अपने आप पर इस बात का भरोसा रखता है कि तू स्वंय तू अंधों का पथ–प्रदर्शक, अन्धकार में रहने वालों के लिए ज्योति, निर्बुद्धियों को समझाने वाला, बालकों का शिक्षक है, क्योंकि तुझे व्यवस्था में ज्ञान और सत्य का स्वरुप प्राप्त हुआ है, तू जो दूसरों को शिक्षा देता है, क्या स्वंय नहीं सीखता? तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, क्या स्वयं चोरी नहीं करता? तू जो कहता है कि व्यभिचार नहीं करना चाहिए, क्या स्वयं ही व्यभिचार नहीं करता? तू जो मूर्तियों से घृणा करता है, क्या स्वयं ही मंदिरों को नहीं लुटता? तू जो व्यवस्था पर गर्व करता है, क्या तू व्यवस्था का उल्लंघन करके परमेश्वर का अनादर नहीं करता?

यहूदियों के मध्य प्रचलित यह धोका जिस पर पौलुस ने चर्चा की है, आधुनिक सुसमाचारवादियों के मध्य भी बहुलता से प्रचलित है। बहुत से सुसमाचार प्रचारवादी नये जन्म और अनंत जीवन को प्राप्त करने का दावा करते हैं, परन्तु उनके जीवन उनके अंगीकार से असाधारण रूप में विपरीत है। न केवल वे इस बारे में मसीह की शिक्षाओं की अनदेखी करते हैं परन्तु वे अकसर सीधी तौर पर उनका इनंकार करते हैं और उसके बदले सर्वथा विपरीत शिक्षा देते है। झूठे हृदय–परिवर्तन वाले मानते है कि कोई कभी उन पर संदेह नहीं करेगा क्योंकि कोई उनके हृदय के भीतर नहीं देख सकेगा, जहाँ वे परमेश्वर के प्रति सच्चे विश्वास और प्रेम को छुपाकर रखते है। यदि कोई कभी उनका सामना करे, चोट में अपमान जोड़ते हुये, वे अकसर मसीह की शिक्षाओं को उसे ताड़ना देने के लिये ढ़ाल बनाते हैं। उनका पसंदीदा प्रत्युत्तर अकसर मत्ती 7:1 है – "दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाये।" वे इस बात से अनजान है कि स्वयं के हृदय–परिवर्तन की वैधता की अभिरक्षा करने की धुन में वे स्वयं के विनाश के लिये पवित्रशास्त्र में तोड़ मरोड़ कर रहे हैं।[15]

यह बात ध्यान देने योग्य और विचलित करने वाली भी है कि जिनका हृदय–परिवर्तन सच्चा नहीं है, उनसे प्रश्न करने वाले के प्रति उनका सर्वाधिक आम प्रत्युत्तर षास्त्रीय त्रुटि का

---

15 2 पतरस 3:16.

* Argumentum ad hominem तार्किक मिथ्याभास है जिसमें जिसमें विवाद के तत्व की आलोचना करने के बजाय, विवाद करने वाले व्यक्ति, या विवाद से संबंधित लोगों के चरित्र, उद्देश्य, या अन्य गुण की आलोचना कर विवाद का खंडन किया जाता है।

एक लगभग सिद्ध उदाहरण है जिसे तर्क शास्त्र के विद्धान argumentum ad hominem (अर्थात्, व्यक्ति से या उसके विरोध में तर्क) कहते है। यह त्रुटि तब होती है जब एक व्यक्ति अपने विरोधी के तर्क की सत्यता या सही होने को गलत साबित करने के बदले विरोधी व्यक्ति के चरित्र पर लाँछन लगाता है। ऐसे प्रकरण में तर्क यह होता है कि विरोधी जो कहता है उसे अमान्य किया जाये क्योंकि यह उसके चरित्र की त्रुटि है – या गलत प्रवृति है। इस रणनीति का लक्ष्य विरोधी के चरित्र पर लाँछन लगाकर, उसे सुनवाई के कटघरे में खड़ा करना है ताकि उसके तर्क की अनुसनी की जा सके।

हृदय–परिवर्तन से वंचित व्यक्ति अकसर किसी प्रश्न के उत्तर में जो उनके विश्वास की वैधता को चुनौती देता है, इस प्रकार की तार्किकता का उपयोग करते है। नीचे दिये परिदृश्य की कल्पना कीजिये – एक प्राचीन कलीसिया के एक सदस्य में बढ़ते भटकाव को देखता है और उसका सामना करने का निश्चय करता है। वह प्राचीन सप्रेम कुछ प्रमाणों को इकट्ठा करता है जिनके आधार पर वह मण्डली के सदस्य के हृदय परिवर्तन पर प्रश्न करना चाहता है। किन्तु स्वयं के विरूद्ध लगाये आरापों या तर्कों की वैधता पर विचार या गलतफहमी को सुधारने के लिये स्पष्टीकरण देने के बदले वह सदस्य प्राचीन को ही कटघरे में खड़ा कर देता है। वह उस पर फरीसियों जैसा आचरण करने और दोष लगाने की भावना रखने के आरोप लगाता है। वह प्राचीन को चेतावनी देता है कि – ''दोष मत लगाओ तकि तुम पर भी दोष न लगाया जाये'' और कहता है कि वह दूसरों के पापों को सुधारने से पहले स्वयं अपनी आँख से लट्ठा निकाले।[16] अंत में वह प्राचीन की ताड़ना करता है प्राचीन कैसे कल्पना कर सकता है कि वह (प्राचीन) दूसरों के हृदय की बातें समझ सकता है या कैसे कह सकता है कि कोई व्यक्ति मसीही नहीं है। हृदय–परिवर्तन से रहित व्यक्ति ने वस्तुस्थिति से ध्यान हटाने अर्थात् स्वयं से ध्यान विकर्षित करने और प्राचीन पर केन्द्रित में सफलता प्राप्त कर ली, उसके अभिमत में प्राचीन ने हठपूर्वक और बिना प्रेम उस पर आक्रमण किया था।

अंत में हृदय–परिवर्तन से रहित उस व्यक्ति ने न केवल हृदय–परिवर्तन और उसके प्रमाणों पर मसीह की बहुत सी महत्वपूर्ण शिक्षाओं का इंकार किया, परन्तु उनमें तोड़–मरोड़ भी की ताकि उन पर पलटवार करें जो प्रेमसहित और निस्वार्थ भाव से उसकी सहायता करना चाहते थे। इस पूरे परिदृश्य में सबसे अधिक दुखद बात यह है कि हृदय–परिवर्तन से रहित व्यक्ति के चारों ओर सत्य के प्रति अमेद्य उदासीनता या अप्रभावशीलता का निर्माण एवं किलेबन्दी उस प्रचार ने की है जो समकालीन सुसमाचार प्रचारकीय मंचों से किया गया है।

16 मत्ती 7:3–5.

आन्तरिक वास्तविकता का बाहरी प्रमाण

रूपकों और तस्वीरों का उपयोग करना जिसे बच्चे भी समझ सके प्रथम दृष्टि में पुराने जमाने की बात लगती है परन्तु वास्तव में हृदय–परिवर्तन के कार्य और मनुष्य की प्रकृति एवं इच्छा के बीच संबंधों को सिखाने की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यीशु ने उद्घोषणा की – '' इसी प्रकार प्रत्येक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है, परन्तु निकम्मा पेड़ बुरा फल देता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और न ही निकम्मा पेड़ अच्छा फल दे सकता है।'' (मत्ती 7:17–18)।

जैसा मैं पहले भी कह चुका हूँ, सुसमाचार प्रचारकीय समाज के भीतर और बाहर समकालीन मनुष्यों ने एक अस्वाभाविक अलगाव, स्वभाव और इच्छा के बीच उत्पन्न किया है। यह एक गलती है जो समकालीन सुसमाचारवाद की आधारशिला में है, और इसने सम्पूर्ण संरचना को बहुत निर्बल कर दिया है। इस विचारधारा ने ''व्यक्ति क्या है'' और ''वास्तव में क्या करता है'', इन दोनों को पृथक कर दिया है।

जब यीशु ने घोषणा की कि प्रत्येक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और प्रत्येक निकम्मा वृक्ष बुरा फल लाता है, तब वे केवल वृक्ष के स्वभाव (प्रकृति) और उसमें उपजने वाले फल के बीच अपृथकनीय संबंध पर जोर दे रहे थे। यह भी संभव है कि अच्छा वृक्ष दोषपूर्ण फल दे और निकम्मे वृक्ष में कुछ अच्छे फल लगे, उनकी अधिकांश उपज का संबंध उनकी प्रकृति से होगा, अच्छे वृक्ष में पर्याप्त संख्या में अच्छे फल लगेंगे जो वृक्ष की पहिचान अच्छे वृक्ष के रूप में करायेंगे, और उसे बुरे या निकम्मे वृक्ष से अलग पहिचान देंगे। हम सृष्टि के समय भी यह वर्णन पाते हैं कि प्रत्येक वृक्ष अपनी जाति या प्रकार के अनुसार फल देगा।[17]

फल और वृक्ष की प्रकृति के बीच का यह अपृथकीय संबंध उसके लक्षण एवं प्रकार, और वह क्या है और क्या करता है, धर्म एवं नैतिकता को छोड़ ज्ञान के प्रत्येक प्रभाग में भलीभांति समझा जाता है। हमें उस व्यक्ति की योग्यता पर संदेह होगा यदि वह किसी वृक्ष के फलों को देखकर उस वृक्ष की प्रजाति न समझ सके या फिर जानवरो के लक्षणों और आदतों का सावधानीपूर्वक परीक्षण करने के बाद भी उनमें विभेद न कर सके। जब हम मैदान में किसी पशु को देखते है जो घोड़े के समान नहीं दिखता क्योंकि उसके दो छोटे पाँव, झिल्लीदार पंजे और पंख है, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि वह घोड़ा नहीं है। हमारे अनुमान या निष्कर्ष का सत्यापन तब होता है जब हम पाते हैं कि वह घोड़े के समान आचरण नहीं करता क्योंकि वह कठिनता से छोटे डग भरकर चलता है, पर आसानी से तैरता है और उत्तर से दक्षिण और फिर वापस आसानी से उड़ता है। वह घोड़े के समान नहीं दिखता और घोड़े के समान व्यवहार नहीं करता, इस कारण हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि वह घोड़ा नहीं है।

17 उत्पत्ती 1:12.

किन्तु जब मसीही अंगीकार की बात आती है हम जो मानते हैं उसे भूलकर मसीह की शिक्षाओं के बदले लोकप्रिय प्रचलन को स्थान देते है। ऐसा लगता है कि सुसमाचार प्रचारकीय समुदाय अब हृदय–परिवर्तन को मूल रूप में परमेश्वर का अलौकिक कार्य नहीं मानता कि वह नये जन्म के आश्चर्यकर्म द्वारा सम्पन्न होता है। इस कारण, माना जाता है कि मसीही वे लोग है जिन्होने केवल अपने मनों को बदल लिया है, और वे परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा नयी सृष्टि में रूपांतरित नहीं किये गये हैं, जिनके नये स्वभाव के परिणाम स्वरूप उनके अनुराग भी नये और धार्मिकतापूर्ण हैं। इसके कारण पवित्रीकरण और फलप्रदता के प्रति विचार किया जाता है कि मसीही जीवन में यह हो सकता है और नहीं भी। हम जोर देकर मानते हैं कि परमेश्वर जिसने एक भला काम हम में आरम्भ किया है, उसे पूरा करेगा,[18] परन्तु केवल तब, जब हम उसे ऐसा करने की अनुमति देंगे। हम उसकी कारीगरी है, भले कामों को करने के लिए सृजे गये है जो पहले से ही तैयार किये गये हैं, परन्तु समूची ईश्वरीय योजना को नकारा जा सकता है यदि हम उसमें चलने का निर्णय न करे।[19] इस कारण कुछ लोग मानते हैं कि एक व्यक्ति मसीह को चुन सकता है और पूर्ण रूप से धर्मी ठहर सकता है, परन्तु वह मसीह के साथ पवित्रीकरण में आगे न बढ़ने का विकल्प भी चुन सकता है।

यद्यपि यह लोकप्रिय है, ऐसा अभिमत सत्य नहीं है, परन्तु त्रुटिपूर्ण अवधारणा है जो परमेश्वर को जबर्दस्ती करने वाले और बलपूर्वक कार्य कराने वाले ईश्वर के रूप मे प्रस्तुत करती है जो अपनी प्रजा के लोगों की इच्छा को निर्ममता से कुचलता है। मसीह में हमारी उन्नति और फलप्रदता हमारे विकल्प चुनने पर निर्भर करते है, किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमारा विकल्प चुनना हमारी प्रकृति (स्वभाव) पर निर्भर है जो कि पवित्रात्मा के पुनः जीवित करने के कार्य के द्वारा तत्व रूप में बदल चुकी है। हम फल लाने का विकल्प चुनते है क्योंकि हम फल लाना चाहते है और ये इच्छाएँ हमारे नये स्वभाव से प्रवाहित होती है। परमेश्वर जबर्दस्ती या बलपूर्वक हमारी इच्छा को प्रभावित नहीं करते, परन्तु पुनःसृजन के कार्य के द्वारा ऐसा करते है। यह सुनिश्चित है कि हम अच्छे फल लाएंगे क्योंकि उसने हमें रूपान्तरित करके उस प्रकार के वृक्ष बना दिया है जो अच्छे फल लाते हैं।

मसीहत का अभिप्राय हमारा वैसा बनने का प्रयास करना नही है जैसे हम नहीं है। यद्यपि धार्मिकता अब भी हमारे पाप में पतित शरीर के विपरीत है। यह हमारे नये स्वभावों या अनुरागों के विपरीत नहीं है।[20] हम नयी सृष्टि हैः सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर के स्वरूप की समानता में सृजे गये हैं।[21] हम धार्मिकता का आचरण करते हैं क्योंकि हम धार्मिकता से प्रेम

18 फिलिप्पियों 1:19.

19 इफिसियों 2:10.

20 गलातियों 5:17.

21 2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 6:15.

करते हैं और स्वयं से घृणा करते हैं जब धार्मिकता से विचलित होते है। यद्यपि हमारा सम्पूर्ण रूपान्तरण पुनरूत्थान के समय प्रगट होगा उसका आरम्भ हमारे हृदय–परिवर्तन के दिन हो चुका है। नये जन्म के द्वारा हम 'नयी सृष्टि' शब्द के सम्पूर्ण अर्थ में नयी सृष्टि बनते हैं। इन सत्यों को काव्यात्मक या रोमांचक भाषा के रूप में नहीं समझना चाहिये जिसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं, परन्तु ये मसीही–जन की वर्तमान वास्तविकता को सटीक रूप में अभिव्यक्त करते हैं। ''इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नयी सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई। देखो नई बातें आ गई है।'' (2 कुरि. 5:17)।

नये जन्म की वास्तविकता यीशु के वचनों को रेखांकित करने वाला धर्मशिक्षा का आधार है कि अच्छा वृक्ष बुरे फल नहीं ला सकता और निकम्मा वृक्ष भले फल नहीं ला सकता। यीशु जिस सत्य को अभिव्यक्त कर रहे है वह अति सरल किन्तु गम्भीर है। एक वृक्ष अपनी प्रकृति के विरूद्ध फल नहीं ला सकता तत्व रूप में नैतिक पतन प्राप्त आदम का पुत्र परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन नहीं जी सकता, और एक नया जन्म प्राप्त परमेश्वर की संतान परमेश्वर के विरूद्ध अटूट विद्रोहात्मक जीवन शैली का जीवन नहीं जी सकती। मसीहीजन के जीवन में परमेश्वर की काँट–छाँट, पवित्रीकरण, धार्मिकता की एक फसल उत्पन्न करता है जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा और स्तुति–प्रशंसा के लिये है।[22] वह ज्योति की संतान के रूप में चलना, ज्योति के फल लाना सीखता है जिसमें सारी भलाई और धार्मिकता और सत्य है।[23]

हम यीशु द्वारा प्रस्तुत अद्‌भुत सत्य – वृक्ष और उनके फल का केवल एक ही पक्ष प्रचार करने के आदी हो गये है। हम बार–बार हृदय–परिवर्तन से वंचित व्यक्ति से कहते हैं कि शरीर पर भरोसा न करे और स्वयं के उद्धार के लिये अपने स्वयं के कामों पर रखी सारी आशा पर निर्भर न रहे।[24] हम उन्हें सही बताते हैं कि ''शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है'' (रोमियों 8:7)। हम आग्रहपूर्वक जोर देते हैं कि यह असंभव है और इसका कोई अपवाद नहीं है। एक बुरा वृक्ष अच्छे फल नहीं ला सकता और एक नया जन्म न पाया हृदय व्यवस्था की धार्मिकता की मांग को पूरा नहीं कर सकता।

इस अद्‌भुत सत्य के प्रति हमारी अभिरक्षा और उद्‌घोषणा सराहनीय है। किन्तु हमें स्वयं से यह प्रश्न करना चाहिये कि हम क्यों विरले ही इस सहसंबंध के सत्य उल्लेख करते हैं कि एक अच्छा वृक्ष बुरे फल नहीं ला सकता। जिस प्रकार हृदय–परिवर्तन के बिना व्यक्ति के लिये परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीना अंसभव है, यह भी उतना ही असंभव है कि एक मसीही व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष लगातार अटूट विद्रोह और फलहीनता का जीवन जीयें। परमेश्वर ने अपनी दाख की बारी में इतना अधिक निवेश किया है कि दाख की कोई शाखा निष्फल नहीं

22 फिलिप्पियों 1:11.

23 इफिसियों 5:8–9.

24 रोमियों 3:20.

हो सकती। वह ऐसा होने ही नहीं देगा! उसकी कृपा उसकी प्रजा की प्रत्येक निर्बलता और उनकी सभी परिस्थितियों पर प्रबल होगी। परमेश्वर की प्रत्येक संतान अलग–अलग गति और अलग–अलग तीव्रता से अवश्य ही फल उत्पन्न करेगी।

हम शाखाएँ है और अपने आप से कुछ नहीं कर सकते परन्तु परमेश्वर ने हमें मसीह में प्रत्यारोपित किया है।[25] हम अपने स्वयं के भार से वहाँ बने नहीं रह सकते, गिर जायेंगे, परन्तु वह विश्वासयोग्य दाखउत्पादन करने वाला है, जो हमें काँटता और छाँटता और हमारा अधिक फलवन्त होना सुनिश्चित करता है।[26] हम डरते और कांपते हुये अपने उद्धार के काम को पूरा करते है, परन्तु वही संप्रभु है जो हम में कार्य करता है, वह अपने भले अभिप्राय को पूरा करने में हमें इच्छा और कार्य शक्ति देता है।[27] हम उपेक्षा और अवज्ञा करने के आदी संतान है, परन्तु वह ऐसा प्रभु है जो हमारी ताड़ना करता है कि हम उसकी पवित्रता में सहभागी हो।[28] हम सदैव उसका कार्य है जो प्रगति पर है, पर हम उसकी कारीगरी है, और उसने जो काम हम में आरम्भ किया है, उसे पूरा करेगा।[29] किन्तु यदि हम सदैव बंजर बने रहते हैं, तब हम प्रत्यारोपित नहीं किये गये है। यदि कभी काँट–छाँट नहीं की जाती है, तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारी दाख की देखभाल नहीं करता। यदि पवित्रीकरण में प्रगति नहीं है, तब हम परमेश्वर की कारीगरी नहीं है। और यदि अनुशासन (ताड़ना) करके हमारे बिगड़ेपन को सुधारा नहीं जाता, तब परमेश्वर हमारा पिता नहीं है। ''वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? पर यदि वह ताड़ना जो सबकी होती है, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं परन्तु व्याभिचार की संतान ठहरे'' (इब्रानियों 12:5–11)।

अवश्य है कि ये सत्य मसीह के नाम का अंगीकार करने वाले और अनंतजीवन को पाने का दावा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सुनाये जाये। जबकि हम अकसर इस अधिक उदारवादी सूक्ति को चुनते है – *आप किसी पुस्तक के आवरण से उसका मूल्यांकन नहीं कर सकते* – हमें यह अवश्य समझना चाहिये कि भला वृक्ष बुरे फल नहीं ला सकता। किसी भी समय, संभव है कि मसीही–जन दौड़े, चलें, घुटनों पर चलें, सरके या फिर गिर जाये। किन्तु फिर भी उसके जीवन के सम्पूर्ण कालखण्ड में वह उन्नति करेगा और फलवन्त होगाः ''कोई सौ गुना, कोई साठ गुना और कोई तीस गुना'' (मत्ती 13:23)।

25 यूहन्ना 15:4–5.

26 यूहन्ना 15:2.

27 फिलिप्पियों 2:12–13.

28 इब्रानियों 12:9–10.

29 इफिसियों 2:10; फिलिप्पियों 1:6.

अध्याय – 19

कोरे अंगीकार के खतरे

प्रत्येक जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता कि इच्छा पर चलता है, वही प्रवेश करेगा। उस दिन बहुत लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं कि और तेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किये?' तब मै उन से स्पष्ट कहूंगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना हे कुकर्मियों, मुझ से दूर हठो।'

इसलिए जो कोई मेरे इन वचनों को सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धि मान मनुष्य के सामान है जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, बाढ़ें आई, आंधियां चलीं और उस घर से टकराई फिर भी वह नहीं गिरा, क्योकि उस कि नीव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उनका पालन नहीं करता, वह उस मुर्ख के सामान है जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, बाढ़ें आयीं, आंधियां चली और उस घर से टकराई तब वह गिर पडा, पूर्णतः ध्वस्त हो गाया।

– मत्ती 7:21–23; 24–27

हमारे सामने पवित्रशास्त्र के सबसे गम्भीर वचनों में से एक है। यह '' सुसमाचार की पुनःस्थापना '' श्रृंखला के समापन के लिये सर्वथा उपयुक्त वचन है क्योंकि यह सच्चे सुसमाचार की सेवकाई की गम्भीरता के बारे में कहता है। जैसा हमने पढ़ा, हम तुरन्त समझ गये कि मसीह तात्कालिक छोटी–मोटी बातों को नहीं परन्तु अनंतकालीन नियति की चर्चा कर रहे थे। वास्तव में, प्रतीत होता है कि उनके वचनों से एक अजीब डरावनी आँधी बह रही है जो उन बादलों को उड़ा रही है जो

हमारे दर्शन को केवल इस संसार तक ही सीमित रखते है। बादलों का हटना हमें थोड़ी देर के लिये ही सही उन बातों का चकित करने वाला परिचय देता है जो उस महान् और अंतिम दिन पूरी होगी, जब हम सब समस्त मानवजाति के साथ, मसीह के सिंहासन के सामने खड़े होंगे और हमारे भाग्य (नियति) की उद्घोषणा को सुनेंगे।

हम जहाँ है वहाँ से हम देखते है कि समस्त मानव जाति में से लोगों को चुनने और अलग करने का एक बड़ा कार्य संपन्न होगा। एक तरफ विशाल जनसमूह जिसे कोई गिन नहीं सकेगा – प्रत्येक देश, (जाति), कुल, जनजातीय और भाषा से होंगे। वे सब सिंहासन और मेम्ने के सामने खड़े होंगे। वे श्वेत वस्त्र पहने है, और वे ऊँचे स्वर से पुकारकर कह रहे है – ''सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेम्ने से ही उद्धार है'' (प्रकाशितवाक्य 7:9–10)। ये वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने अनुमोदन दिया है और उन्हें उनके स्वामी के आनन्द में भीतर प्रवेश करने का निमंत्रण दिया गया है।[1] वे जीवते परमेश्वर के नगर में स्वर्गदूतों और सिद्ध किये गये संतों द्वारा स्वागत पाते हैं, और वे परमेश्वर और मेम्ने की उपस्थिति में सदा–सर्वदा निवास करेंगे।[2] उनकी आँखों से प्रत्येक आँसू पोंछ दिया जायेगा, उनका पीड़ा और मृत्यु, विलाप एवं कष्ट से लम्बा चला युद्ध समाप्त हो जायेगा। इस पाप में पतित युग की सभी डरावनी बातें बीत चुकी है।[3] उनके नये निवास में वे पाएंगे कि परमेश्वर के आँगनों का एक दिन कहीं और के हजार दिनों से बेहतर है, यह कि उसकी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है और उसके दाहिने हाथ में सर्वदा का सुख है।[4] पीछे छोड़ चुके संसार के प्रत्येक आनन्द और संतुष्टि की तुलना उनके वर्तमान के आनन्द के एकपल से नहीं की जा सकती। पृथ्वी पर उन्होंने उस पर विश्वास किया, उससे प्रेम किया यद्यपि वह उनकी दृष्टि से ओझल था, परन्तु अब वे उसे देखते है, और शब्दों में अवर्णनीय आनन्द एवं महिमा की भरपूरी में आनन्द करते है।[5]

इसके दूसरी ओर, हम एक और जनसमूह देखते है जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता, वे सभी जातियों, कुलों, लोगों और भाषाओं में से है। इनकी संख्या इतनी अधिक है कि पहले वाला जनसमूह बौना लगता है, और लगता है वे कुछ नहीं बस बचे खुचे लोग है। उन्हें उनकी इच्छा के विरूद्ध आज्ञा दी गयी है कि वे स्वर्ग के सिंहासन के सामने उसके प्रभुत्व को स्वीकार करे जो सिंहासन पर बैठा है।[6] उनके कभी निडर दिखने वाले मुखमण्डल पर अब आतंक की छाप

---

1 मत्ती 25: 21, 23.

2 इब्रानियों 12:22–24; प्रकाशितवाक्य 21:23.

3 प्रकाशितवाक्य 21:4.

4 भजन. 16:11, 84:10.

5 1 पतरस 1:8.

6 फिलिप्पियों 2:10–11.

है। वे भयभीत है, मिट्टी के बर्तनों[7] के समान चूर–चूर, अनुग्रहविहीन, और बुरे है। वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने ऐसे पिघलते है जैसे भट्टी के सामने मोम की कोई वस्तु।[8] वे पहाड़ों और चट्टानों को पुकारते हैं कि उन पर गिरे और उन्हें परमेश्वर एवं मेम्ने की असहनीय ज्योति से छिपा ले।[9] अचानक वे सब शांत करा दिये जाते है, और स्वयं मसीह उनके लिये अंतिम आदेश देते है – ''हे कुकर्मियों, मुझ से दूर हटो'' (मत्ती 7:23)।

तब ईश्वरीय प्रबंध के अनुसार वे नरक में डाले गये और न्याय या दण्ड के प्रति उनकी भयानक अपेक्षायें अन्ततः पूरी हुयी।[10] उनके नये निवास स्थान में उन्होंने पाया कि ''जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयंकर बात है'' (इब्रानियों 10:31)। वे बाहर अंधकार में अनंतकाल गुजारेंगे, जहाँ केवल रोना और दांतों का पीसना होगा।[11] वे परमेश्वर के क्रोध की मदिरा को पीयेंगे जो उसके क्रोध के प्याले में ऊपर तक भरी है। उनकी यातना का धुँआ युगानुयुग उठता रहेगा, और उन्हें दिन और रात कभी चैन न मिलेगा।[12] वे स्वयं को दुष्टात्माओं के साथ उन घरों में पाएंगे जो दुष्टात्माओं के लिये तैयार किये गये हैं, जहाँ कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।[13] उनके लिये बेहतर होता यदि वे कभी जन्म ही नहीं लेते या फिर वे सम्पूर्ण देह के साथ नरक में डाले जाने के स्थान पर अपाहिज, लंगड़े, और अंधे होकर जीवन में प्रवेश करते।[14]

हम अपनी पूरी शक्ति के साथ कामना कर सकते हैं कि ये शब्द मात्र बढ़ा चढ़ाकर कही बातें हो, और ये रूपक या तस्वीरें किसी कवि की कल्पना निकले। यदि वे दान्तें, गोथे या मार्लोव[15] की लेखनी की उपज होते उन्हें अमान्य किया जा सकता था, परन्तु चूंकि वे मसीह के शब्द है उसकी एक मात्रा और एक बिन्दु भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।[16] वास्तव में, यदि अंतिम न्याय, स्वर्ग और नरक के परमेश्वर के ज्ञान पर विश्वास किया जा सके, तब हम आश्वस्त हो सकते है कि लगभग आधी बातें अब तक कहीं नहीं गई है। संसार का अंत निकट आ रहा है,

---

7 भजन. 2:9; प्रकाशितवाक्य 2:27.

8 पास्टर चार्ल्स लायटर, लेखक के साथ वार्ता।

9 1 तीमुथियुस 6:16; प्रकाशितवाक्य 6:16.

10 मत्ती 5:29–30; 18:9; मरकुस 9:45,47; लुक 12:5; इब्रानियों 10:27; 2 पतरस 2:4.

11 मत्ती 18:12, 22:13, 25:30; यहुदा पद 13.

12 प्रकाशितवाक्य 14:9–11.

13 मत्ती 25:419 मरकुस 9:44–48; 2 पतरस 2:4; यहुदा पद 6.

14 मत्ती 26:24; मरकुस 9:43–47; 14:2.

15 डांथे एक इतालियन कवि था और *दि डिवाईन कॉमेडी* के लेखक थे, एक कविता जो नर्क की भयावहता का वर्णन करती है। जोहेन वुल्फगैंग वॉन गोयेटा और क्रिस्टोफर मार्लो ने जर्मन पौराणिक कथा *फॉस्ट* के अलग अलग प्रसिद्व संस्करण लिखे हैं, यह एक विद्वान की कहानी है जो शैतान से सौदा करता है, अपने ज्ञान और सुख के लिये अपनी आत्मा का लेन देन करता है।

16 मत्ती 5:18.

और उसके साथ एक ऐसा भारी दण्ड भी आने वाला है जो सुनने वाले प्रत्येक कान में सनसनी उत्पन्न कर देगा।[17]

ये सत्य क्यों आधुनिक सुसमाचार प्रचारकीय मंचों से किया जाने वाला गम्भीरता विहीन और मनोरंजक प्रचार में तुच्छ समझे जाते हैं। परमेश्वर के लोग और उनके चरवाहे, तात्कालिक बातों से क्योंकर इतने उलझे रहते है जबकि अनंतकाल में कितना कुछ दाँव पर लगा है? ''सिय्योन में नरसिंगा फूंको'' और कलीसिया के मध्य चेतावनी दो! ''सिय्योन में नरसिंगा फूंको! मेरे पवित्र पर्वत पर खतरे का संकेत सुनाओ! देश के सब रहने वाले थरथरा उठें क्योंकि यहोवा का दिन आ रहा है! वरन् निकट ही है!'' (योएल 2:1)। भला हो कि हम प्रार्थना करे कि परमेश्वर हमें ऐसे लोग दे जो अनंतकाल की कगार पर खड़े हो और उसकी भयानक वास्तविकताओं को देखे, ऐसे मनुष्य जो संसार के लिये यह उद्घोषणा करने से न डरे, ''अपने परमेश्वर से भेंट करने के लिये तैयार हो'' (आमोस 4:12)।

अंगीकार का मूल्य

मत्ती 7:21 के आरम्भ में मसीह की सबसे अधिक कठोर चेतावनियों में से एक दी गई है – ''प्रत्येक जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा।" हमें यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि मसीह की चेतावनी स्वयंभू अनीश्वरवादियों या ईश्वर पर विश्वास न करने वालों के लिये नहीं है, और न ही वह अन्य धर्माबलंवियों के लिये है जो परमेश्वर के नाम के प्रति खुलकर आक्रामक है। परन्तु उनके शब्द उनके लिये है जो उसे जानने का दावा करते और उसे प्रभु कहकर पुकारते हैं, जो मसीही कहलाते है और अपनी गिनती उसके चेलों में करते है, ये वे है जिनके विश्वास और अंगीकार पवित्रशास्त्र सम्मत है।

मसीह के शब्द हमारे लिये है और उनका अभिप्राय हमारे हृदयों को भाले के समान बेधना है, और हमें खतरनाक नींद से जागृत करना है। वे मांग करते हैं कि हम अपने विश्वास, अवधारणाओं की जाँच करे और बड़ी सावधानी के साथ स्वयं का परीक्षण भी करे। क्या हम उसे जानते है? क्या हम उसके द्वारा पहिचाने जाते है? क्या हमारी आत्माएँ कुशल से है? हमारी अनंतकालीन नियतियाँ तराजू के पलड़ो पर है, और आत्म–प्रवंचना की संभावना बहुत अधिक है। क्योंकि उस महान दिन बहुत से लोग उसके सामने हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हुए आयंगे, परन्तु वह उनको मना कर देगा उनसे सराहना स्वीकार नहीं करेगा और उनसे कहेगा – ''मेरे सामने से दूर चले जाओ मैं तुम्हें नहीं जानता।'' यदि हम सोचते हैं कि मसीह की पहले दी गई 'बहुत' और 'थोड़े' की चेतावनी बढ़ाचढ़ाकर कही गयी है तो हमें ऐसे विचारों को अपने मन में जगह नहीं देनी चाहिये।

---

17 1षमुएल 3:11; 2 राजाओं 21:12; यिर्मयाह 19:3.

यहाँ हमें सब अधिकारियों से बड़े अधिकारी के द्वारा पहले से चेतावनी दी गई है। क्या हम उस पर ध्यान देंगे? हम एक बड़ी भीड़ के बीच खड़े हैं जो यीशु को प्रभु बुलाते है, परन्तु क्या हमारे लिये यह संभावना है कि मसीह हमसे सीधे–सीधे बात–चीत कर रहे है? उसने हमें चेतावनी दी है कि छावनी में जितने है सब सच्चे नहीं है। क्या हम आकान के समान है, जिसने सोचा कि वह भीड़ से कुछ छुपाकर रख सकता था?[18] क्या हम सोचते है कि विवाह के भोज में हम विवाह के वस्त्र पहने बिना प्रवेश कर जायेंगे और किसी को पता नहीं चलेगा?[19] क्या यह संभावना हो सकती है कि हम धोका खा गये है और अब तक हमारा हृदय–परिर्तवन नहीं हुआ है, या हम अपना हृदय यहूदा के समान कठोर करते है जिसने कहा था – ''निश्चय वह मैं नहीं हूँ''।[20]

इस वृतान्त में, यीशु गुप्त चेलों से बातचीत नहीं कर रहे थे या उन से जो सार्वजनिक रूप में उस का अंगीकार करते हुये लजाते थे। किन्तु वह उनको चेतावनी दे रहा है जो बड़ी निडरता के साथ जोर देकर उसके प्रभु होने की घोषणा करते है। यह उनके संबोधन ''हे प्रभु, हे प्रभु! से प्रगट है। इब्रानी साहित्य में इस प्रकार शब्दों का दोहराना उनको स्पष्ट करने और जोर देने के लिये किया जाता है। यशायाह के दर्शन में जब उसने परमेश्वर के सिंहासन वाले कक्ष को देखा तब सराफीम याहवें को 'पवित्र, पवित्र, पवित्र' कहकर सम्बोधित कर रहे थे।[21] दोहराव का अभिप्राय परमेश्वर की पवित्रता को अधिक से अधिक संभव महत्व या जोर देना था। उसी प्रकार, इस वृतान्त में दिया गया दोहराव यह दर्शाने के लिये संरचित है कि वे जो जोर देकर यीशु को प्रभु मानते हैं उनमें से भी बहुत से लोग न्याय के दिन अस्वीकृत और दोषी ठहराये जायेंगे। यह भयावह सत्य है जो हमें इस निष्कर्ष पर लेकर आता है कि यीशु मसीह में विश्वास का अंगीकार मात्र पर्याप्त नहीं है यदि इसके साथ आवश्यक फल संलग्न नहीं है जो अंगीकार की वास्तविकता को प्रमाणित करते हैं।

हृदय–परिवर्तन का प्रमाण

यदि सबसे अधिक जोर देकर और बार–बार किया जाने वाला, यीशु मसीह के प्रभु होने का अंगीकार सच्चे हृदय परिवर्तन का प्रमाण नहीं है तब प्रमाण क्या है? हमने पहले ही इसका उत्तर पवित्रशास्त्र के दो वृतान्तों में अति निकटता से देखा है। मत्ती 7:16 और 20 में यीशु हमें बताते है कि हम उनके फलों से जान लेंगे कि वास्तव में हृदय–परिवर्तन वाले कौन है? उन्होंने पुनः मत्ती 7:21 में घोषणा की है कि – मुझे प्रभु कहने वाला प्रत्येक उसके राज्य में प्रवेश नहीं करेगा ''परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वही प्रवेश करेगा।''

18 यहोशू 7:18–20.

19 मत्ती 22:11–13.

20 मत्ती 26:25.

21 यशायाह 6:3.

यीशु मसीह को प्रभु मानने के हमारे अंगीकार और हृदय–परिवर्तन की वैधता का प्रमाण हमारे द्वारा पिता की इच्छा का आज्ञापालन करना है। दूसरो शब्दों में, एक व्यक्ति का यीशु मसीह पर विश्वास का अंगीकार और स्वर्ग का दावा संदेहास्पद है यदि उनके साथ मसीह के समान स्वभाव के फल और धार्मिकता के काम संलग्न नहीं है। यहाँ तक कि मसीही सेवकाई की बड़ी से बड़ी गतिविधि और उसकी आभासी सफलता भी हृदय–परिवर्तन का प्रमाण नहीं है।[22]

यह सत्य हमें चकित न करें क्योंकि मत्ती 7 में यह एक आम विचार है। संकरे फाटक से किसी व्यक्ति के प्रवेश करने और संकरे मार्ग पर आगे चलने का प्रमाण मसीह की आज्ञाओं के द्वारा चिंन्हित है।[23] व्यक्ति के हृदय–परिवर्तन होने और अच्छा पेड़ बनने का प्रमाण है कि वह अब अच्छे फल ला रहा है, क्योंकि प्रत्येक पेड़ उसके फलों से जाना जाता है।[24] यीशु मसीह को प्रभु मानने का किसी व्यक्ति का अंगीकार सही है या नहीं इसका प्रमाण है कि वह पिता और पुत्र की इच्छा पर चलता है।[25] अंत में व्यक्ति में अपना जीवन चट्टान पर बनाया है और वह आने वाले न्याय से सुरक्षित है, इसका प्रमाण यह है कि वह न केवल मसीह के शब्दों को सुनता है वरन् उन पर अमल भी करता है।[26]

जब हम मत्ती 7 से आगे पढ़ते है और इस सत्य को निश्चित करने के लिये पवित्रशास्त्र में वचन खोजते हैं, हम उन की भरपूरी पाते हैं। प्रेरित पौलुस हमें उभारते हैं कि हम गम्भीरतापूर्वक आत्मपरीक्षण करें और देखे कि हम विश्वास में है या नहीं।[27] वे उनके विषय भी चेतावनी देते हैं जो प्रभु परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं परन्तु उनके काम उसका इंकार करते है।[28] प्रेरित पतरस भी हमें यत्नपूर्वक परमेश्वर की बुलाहट और हमारे चुने जाने को सिद्ध करने के लिये उभारते है।[29] प्रोत्साहन के साथ–साथ, वे उन सद्‌गुणों की सूची भी देते है जो हमारे जीवनों में वास्तव में वृद्धि करेंगे यदि वास्तव में हमने हृदय–परिवर्तन पाया है और परमेश्वर के लोगों में शामिल किये गये हैं। ये सद्‌गुण हैं – विश्वास, नैतिक उत्कृष्टता, ज्ञान, आत्मनियंत्रण, जुटकर कार्य करना, भक्ति, भाई चारे की प्रीति (दयालुता) और प्रेम।[30] जिस सीमा (अंश) तक ये सद्‌गुण हमारे जीवनों में रहते और बढ़ते है, उस सीमा तक हम निश्चयता पाते है कि हमने वास्तव में

---

22 मत्ती 7:22.

23 मत्ती 7:13–14.

24 मत्ती 7:16–20; लुक 6:44.

25 मत्ती 7:21; लुक 6:44.

26 मत्ती 7:24–27.

27 2 कुरिन्थियों 13:5.

28 तीतुस 1:16.

29 2 पतरस 1:10.

30 2 पतरस 1:5–7.

नया जन्म पाया है और उसके ईश्वरीय स्वभाव में सम्भागी है।[31] किन्तु जिस सीमा (अंश) तक इन सद्‌गुणों का अभाव (कमी) है, उस सीमा (अंश) तक हमें हमारी वास्तविक आत्मिक दशा के प्रति चिन्ता करने की आवश्यकता है। जैसा पतरस ने चेतावनी दी है, ''जिसमें ये गुण नहीं वह अंधा है, अदूरदर्शी है'' (2 पतरस 1:9)। प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पूरी प्रथम पत्री इस बात को आधार बनाकर लिखी है कि व्यक्ति के कार्य उद्धार करने वाले वास्तविक विश्वास और हृदय–परिवर्तन का प्रमाण है। उनकी पत्री में बहुत से सद्‌गुणों का वर्णन है जो अलग–अलग परिमाण में परमेश्वर की प्रत्येक वास्तविक संतान के जीवन में प्रगट होते हैं। जिस सीमा तक ये गुण बढ़ते जाते हैं और दिखाई देने वाली वास्तविकता है उस सीमा तक हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हमने अनंतजीवन पाया है।[32] जिस सीमा तक उनकी कमी है, हमें उतनी ही चिन्ता करनी चाहिये कि क्या हम वास्तव में मसिही है। अंत में, याकूब इस बात पर जोर देते हैं कि कार्य ही उद्धार करने वाले वास्तविक विश्वास का उत्पाद एवं प्रमाण है।[33] यद्यपि उनकी बात को अकसर गलत समझा और गलत समझाया जाता है, उन्होंने कभी प्रेरित पौलुस द्वारा प्रतिपादित केवल विश्वास से धर्मी ठहराये जाने की धर्मशिक्षा का इंकार नहीं किया। दोनों व्यक्ति एक ही सिक्के के अलग–अलग पहलुओं के बारे में लिख रहे है। पौलुस ने धर्मी ठहराये जाने के कारण को समझाया है जबकि याकूब, उसके परिणाम को समझा रहे हैं। हम केवल विश्वास ही से बचाये गये है। वे सब जो विश्वास करते हैं कि पवित्रात्मा के द्वारा पुनः जीवित किये गये हैं और परमेश्वर की कृपामय परवाह (देखभाल) के आधीन पहुँचाये गये है। इसी कारण वश, हम आत्मविश्वास रखते हैं कि प्रत्येक सच्चा विश्वासी फल लायेगा और अपने विश्वास को अपने कामों के द्वारा प्रदर्शित करेगा। याकूब ने चेतावनी दी है कि – ''विश्वास बिना काम के मृत है'' (2:26) और जो ऐसा नहीं मानते उन पर व्यंग के साथ उनकी चुनौती है – ''तुम मुझे अपना विश्वास बिना कामों के दिखाओ; और मैं अपना विश्वास तुम्हें अपने कामों के द्वारा दिखाऊँगा'' (2:18)। याकूब के लिये, विश्वास करने पर फल न लाने वाले दुष्टात्माओं से भी बदतर है। कम से कम दुष्टात्मायें थरथराने का संज्ञान तो रखती है।[34]

जैसा मैं कह चुका हूँ, मसीह और प्रेरितों की ये शिक्षायें केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाने की अति महत्वपूर्ण मसीही धर्मशिक्षा का इंकार नहीं करती है। वे सरल रूप में इस वैश्विक सत्य की पुष्टि करती है कि आतंरिक वास्तविकता का प्रगटीकरण उसके संलग्न चरित्र (आचरण) और कामों से होता है। यह समझना भी आवश्यक है कि न तो मसीह और न प्रेरितों की यह शिक्षा है कि केवल सबसे अधिक परिपक्व विश्वासी जो लगभग सिद्ध फल रखते है, केवल वे ही उनके उद्धार के प्रति आश्वस्त रह सकते है। हमारे बीच जो सर्वोत्तम मसीहीजन है

31 2 पतरस 1:4, 8.

32 1 यूहन्ना 5:13.

33 मत्ती 13:55; प्रेरितों के काम 12:7; 15:13; 21:18; 1 कुरिन्थियों 15:7; गलातियों 1:19, 2:9.

34 याकूब 2:19.

वे भी उनकी कमी–घटी और अगण्य असफलताओं के कारण बुरी तरह प्रभावित होते है। हम सब परमेश्वर की उसकी प्रजा के लिये अनुग्रह और करूणा दया पर सम्पूर्ण रूप में निर्भर है। किन्तु सच्चे विश्वासी की विश्वास में प्रगति सबसे बड़ा प्रमाण है कि वह वास्तव में पवित्रात्मा के द्वारा पुनः जीवित किया गया है और परमेश्वर की संतान है।

इन सत्यों के प्रकाश में, यह स्वाभाविक रूप से दुखदायी है कि आधुनिक दिनों का अधिकांश सुसमाचार प्रचारकीय प्रचार बेहतर रूप में सतही और बदतर रूप में तुच्छ है। पवित्रशास्त्र के सतही उपयोग के कारण अधिकांश आधुनिक प्रचार उद्धार की प्रतिज्ञा हर उस व्यक्ति से करता है जो अपने मुख से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करता है और हृदय में विश्वास करता है कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया है।[35] किन्तु बहुत से प्रचारक आगे इस सत्य को चेतावनी के साथ स्पष्ट नहीं करते, इस कारण बहुत से – यहाँ तक कि अधिकांश, इस अंगीकार पर बिना किसी पश्चाताप के विश्वास करते है। स्थिति को बदतर बनाते हुये प्रचारक मसीह का अंगीकार करने वालों को यह नहीं सिखाते कि वे कैसे तय करे कि उनके अंगीकार सच्चे हैं। बल्कि, वे उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपनी ईमानदारी के स्वमूल्यांकन के आधार पर, जिसके बल पर उन्होंने मसीह को पुकारा और प्रभु के रूप में उसका अंगीकार किया, अपने उद्धार पाने के प्रति आश्वस्त रहें। बहुतों ने पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षाओं को अनदेखा कर दिया है जिनमें लोगों से गम्भीर आत्मपरीक्षण या पवित्रशास्त्र के प्रकाश में जाँच करके[36] और उनके फल की गुणवत्ता के द्वारा उनके अंगीकार की वैधता सुनिश्चत करके उनकी बुलाहट और चुने जाने को सिद्ध करने के लिये कहा गया है।

हमें यह समझना चाहिये कि सुसमाचार की प्रतिज्ञाओं का प्रचार करते समय साथ–साथ सुसमाचार की चेतावनियाँ भी दी जानी चाहिये। इन में से एक की भी अनदेखी करने का परिणाम एक 'भिन्न सुसमाचार' है, जो वास्तव में सुसमाचार है ही नहीं (गलातियों 1:6–7)। मसीहत के समस्त इतिहास में सर्वाधिक भक्त सेवकों के प्रचार में नये जन्में हुओं और सभा में बैठे हुओं के लिये संतुलित और सही चेतावनियाँ थी, परन्तु हमारे दिनों में ऐसी चेतावनियाँ दुर्लभ है, और बहुत से प्रकरणों में उनका अस्तित्व ही नहीं है। हमारी बहुत बड़ी आवश्यकता के समय में जबकि निकट आने वाले न्याय की तलवार उन बहुतों के सिर पर लटक रही है जो मसीह का अंगीकार करते है, बहुत कम पहरेदार नरसिंगा फूंकने के लिये तैयार है। वे दुष्टों को सावधान नहीं करते और उनके मंचों पर उनका लोहू बिखरा हुआ है जिन्हें उन्होंने चेतावनी देने से इंकार कर दिया था।[37]

अधिकतर सुसमाचारकीय कलीसियाओं में प्रचलित सतही, सुविधापरक और मनुष्यों पर केन्द्रित सुसमाचार के प्रकाश में स्पष्ट, सटीक, चेतावनियाँ देने की आवश्यकता और भी

35 रोमियों 10:9–10.

36 2 कुरिन्थियों 13:5; 2 पतरस 1:10; 1 यूहन्ना 5:3.

37 यहेजकेल 33:6.

अधिक महसूस होती है। हम बिना माँग और दाम के ऐसे सुसमाचार से भर दिये गये हैं जो शरीर का विरोध नहीं करता परन्तु अकसर उसका संवर्धन करता है। वे सेवक जिन्हें अधिक बेहतर जानना–समझना चाहिये, वे ऐसे परमेश्वर को सिंहासन से अपदस्थ करने वाले और मनुष्यों को ऊँचा ऊँठाने वाले संदेश प्रचार करते हैं जिन्हें बिना प्रार्थना दोहराये स्वीकार किया जा सकता है। फिर कुछेक नगण्य संशोधनों के बाद 'नये विश्वासी' को उसी चौड़े मार्ग पर आगे बढ़ने की अनुमति दी जाती है, जैसा वह पहले चलता था। वह उन लोगों की भीड़ के हाथों में हाथ डाले यात्रा कर सकता है जिन्हें यही सुविधापरक विश्वास मिला है, जिन्हें उनकी अगुवाई करने वाले धार्मिक अगुवों ने प्रमाणित किया है और अभिरक्षा की है; और उनके विवेक को इतना संज्ञाशून्य कर दिया है कि वे सत्य से लगभग अप्रभावित रहते है।

सुसमाचार–प्रचारकीय संस्कृति का अधिंकाश भाग उसके गैर–धार्मिक प्रतिरूप की छत्रछाया में पलता है जिसमें सहन–शीलता, उदार–मानसिकता, सबको साथ लेकर चलने, और सबमें संलिप्त रहने को सर्वोच्च एवं सबसे उत्कृष्ट सद्‌गुण के रूप में ऊँचा उठाया जाता है। सुसमाचार प्रचारवादी कलीसिया के सदस्यगण और प्रचारकगण अब एक दूसरे की धर्मशिक्षा और पवित्रशास्त्र से नीतिगत विचलन को स्वीकार करने में गर्व का अनुभव करते हैं, और लेशमात्र भी विचार नहीं करते कि उनका यह विचलन उनकी हृदय–परिवर्तन न होने की दशा का प्रमाण हो सकता है। क्या यह हमारा प्रेम है जो बहुत सी धर्मशिक्षा और नीतिगत विरोधाभासों के बीच हमें चुप रखता है, या फिर यह पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी अज्ञानता है? क्या यह हमारा प्रेम है जो उन्हें चेतावनी देने से रोकता है जो मसीह का अंगीकार तो करते हैं पर उनके काम उसका इंकार करते है या फिर यह आत्म–संरक्षण और मनुष्यों के अनुमोदन की अभिलाषा है? मसीह पर विश्वास का व्यक्तिगत अंगीकार उद्धार का निर्णायक प्रमाण नहीं है। तब चिन्ह क्या है? वे कौन से प्रमाण हैं कि एक व्यक्ति वास्तव में प्रभु को जान गया है? यीशु ने स्पष्ट कहा:

> अतः तुम उन के फलों से उन्हें पहिचान लोग। (मत्ती 7:16,20)
>
> प्रत्येक जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वही प्रवेश करेगा। (मत्ती 7:21)
>
> "इसलिए जो कोई मेरे इन वचनों को सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। (मत्ती 7:24)।

झूठा अंगीकार करने वाले के लक्षण

मत्ती 7:21 में मसीह सिंहासन पर है, और भीड़ उनके सामने खड़ी है। किन्तु परिदृश्य सुख देने वाला नहीं है, वास्तव में यह पवित्रशास्त्र का सबसे अधिक भयावह दृश्य है। पृथ्वी पर इस विशाल जनसमूह ने उसे प्रभु कहकर बुलाया था, उनमें से बहुतों ने उसके नाम से सेवकाई भी की थी,

परन्तु अब वे उनके जीवनों की फलहीनता और अनाज्ञाकारिता के कारण ठुकराये गये है। मसीह के सिंहासन के सामने वह सब जो गुप्त था, अब प्रगट किया गया है।[38] उनके अंगीकार खोखले थे, उनका विश्वास दुष्टात्माओं का विश्वास था, और उनके धार्मिकता के कार्य मैले चीथड़ों के समान थे जो खून से सने और उनके हृदय के भ्रष्टाचार से भीगे और संतृप्त थे।[39] परमेश्वर के राज्य में गर्मजोशी के साथ स्वागत और सानन्द प्रवेश की उनकी आशाएँ लोप हो चुकी थी।[40] मसीह उन पर धर्मसंगत घृणा की दृष्टि डालते और ऊँचे शब्द से कहते है, 'मैंने तुम को कभी नहीं जानाय हे कुकर्मियों, मुझ से दूर हठो (मत्ती 7:23)।

इस भयानक घोषणा के बाद हम उनके विषय में जिन्होंने मसीह को प्रभु जानकर अंगीकार किया, किन्तु न्याय के दिन अस्वीकृत और दण्डनीय ठहरे, दो महत्वपूर्ण बातें पाते है। प्रथम यह कि मसीह ने उन्हें कभी नहीं जाना। शब्द 'जानना' ग्रीक भाषा के शब्द ginosko का अनुवाद है जिसके बारे में मैं अध्याय 14 में समझा चुका हूँ। इस क्रिया शब्द के संदर्भ में विचार अतिनिकट के मेल और सहभागिता से है। यद्यपि ये हृदय–परिवर्तन से रहित लोग मसीह को प्रभु मानने का दावा करते हैं, मसीह कहते हैं कि उसने उन्हें कभी नहीं *जाना।* इस उद्‌घोषणा के बहुत से संभावित अनुप्रयोग हो सकते हैं। प्रथम इसका संदर्भ मसीह का उसकी प्रजा को पहले से जानने और चुने जाने से हो सकता है। पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर की प्रत्येक संतान का नाम संसार की नींव रखे[41] जाने से पूर्व मेम्ने की पुस्तक में लिखा है किन्तु अब जो सिंहासन के सामने खड़े है, उनके नाम पुस्तक में नहीं पाये गये थे।[42] वे "पिता परमेश्वर के पूर्वज्ञान के अनुसार तथा आत्मा के पवित्र करने के द्वारा यीशु मसीह की आज्ञा पालन करने और उसके लहू से छिड़के जाने के लिये चुने" *नहीं* "गये थे" (1 पतरस 1:1–2)।

दूसरा, इसका अर्थ हो सकता है कि वे मसीह की कृपामय देखभाल की परिधि के बाहर थे। पवित्रशास्त्र सिखाता है, "यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जायेगा" (भजन संहिता 1:6)। मसीह ने सिखाया कि उसकी भेंड़ें उसका शब्द सुनती है, और वह उन्हें जानता है, और वे उसके पीछे–पीछे चलती है।[43] किन्तु ये लोग भेंड़ नहीं थे और वह उनका चरवाहा नहीं था। वह उन्हें नहींजानता था, और वे उसकी आवाज़ (शब्द) नहीं सुनते थे या जब वह उन्हें बुलाता था वे आज्ञापालन करके उसके पीछे नहीं चलते थे।

---

38 मत्ती 10:26; मरकुस 4:22; लुका 12:2.

39 लुका 6:24; तीतुस 1:16; याकूब 2:19.

40 2 पतरस 1:11.

41 प्रकाशितवाक्य 13:8.

42 प्रकाशितवाक्य 20:15.

43 यूहन्ना 10:26–27.

तीसरा और सबसे अधिक महत्वपूर्ण चिन्ह, इसका अर्थ यह हो सकता है कि उनमें और परमेश्वर के बीच अतिनिकट के संबंध (अंतरग संचार) नहीं थे। यह इस प्रकार है, मानों मसीह ने उनसे कहा, ''तुमने पृथ्वी पर परदेशी रहने के दिनों में मुझे नहीं खोजा, वास्तव में मैं बिरले ही तुम्हारे विचारों में आया। हम एक साथ मिलकर नहीं चले और एक दूसरे की सहभागिता का आनन्द नहीं लिया। तुमने मुझसे कभी परामर्श नहीं माँगा, मेरी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं दिया या मेरी आज्ञाओं को नहीं माना। मैंने तुमको तब नहीं जाना था और अब भी नहीं जानता हूँ!''

सुसमाचार वादियों के बीच आम कहावत है कि व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है यीशु को जानना। यद्यपि इस कथन में बड़ा सत्य है, इसके क्रम को बदलना अधिक युक्तियुक्त है यह कहना कि हम यीशु को जानते है और इसका दावा करना उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना यह कि यीशु हमें जानते है। एक मनुष्य की कल्पना करे कि वह व्हाइट हाऊस के फाटक पर जाता है और भीतर प्रवेश की माँग करता है। हमें पता है कि उसे तुरन्त रोका जायेगा और उससे सघन पूछताछ की जायेगी। हम इस बारे में निश्चयपूर्वक कह सकते है कि केवल यह कहने पर कि वह राष्ट्रपति को जानता है जो उस घर में रहते हैं, उसे प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जायेगी। किन्तु यदि राष्ट्रपति कहे कि वे उसे जानते है जो भीतर आना चाहता है, तो उसे तुरन्त बिना कोई प्रश्न किये भीतर प्रवेश दे दिया जायेगा। हम पहले ही यह सीख चुके है कि फलों या कामों के बिना जो हमारे अंगीकार के प्रमाण है, मसीह पर विश्वास करने का हमारा अंगीकार मूल्यहीन है। इसके विपरीत मसीह का हमें जानने का अंगीकार असीम मूल्यवान है क्योंकि वह उस द्वार को खोलता है जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता।[44]

जिन्होंने मसीह को प्रभु माना परन्तु दोषी ठहरें, उनका दूसरा लक्षण व्यवस्था से विहीन होना है। यीशु उनसे कहते है – जो व्यवस्था पर नहीं चलते थे, कि वे उनसे दूर हो (मत्ती 7:23)। शब्द 'व्यवस्थाविहीन' ग्रीक भाषा के शब्द anomia का अनुवाद है जो व्यवस्था के बिना जीवन की दशा का द्योतक है। यह उसकी ओर संकेत करता है जो अज्ञानता, अनदेखी, या जान बूझकर विद्रोह के कारण परमेश्वर की इच्छा का उलंघन करके जीवन जीता है। इस शब्द का अर्थ अति महत्वपूर्ण है क्योंकि यह झूठे अंगीकार की प्रकृति पर प्रकाश डालता है और मसीह की कठोरता का कारण प्रगट करता है। यह ऐसा है मानों वह अनादर के साथ हृदय–परिवर्तन का दावा करने वाले इन झूठे व्यक्तियों से कहता है – ''मेरे पास से चले जाओ, तुम जो मेरे शिष्य होने का दावा करते और प्रभु के रूप में मेरा अंगीकार करते हो परन्तु ऐसा जीवन जीते हो मानों मैंने आज्ञापालन के लिये तुम्हें कभी कोई आज्ञा नहीं दी।''

हम ने जिन कथनों पर विचार किया है उनमें से कोई भी कथन उन बहुतों पर इतना लागू नहीं होता जो सुसमाचार प्रचारकीय होने का दावा करते हैं। सुसमाचार प्रचारकीय अधिकांश

44 प्रकाशितवाक्य 3:8.

समुदाय धीरे–धीरे संस्कृति के रंग में रंग गया है और उन्होंने स्वयं मांग व्यवस्था या किसी प्रकार के मानदण्डों के बिना एक सुविधाजनक धर्म की पुर्नसृष्टि कर ली है जो शरीर पर प्रतिबन्ध नहीं लगाता। जिस प्रकार कुछ अभक्तिहीनों के लिये यहूदा लिखते हैं कि कुछ सुसमाचार वादी है जो ''परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं और हमारे अद्वैत स्वामी और प्रभु अर्थात् यीशु मसीह को अस्वीकार करते है'' (पद 4) इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि सुसमाचार वादियों की बड़ी भीड़ मसीह को जानने का दावा करती है, परन्तु उसकी संप्रभु इच्छा का उन्हें ज्ञान नहीं है और उसके अनुप्रयोग उनके दैनिक जीवन में दिखाई नहीं देते। ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति के मसीह को प्रभु मानने के अंगीकार और उसकी प्रगट इच्छा के प्रति उनके वास्तविक समर्पण के बीच संबंधों को लेकर सुसमाचारवादियों के मन में एक बड़ा अलगाव है। क्या किसी राजा के शासन में कोई वास्तव में निष्ठावान व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो न केवल राजा की आज्ञाओं की अनदेखी करें परन्तु उनके विपरीत आचरण भी करे? बहुत से समकालीन सुसमाचारवादी ऐसा ही सोचते है।

यद्यपि यह सच है कि हम मसीह का अनुसरण करने के लिये और पवित्रात्मा द्वारा चलाये जाने के लिये व्यवस्था से मुक्त कराये गये है।[45] हमें यह समझना चाहिये कि न तो मसीह और न पवित्रात्मा व्यवस्था के विरोध में है। वास्तव में, हम मसीह की सादृश्यता को जिस प्रकार से परखते है और हमारे जीवनों में पवित्रात्मा की अगुवाई को वैध ठहराते हैं; वह पवित्रशास्त्र का लिखित वचन (व्यवस्था) है। यदि हम मसीह से प्रेम रखते है तो उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे,[46] और यदि हम पवित्रात्मा का अनुसरण करेंगे, हम सर्वोत्तम सद्‌गुणों से भरा जीवन जीयेंगे, ''ऐसे कामों के विरूद्ध कोई व्यवस्था नहीं है'' (गलतियों 5:22–23)।

मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह हमें संसार में इस प्रकार नहीं छोड़ देता कि हम बिना दिशा निर्देश या आज्ञाओं के जीवन जिये और इस संसार की रीति पर लगातार चलते रहे।[47] बल्कि हमारी बुलाहट है – ''जिस प्रकार गैर यहूदी अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम आगे को वैसा न चलो'' (इफि. 4:17–18) परन्तु सब बातों में मसीह की समानता को प्राप्त करो, और प्रत्येक विचार को उसकी आज्ञाकारिता का बन्दी बना दो।[48] यह कार्य सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र की प्रत्येक पुस्तकों में मिलने वाली आज्ञाओं, निर्देशों और बुद्धि को यत्नपूर्वक सीखने और उन पर अमल करने के हमारे भाग को सम्पन्न करने से आंशिक रूप में पूरा हो जाता है।[49] मूसा द्वारा लिखित परमेश्वर की आज्ञाएँ मिथ्या शब्द नहीं है, परन्तु वे विश्वासी और कलीसिया का जीवन

45 रोमियों 7:1–6.

46 यूहन्ना 14:15.

47 इफिसियों 2:2.

48 रोमियों 8:29; 2 कुरिन्थियों 10:5.

49 भजन. 19:10–11.

है।[50] दाऊद ने गीत गाया कि वे उसके पाँवों के लिये दीपक और मार्ग के लिये उजियाला है, और वह उपाय है जिससे एक जवान अपने मार्ग को शुद्ध रख सकता है।[51] यीशु ने उसके लोगों के जीवनों में आज्ञाओं के केन्द्रिय स्थान की पुष्टि करते हुये यह उद्घोषणा की थी, ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।''[52] प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि पवित्रशास्त्र न केवल वह बुद्धि देता है जो उद्धार की ओर ले जाती है, परन्तु वचन सिखाने, समझाने, सुधारने, डाँटने–फटकारने, और धार्मिकता में प्रशिक्षण देने के लिये लाभदायी है।[53] प्रेरित यूहन्ना सिखाते है कि हृदय–परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं[54]वह कहता है क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें और उसकी आज्ञाएं बोझिल नहीं है (1 यूहन्ना 5:3)।

भक्त के जीवन में पवित्रशास्त्र की केन्द्रीयता और आज्ञाओं के महत्व के सम्मिश्रण के बड़े प्रकाश में हमें स्वयं से यह प्रश्न करना चाहिये कि क्यों आज्ञाओं का उल्लेख करने पर बहुत से सुसमाचारवादी आर्तनाद करने लगते है और उनके विरूद्ध लड़ने–झगड़ने लगते है मानो वे प्रतिबंधक और जीवन के आनन्द के विपरीत है। ऐसा क्यों है कि कोई भी प्रचार जो परम मानदण्ड बताता है या भले और बुरे (सही या गलत) के बीच विभेद करता है, उसे विधिवादी, कठोर, स्व–धार्मिकता और प्रेमरहित माना जाता है? उत्तर यद्यपि आसान है पर स्वीकार करने की दृष्टि से कठिन है – ऐसा इसलिए है कि सुसमाचार प्रचारकीय समुदाय (समाज) के भीतर बहुतेरे बिना हृदय–परिवर्तन के है। यद्यपि वे समकालीन मसीहत के वस्त्रों को धारण किये हैं, उनके नये जन्म से वंचित हृदय परमेश्वर और उसकी इच्छा के विरूद्ध (आक्रामक) है।[55] परमेश्वर का वचन उनके लिये बोझ–समान है क्योंकि वह उन्हें उन दुष्टता के कामों को करने से रोकता है जिनसे उन्हें प्रेम है और उनसे धार्मिकता के कामों की मांग करता है जिनसे वे घृणा करते है।[56]

परमेश्वर के वचन के नैतिक एवं आत्मिक मानदण्डों के प्रति बहुत से सुसमाचारवादियों की उदासीनता, अनदेखी, और यहाँ तक कि अरूचि, इस बात का प्रमाण है कि वे भक्ति का भेष धरते हैं पर उससे अधिक कुछ नहीं करते।[57] वे वास्तविक मसीहत के विकृत (बिगड़े) स्वरूप के प्रतिभागी बन गये हैं जो चौड़े मार्ग पर है और विनाश को ले जाता है। उन्होंने एक प्रार्थना की और उन्हें मुस्कुराते हुये चेहरों वालें, पसंद आने योग्य समुदाय में आमंत्रित किया गया। प्रति–सप्ताह

50 व्यवस्था. 32:47.

51 भजन. 119:9, 105.

52 मत्ती 4:4.

53 2 तीमुथियुस 3:15–17.

54 1 यूहन्ना 3:4.

55 रोमियों 1:30, 8:7.

56 पास्टर चार्ल्स लायटर, लेखक के साथ वार्ता।

57 2 तीमुथियुस 3:5.

वे उन आत्मिक सिद्धान्तों को ध्यान देकर सुनते हैं जो उन्हें एक बेहतर जीवन का निश्चय देते है। यहाँ तक कि वे पारिवारिक मित्रता की गतिविधियों में भी संलग्न है, जो उन्हें उद्देश्य का संज्ञान और मनोरंजन देता है। किन्तु वे धोके का शिकार है। हृदय (विचारों) और कामों में वे व्यवस्थाविहीन है, वे परमेश्वर की आज्ञाओं से अंजान होकर जीवन जीते हैं और वही करते है जो उनकी दृष्टि में ठीक है। उन्होंने एक मार्ग पा लिया है, जो संसार का है और जिसे थामकर वे अपने शरीर को संतुष्ट करते हैं और अपने विवेक को रास आने वाली पर्याप्त मसीहत को स्वीकार करते है। किन्तु अंतिम दिन वे इन शब्दों को सुनेंगे – ''हे कुकर्म के करने वालों, मुझ से दूर हो जाओ'' (मत्ती 7:23)।

बड़ी अस्वीकृति

न्याय के उस बड़े दिन, मसीह हमें चेतावनी देते हैं कि बहुतों को वे सबसे अधिक भयानक दण्ड सुनाएंगे, जो कभी मानवीय कानों ने नहीं सुना, कुकर्म के करने वालों को आज्ञा दी जायेगी कि वे उसके पास से चले जाये। सम्पूर्ण दण्ड या दण्ड का आदेश लगभग एक–एक शब्द, दाऊद के भजन 6:7–10 में दी गई घोषणा के अनुरूप हैः

> मेरी आखें शोक से कमजोर हो गई है,
> सारे विरोधियों के कारण वे धुंदली पड गई है।
> हे सब कुकर्मियों, मुझ से दूर हो जाओ,
> क्योकि यहोवा ने मेरे रोने की आवाज सुन ली है।
> यहोवा ने मेरी विनती सुन ली है,
> यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण करता है।
> मेरे सब शत्रु लज्जित होकर बहुत ही व्याकुल हो होंगे।
> वे लौट जाएंगे और एकाएक लज्जित होंगे।

इस पाठ में 4 सत्य है जो अंतिम न्याय के विचार से हमारे लिये प्रासंगिक है। प्रथम, दाऊद जिन्हें अपने से दूर भेज रहा है उन्हें वह अपना शत्रु मानता है। इसी प्रकार न्याय के दिन मसीह जिनको दूर भेज रहे हैं, वे उनके शत्रु कहलायेंगे। पवित्रशास्त्र की शिक्षा है कि सभी मनुष्य, स्वभाव से परमेश्वर से घृणा करने वाले है, और उनके मन उसके प्रति आक्रामक है।[58] किन्तु हमें यह भी समझना चाहिये कि परमेश्वर और पापी के बीच यह शत्रुता एक तरफा नहीं किन्तु परस्पर है। परमेश्वर अपनी पवित्रता और धार्मिकता में पापियों के विरूद्ध है और उनके विरूद्ध युद्ध की घोषणा करता है, ''क्योंकि जब हम शत्रु ही थे, हमारा मेल परमेश्वर के साथ उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हुआ, तो उस से बढ़कर अब मेल हो जाने पर हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार पायेंगे।''[59]

---

58 रोमियों 1:30, 8:7; कुलुस्सियों 2:21.

59 इन्हें भी पढ़िये नहूम 1:2; यशायाह 63:10। इस सत्य की और अधिक विस्तृत व्याख्या के लिये *रोमियों* को पढ़िये,

पापियों की एकमात्र आशा यह है कि वे अपने हथियार गिरा दे और श्वेत झण्डा उठाकर समर्पण करे, इसके पहले कि सदा के लिए बहुत देर हो जाये। एक बार जब वह मसीह के न्याय के आसन के पास पहुँचता है तब सुलह का समय बीत चुका है – सदा के लिये – और मेल–मिलाप और शांति की संभावना भी समाप्त हो चुकी है। इब्रानियों के लेखक हमें बताते हैं कि उस समय जो छूट जायेंगे उनके लिये, ''दण्ड की भयानक प्रतीक्षा और अग्निज्वाला शेष है, जो विरोधियों को भस्म कर देगी'' (इब्रानियों 10:27)। यद्यपि वे यीशु को प्रभु मानते हैं और भक्ति का भेष धारण[60] करते हैं, वह उनकी धर्मपरायणता के झीने वस्त्रों के पार देखेगा। कोरे अंगीकार और सुसमाचार की अनदेखी करके उन्होंने परमेश्वर के पुत्र को पांवों तले रौंदा है, और वाचा के लोहू को अशुद्ध ठहराया और अनुग्रह के आत्मा का अनादर किया है।[61] यही कारण है कि वे खलिहान में पूलों के समान बाँधे जायेंगे और सूखी टहनियों के समान जला दिये जायेंगे।[62] यह प्रभु के सब विरोधियों से उसके बदला लेने का दिन है।[63] वे परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पियेंगे, जो उसके क्रोध के प्याले में उपर तक भरकर दी जायेगी।[64]

दूसरा, दाऊद जिन्हें दूर भेज रहा है वे बड़ी लज्जा और निराशा के साथ जायेंगे। शब्द लज्जा (ashamed) इब्रानी में buwsh है जिसका अभिप्राय शर्म, निराशा, और असमंजस है। शब्द 'निराशा' इब्रानी के शब्द bahal का अनुवाद है जिसका अभ्रिपाय खतरे का संकेत, व्यग्रता और आतंक है। दाऊद के शत्रु लज्जा के भरे, व्यग्रता से परिपूर्ण और अत्यंत आतंकित होंगे। यह एक अत्याधिक विषादयुक्त तस्वीर है फिर भी यह आने वाले न्याय का पूर्वानुमान है जो हम दाऊद के शब्दों में पाते हैं कि वह उस अकल्पनीय लज्जा और आतंक का वर्णन करना आरम्भ भी नहीं कर पा रहा है जो उनके लिये प्रतीक्षारत है जो अस्वीकृत किये जायेंगे और मसीह की उपस्थिति से दूर कर दिये जायेंगे। वे बड़े हियाव के साथ न्याय कक्ष में प्रवेश करेंगे और किसी बात की परवाह न करेंगे, परन्तु वे शीघ्र जान लेंगे कि वे ''अभागे, तुच्छ, दरिद्र, अंधे और नंगे है'' (प्रकाशितवाक्य 3:17)। जिस प्रकार कनान देश ने कनानियों का उनकी अशुद्धता के कारण वमन किया, और बाद में अनाज्ञाकारी इस्राएल के साथ भी यही किया, इसी प्रकार मसीह भी उन्हें अपने मुख से उगल देगा और बड़ी लज्जा और घृणा के साथ बाहर निकाल देगा। वे उनके समान होंगे जिनके

थॉमस आर. श्रेईनर द्वारा रचित (ग्रेंड रेपिड्सः बेकर, 1998), 264; और *रोमियों की पत्रियां,* डगलस मूव द्वारा रचित (ग्रेंड रेपिड्सः इयर्डमेंस, 1996), 311–12। राबर्ट हल्डेन, जॉन मरे, चार्ल्स हॉज और सी.ई.बी. क्रेनफील्ड द्वारा रोमियों पर लिखे गये अन्य सम्मानित कार्यो में भी इस दृष्टिकोण को सुरक्षित रखा गया है।

60 2 तीमुथियुस 3:5.

61 इब्रानियों 10:29.

62 मीका 4:12; यूहन्ना 15:6.

63 नहूम 1:2; इब्रानियों 10:30.

64 प्रकाशितवाक्य 14:10

मुख अस्वीकृत होने के कारण काले हैं[65] और जिन्हें दूर कर दिया गया है।[66] वे निन्दा, अपमान, लज्जा और विनाश से भर जायेंगे।[67] जैसा कि दानिय्येल ने उनके बारे में भविष्यद्वाणी की थी कि उनमें से बहुतेरे जाग उठेंगे – "...कुछ सदा तक अपमानित और घृणित ठहराये जाने के लिये" (दानिय्येल 12:2)।

तीसरा, दाऊद जिनकों दूर भेज रहा था वे उनके विनाश से अवगत नहीं थे और जब उन्होंने जाना तब तक बहुत देर हो चुकी थी, दण्ड उन पर तलवार की तेजी से आया। उनके सर्वाधिक उन्नत आत्मविश्वास के समय में वे पीछे हटा दिये गये। इसी प्रकार, जो मसीह का झूठा अंगीकार करते है, वे भी उस न्याय के प्रति अवगत और तैयार नहीं होंगे जो अंतिम दिन उन पर आ पड़ेगा। वह घटनाओं के ऐसे नाटकीय और अनपेक्षित रूप में आयेगा कि वास्तविकता की उनकी सोच छिन्न–भिन्न हो जायेगी। वे उसके न्यायकक्ष में यह सोचकर प्रवेश करेंगे कि वे उसके हैं, और उनका जोरदार स्वागत किया जायेगा, और संभव है कि उन्हें उनकी सेवकाईयों के कारण सम्मानित भी किया जायेगा।[68] किन्तु जब वे मसीह के चेहरे का भाव देखेंगे वे आतंक से भर जायेंगे। एकक्षण में वे अपनी गलती जान लेंगे और जैसे हामान ऐस्तर के पाँवों पर गिरा था, वैसे वे भी मसीह के आगे गिरेंगे। और हामान के समान, राजा की आज्ञा पर, उनके चेहरे ढंक दिये जायेंगे और उन्हें घसीटकर परमेश्वर की उपस्थिति से दूर करके विनाश के स्थान में डाल दिया जायेगा।[69] वे उस मनुष्य के समान ठहरेंगे जो विवाह के भोज में बिना समुचित वस्त्र पहने और तैयारी किये गया था वह स्वीकार किये जाने और भोज का आनन्द पाने के प्रति आश्वस्त था।[70] किन्तु जब वह राजा की उपस्थिति में आया उसकी मूर्खता उजागर हो गई। वह अवाक होकर सुनता रहा जब उस पर दण्ड की आज्ञा सुनाई गई – "तब राजा ने अपने नौकरों से कहा, "उसके हाथ और पैर बाँधकर उसे बाहर अंधकार में डाल दो। वहाँ रोना और दांत पीसना होगा" (मत्ती 22:13)।

यह प्रश्न पूछने का उचित स्थान हैः कितने लाख लोगों को सुसमाचार प्रचारवादी सेवक और सेवकाईयाँ मसीह के सिंहासन के सामने न्याय के लिये बिना तैयारी भेजेगी? कितने लोग उनके पास्टर के निश्चय पर भरोसा करके आत्माविश्वास के साथ सिंहासन के कक्ष में प्रवेश करेंगे और मसीह की ओर से अस्वीकार किये जायेंगे? तब वे उस मनुष्य के बारे में कैसा महसूस करेंगे जिस पर उनकी आत्माओं की जिम्मेवारी थी? वह एक गलती के लिये दयालु और सभ्य था।

---

65 लैव्य. 18:28; 28; 20:22; प्रकाशितवाक्य 3:16.

66 मलाकी 2:3.

67 भजन 71:13; 83:17; 109:28–29.

68 मत्ती 7:22; 25:21, 23; लुका 12:37; यूहन्ना 12:26; 2 पतरस 1:10–11.

69 एस्तेर 7:8.

70 मत्ती 22:10–14.

यह आकर्षण, खुश मिज़ाज और सकारात्मक था। किन्तु उसने उनके घावों को गम्भीरता से नहीं लिया और उपर ही उपर मरहम पट्टी करते हुये उनसे पापियों की प्रार्थना करवाई और उनसे कहा कि वे सहयोगपूर्ण आत्मिक समुदाय के बीच अपने बारे में अच्छा महसूस करे। उसने उन्हें नैतिकता के कुछ पाठ पढ़ाये और उन व्यवहारिक सिंद्धातों से भर दिया ताकि वे जीवन में अपने लिये मार्ग निकाले और उसके लाभ प्राप्त करे। परन्तु उसने उन्हें उनके परमेश्वर से मिलने तैयार नहीं किया! उसने उन्हें कभी भी उस धर्म के अधिक वजनदार पहलुओं से अवगत नहीं कराया जिसका वह प्रतिनिधित्व करता था। वे परमेश्वर के चरित्र और मानव–हृदय के नैतिक पतन के विषय में कुछ भी नहीं जानते थे। वे मसीह की मृत्यु की वास्तविक प्रकृति से अवगत नहीं थे।[71] उन्होंने कभी पश्चाताप और विश्वास करने की बुलाहट को नहीं सुना।[72] उन्हें कभी भी उनकी बुलाहट और चुने जाने को सिद्ध करने और डरते और कांपते हुए उनके उद्धार के कार्य को करने की चेतावनी नहीं दी गई।[73] उसने उन्हें अनंतकाल के विस्तार में धार्मिक सतहीपन के मकड़जाल में लटके रहने दिया। समस्त अनंतकाल में वह उनके क्रन्दन को सुनेगा और जानेगा कि कम से कम कुछ अंशों में वह उनके विनाश के लिये जिम्मेदार था। उसने लोगों के घावों को उपर–उपर चंगा किया, यह कहकर कि ''शांति है, शांति है! जबकि शांति है ही नहीं'' (यिर्मयाह 6:14)। वह निकम्मा पहरेदार था और उनका लोहू उसके हाथों पर है।[74]

चौथा, दाऊद जिन्हें दूर भेज रहा था उन्होंने उसके व्यक्तित्व और बुलाहट पर लांछन लगाकर उसे अकथनीय दुख दिया था। इस कारण, उनका अचानक पतन परमेश्वर के द्वारा दाऊद की विजय का द्योतक है। ठीक इसी प्रकार, न्याय के दिन, मसीह भी उन लोगों के बुरे कामों से मुक्त हो जायेगा जिन्होंने उसे प्रभु कहकर बुलाया, उसके लोग होने का दावा किया किन्तु उसने जो कहा सो नहीं किया।[75] उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह को उस लुचपन में बदल दिया[76] जो अन्यजातीयों के बीच भी नहीं पाया जाता।[77] उन्होंने इस विश्वास के अनुसार जीवन जिया – ''आओ हम बुराई करे जिससे भलाई निकले... क्या हम पाप करते रहे कि अनुग्रह अधिक होता जाये?'' (रोमियों 3:8; 6:1)। उनके कारण अन्य जातियों के बीच मसीह के नाम की निन्दा हुई।[78] वह उनके बुरे कामों के लिए दोषी ठहराया गया और उसकी ठट्ठा की गयी कि वह उद्धारकर्त्ता होकर उन्हें बचा नहीं सका – वह छुटकारा देने वाला था जो अपने लोगों को मिस्र से

71 मरकुस 1:15

72 फिलिप्पियों 2:12; 2 पतरस 1:10.

73 अय्यूब 18:14.

74 यहेजकेल 3:17–18.

75 लुका 6:44.

76 यहुदा पद 4.

77 1 कुरिन्थियों 5:1.

78 रोमियों 2:24.

निकाल तो लाया परन्तु उन्हें उनके निजदेश में पहुँचा नहीं सका।[79] दुष्टों को धर्मी ठहराने वाला जिसके पास उन्हें पवित्र करने की सामर्थ नहीं थी, एक निर्माणकर्त्ता जिसने एक अच्छा निर्माण कार्य आरम्भ तो किया परन्तु उसे पूरा नहीं कर सका।[80] परमेश्वर एक स्त्री के समान निर्बल ठहरा जो अपनी पीड़ा में प्रसव तक तो पहुँची पर बच्चे को जन्म देने का उसमें बल न रहा।[81] ये सभी आरोप परमेश्वर पर उन भक्तिहीनों के कारण लगाये गये जिन्होंने अपने मुँह से उसका अंगीकार किया परन्तु अपने कामों से उसका इंकार किया।[82] किन्तु उस अंतिम दिन ये सभी निन्दामय आरोप समाप्त हो जायेंगे। सत्य प्रगट हो जायेगा कि प्रत्येक जो उससे 'हे प्रभु, हे प्रभु!' कहता है – वे सभी उसके द्वारा जाने–पहिचाने और उसके भाईयों में गिने नहीं जायेंगे। उस दिन मसीह का वर्चस्व प्रगट होगा और वे अवैध सन्तानों के रूप में उजागर किये जायेंगे जिन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार काम किया। यह मूसा के द्वारा परमेश्वर की विजय और अनाज्ञाकारी इस्राएल की निन्दा में पहले ही दर्शाया गया है:

> वह चट्टान है! उस का काम सिद्ध है, उस के सब मार्ग तो न्यायपूर्ण है।
> वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है, उस में कुटिलता नहीं। वह धर्मी और खरा है।
> इस प्रजा के लोगों ने उस के प्रति भ्रष्ट आचरण किया है,
> ये अपने दोष के कारण उसकी संतान नहीं,
> पर ये भ्रष्ट और टेढ़ी पीढ़ी के लोग है। (व्य.वि. 32:4–5)।

जिन सत्यों पर हमने अभी विचार किया है वे आधुनिक सुसमाचारवादी मन के लिये स्वीकारने में अति कठिन है परन्तु फिर भी सत्य तो यही है। यह दुख का विषय है, पर इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती, न इसे छुपाया जा सकता है। जैसा कि भविष्यद्वक्ता आमोस ने भविष्यद्वाणी की थी –

> "सिंह गरजा तो कौन न डरेगा?
> प्रभु यहोवा बोला, तो कौन नबूवत न करेगा?" (3:8)।

क्या हम अपने श्रोताओं से ये बातें छुपायेंगे? अंत में वे हमें शाप देंगे। क्या हम उन्हें बताएंगे भले ही वे हमें पागल समझे? उस दिन वे हमें धन्य कहेंगे! हमें मनुष्यों से मिलने वाली सभी सराहना और अनुमोदन की अभिलाषा को दूर करके मसीह का अनुमोदन प्राप्त करने की लालसा करनी चाहिए। हमें मसीह के द्वारा कहीं गई कठोर बातों का प्रचार करना चाहिये भले ही हम पर प्रेम विहीन, क्रोधी, अस्वस्थ और मनहूस होने के आरोप लगे। हमें मनुष्यों के तात्कालिक क्रोध को

---

79 गिनती 14:13–16; यहेजकेल 36:20.

80 लुका 14:28–30; फिलिप्पियों 1:6; इफिसियों 2:10.

81 यशायाह 66:9.

82 तीतूस 1:16.

सहने के लिये तैयार रहना चाहिये यदि ऐसा करने पर उन्हें परमेश्वर के अनंत क्रोध से बचाया जा सके। हमें उनके परमेश्वर से मिलने के लिये उन्हें तैयार करना चाहिये![83]

नरक की वास्तविकता

हमने मत्ती 7 से सीखा है कि बहुत से लोग जो अभी मसीह को प्रभु मानकर अंगीकार करते हैं, एक दिन झूठे अंगीकार के लिये उजागर हो जायेंगे और उन्हें उसकी उपस्थिति से दूर हो जाने की आज्ञा दी जायेगी। जो कुछ कहा गया यह उसका चरमोत्कर्ष और अंतिम सूचना है जिसे हमें सुनना और प्रत्युत्तर देना चाहिये। बहुत से सत्य हमें इस विवरण से प्राप्त करना चाहिये।

प्रथम, हमें यह समझना चाहिये कि यह मसीह की इच्छा है कि झूठा अंगीकार करने वाले उसकी उपस्थिति से दूर चले जाये। इस वृतान्त में सुसमाचार प्रचारवाद का कोई रोमांच नहीं है जो मसीह को दुखी और रोता हुआ दर्शाये, जबकि लोग स्वयं को नरक में धकेल रहे हैं और वह उन्हें रोकने के लिये सब कुछ करेगा। यह मसीह स्वयं है जो उन्हें क्रोध और बिना दया दूर भेज रहे है। इस पृथ्वी के जीवनकाल में मसीह ने बड़ी भरपूरी के साथ उन पर अपनी दया, सहनशीलता, और धीरज को उण्डेला परन्तु उन्होंने अपने हठीले ह्रदयों को उसके विरूद्ध कठोर किया और अपने लिये अधिक से अधिक परिमाण में क्रोध जमा किया कि वह क्रोध न्याय के दिन प्रगट हो।[84] वह उन्हें मुर्गी के समान अपने पंखों के नीचे रखना चाहता था पर उन्होंने नहीं चाहा।[85] उसने अपना हाथ बढ़ाकर उनकी मदद करनी चाही परन्तु उन्होंने इंकार कर दिया। जैसा कि उसने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था:

> जो मुझे पूछते भी न थे, उनको मै ने अपने खोजी बनने दिया।
> जो मुझे खोजते भी न थे उन से मै मिला।
> जिस जाती ने मुझे नाम लेकर नहीं पुकारा उस से मैंने कहा ,
> "मै यहां हूं, यहां।" मै एक विद्रोही प्रजा के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा,
> जो अपनी ही इच्छा से ऐसे मार्ग पर चलते है जो ठीक नहीं,
> एक ऐसी जाती जो मेरे सामने ही पूजा–उद्यान में बलि चढ़ा–चढ़ाकर
> और ईंटो पर धुप जला–जलाकर लगातार मुझे क्रोध दिलाती है। यशायाह 65:1–3

मसीह ने यह सब उनके लिये किया, परन्तु उन्होंने सदैव बढ़ने वाले विद्रोह और उसे लगातार रिस दिलाने के द्वारा प्रत्युत्तर दिया। उसने बुलाया, पर उन्होंने मना कर दिया; उसने हाथ बढ़ाया और उन्होंने सुना नहीं। उन्होंने उसके परामर्श की अनसुनी की और उसके डाँटने पर सुधरना न चाहा। इस कारण, अब जब वे उसे पुकारेंगे, वह उन्हें उत्तर नहीं देगा, और जब वे यत्नपूर्वक

83 आमोस 4:12.

84 रोमियों 2:4–5.

85 मत्ती 23:37; लुका 13:34.

उसे खोजेंगे, वे उसे नहीं पायेंगे। उन्होंने ज्ञान से घृणा की और उन्होंने परमेश्वर का भय मानना नहीं चुना; वे उसके परामर्श को स्वीकार नहीं करेंगे और न उसके डाँटने से सुधरेंगे, "अतः वे अपनी करनी का फल स्वयं भोगेंगे, और अपनी ही युक्तियों के फल से अघा जायेंगे" (नीतिवचन 1:24–31)। न्याय के दिन, मसीह का उद्धार का प्रस्ताव समाप्त हो जायेगा, और उसकी आज्ञाओं के द्वारा उसके शत्रुओं को नरक में फेंक दिया जायेगा। यही कारण है कि वह चेतावनी देता है:

> हे मेरे मित्रो, मै तुमसे कहता हूं, उनसे मत डरो जो शरीर को घात करते है पर इसके पश्चात् और कुछ नहीं कर सकते। मै तुम्हे चेतावनी देकर कहता हूं कि किस से डरना चाहिए: उसी से डरो जिस को मारने के पश्चात् यह अधिकार है कि नरक में डाले, हां, मै कहता हूं कि उसी से डरो ! लूका 12:4–5

> पुत्र को चूमों, ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और तुम मार्ग ही में नष्ट हो जाओं, क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भडकने को है। धन्य है वे जिनका भरोसा उस पर है। भजन 2:12

दूसरा, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि झूठे विश्वासियों को मसीह से दूर जाने की आज्ञा दी गयी। यदि यह हमें नरक का सबसे अधिक डरावना पक्ष नहीं लगता तो हमें हमारे उद्धार पर प्रश्न करना चाहिये। विश्वासी जिनके हृदय पवित्रात्मा के द्वारा पुनः जीवित किये गये हैं, उनके लिये बिना मसीह के रहने का विचार भी अत्यन्त असहनीय है।[86] प्रभु को चखने और देखने के बाद कि वे कितने भले हैं और पहले पहल अनुभव करने के बाद कि उनकी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है, विश्वासी मसीह के बिना अस्तित्व का विचार भी सह नहीं सकते।[87] हमें यह समझना चाहिये कि पुनरूज्जीवित हृदय अनंतजीवन को मूल रूप में अंतहीन सुख संसार के रूप में नहीं देखता, परन्तु मसीह के साथ बिना रूकावट और क्षीण न होने वाली सहभागिता के रूप में देखता है। वास्तव में, विश्वासी बिना मसीह के स्वर्ग में रहने के बदले, मसीह के साथ नरक में रहना पसंद करेगा। वे जो स्वर्ग को प्रचार में सुख संसार बताते है, वे मसीह का अनादर करते हैं और शारीरिक मनुष्यों को गुमराह करते हैं कि वे स्वर्ग को उनके लिये एक स्थान मान ले। अपनी सम्पूर्ण भौतिक सिद्धता और सौन्दर्य के बावजूद क्योंकि मसीह वहाँ है, शारीरिक मनुष्यों के लिये स्वर्ग बर्बाद स्थान होगा। उसकी पवित्र और धार्मिक उपस्थिति उनके लिये असहनीय होगी। किन्तु यदि हम लोगों को आश्वस्त कर सके कि मसीह उनके समान था या वह स्वर्ग में नहीं था तो हम कल ही स्वर्ग को भर सकते है।[88] सभी लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं परन्तु अधिकांश मसीह को नहीं चाहते। यही कारण है कि हमें शारीरिक मनुष्यों को चेतावनी देनी चाहिये कि मसीह के साथ सहभागिता की अभिलाषा न करना और धार्मिकता के प्रति उदासीनता इस बात का बड़ा प्रमाण है कि उनके हृदयों को परिवर्तन की आवश्यकता है और उनकी नागरिकता स्वर्ग की नहीं है।

86 पास्टर चार्ल्स लायटर, लेखक के साथ वार्ता।

87 भजन. 16:11; 34:8.

88 भजन. 50:21.

साथ हीं, हमें उन्हें चेतावनी भी देनी चाहिये जो मसीह का अंगीकार करते है, परन्तु मसीह की परिपूर्णता की आशा के बदले भविष्य के सुख संसार की आशा करते हैं।

तीसरा, हमें ध्यान देना चाहिये कि झूठे विश्वासियों को मसीह की उपस्थिति से दूर नरक में जाने की आज्ञा दी गयी है। सुसमाचारकीय समुदाय के भीतर कुछ लोग अपने प्रचार में नरक की अनुपस्थिति या उसके अस्तित्व के न होने के पक्ष में बात करते हैं, वे कहते हैं कि इसके बदले में वे यीशु की शिक्षाओं और सुसमाचार के शुभ–संदेश पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। इस प्रकार की बातें कहने वाले या तो जानकर धोका दे रहे है या सुसमाचार और मसीह की शिक्षाओं दोनों से अनजान है। वास्तविकता यह है कि हम नरक की प्रकृति और भयावहता के बारे में कुछ भी नहीं जानते यदि वह सब यीशु की शिक्षाओं में न मिलता। यद्यपि अनंतकालीन दण्ड का सत्य पुराने नियम[89] में पाया जाता है, परन्तु वहाँ इस विषय पर बहुत कम सुस्पष्ट संदर्भ मिलते है। यही बात पत्रियों[90] के विषय में भी कही जा सकती है। वास्तव में, नरक की धर्मशिक्षा में हम जो भी जानते हैं, लगभग सबकुछ सुसमाचारों में मसीह की शिक्षाओं से पता चलता है, और पतमुस नाम टापू पर यूहन्ना को दिये गये यीशु के प्रकाशनों से पता चलता है। अकसर कहा जाता है कि नरक के विषय पर जो व्यक्ति प्रचार करते हैं वे संकीर्ण मनवाले, आलोचक और प्रेम न करने वाले लोग है किन्तु इस तर्क को निष्फल किया जा सकता है क्योंकि इस पृथ्वी पर सबसे अधिक प्रेम करने वाले व्यक्ति ने ही नरक की वास्तविकता पर सबसे अधिक विस्तारपूर्वक और वर्णनात्मक शिक्षाएँ दी है। और यदि उस पर विश्वास करे तो नरक अवर्णनीय यातना[91] और पीड़ा का स्थान है जहाँ सिद्ध न्याय किया जाता है और दुष्ट जन उनके लिये नियत दण्ड को सही परिमाण में प्राप्त करते हैं।[92] अकसर यह पूछा जाता है कि पवित्रशास्त्र के बहुत बड़े भाग में दी गई नरक की शिक्षायें मसीह की ओर से क्यों है। भरोसेमन्द धर्मविज्ञानी डबल्यू जी.टी. शेड्ड इस विषय पर सबसे अधिक स्वीकार करने योग्य उत्तर देते है:

> अंतहीन दण्ड की धर्मशिक्षा की सबसे प्रबल समर्थक मसीह की शिक्षाएँ है, जो मनुष्यों को छुड़ाने वाला है। यद्यपि यह धर्मशिक्षा पौलुस की पत्रियों, और पवित्रशास्त्र के अन्य स्थलों में स्पष्ट रूप से सिखाई गई है, फिर भी देहधारण करने वाले परमेश्वर के स्पष्ट एवं बार–बार दोहराये गये कथनों के बिना यह संदेहास्पद है कि ऐसे भयानक सत्य को इतना ध्यानाकर्षित करने वाला स्थान प्राप्त हो सकता है जितना मसीही जगत के विश्वास में इसे सदा से प्राप्त है। प्रेरितों ने इसका सविस्तार वर्णन नहीं किया है और इस गम्भीर विचार पर अधिक जोर नहीं दिया है... और वे ऐसा कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर को छोड़ अन्य किसी को अधिकार

89 दानिय्येल 12:2.

90 2 थिस्सलुनीकियों 1:8–9; इब्रानियों 10:26–27; यहूदा पद 7.

91 मत्ती 13:42; 50; 22:139 24:51; 25:30; लुका 13:28; 16:28.

92 मत्ती 11:21–24; 16:27; 23:14; लुका 12:47–48; रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10; 11:15; 2 तीमुथियुस 4:14; प्रकाशितवाक्य 18:6; 20:12–13.

> नहीं है, और न कोई साहस करेगा कि किसी आत्मा को पाप के लिये अनंत दुर्दशा (नरक) का दण्ड दे। और परमेश्वर को छोड़ अन्य किसी को यह अधिकार नहीं है और न इस अधिकार को अपना मानना चाहिये कि ऐसे दण्ड के आदेश की प्रकृति और परिणामों की व्याख्या करे। इसी कारणवश खोये हुये व्यक्तियों की पीड़ाओं की भयानक कल्पना का अधिकांश वर्णन हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता के उपदेशों में है। उसने इस चेतावनी को मुखर करने की जिम्मेदारी स्वयं उठाई है।[93]

पवित्रशास्त्र नरक का वर्णन करते हुये बहुत से चित्रमय और चकित करने वाले वर्णन प्रस्तुत करता है। लम्बे समय से रूढ़िवादी विद्वानों के बीच भी यह बहस का मुद्दा रहा है कि क्या उन्हें शाब्दिक तौर पर समझना चाहिये। क्या नरक शाब्दिक रूप में 'आग' और 'अंधकार', गंधक और धूँए का स्थान है?[94] यदि कोई इन वर्णनों के शाब्दिक भावार्थ का इन्कार इसलिए करता है कि नरक में दुष्टों की पीड़ाओं को कम करे, उसका निषेध करना चाहिये। किन्तु इन वर्णनों को चित्रमय रूप में मानना स्वीकारणीय है क्योंकि एक अर्थ में उनका प्रयास ऐसी किसी भयंकर बात का वर्णन करना है जो मानव मन की ग्रहण करने की क्षमता और हमारी मानवीय भाषाओं में अभिव्यक्ति से परे है। नरक की भयावहता का वर्णन करने के लिये बाइबल के लेखकों ने पृथ्वी पर मनुष्यों को ज्ञात सबसे अधिक भयानक और बुरे आतंक का उपयोग किया है। परन्तु हम निश्चित रूप से मान सकते हैं कि नरक पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी से अधिक बदतर है। आग, अंधकार, गंधक और धुँआ, उस वास्तविकता का वर्णन करने के निर्बल प्रयास है जो शब्दों में अभिव्यक्त होने से अधिक डरावनी (भयावह) हैः अवश्य है कि दुष्ट जन परमेश्वर की धार्मिक उपस्थिति और उसके सिद्ध न्याय (दण्ड) को सम्पूर्ण अनंतकाल में सहन करे।

हम ने सीखा है कि वे जो झूठे रूप में मसीह का अंगीकार करते हैं, उन्हें उसकी उपस्थिति से निकलकर नरक में जाने की आज्ञा दी गई। किन्तु हमें हमारी भाषा को लेकर सावधान रहने की आवश्यकता है। जब हम नरक का वर्णन मसीह के बिना अनंत अस्तित्व के रूप में करते है, तब हमारा अभिप्राय पूर्णरीति से मसीह के बिना नहीं है। सुसमाचार प्रचारवादियों में एक आम कहावत है कि स्वर्ग इसलिये स्वर्ग है क्योंकि परमेश्वर वहाँ है, और नरक इसलिये नरक है, क्योंकि परमेश्वर वहाँ नहीं है। किन्तु यह कथन भ्रामक है, यह कहना अधिक उचित है कि नरक इसलिये नरक है क्योंकि परमेश्वर पापी के विरूद्ध उसकी धार्मिकता और क्रोध की भरपूरी के साथ वहाँ है। न्याय के दिन जब लोग मसीह की उपस्थिति से दूर भेजे जाएंगे, तब वे उसकी प्रसन्न करने वाली उपस्थिति से दूर जायेंगे। किन्तु उसका क्रोध अनंतकाल तक उनके पीछे–पीछे जायेगी। प्रेरित यूहन्ना ने इस सत्य पर जोर दिया हैः ''(अविश्वासी) परमेश्वर के प्रकोप की वह मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में भरपूर उण्डेली गई है पीएगा, और पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ने की उपस्थिति में उसे आग और गंधक की घोर यातना सहनी पड़ेगी'' (प्रकाशितवाक्य 14:10)।

93 W. G. T. Shedd, *Dogmatic Theology* (Phillipsburg, N.J.: P&R, 2003), 2:675.

94 मत्ती 3:10, 12; 7:19; 18:12; 13:42; 18:8; 22:13; 25:30, 41; यहूदा पद 13; प्रकाशितवाक्य 20:10, 14; 21:8.

वे जो नरक के लिए नियुक्त है

पवित्रशास्त्र से हम सीखते हैं कि न बदलने वाला और अवश्यंभावी न्याय संसार पर आने वाला है। मनुष्यों को बड़े पैमाने पर अंतिम रूप में पृथक किया जायेगा। इस सत्य का व्यवहारिक पहलू यह है कि इस पृथ्वी का प्रत्येक व्यक्ति या तो अनंतमहिमा या फिर नरक में अनंतदण्ड की नियति रखता है। यद्यपि यह विचार अधिकांश मानवजाति के लिये अत्याधिक अरूचिकर या ठोकर का कारण है इससे इंकार नहीं किया जा सकता क्योंकि यह पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा है।[95]

सड़कों पर और दर्शक दीर्घा में लोग नरक की धर्मशिक्षा पर अलग–अलग प्रतिक्रियाएँ करते हैं। कुछ इसे सीधे–सीधे मना करते हैं यद्यपि उनके मन में आशंका रहती है कि वे गलत है। कुछ अन्य मानते हैं कि नरक केवल सबसे अधिक घृणित व्यक्तियों के लिये है। वे विश्वास करते हैं कि अनीश्वरवादी भी नरक से बच सकते है यदि वह सही व्यवहार करे, अपनी दृष्टि से सर्वोत्तम जो कर सकता है करे, और अपने पड़ोसी की सहायता करने के लिये तत्पर रहे। कुछ अन्य विश्वास करते है कि नरक केवल उनके लिये है जो हठपूर्वक मसीह का तिरस्कार करते हैं जबकि वे जो उसके दावों को मानते और उसे प्रभु जानकर अंगीकार करते हैं, वे आश्वस्त है कि वे नरक के फाटकों से भी दूर रहेंगे। ये सभी भिन्न–भिन्न अभिमत हमें एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न तक लाते है – कौन नरक के लिए नियुक्त है? प्राचीन प्रचारकों के बीच अकसर यह कथन लोकप्रिय था – ''समस्या यह नहीं है कि लोग नरक में विश्वास नहीं करते। वे विश्वास करते है! समस्या यह है कि कोई नहीं सोचता कि वह वहाँ जा रहा है।''

मत्ती 7 में यीशु ने स्पष्ट रूप से चार प्रकार के व्यक्तियों की पहिचान दी है जो अनंतकाल नरक में व्यतीत करेंगे। हम उनमें से प्रत्येक श्रेणी का सावधानी पूर्वक विचार करके उनकी पहिचान कराने वाले लक्षणों के प्रकाश में अपने–अपने जीवनों का परीक्षण करके भला ही करेंगे। पृथ्वी पर इससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं है। लोग स्वयं को अधिक नुकसान पहुँचाये बिना बहुत सी बातों में गलत हो सकते है। किन्तु इस मसले पर गलत होने पर अनंतकालीन और न बदलने वाले परिणाम है।

उनका प्रथम समूह जो नरक के लिए नियुक्त है वे वह है जो अपने जीवन में चौड़े मार्ग पर चलते हैं।[96] उनके सोच–विचार, आचरण और जीवनों की दिशा मसीह की इच्छा के अनुसार परिभाषित नहीं है, वे इस पाप में पतित पीढ़ी के अभिमतों और लालसाओं के द्वारा आकार पाते है और उनके अनुसार चलते है। भले ही वे मसीहत का एक झीना वस्त्र पहने उनके विचार और जीवन उस धर्म के विपरीत है जिस पर वे दावा करते है। वे संसार से प्रेम करते हैं, संसार

95 मत्ती 5:22, 29–30; 10:28; 18:9; 23:33; 25:41, 46; मरकूस 9:43,45,47; लुका 12:5; 2 पतरस 2:4;प्रकाशितवाक्य 20:15.

96 मत्ती 7:13.

के समान दिखते है, और उनके अनुराग भी संसार के सदृश है। हमारी सुसमाचार प्रचारकीय कलीसियाएँ ऐसे व्यक्तियों से भरी है। वे ईमानदारी पूर्वक विश्वास करते हैं कि वे छोटे फाटक अर्थात् मसीह से प्रवेश कर चुके है और उनका उद्धार सुरक्षित है। किन्तु वे इस बात से अवगत नहीं है कि चौड़े मार्ग पर उनका बेरोकटोक चलना दर्शाता है कि उनका विश्वास व्यर्थ है।

दूसरा समूह जो नरक जाने के लिए नियुक्त हैं उन सब लोगों से बना है जिनके जीवन फलप्रदत्ता और पिता की काँट–छाँट का लक्षण नहीं दर्शाते।[97] वे मसीह पर विश्वास का अंगीकार करते है, परन्तु उनके जीवनों में उसका चरित्र और कार्य प्रगट नहीं होते, और न ही अनुशासन के द्वारा पिता के पवित्र करने के कार्य के प्रमाण मिलते है। वे जो फल नहीं लाते वे मसीही नहीं है। यह सत्य कमतर नहीं बनाया जा सकता और न समझाया जा सकता है। आरम्भिक सुसमाचार की चेतावनियों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने उद्घोषणा की थी – ''कुल्हाड़ा वृक्षों की जड़ पर रखा है, इसलिये जो वृक्ष फल नहीं लाता वह काटा और आग में झोंका जाता है'' (मत्ती 3:10; लूका 3:9)। यीशु ने यूहन्ना से सहमति जताई है और इसी चेतावनी को लगभग इन्ही शब्दों में दोहराया है – ''कुल्हाड़ा अब भी पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, और प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंका जाता है'' (मत्ती 7:19)। हमें यह समझना चाहिये कि हमारी सुसमाचार प्रचारकीय कलीसियाएँ ऐसे लोगों से भरी हुई है। वे कोई फल नहीं लाते और न उनमें पिता के द्वारा की गई काँट–छाँट के प्रमाण मिलते है। वे लगातार वर्षों तक भक्ति का भेष लिये चलते है परन्तु अपने जीवनों के बांझपन से उसकी शक्ति का इंकार करते है।[98]

तीसरा समूह जो नरक जाने के लिए नियुक्त है, उनका है जिनके जीवनों में पिता की इच्छा का व्यवहारिक आज्ञापालन नहीं है। पुनः, यह हमारी मसीह की स्पष्ट शिक्षा है, और उसने चेतावनी दी है, ''प्रत्येक जो मुझ से हे प्रभु! हे प्रभु! कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वही प्रवेश करेगा'' (मत्ती 7:21)। आज्ञाकारिता से उद्धार नहीं मिलता; किन्तु आज्ञाकारिता उद्धार पाने वालों का लक्षण है। उसी प्रकार अनाज्ञाकारिता का जीवन परमेश्वर के तिरस्कार का प्रमाण है। यही कारण है कि यीशु उनसे जो कुकर्मी है, अंतिम दिन दूर चले जाने के लिये कहेगा। वह यह उनसे कह रहा है जिन्होंने प्रभु के रूप में उसका अंगीकार किया परन्तु फिर भी ऐसा जीवन जिया मानों उसने उन्हें कभी व्यवस्था नहीं दी कि वे आज्ञपालन करे। हमें यह समझना चाहिये कि मसीहत में ऐसा नहीं है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा से लगातार उदासीन बना रहें या उसका सम्मान न करे। कोई और बात कहना यीशु की शिक्षाओं का इंकार करना है। फिर भी हमारी सुसमाचार प्रचारकीय कलीसियाएँ उन लोगों से भरी है जो मसीह को प्रभु कहते है पर व्यवहारिक अनीश्वरवादी के समान जीते हैं,

97 मत्ती 7:16–20; यूहन्ना 15:2.

98 2 तीमुथियुस 3:5.

वे वही करते है जो उनकी दृष्टि में सही है और ज्ञान की कमी के कारण वे नाश हो रहे है।[99] यदि संसार में सुसमाचार के प्रत्येक अंश के अधिकार को उपयोग में लाया जाये, तब भी उनके जीवनों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। वे व्यवस्थाविहीन है। वे परमेश्वर के वचन के स्वतः निर्मित दुर्भिक्ष में जीवन जीते है।[100]

चौथा समूह जो नरक जाने के लिए नियुक्त है, उन सब लोगों से बना है जो मसीह के वचनों को सुनते और उस पर अमल नहीं करते।[101] पुनः, हृदय–परिवर्तन व्यवहारिक आज्ञाकारिता से प्रगट या प्रमाणित होता है। वे जिनका नया–जन्म हुआ है उनमें यीशु के व्यक्तित्व के लिये नये और बढ़ने वाले अनुरागों के चिन्ह दिखाई देते है। यही कारण है कि वे उसकी इच्छा को जानने और आज्ञाकारिता के द्वारा उसे प्रसन्न करने की लालसा करते है, वे मसीह के वचन की आशीष से विस्मित होते और उसका अध्ययन और जीवनों में अमल करने के सौभाग्य के द्वारा विनम्र बनते हैं। परिणामस्वरूप जब वे स्वयं को उदासीन, और अनाज्ञाकारी पाते हैं वे लज्जित भी होते है। एक प्रकार से एक सच्चा विश्वासी जिसका वास्तव में हृदय–परिवर्तन हुआ है वह इस बात को कुछ–कुछ समझता है कि इस बात का क्या अर्थ है जो यीशु ने अपने चेलों से कही थी – ''परन्तु धन्य है तुम्हारी आँखें क्योंकि वे देखती है, और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि बहुत से नबियों और धर्मी पुरूषों ने चाहा कि जो तुम देख रहे हो, उसे देखें, परन्तु न देखा और जो तुम सुन रहे हो, सुनें, पर न सुना (मत्ती 13:16–17)।

इसके विपरीत जिसका हृदय–परिवर्तन नहीं हुआ है वह मसीह की शिक्षाओं से अप्रभावित है क्योंकि वह मसीह के व्यक्तित्व से अप्रभावित है। वचन उसे आश्चर्य चकित नहीं करता और जब उस पर चर्चा होती है तब उसके हृदय में उत्तेजना नहीं होती।[102] मसीह के वचन के प्रति उसमें वास्तविक सराहना का भाव नहीं होता और वचन के प्रति उदासीनता और अनाज्ञाकारिता के कारण उसे कुछ दुख नहीं होता। प्रत्येक रविवार की सुबह वह मसीह की शिक्षाओं को सुनता है और उसके सत्य को मानता भी है, पर जैसे ही दरवाजे से बाहर निकलता है वचन को पीछे छोड़ जाता है।[103] उसके प्रकरण में यशायाह नबी की भविष्यद्वाणी पूरी हो रही हैः

> इसलिए मै उन से दृष्टान्तों में बातें करता हूं, क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देख पाते और सुनते हुए भी नहीं सून पाते, और न ही वे समझते है। और उनके सम्बन्ध में यशायाह की यह भविष्यवाणी पूर्ण होती जा रही है अर्थात, 'तुम सुनते तो रहोगे पर न समझोगे और देखते तो रहोगे, पर तुम्हे सुझाई न पडेगा क्योंकि इस जाती का मन मोटा हो गया है, और अपने कानों से लोग कठिनाई से सुनते है, और उन्होंने अपनी आखें बंद कर ली है, कहीं ऐसा न हो कि

99 होशे 4:6.

100 आमोस 8:11.

101 मत्ती 7:26.

102 लुका 24:32.

103 भजन 50:16–17.

> वे अपनी आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझे और परिवर्तित हो जाएं, और मै उन्हें चंगा करूं।' (मत्ती 13:13–15)।

हमारी सुसमाचार प्रचारकीय कलीसियाएँ ऐसे व्यक्तियों से भरी है जो मसीह का अंगीकार तो करते है पर उसके वचन को आज्ञापालन करने की दृष्टि से नहीं सुनते। उनके लिये मसीहत अतीत के एक लेनदेन के समान है जो उन्होंने एक प्रार्थना करने के द्वारा मसीह के साथ किया था, परन्तु वे मसीह के साथ आगे समर्पण और आज्ञाकारिता की दिखाई देने योग्य गहिराई में नहीं जाते। उन्होंने केवल उतना ही किया जितना स्वर्ग में प्रवेश के लिये उनसे करने के लिये कहा गया था। वे हमारी दर्शकदीर्घा में संज्ञा शून्य विवेक के साथ बैठते हैं, किसी चेतावनी को नहीं सुनते, और वे जो करते है और जो दावा करते है उसके बीच किसी अंर्त विरोधी को नहीं देख पाते – अर्थात् वे स्वयं क्या है और किसका अंगीकार करते है।

मसीह के लिये और उन अगणित लोगों की भीड़ के लिये जो सिय्योन में आश्वस्त होकर बैठे हैं, और नहीं जानते कि उनके न्याय का दिन निकट आता जा रहा है, हमें पश्चाताप करना चाहिये कि हमने सुसमाचार और कलीसिया के साथ क्या किया है। हमें उन सभी तत्कालीन विकृतियों को दूर करना चाहिये जिन्होंने इस पीढ़ी के एक बहुत बड़े भाग को बिगाड़ दिया है और यीशु मसीह के सुसमाचार पर वापस लौटकर आना चाहिये। हमें ऐसी स्पष्टता और ईमानदारी के साथ प्रचार करना चाहिये कि हम जो मंच पर खड़े होते है न्याय के दिन बाईज्जत बरी हो, और वे जो हमें सुनते है – उनके पास कोई बहाना न हो। आइये हम चार्ल्स स्पर्जन के शब्दों पर ध्यान दे जिन्होंने उद्घोषणा की थी – "यदि पापीजन दण्ड के योग्य ठहरते हैं कम से कम वे हमारी देहों के उपर से छलांग मारकर नरक में जाये, और यदि वे नाश होते हैं तो नाश होते समय हमारे हाथ उनके घुटनों से लिपटे हो, उन्हें जाने से रोकने के लिये। यदि नरक को भरना ही है तो हमारे भरपूर प्रयासों के बाद भरें, कोई भी वहाँ बिना चेतावनी और बिना प्रार्थना पाये न जाये।[104]

104 C. H. Spurgeon, *The New Park Street and Metropolitan Tabernacle Pulpit* (Pasadena, Tex.: Pilgrim Publications, 1969), 7:11

GOSPEL'S POWER & MESSAGE

PAUL WASHER

"Praise God for the gospel and books like this that help us know, understand, and love it more deeply."

- Voddie Baucham -

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:

www.alethiabooks.com

If You Bite & Devour One Another

Alexander Strauch

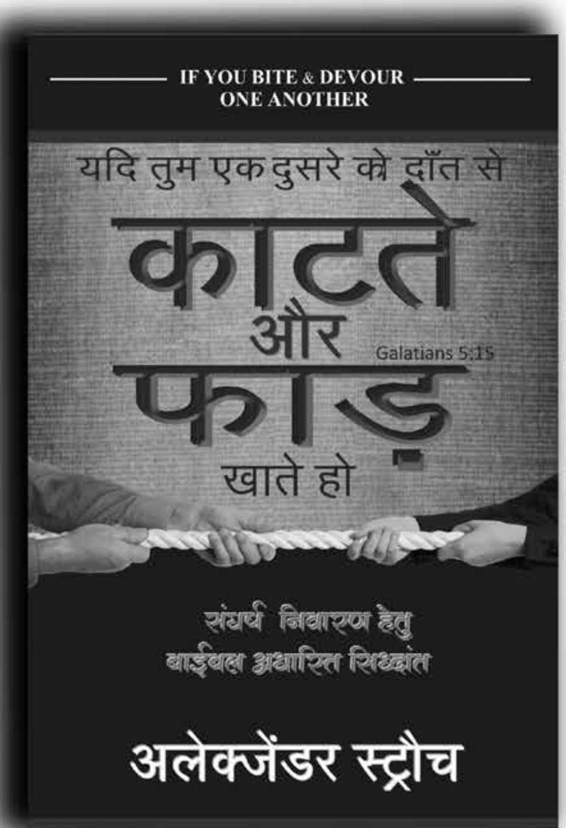

Conflict is all too common where two or more people are present. The church is no different. If You Bite & Devour One Another is perhaps the only Christian book of its kind dealing with conflicts in the church.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:

www.alethiabooks.com

Biblical Eldership
Alexander Strauch

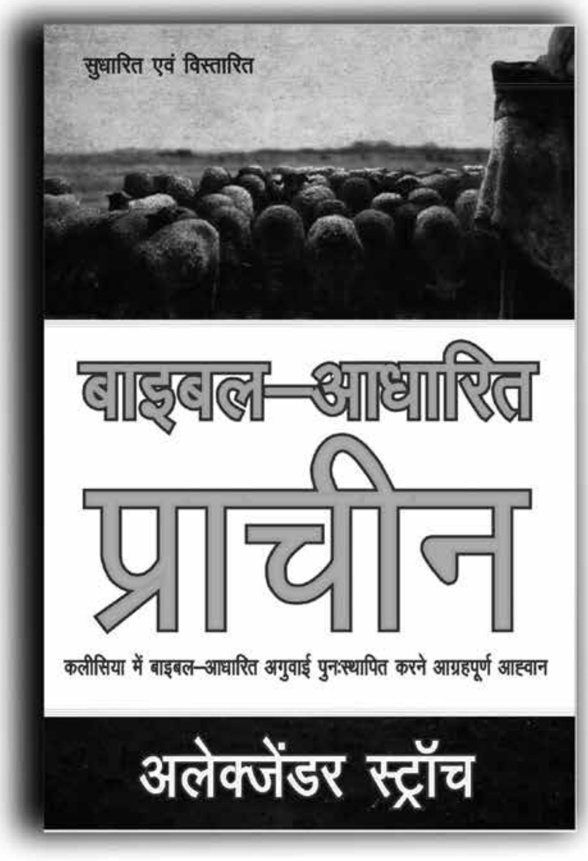

Do you want a Biblical Church? It all starts with Biblical leadership. With over 200 000 English copies sold, this comprehensive look at the role and function of elders/pastors shows us from scripture how your church can achieve this.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:

www.alethiabooks.com

THE GOSPEL CALL & TRUE CONVERSION

PAUL WASHER

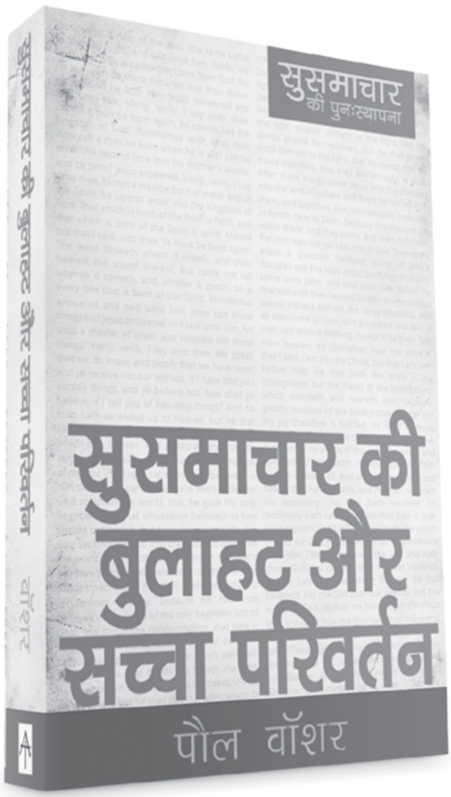

"In *The Gospel Call and True Conversion*, Paul Washer brilliantly and clearly helps the reader understand truth, carefully opening the Scriptures and explaining how the power of the gospel ought to impact our lives as Christians."

Greg Gilbert, author & senior pastor of Third Avenue Baptist Church

ALETHIA Publications

For more information about our publications, or to order, please visit our website:

www.alethiabookshop.com